AN

INQUIRY

CONCERNING

THE TRUE RELIGION.

Translated from the Urdú.

मत सत निरूपण ॥

ALLAHABAD:
PRESBYTERIAN MISSION PRESS.
1844.

B-8

AN

INQUIRY

CONCERNING

THE TRUE RELIGION.

Translated from the Urdú.

into Hindi

सत मत निरूपण ॥

ALLAHABAD:

PRESBYTERIAN MISSION PRESS.

1844.

सत मत निरूपण।

दोहा।

अलख अगोचर अलखगति अजर अमर अबिकार।
अटल अकाम अनादि अज जगपालक करतार ॥
रसना एक अनेक गुण कहं लगि कहों बखान।
मोहि अति दीन मलीन पर द्रवज्ञ सुकृपा निधान ॥

अथ आरंभ।

धन्य है वुह अद्वैत परमेश्वर जो सृष्टि कर्त्ता और पालन कर्त्ता है और वही पवित्रमय अरु धर्माध्यक्ष अपनी सब बातों में सच्चा है जिसको कभी किसीने न देखा न देख सक्ता है वुह अगम ज्योति में बास करता है जहां किसी की मति बुद्धि नहीं पज्ञंच सक्ती * स्तुत है वुह परमेश्वर कि जिस समय सारे जगत पर अंधकार छा रहा था कहा कि उंजियाला हो और हो गया * तेजोमय है वुह परमेश्वर कि जब लोग पाप के अंधकार में चलते

फिरते और मृत्यु के छाये में बैठे थे उस काल पुनःकथन किया कि उंजियाला हो जा और ततक्षण ऊपर से प्रातः काल का उंजियाला चमकने लगा और उद्वार का सूर्य उदय हुआ कि मनुष्य को जीवन का मार्ग दिखलावे और कुशल के पथ पर पहुंचावे * परंतु बड़े शोक की बात है कि यद्यपि उस अनादि अनंत परमेश्वर ने अपनी ज्योति जगत पर फैलाई कि जिसके साम्ने सूर्य एक जुगनू भी नहीं तिस पर भी बहुतेरे ऐसी अचेतता के अंधकार में पड़े हैं कि उस ज्योति पर ओट करके एक झिल-मिलाते दीपक को जो उनके अथवा उनके पुरखे लोगों का बाला है सूर्य समझते हैं और अंधियारे में भटकते फिरते हैं हाय उनकी अज्ञानता पर क्या लाखों दीपक कहीं सूर्य की बराबरी करसक्ते हैं अथवा चिनगारी कहीं डामर के साम्ने चमक सक्ती है फिर उस पराक्रमी सूर्य के साम्ने कि जिसकी एक किरण से हम प्रकाशित हो सक्ते हैं उनके बाले हुए दीपक कब उंजियाले हो सक्ते हैं * इस लिये हरएक मनुष्य को अपनी मुक्ति के कारण सत्य उंजियाले का खोज करना चाहिये अर्थात सत्य मत का खोज करना सब को अति आवश्यक है और जिस भांति हरएक मनुष्य सूर्य की ज्योति को दीपक की चमक से बिभेद कर सक्ता उसी रीति से जिसे कुछ भी बुद्धि ज्ञान है वुह प्रमाणिक लक्षणों से सच्चे मत को झूठे मतों से अलग कर सक्ता है * सो अब हम परमेश्वर से

सहायता चाहके अति दीनताई से सत्य का खोज करते हैं जिसतें उसकी प्रसन्नता और हम सभों का कुशल मंगल होवे।

सत्य मत के लक्षण।

यह बात सब मानते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य के कारण मत को ठहराया और यह भी कि उस मत में पहिले परमेश्वर के गुण और स्वभाव का बर्णन होना अवश्य है।

दूसरे उसमें सृष्टि की और मनुष्य की उत्पत्ति और उसकी उत्पत्ति के कारण का बर्णन जो कुछ कि हो सो परमेश्वर के गुण और स्वभाव और महातम के योग्य हो।

तीसरे इसका भी बर्णन हो कि परमेश्वर और मनुष्य से क्या सम्बंध है।

चौथे उस मत के ऊपर परमेश्वर की ऐसी छाप हो कि वैसी कोई न कर सके।

पहिले सत मत में परमेश्वर के गुण और स्वभाव का बर्णन अवश्य है इस में जगत के मताचारी सब बातों को एकही प्रकार से बर्णन नहीं करते तो भी परमेश्वर के कितने गुण ऐसे हैं कि जिन्हें नास्तिकों को छोड़ सब मानलेते हैं और यह भी मान लेते हैं कि जिस मत में

उन गुणों के लच्चण नहों वुह मत परमेश्वर की ओर से नहीं वे गुण ये हैं।

१ परमेश्वर पवित्र है और उसकी पवित्रता उसके सब गुणों की मणि है।

२ परमेश्वर न्यायी है अरु निष्पक्ष होके वुह हर एक मनुष्य को उसकी अंतर गति और चाल चलन के समान यथा योग्य बदला देता है।

३ परमेश्वर दयालु है कि यद्यपि मनुष्य पापी और अपराधी हो तथापि वुह उसकी सर्वथा भलाई चाहता है परंतु इस रीति से कि उसकी दया से उसकी न्याय और पवित्रता में बट्टा न लगे।

४ परमेश्वर अंतर्जामी और सर्वज्ञानी है और भूत भविष्य बर्त्तमान की सब बातों का जाननिहार है * और वुह मनुष्य के सर्वकाल की अवस्था को जानता है उसके समस्त बिचार ज्ञान से भरपूर हैं और नित उनके पूरे करने का यत्न अच्छे से अच्छा करता है * इससे जाना जाता है कि जब पहिले ही से मनुष्य की आत्मिक आ-वश्यकता एक है तो मुक्ति का मार्ग भी जो परमेश्वर ने उसके लिये ठहराया एक ही होगा और मनुष्य को तो कुछ आगे की सुध नहीं है इस कारण उनकी बातें घड़ी

घड़ी बढ़ उ जातीं और बिरुद्ध पड़ती हैं परंतु परमेश्वर ऐसा सर्बज्ञानी है कि उसने जगत की उत्पत्ति से पहिले हो हर एक समय के लोगों की अवस्था और आवश्यकता को बिचार के उनके लिये उपाय रचो जो बदलने की नहीं।

५ परमेश्वर सत्य है और जो जो कहता सब सत्य होता है उसकी एक बात उसकी दूसरी बात को कभी खंडन नहीं करती सो परमेश्वर का पुस्तक एक हो अथवा अनेक उसमें बिरुद्धता अनहोनी है और जब कि वुह सारी सृष्टि का सृजनहार ठहरा तो उसका बचन भी सृष्टि के यथार्थ वृतांत के बिरुद्ध नहीं हो सक्ता।

६ परमेश्वर शर्बशक्तिमान अर्थात जो चाहता सो कर सक्ता है परंतु इस रीति पर नहीं कि दो बिरुद्ध एकत्र होवें।

७ परमेश्वर एक है।

८ परमेश्वर समभाव है अर्थात उसके गुण स्वभाव और बिचार कभी नहीं बदलते।

ये आठ लक्षण और लक्षणों के परे सत्य परमेश्वर के हैं जिन में किसी को संदेह नहीं और इस बात को भी सब मान लेते हैं कि जिसमें ये गुण नहीं वुह कभी पर-

मेश्वर नहीं होसक्ता यदि कोई ऐसा कहे भी तो वुह झूठा है *

दूसरे सत्य मत में मनुष्य की और जगत की उत्पत्ति और उसकी उत्पत्ति के कारण का जो कुछ कि वृत्तांत हो उस्से परमेश्वर के गुण और महातम प्रगट होवें बिशेष करके ये दो बातें

१ मनुष्य की और जगत की उत्पत्ति के बर्णन।

२ इस बात का बर्णन कि मनुष्य के उत्पन्न होने का क्या अभिप्राय है।

---

* इसके समान वेद के बहुत ठौरों में परमेश्वर का ऐसा व्याख्यान है * ऋग्वेद के भाष्य में वशिष्ट महामुनि ने कहा है कि ऋग्वेद परमेश्वर के बिषय में यों कहता है कि वुह सर्वसामर्थी अद्वैत और सब से बरिष्ट और सर्वज्ञानी और काम क्रोध लोभ मोह मद और तीनकाल और तीनअवस्था से परे है उसके ये बचन हैं अर्थात

समस्तं बिषय बासना विनिर्मुक्तःसपरमहंस केवलं निर्विशेष ब्रह्म चिंतन मात्रेव तिष्ठति सपरमहंसःयबउत्र चित्तिष्ठ तत्रादौ ऋग्वेदस्य प्रज्ञान शब्दस्य व्याख्यानं क्रियते एकमेवा द्वितीयं ब्रह्मेति सिद्धांतः प्रज्ञानं स्वतश्चैतन्यं तद्विसेषाः अनेक प्रकाराःतन्मध्ये यथावे बुद्धानुसारेण व्याख्यानं क्रियते प्र कृष्टं उत्कृष्टं ज्ञानं प्रज्ञानं उपाधिरहितं स्वतश्चैतन्यं कालत्रय रहितं अवस्था त्रय रहितं प्रपंच विनिर्मुक्त स्वतंत्रं ज्ञानं तत्प्रज्ञानं नामधेयं ब्रह्म भवेति

तीसरे सत्य मत में इसका बर्णन चाहिये कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच क्या सम्बंध है इसमें दो बातें हैं

पहिली यह कि परमेश्वर को मनुष्य से क्या सम्बन्ध है क्या वुह उसका सृजनहार और पालनहार और उस पर और समस्त संसार पर प्रभुता रखता है अथवा नहीं और यदि वुह सबका सृजनहार और स्वामी है तो उसने कुछ आज्ञा भी दिई होगी कि मनुष्य को क्या क्या किया चाहिये और क्या क्या नहीं और धर्म अधर्म में क्या भेद है।

दूसरी यह कि मनुष्य को परमेश्वर से क्या सम्बन्ध है उसको अपनी सब बातों का लेखा देना है कि नहीं यदि लेखा देना है और वुह पापी है तो उसे क्षमा किये जाने की आशा है कि नहीं और यदि आशा है तो कैसी है।

सत्य मत में इन बातों का संदेश अति आवश्यक है जिसतें मनुष्य अपने को और परमेश्वर को पहिचाने और अपनी सर्वदा की भलाई लहे फिर चाहिये कि उस मत में ऐसी समता और उत्तमता हो कि उस्से हर एक का मन जो निर्पक्षी और ईश्वर खोजी हो बोधित होवे।

चौथे सत्य मत पर परमेश्वर की ऐसी छाप होवे कि कोई मनुष्य वैसी न कर सके जिसतें उसका होना परमे-

श्वर की ओर से निस्संदेह ठहरे और जब कि परमेश्वर असीम है इस लिये उसकी कितनी बातें भी मनुष्य की समझ से दूर हैं सो यदि उसके पुस्तक में ऐसी बातों का कुछ बर्णन हो तो कुछ अचरज नहीं और यदि हम यहां लों समझें कि वे बातें परमेश्वर के योग्य और मनुष्य के बिषय में अच्छी हैं तोभी जो उनका भेद अच्छी रीति से न जान सकें तो कुछ अचरज नहीं सो इन दो कारण से सर्वथा योग्य है कि परमेश्वर अपने बचन में एक ऐसा लक्षण और छाप रखे कि ईश्वर के खोजनिहार उसे पहिचान लेवें और जब परमेश्वर के बचन का मानना सारे संसार को आवश्यक है तो चाहिये कि उसके बचन के लक्षण भी प्रगट और प्रत्यक्ष होवें फिर आश्चर्य और भविष्यवाणी से पक्का और प्रत्यक्ष लक्षण कौन होसक्ता है।

पहिले आश्चर्य * वुह यह बात है कि परमेश्वर की बान और सृष्टि की रीति और वस्तुन की तत्व से बाहर होवे और जिसे परमेश्वर आप अथवा किसी के द्वारा से प्रगट करे और उसमें कई चिन्ह हैं उन में से

१ यह कि वुह आश्चर्य मतही के ठहराने के लिये हो।

२ यह कि वुह प्रत्यक्ष प्रमाणिक साक्षियों के साम्ने जो सच झूठ में बिभेद कर सक्ते हों दिखाया जावे।

३ यह कि उस्से परमेश्वर की महिमा प्रगट होवे।

४ यह कि देखनिहार उसको बिद्या के प्रमाण बिना जान जायें।

५ यद्यपि उस समय के लोग उस आश्चर्य कर्म के झुठाने को बज्जत चाहे हों पर झुठा न सके हों।

इनके अधिक आश्चर्य के ओर भी चिन्ह हैं जिनका वर्णन करना यहां कुछ प्रयोजन नहीं ओर संभव है कि ओर भी आश्चर्य सचमुच हों जिन में ये चिन्ह न होवें पर जिन आश्चर्यों से कि भविष्यद्वक्ता अथवा मत अथवा स्वर्गीय पुस्तक प्रमाणिक होवें उनमें इन चिन्हों का होना आवश्य है।

दूसरे भविष्यबाणी * वुह आश्चर्य की रीति पर आगे का संदेश देना है ओर उस्से परमेश्वर की सर्वज्ञता ओर सज्ञानता ओर सत्यता ओर संसार पर उसकी प्रभुता प्रगट होती हैं ओर ईश्वरीय पुस्तक के लिये बड़ा भारी प्रमाण है क्योंकि वुह भविष्यबाणी जब कि पीढ़ी पीढ़ी पुरी होती चली जाती तो हर एक समय के लिये एक प्रत्यक्ष आश्चर्य है बरण उस्से वुह आश्चर्य जो मत के प्रगट करने के समय दिखाये गये ओर भी दृढ़ता पाते हैं।

निदान इन लक्षणों से मत का निरूपण अच्छी रीति से हो सक्ता है और जिसमें ये लक्षण न होवें वुह मत परमेश्वर की ओर से नहीं इसलिये हम पक्ष और हठ को छोड़ के और सचाई का अभिलाष रखके उन्हीं लक्षणों से अपने आस पास के मतों का निर्णय करें बिशेष करके हिंदू मुसलमान और ईसाइयों के मत का और उन्हीं लक्षणों से अच्छी प्रकार से उनका मिलान करें फिर वुह लक्षण कि जिनसे इन मतों का निरूपण कर-सक्ते यदि चाहें तो सारे जगत के मत का इनसे निरूपण हो सक्ता है और यह समुझा चाहिये कि यहां तात्पर्य मत के बिचार का है न मतावलम्बी का क्योंकि मत का प्रमाणिक और अप्रमाणिक होना उसी पर स्थूल है न उसके आश्रितों पर * सो हमारा यह प्रश्न है कि क्या ये तीनों मत सत्य हैं अथवा इन में से एक और यदि एक है तो कौन सा है अब ये तीनों मत ईश्वरीय मत होने का बाद करते हैं इस लिये हम पक्ष को त्याग करके बड़े यत्न से उनका निरूपण करते हैं और पहिले धर्ममय कृपा निधान पालक कृपाल बिनय शील से यह बि-नती करते हैं कि अपने दास की बुद्धि को ऐसा प्रकाश करे कि इन में से सत्य मार्ग को निकाल के ऐसी ढब पर देखावे कि इस पुस्तक के पढ़नेहारे उसे अंगिकार और स्वीकार कर लेयें सो अब क्या हिंदू क्या और कोई हम सब से बिनती करते हैं कि वे यह न समझें कि हम

इस पुस्तक को बाद बिबाद की रीति पर लिखते हैं कभी नहीं परंतु केवल प्रेम और हितार्थ से और इस में यदि कोई ऐसी बात हो कि किसी के मन में खेद उपजे तो हमारी सुअभिप्राय और शुभ चिंतन को समझ के उसे क्षमा करे और केवल दो चार शब्द अथवा पद अथवा पृष्ट अथवा पत्रे को देख कर झगड़ा न करने लगें परंतु पुस्तक आदि से अंत तक बनाने की अभिप्राय को परमेश्वर की डर संयुक्त अच्छी रीति से सोचे और परमेश्वर सब पर अपना ऐसा अनुग्रह करे कि जितने मत जो उस की ओर से नहीं उन्हें सब छोड़ देवें और यह न समझें कि ये मत उनके पुरखे लोगों के थे क्योंकि मत परमेश्वर का है न कि पुरखे लोगों का और कोई किसी के संग न आया न किसी के संग जायगा और न वहां कोई किसी के काम आवेगा परंतु अपना धर्म ही अपने संग जावेगा और सच्चा मत ही काम आवेगा क्योंकि यह बात प्रत्यक्ष हैं कि जो मार्ग परमेश्वर की ओर से है वही परमेश्वर लों पहुंचावेगा नित्यता लों उस का महातम और उसके अनुग्रह से सब का उद्धार होवे।

ऊपर के लक्षणों से हिंदू धर्म की परीक्षा।

प्रथम खंड।

पहिला अध्याय।

हिंदू धर्म के पुस्तक चार वेद और चार उपवेद और छः वेदांग और चार उपांग हैं पर उनमें चार वेद और छः शास्त्र और अठारह पुराण प्रसिद्ध हैं सो अब उन पुस्तकों की बातें ऊपर के लक्षणों से परखी जाती हैं पहिले यह समझना चाहिये कि उन पुस्तकों से परमेश्वर दो प्रकार का जाना जाता है एक निर्गुण दूसरा सगुण निर्गुण शब्द का अर्थ यह है कि जिसको गुण नहीं है और परमेश्वर जब निर्गुण रहता कि सृष्टि नहीं रहती उस दशा का कुछ वर्णन है नहीं वुह तो मानो निद्रा की ऐसी दशा है उसमें उसे कुछ कहा नहीं जाता कि पवित्र है अथवा अपवित्र सच्चा है अथवा झूठा सामर्थी है अथवा असामर्थी सज्ञान है अथवा अज्ञान क्योंकि सर्वथा निर्गुण है और इसी कारण से वुह ब्रह्म कहलाता है अर्थात न पुरुष लिंग न स्त्री लिंग परंतु नपुंसक लिंग है।

सो इन पुस्तकों की रीति से परमेश्वर सगुण उस दशा में होता जब उसको सृष्टि रचने की इच्छा होती है और उसमें माया उपजती और अहंकार समा जाता तब तीन गुण अर्थात सत रज तम उपजते और उन करके सृष्टि उत्पन्न होती और वुह सब बस्तुन में व्यापक हो जाता है अर्थात दूध पानी की नाईं सब में मिल जाता है जैसे वेद में लिखा है कि सृष्टि होने के समय परमेश्वर कहता है एकोहंवड़स्यां * अर्थात एक मैं हूं बड़त हो जाऊंगा * फिर वेद में लिखा है (१) कि वही किसान होके भूमि को जोतता बोता और जल बन कर उसे सींचता है और अन्न होकर सबका उदर भरता है सत्य और असत्य उसी से है।

सत असत्य दोऊ जासे हैं।
फिर इनके निर्णय कासे हैं॥

अथर्व्वन वेद के मंडुक उपनिषद में यह बर्णन है कि अग्नि उसका सिर और सूर्य चन्द्रमा उसके नेत्र और दसो दिशा उसके श्रवण और वेद उसकी बाणी और बायु उसका श्वास और संसार उसकी बुद्धि पृथिवी उसके चरण और सारी सृष्टि का जीव वही है वही आप सब कुछ है और भलाई बुराई का प्रतिफल देनेहारा और

---

(१) साम वेद के अरण्य गान में।

भुगतनेहारा भी वही है * वुह मनुष्यों और देवताओं और होम बलिदानों में बास करता है वुह गगन पंथ में गमन करता और जल में मीन बन के उत्पन्न होता है भूमि पर तृण होके उपजता पर्वतों से सोते होके बहता है होम और बलिदान का अंग वही है तथापि वुह महा पवित्र और अति महान है (१) जैसे इन ऋचाओं अरु और बहुत ठौरों में लिखा है।

अग्निर्मुर्धाचक्षुषी चंद्र सूर्यौ
बिदिशःश्रोत्रेवाग्विवृत्ताश्चवेदाः
वायुःप्राणो हृदयं बिश्वस्यपद्भ्यां
पृथिवीह्येष सर्वभूतांतरात्मा

फिर यह ऋचा है पुरुष एवेदं बिश्वं
कर्म तपो ब्रह्म परामृतं

फिर यह ऋचा है प्राणो ह्येष सर्वभुजैर्विभाती
बिजानन् बिद्वान् भवतेनातिबादी

फेर यह कठोपनिषद में लिखा है।

हंसःशुचिषत् बसुरंतरिक्षद्धोता बेदिष दति
थिर्दुरोण सत् ॥ नृषद्वर सदृत सद्योमसद
ज्जागोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत

और बशिष्ठ ने भी कहा है ॥ एतस्मात्सर्बगाद्देवात्सर्बशक्तेर्म-
हात्मनः बिभाग कल्पना शक्तिर्लहरी बोत्थितास्मसः

---

(१) यजुवद के कथक उपनिषद में।

अर्थात ईश्वर से जो सर्वव्यापी सर्व शक्तिमान परमात्मा है एक शक्ति निकलती है जो बिभाग होने के योग्य है जैसे समुद्र से तरंग फेर वेद में भी लिखा है।

एको देवःसर्व्वभूता नामन्तरात्मा ।

और देवदास ने भी कहा है

एकएव तथाजीवेश्वरः ब्रह्मेति एकमेववस्तु

जीव और ईश्वर एक है अर्थात सर्व वस्तु ब्रह्म ही है* सो इस बिषय में उन पुस्तकों से और बातों के संग्रह करने का कुछ प्रयोजन नहीं है क्योंकि वेद शास्त्र पुराण का सारार्थ यही है कि।

एकमेवा द्वितीयं ब्रह्मनेह नानास्तिकिंचन ।

अर्थात एक अद्वैत ब्रह्म है उसके परे और कुछ नहीं निदान उन पुस्तकों के समान ईश्वर जो निर्गुण है उसका कुछ बर्णनही नहीं।

कुछ बर्णन जाको कुछ नहिं चिन्हा।
ऐसा ईश्वर इन सब किन्हा ॥

और सर्गुण होके सर्व जीव वही है सो उसके गुण के बिचार करने के समय यह सोचा चाहिये कि जब वुह सर्गुण होता है तो उसमें कैसे कैसे गुण पाये जाते हैं।

पहिले परमेश्वर पवित्र है (१) उन पुस्तकों के बहुत ठौरों में लिखा है कि परमेश्वर पवित्र है।

---

(१) देखो ३ पृष्ठ में

अति पवित्र वुह हैं करतारा।
यामें नहिं कछु सोच बिचारा॥

जैसे उपनिषद में भी लिखा है जिसका बर्णन ऊपर ऊआ और जब कि वुह केवल सगुण होने की दशा में जाना जाता है तो बिचार किया चाहिये कि वुह उस दशा में पवित्र ठहरता है अथवा नहीं पर जब कि वुह सगुण ऊआ और सर्ब व्यापक होके सर्ब बस्तुन का कर्त्ता ठहरा तो उसकी पवित्रता का ठहराना कठिन समझ पड़ता है भला अब इस बात में यह समझा चाहिये कि उन पुस्तकों से वुह सगुण होके पहिले त्रदेव बना तो त्रदेव में होके वुह पवित्र ठहरता है अथवा नहीं क्योंकि जो उनमें होके जो सबके स्वामी कहलाते हैं पवित्र न ठहरे तो किसमें हो के पवित्र ठहरेगा।

त्रदेव के बिषय में कि इन में कौन श्रेष्ठ है हिंदूशास्त्र में बड़ा बादबिवाद है परंतु बऊतेरे पहिले ब्रह्मा को ठहराते हैं फिर बिष्णु को तब महेश को।

१ ब्रह्मा * कहो वुह पवित्र है अथवा नहीं चंडी पाठ के लिखे ऊए के समान उसकी मूर्त्ति रक्त बर्ण बनाते हैं इस कारण कि उसमें रजो गुण भरा है पुराणों में लिखा है कि वुह सदा मद पान करता था एक दिन मतवाला होके अपनी कन्या पर कु दृष्टि से देखा और मत्स्य पुराण में लिखा है कि उसको अपनी पत्नी बनाके देवताओं के

सहस्र बरष लों उस्से भोग किया अरु और पुराणों में लिखा है कि उसी अपराध से उसका सिर भी कटा फिर शिव और पार्बती के बिवाह में वुह सबके साम्ने लज्जा छोड़ के कामातुर हुआ दूसरे पुराण में लिखा है कि वुह अपने कुकर्मों से शापित हुआ और उसकी पूजा सर्बत्र से उठ गई फिर उसे पवित्र कौन कह सक्ता है और साख सार में लिखा है कि ब्रह्म लोक अपवित्र है और उसके सारे बासी भी अपवित्र हैं क्योंकि वे मृत्यु और तीनों गुण के आधीन हैं

२ बिष्णु * पद्म पुराण में लिखा है कि उसने जलंधर दैत्य का रूप धरके उसकी स्त्री पास गया और छल करके उस्से प्रसंग किया फिर वुह एक और पतिब्रता स्त्री के भ्रष्ट करने के लिये एक वृक्ष बना और एक समय असुरों को धोखा देने के लिये एक सुंदर स्त्री का रूप धारण किया और मोहनी बन के शिव को ठगा।

बिश्वबिमोहनि रूप बनाई।
ठगे शिवहि अति मनचितलाई॥

३ महादेव * अपने बिवाह में नग्न होके बैल पर चढ़ा और पारवती को संग लेके काम रूप एक ग्राम में गया शिव पुर ग्राम में एक बेश्या रहती थी महादेव भीख मांगते २ उसके घर गया और उसे फुसला पघिला के उसके संग कुकर्म किया इस लिये पार्बती ने अनखा के

उसे बक़्त सा दुर्बचन और कटु बचन कहा फिर उसने माया रूपी मोहनी से कहा कि यदि मैं तुझ से एक बार प्रसंग करूं तो अपनी सारी तपस्या का फल तुझे दूं और वुह एक समय अत्रि मुनि की तपस्या भंग करने के लिये उसके साम्ने जाके नग्न हो नाचने लगा लिखा है कि उसी मुनि के श्राप से उसका लिंग अंगर के गिर पड़ा।

दूदेव की यह बात हिंदूओं में बिदित है कि अत्रिमुनि की स्त्री अनसुइया सब स्त्रियों में बड़ी पतिब्रता थी सो उसके भ्रष्ट करने के लिये ब्रह्मा बिष्णु महेश ने भिखारी का रूप धारण करके उसके द्वारे जा भिक्षा मांगा जब वुह भिक्षा लेके द्वार पर आ उन्हें देने लगी तो वे बोले कि हम यह भिक्षा न लेंगे हम भूखे हैं यदि तुम हमें घर में ले चलके नग्न होके भोजन कराओ तो हम ठहरें नहीं तो चले जाते हैं तब अनसुइया ने अपने पति के पास जा सारा वृत्तांत कह सुनाया और उस्से आज्ञा पाके उन्हें भोजन कराने को अपने गृह भीतर लेगई जब वे जेवन बैठे तो अनसुइया ने क्या किया कि जल लेके उन तीनों पर छिड़क दिया और जलके पड़तेही वे छोटे छोटे बालक बन गये तब वे लज्जित हो सिर नीचे कर भोजन करने लगे जब खा पी चुके तो अनसुइयाने उन्हें ले जाके पालने में सोलाया यह समाचार जब नारद ने पाया तो उनकी स्त्रियों से जाके कहा वे सुनके हड़बड़ा उठीं और झटपट अनसुइया पास दौड़ी आईं और

अपने अपने पतियें के लिये उस्से गिड़गिड़ाने और बिनती करने लगीं उसने उन्हें कहा कि अपने २ पतियें को पहिचान के लेजाओ वे जब लेने गईं तो देखा कि तीनों बालक एकही रूप हैं तो अत्यंत चकित और अचंभित ऊईं।

ऐसी ऐसी बातें के बिचार करने से ठीक समझ पड़ता है कि परमेश्वर हिंदू धर्म की रीति से ब्रह्मा विष्णु महेश होके पवित्र नहीं ठहरता और हम इतने ही पर समाप्त कर सक्ते क्योंकि जब येही पवित्र न ठहरे जो सब से उत्तम और श्रेष्ठ और सबके सृजनहार कहलाते हैं तो फिर कौन पवित्र ठहर सकेगा जब राजा में ऐसा तो प्रजा में कैसा पर सबके बोध ज्ञान के लिये उनके दो एक श्रेष्ठ अवतारों का भी बर्णन करते हैं।

४ राम जो दसरथ का पुत्र था और बड़े अवतारों में गिना जाता है वुह लड़ने और हत्या करने और ब्राह्मणों के मारने और अपनी स्त्री को रावण के हर ले जाने के पीछे फिर स्वीकार करने से ऐसा अशुद्ध और अपवित्र ठहरा कि अयोध्या के लोगों के संग खाने पीने से रहित ऊआ इस लिये उसे प्रायश्चित करना पड़ा।

५ कृष्ण के विषय में जो कितने शास्त्रों से पूरण ब्रह्म का अवतार है और बिष्णु भी कहलाता है भागवत में लिखा है कि उसने गोकुल गांव की स्त्रियें से उनके पति अच्छत ही कुकर्म किया।

गोपीनामधरसुधारसस्य पानैरुत्तुङ्गस्तनकलशो परिगूहनैश्च आश्चर्य्यैरपि रतविभ्रमैर्मुरारेः संसारे मतिरभवत्प्रहर्षिणीह।

अर्थात् गोपियों के अधरामृत रस के पान और उतंग स्थन् कलशों के आलिंगन और रति केलि के अद्भुत बिलास से इस संसार में मुरारि का मन अत्यंत हर्षित हुआ और भी गीता में देखो।

गोविंदो वल्लवीनामधररससुधां प्राप्य सुरासां इत्यादि

अर्थात् गोविंद ने गोपियों के अधरामृत को पाया फिर जब सब ब्रजबाला मिल कर यमुना नहाने गईं तो वुह उनकी चीरों का पोटला उठा ले जाके कदम पर चढ़ गया और उन्हें जलके बाहर नंगी अपने साम्ने खड़ी किया यह बात हिंदुओं में प्रसिद्ध है बर्णन करने का कुछ प्रयोजन नहीं वहां के लोग आजलों उस वृक्ष की बड़ाई कर करके यात्री लोगों को उसका दर्शन कराते हैं फिर उसने भीमसेन से लड़ाई किई जिसतें डंडा राजा की घोड़ी को लेय जो रात्रि समय सुंदर स्त्री बन जाती थी पर न ले सका और अैनघोष वैश्य की स्त्री राधा को जिस भांति से निकाल लाया सब जानते हैं और ब्रह्म वैवर्त्त पुराण के कृष्ण जन्म खंड में लिखा है कि उसके अवतार लेने की अभिप्राय राधाहीं के स्नेह से थी सो इन बातों के साम्ने शास्त्रों से और बातों का संग्रह करना

कुछ आवश्यक नहीं क्योंकि उन्हीं से जान पड़ता है कि हिंदुओं के मत से परमेश्वर पवित्र नहीं और वे जो कहते हैं कि सामर्थी को कुछ दोष नहीं उनका उत्तर हम आगे देंगे।

दूसरे परमेश्वर न्यायी है (१) सो अब हम परमेश्वर के इस गुण से हिंदुओं की मत को परखते हैं।

१ ब्रह्मा के बिषय में लिखा है कि जब कृष्ण बन में गाय चराता था तो वुह आके गाय और बछड़े को चुरा ले गया (२)।

बछड़ा गाय चोरावन हारा।
सोऊ ठहरा जग करतारा॥
ऐसो बचन सुने को भाई।
छुटत हंसो मोहि रहो न जाई॥

२ बिष्णु के बिषय में लिखा है कि उसने समुद्र मथने के समय असुरों को अमृत देने की प्रतिज्ञा किई परंतु जब एक असुर को अमृत पीते देखा तो चक्र से उसका सिर काट डाला और अमृत की संती उसे मृत्यु का रस घोल पिलाया मत्स्य पुराण में लिखा है कि भृगुमुनि की स्त्री की तपस्या भंग करने के लिये उसका भी सीर काट डाला उस समय भृगु ने उसे श्राप दिया कि जा तुझे पृथिवी पर सात बार जन्म लेना पड़े।

---

(१) देखो ३ पृष्ट में (२) भागवत के दसमस्कंध में देखो।

भृगु ने शाप दियो रिसिआई।
सात बार जन्मसि जग जाई॥
मनुजशाप जेहि ऊपर लागे।
ताकह ईश्वर कहहिं अभागे॥

३ महादेव के बिषय में * वुह अपने लड़के बालों को भूखों मरते छोड़ कर बेश्या के संग रहता था फिर जब शनैश्वर ने बिनु अपराध उसके पुत्र गणेश का सिर जलाकर भस्म किया तो उसने उसकी कुछ सहायता न किई और उसके बदले लेने में अपनी कुछ न्याय न दिखलाई महाभारथ के सूपतक पर्ब्ब में लिखा है कि कुरुक्षेत्र की लड़ाई के पश्चात जब युधिष्ठिर और उसके संगी जो रण से बच निकले थे अपने डेरे को आये तो महादेव ने रात भर उनकी रखवारी करने की बरिया बांधी पर जब अश्वत्थामा ने जो दुर्य्योधन की सेना में का था महादेव को जाके फुसलाया पघिलाया तो उसने उन्हें मारने दिया बरन उस कर्तव्य के लिये अपना खड्ग भी उसे दिया।

४ राम के बिषय में लिखा है कि उसने बालि को बिनु अपराध मार डाला और उसका राज्य लेके उसके भाई सुग्रीव को दिया।

धर्म हेतु अवतरेउ गोसाईं।
मारेउ मोहि ब्याधा की नाईं॥

एक समय की यह बात है कि वुह अपने मंदिर में

काल पुरुष से बार्त्ता करता था और लच्मण द्वार पर था इतने में ऋषि दुर्वसा आया तो लच्मण ने उसे भीतर जाने दिया इस लिये राम ने क्रोधित होके अपने भाई को त्यागन किया तब लच्मण शोक के मारे जाके सरयू नदी में डूब मरा * इसके पीछे राम ने भी उसी प्रकार से अपने प्राण को घात किया।

डूबे अनुजत जेतन आयू।
इहै कहावत शोक संतायू॥
चिंता शोक ग्रसे जेहि आई।
सो कैसो ईश्वर है भाई॥

५ न्याय का गुण यदि कृष्ण में ढूंढिये तो उसका पाना और भी कठिन है उसने तो बारंबार गोपियों का दूध दही माखन चुरा चुरा के खाया मानो दूधही पिता रहा फिर जब वुह कंस के मारने के लिये मथुरा को जाता था तो मार्ग में कंस का धोबी उसे मिला उसने उससे राजा के कपड़े मांगे उसने न दिया तो कृष्ण ने उस बापुरे को वहीं मारडाला फिर उस वस्त्र को पहिन किसी से फूलों की माला और किसी से चंदन लेके अपने को और अपने भाई को भली भांति से संवारा सिंगारा फिर लिखा है कि अपने सारे कुटुम्बों का नाशक हुआ हाय हाय भला जिसमें चोरी और हत्या और ऐसा अंधेर है उसमें न्याय क्योंकर पासकिये * भगवत गीता में कृष्ण

अर्जुन से कहता है कि पाप के कारण से मनुष्यों को संसार में बार बार जन्म लेना पड़ता है और उसका भोग भुगतना क्या यह न्याय है कि मनुष्य इस जन्म में पूर्व जन्म के पाप का दंड भोगे जिसे वुह तनिक नहीं जानता फिर लिखा है कि यद्यपि कोई सुकर्मी भी हो जो वुह जाड़े के कृष्ण पक्ष में मरे तो फिरके उसे जन्म लेना पड़ेगा पर जो गरमी के शुक्ल पक्ष में मरे तो वुह मोक्ष पद पावेगा ऐसे न्याय पर हाय है

यह नहीं न्याय कहावे बंधो
यह तो अति अंधेर को धंधो
तम प्रकाश एकसम नहिं होई
सुधा गरल कह कहै न कोई

सो हिंदू की मत की रीति से परमेश्वर का न्यायी होना नहीं ठहर सक्ता

तीसरे परमेश्वर दयाल है (१) कितने शास्त्रों में ब्रह्मा सृष्टि कर्त्ता कहलाता है सो जो वुह सृष्टि कर्त्ता है तो उसे चाहता था कि संसार पर अपनी दया प्रगट करता पर शास्त्र और पुराण में इसका पता नहीं लगता परंतु इसके बिरुद्ध वुह तो सर्वथा अपने ऐसे वैसे काम काजों में लिप्त रहा *

किये न कछू जगत हित लागी
निज स्वारथहि रहे रस पागी

(१) देखो ३ पृष्ट में

सो ठहरो कस सृजन हारा
यह तो बड़ अजगुत व्यवहारा

सच मुच रजो गुण ऐसाही है बिष्णु जगत का पालन कर्त्ता कहलाता है पर बिचार करने से जाना जाता है कि वुह केवल देवताओं ग्रैार गैाब्राह्मणों का रक्षा करने हारा था किसी दूसरे का नहीं उसने दीन मलीनों के बचने के लिये कुछ उपाय न किया परंतु यह कहा कि जो जैसा करेगा सो तैसा पावेगा ग्रैार उन्हें ऐसाही दुर्गति ग्रैार दुर्दशा में छोड़ दिया

छोड़ेउ दुर्गति मह सब लोगू
यह नहिं अहै दया के जोगू

महादेव जगत का संघार कर्त्ता कहलाता है उस में दया किस प्रकार से ठहरे ग्रैार यह तो उसकी सारी बातों से प्रगट है देखो उसने अपने लड़के बालों को भूखों मरने दिया ग्रैार उनकी सुधि न लिई फिर अपने पुत्र गणेश की कुछ सहायता न किई ग्रैार उसके सिर को शनैश्चर की दृष्टि से भस्म होजाने दिया (१) पद्म पुराण में लिखा है कि उसने आप अपने पुत्र का मस्तक काट डाला सो कहो उसमें दया कहां

---

(१) कथा पुराणों में लिखा है कि शनैश्चर अपने ध्यान तपस्या में ऐसा लवलीन था कि अपनी स्त्री से कुछ प्रयोजन न रखता था वुह एक दिन उस पास गई ग्रैार चाहा कि उसे रमे पर शनै-

निज सुत सिर काटे जो कोई
कहो सो दयावंत किमि होई
यह तो कर्म बधिक कर अहई
तम को देवस कहो को कहई

लिखा है कि राम कृष्ण पापियों पर अनुग्रह करने को नहीं आये परंतु उन्हें बधन करने के लिये राम ने जब बिन अपराध बालि को मारडाला और अपने भाई लक्ष्मण को निर्मोही होके त्याग दिया तो उसमें दया कहां रही

तजै बंधु जो बिनु अपराधू
दयावंत तेहि गनहिं न साधू
बधिकऊ कऊं दया जुत होहीं
सुनि अति अचरज लागत मोहीं

कृष्ण के बिषय में लिखा है कि उसने कंस के धोबी को बिन अपराध मारडाला और बड़ी लड़ाइयां जो महा भारथ में लिखी हैं उसी ने करवाया और लाखों मनुष्यों को काटवया और कितने देशों को सत्यानाश करवा

श्वर ने उसकी ओर ताका भी नहीं तब उसने क्रोधित होके उसे श्राप दिया कि जा जिसे तू देखें उसका सिर भस्म हो जावे बिपत का मारा गणेश कहीं सामने आन पड़ा उसके देखते ही गणेश का सिर भस्मंत हो गया

डाला सो जिसकी मति अंधी होगी वुह उसे इस अंधेर करने पर दयाल समझेगा * फिर कुरुक्षेत्र की लड़ाई में जब कर्ण की रथ का पहिया रेती में धसगया ते। अर्जुन ने उसके मारने का बिचार मन में किया इतने में कर्ण पुकार उठा कि हे अर्जुन ऐसी आरत समय में मारना क्षत्री का धर्म नहीं यह सुन कर अर्जुन थम रहा पर कृष्ण ने उसे उभार के कर्ण को मरवाया फिर उसने अपने ममेरे भाई शिशुपाल को गारी देने की संती मारडाला * सो हिंदू मत से परमेश्वर का दयाल होना भी नहीं ठहरता

चैाथे परमेश्वर अंतर्जामी श्रीर सर्बज्ञ है (१) जाना जाता है कि यह गुण भी उनके इष्टदेव श्रीर बड़े अवतारों में नहीं है इस लिये उसके बर्णन का कुछ प्रयोजन नहीं पर हिंदुओं के समझने के लिये कुछ थोड़ा सा बर्णन किया जाता है बेद शास्त्र श्रीर पुराण ब्रह्मा बिष्णु महेश अथवा उनके भक्तों के बनाये हुए हैं हां बहुतेरे कहते हैं कि चार वेद ब्रह्मा ने अपने चार मुख से प्रचारा है उन पुस्तकों में स्वर्ग श्रीर आकाश की अरु श्रीर बस्तुन के बिषय की बहुत सी बातें ऐसी बिरुद्ध हैं कि उनसे निश्चय समझ पड़ता है कि उन पुस्तकों का कारक अंतर्जामी परमेश्वर नहीं सो इसका बर्णन आगे होगा फिर उनका अंतर्जामी श्रीर सर्बज्ञ होना क्योंकर ठहरता है कि उनमें से कोई ते। अपने कुटुम्ब की स्त्री श्रीर कोई

---

(१) देखो ३ पृष्ट में

पराई की स्त्रियों से कुकर्म और व्यभिचार करके काम क्रोध लोभ मोह में फंस के अज्ञानी बने जैसा ऊपर की बातों से निश्चित ऊआ * स्कंध पुराण में लिखा है कि जब मुनि की श्राप से शिव का लिंग गिर पड़ा तो वुह इतना बढ़ा कि सारी पृथिवी और आकाश में छा रहा ब्रह्मा बिष्णु कोई उसके सिरे को न जान सके कि कहांतक है निदान एक पाताल को गया दूसरा आकाश को तिसपर भी किसी ने उसका अंत न पाया उसी पुराण के दूसरे ठौर में लिखा है कि समुद्र के मथने के समय जब कि अ· सुर अमृत पी रहे थे तो जब लों सूर्य और चंद्रमा ने बिष्णु को उसका संदेश न दिया तब लों उसने न जाना फिर लिखा है कि महा प्रलय के समय वेद जल में डूब गया और वेद के बिन देखे ईश्वर सृष्टि को न सृज सक्ता था इस लिये मच्छ का अवतार लिया और सहस्त्रों बरस में ढूंढ़ ढांढ़ कर उसे पाया और अपना काम चलाया सो ऐसी २ बातों से ठीक समझा जाता है कि वे अंत र्जामी और सर्बज्ञानी कभी नहीं ठहर सक्ते

राम में भी यह गुण नहीं ठहर सक्ता क्योंकि जब वुह दंडक बन में गया तो नहीं जानता था कि अगस्ति मुनि का स्थान कहां है इस लिये सुतक्षणा से पूछा (१) जब रावण सीता को हर ले गया तो उसने न जाना कि उसे

(१) देखो बालमीक के अरण्य कांड के सुरस सरगः में

कौन कहां ले गया श्रीर जब हनुमान ने उसे ला सीता का संदेश दिया तोभी उसने अपनी स्त्री का मर्म न जाना कि उसका धर्म बचा है कि नहीं जब रावण से संग्राम होता था तो हनुमान श्रीर अंगदादि सब बानर से उसे सारा समाचार मिला करता था फिर जब रावण मरगया श्रीर उसकी रानी मंदोदरी रोदन करती राम के पास आई तो उसने उसका वृत्तांत न जाना परंतु उसे बर दिया कि जा तेरा अहिवात अचल रहे यह सब बात रामायण में लिखी हैं

कृष्ण का भी अंतर्जामी होना नहीं ठहरता क्योंकि एक समय राजा साल ने उसे धोखा देके कहा कि मैंने तेरे पिता बसुदेव को बंदी गृह में डाल रखा है

अंतर्जामी वुह फिर कैसा
धोखा खाय जो मूरख ऐसा

यह बात सुनते ही वुह बिलख बिलख रोने लगा श्रीर बड़ाही खेद किया बिचार किया चाहिये कि यदि वुह अंतर्जामी होता तो ऐसा धोखा क्यों खाता श्रीर बिलख बिलख के क्यों रोता फेर महाभारथ में लिखा है कि कृष्ण आप अंगद के बाण से बिसभोरी में मारा गया

पांचवें परमेश्वर सत्य है(१) और जो कुछ कहता है सब सत्य है सो बिचार करने से सत गुण भी ट्रदेव और दोनों श्रेष्ट अवतारों में न ठहरेगा क्योंकि जब ब्रह्मा और विष्णु शिव के लिंग के अंत का ठेकाना लगाने गये और न लगाये तो ब्रह्मा ने लज्जित होके कामधेनु गौ और केतुकी से एक मत किया जिसतें वे उसके लिये झूठी साची देवें फिर वुह आप तीन बार मिथ्या बोला कि मैं ने शिव के लिंग का ठेकाना लगाया उसी असत्य के कारण देवताओं ने उसे श्राप दिया और वामन पुराण में लिखा है कि इसी अपराध के लिये उसकी पूजा संसार से उठगई

२ बिष्णु ने ऋषि उद्दालक को छलके उसका व्याह अगवायु से करवाया जिसतें लच्मी को श्राप लेवे पद्म पराण में लिखा है कि उसने जलंधर दैत्य का रूप धारण करके उसकी स्त्री का सत्य भंग किया और विष्णु पुराण में लिखा है कि समुद्र मथने के समय दैत्यों से झूठा ठहरा फिर उसका एक अवतार अर्थात वामन का छल ही देने के कारण हुआ जिसने राजा बलि को छला

वामन होय छला बलि जाई
तेहि ईश्वर कहें नर बौराई
छल की बात छली में होई
ईश्वर मह छल कहे न कोई

(१) देखो ४ पृष्ट में

३ शिव ने अंजनी से छल किया कि उसे अपने पास बुला के मंत्र देने के धोखे से अपना वीर्य्य उसके कान में डाल दिया

४ राम (१) जब रावण की बहिन शूर्पणखा अपना बिवाह उस्से करने चाहती थी तो उसने उसे कहा कि तू मेरे भाई लक्ष्मण पास जा कि * अकृतदारः अर्थात न किया उसने बिवाह मेरा तो व्याह हो चुका है यद्यपि लक्ष्मण का भी व्याह हो चुका था और उसने बिटप के ओट खड़े होके बालि को वाण से मारा फिर मंदोदरी जो रांड थी उसे कहा कि जा तेरा अहिवात अचल रहे यद्यपि वुह बिधवा हो चुकी थी

५ कृष्ण ने राजा युधिष्ठिर से झूठ बोलवाया इसी कारण उसकी एक अंगुली गलगई और उसे नरक बिलोकना पड़ा फिर महाभारथ में कृष्ण के बिषय में यह बात है कि जब उसकी आंख राधा से लगी तो एक दिन उसकी ननद अयन घोष की बहिन ने उन दोनों को रति केलि करते एक ठौर पाया इस लिये राधा बड़ी भयमान हुई और कृष्ण से बोली कि वुह मेरे पति से यह सब बात कह देगी और वुह आके मुझे मारडालेगा कृष्ण ने उसे कहा कि तुम मत डरो कदाचित वुह आ-

---

(१) बालमीक की रामायण के अरण्य कांड के पचीसवें सरगः में

वेगा ते मैं काली बनजाऊंगा और तुम मेरी पूजा कर ने लगियो इस यत्न से बच जाओगी निदान उसकी ननद ने अपने भाई से सारी बातें जा कहा जब अयनघोष आया ते उन दोनें को वैसाही पाया किवुह कालीबन बैठा है और राधा उसकी पूजा कर रही है सो आज लें उन चारें की चार प्रतिमा बनती हैं एकक्षष्णकाली दूसरी राधा तीसरा अयन घोष चैाथो कोटला कहलाती है हाय हाय भला ऐसे व्यभिचारी और कपट रूपी में कहीं सचाई हो सक्ती है

वेद शास्त्र और पुराण कितनी बातें के बिषय परस्पर बिरुद्वता रखते हैं और पृथिवी आकाश का भीसमाचार ठीक नहीं बतलाते

पहिले उत्पत्ति ही के बिषय में बड़ी बिरुद्वता ठहरती है

१ ऋग्वेद के ऐतरियः अरण्य में लिखा है कि आदि में यह संसार केवल आत्मा था और उसके परे चल अरु अचल कुछ न था उसने बिचार किया कि मैं सृष्टि रचों सो भांति भांति की सृष्टि रची जल ज्योति जीवधारी इत्यादि फिर उसने बिचार किया कि अब मैं इस सृष्टि का रखवाला उत्पन्न करें सो उसने एक पुरुष को जल में से निकाला और उसकी ओर ध्यान से देखा तब उस का मुख अंडा सा खुल गया और मुख से एक शब्द निकला और शब्द से आग उत्पन्न ऊई फिर उसके नथुने खुल

गये और नथुने से श्वास आने जाने लगे और श्वास से आकाश बन गया फिर नेत्र खुल गये और नेत्र से ज्योति और ज्योति से सूर्य बना इसके पीछे श्रवण खुले और श्रवण से सुन्ने की शक्ति और उस शक्ति से चारों कोण का बिस्तार हुआ फिर चर्म बढ़ा और उस चर्म पर बाल जम आये और बाल से घास पात दृच्चादि उत्पन्न हुये तब छाती खुल गई और छाति से बुद्धि और बुद्धि से चंद्रमा बना फिर नाभि खुली और नाभि से अपान हुआ और उस्से मृत्यु उत्पन्न हुई इसके पश्चात लिंग खुला और उस्से वीर्य्य निकला जिस्से जल बना इसके अधिक और भी बर्णन है फिर वुह मन में बिचार करने लगा कि यह पुरुष मुझ बिन कैसे रह सकेगा मैं इस में कि घर से प्रवेश करों इसके उपरांत वुह उस की सीमन अर्थात खोपड़ी की धारी से समागया इस लिये वुह धारी विदरती कहलाती है और वही नंदन का मार्ग है पुरुष जब अपना बीर्य्य स्त्री के उद्र रूपी खेत में डालता है तो उसका गर्भ रहता है फिर उत्पन्न होता है यह उसका पहिला जन्म है स्त्री उसका पालन पोषण करती है पर पिता ने उसे पहिलेहीं अपने तन में पाला था और जन्म लेने के पीछे फिर भी पालता है अर्थात उसे खाने पीने को देता और हर भांति से प्रतिपालन करता है सो वुह जो लड़के के उत्पन्न होने के पहिले और पीछे पालता है माना आप को पालता है और लड़के के उत्पन्न होने से

पिता मानो दूसरा जन्म पाता है और यह उसका दूसरा जन्म पूजे पाठके लिये उसकी ठैार पर होता है और वुह जब अपना समय पूरा कर चुकता हैं तो मर जाता है और दूसरी देह पाता है यह उसका तीसरा जन्म होता है

२ यजुर्वेद में यह लिखा है कि बिराज पुरुष से सृष्टि उत्पन्न ऊई उसका यह बर्णन है कि जब उसने दूसरे के होने की इच्छा किई तो एक पुरुष उत्पन्न ऊआ और तुरंत स्त्री पुरुष का स्वरूप एकही में बन गया फिर दोनों अलग२ होके पति पत्नी ऊए और मनुष्य की बंसावरी चली फिर स्त्री लजा के गैा बन गई और पुरुष बैल इस प्रकार से उनका भी बंश बढ़ चला तब वुह घोड़ा बन गया और यह घोड़ी और घोड़ी से गदही और घोड़े से गदहा और गदही से बकरी और गदहे से बकरा और बकरी से भेड़ी और बकरे से भेड़ा बन गये इसी प्रकार से हर भांति के जीव जंतु चूंटे चूंटी कीट पतंग इत्यादि उत्पन्न ऊए

३ उसी वेद की एक दूसरी ठैार में लिखा है कि प- हिले यह संसार जलही जल था और सृष्टि कर्त्ता पवन होके उस पर फिरता डोलता था फिर उसने भूमि को देखा और बराह का रूप धारण करके उसको थाभ लिया और बिश्वकर्मा होके उसे सुधारा सो वुह एतिथ अर्थात पृथिवी हो गई फिर उसने पृथिवी पर जो ध्यान

किया तो देवताओं और असुरों और आदित्य को बना या तब उन देवताओं ने सृष्टि कर्त्ता से कहा कि हम सृष्टि को कैसे बनावें उसने कहा कि उग्र तपस्या से जैसे मैं ने तुम्हें बनाया निदान उसने उन्हें आकाशाग्नि दिया और उसको उन्हों ने तपस्या करके बरस दिन में एक गा बनाया इसके परे और भी बर्णन है

४ मंडुक उपनिषद में लिखा है कि जैसे मकड़ी अप ना जाल उगलती और फिर निगलती है और जिस प्रकार घास पात भूमि से निकलते और फिर उसी में मिल जाते हैं और जिस भांति बाल और रोम मनुष्य की देह पर जमते हैं वैसाही सारी सृष्टि उसी अवि- नाशी से उत्पन्न होती है

मनु के शास्त्र के पहिले अध्याय में सृष्टि की उत्पत्ति का यह बर्णन है

आसी दिदंत मो भूतम प्रज्ञा तम लक्षणं। अप्र तर्क्यम बिज्ञेयं प्रसुप्तमिब सर्वतः। ततःस्वयंभूर्भगवान व्यक्तोव्यं जय न्निदं। महा भूतादि वृत्तौजाःप्रादुरासीत्त मोनुदः। योसा बतींद्रिय ग्राह्यः सूक्ष्मोव्यक्तःसनातनः। सर्बभूत मयोचिंत्यः सएब स्वयमुद्बभो। सोभिध्याय शरीरात्स्वात्सिसृक्षुर्बिबिधाः प्रजाः। अप एब ससर्जादोता सुबीज मवासृजत्। तदंडम भवद्वैमं सहस्रां शुसमप्रभं। तस्मिन् जज्ञे स्वयंब्रह्मासर्बलोक पितामहः। तस्मिन्नंडेस भगवानुषित्वा परिवत्सरं। स्वयमे

बात्मना ध्यानात्तदंडम करोद्विधा । ताभ्यांस शकलाभ्यांच दिवं भूमिंच निर्ममे । मध्येव्योम दिशश्चाष्टावपां स्थानंच शाश्वतं । सन्निवेश्यात्म मात्रासु सर्वभूतानि निर्ममे । सर्वेषांतु समानानि कर्माणिच पृथक्पृथक् । वेद शब्देभ्यएवादैापृथक संस्थाश्चनिर्ममे अग्निवायुरविभ्यस्तुत्रयम्ब्रह्मसनातनमदुदोह्यज्ञसिद्ध्यर्थमृग्यजुःसाम लक्षणम । कालांकालविभक्तीश्च नक्षत्राणि ग्रहांस्तथा सरितः सागरान् शैलान् समानि विषमाणिच । तपा वाचं रतिंचैव कामंच क्रोधमेवच । सृष्टिंस सर्जचैवेमांस्रष्टुमिच्छन्निमाः प्रजाः । कर्मणांच विवेकार्थं धर्माधर्मैाव्य वेचयत् । द्वंद्वैर योजयच्चेमाः सुखदुःखादिभिः प्रजाः यंतु कर्मणि यस्मि सन्य युक्त प्रथमं प्रभुः । लोकानांतुवि वृध्यर्थंमुख बाहू रुपादतः । ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं चापिन्य वर्त्तयत् । द्विधा कृत्वात्मनो देहमर्द्धेन पुरुषो भवत् । अर्द्धेन नारी तस्यां सविराजम सृजत् प्रभुः । पतीन् प्रजा नाम सृजन्महर्षीनादितो दश । मरिचिर अंगिरसैा पुलस्त्यं पुलहं क्रतुं । प्रचेतसं वसिष्ठंच भृगुं नारद मेवच । एते मनूंस्तुसप्तान्यानसृजन्भूरितेजसः । देवान्देव निकायांश्च महर्षीश्चामितैाजसः । यक्षो रक्षः पिशाचांश्च गंधर्वाप्सर सोसुरान् । नागान्सर्पान्सुपर्णांश्च पितृणांच पृथक गणान् विद्युतो शनिमेघांश्च रोहितेंद्र धनूंषिच । किंनरान्वानरान्मत्स्यान्विव विधांश्च विहंगमात् । पशून् मृगान्मनुष्यांश्च व्यालां श्चोभयतोदतः । कृमि कीटपतंगाश्चयूकानच्चि कमत्कुणं ।

अर्थात पहिले यह ऐसा अंधियारा था कि जिसका बर्णन नहीं होसक्ता और तर्क नहीं किया जाता जैसे निद्रा की अवस्था में तवस्वयंभू सूक्ष्म भगवान जगत प्रगट करने के लिये महातत्वादि और भूतादि रुप करके आप प्रत्यक्ष ऊआ तब ब्रह्म ने सृष्टि रचने का बिचार करके पहिले जलको सृजा और उस जल में अपना बीज डाला उस बीज से स्वर्ण के ऐसा अंडा ऊआ जो सूर्य के समान चमक रहा उस अंडे में सर्व लोक पितामह ब्रह्मा आप उत्पन्न ऊआ और उस अंडे में ब्रह्मा अपने बरस भर रहा इसके उपरांत उसने ध्यान करके उस अंडे को दो भाग कर डाला और उन दो भागों से स्वर्ग और पृथिवी को बनाया और उन दोनों के मध्य में आकाश और अष्ट दिशा और जल स्थान शब्दादिक सूक्ष्म रूप में महाभूतादिकों को संजुक्त करके उत्पन्न किया और सभों का नाम और कर्म पृथक २ कर दिया और अग्नि वायु और सूर्य तीन से ऋग यजु साम तीनों वेद को यज्ञ के सिद्धार्थ दुहा और काल और काल की बिभक्ति और नक्षत्र ग्रह इत्यादि को बनाया फिर तप और बाणी और रति और काम क्रोध इत्यादि को बनाया और सुख दुखादिक द्वंद से सृष्टि को संजुक्त किया और अपने मुख और हस्त और जांघ और पद से चारों बर्ण को उत्पन्न किया जिसतें मनुष्य का बंशबढ़े फिर वुह अपने देह को आधेआध करके स्त्री परुष बनके विराज को उत्पन्न किया इसके

पीछे दस महा ऋषि को जो प्रजापति हैं उत्पन्न किया अर्थात मरीच अत्रि अंगीरा पुलस्ति पुलह क्रत प्रचेता बशिष्ट भृगु नारद फिर सात मनु को अरु और सब देवताओं और ऋषिओं यक्ष राक्षस गंधर्व किन्नर अप्सरा पिशाच असुर नाग सुपर्ण पितर बिद्युत बज्र मेघ और नाना प्रकार के पशु पंछी और कीट पतंग इत्यादि को उत्पन्न किया।

कुर्म पुराण में सृष्टि का यह बर्णन है।

अहं नारायणो देवः पूर्वमासं नमेपुरम्। उपास्यबिपुलां निद्रां भोगि शय्यांसमाश्रितः। ततोमे सहसोत्पन्नःप्रसादान्मुनिपुंगवाः। चतुर्मुखस्ततोजातो ब्रह्मालोक पितामहः। अग्रेस सर्जवै ब्रह्मामानसानात्मनःसमान्। सनकं सनातनं चैव तथा चैव सनंदनं। ऋतुंसनत्कुमारंच पूर्बमेव प्रजापतिः ऐश्वरासक्तमनसो न सृष्टौदधिरेमतिं। तेषुवैं निरिपेक्षेषुलोक सृष्टौ प्रजापतिः। सुमोहमाययासद्योनायिनःपरमेष्ठिनः। तंबोधया मासपुतं जगन्मायोमहामुनिः। बोधितस्तेन बिश्वात्मात ताप परमंतपः। सतप्यमानो भगवान्नकिंचित् प्रत्यपद्यत। ततोदीर्घेण कालेन दुःखात्क्रोधोव्यजायत क्रोधाबिष्टस्य नेत्राभ्याम पतन्नश्रुबिंदवः भ्रुकुटी कुटिलात्तस्यललाटात्परमेष्ठिनः। समुत्पन्नो महादेवः शरण्योनीललोहितः। तमाह भगवान् ब्रह्मा सृजे माबिबिधाःप्रजाः।

अर्थात मैं नारायण देव जो हों सो सृष्टि के पहिले

था पर मेरे रहने को स्थान न था तब उनीदे होके मैं ने शेष नाग की सेज्जा बनाके सैन किया इसके पीछे मेरी दया से चतुर्मुख ब्रह्मा अकस्मात उत्पन्न हुआ जो सारे जगत का पितामह है फिर ब्रह्मा ने अपने मन से अपने सादृश पांच पुरुष को उत्पन्न किया अर्थात् सनक सनातन सनंदन रुद्र और सनतकुमार इन्होंने ईश्वरा-शक्त मन होके सृष्टि रचने को न चाहा उनको सृष्टि रच-ने में अनीच्छा देखके ब्रह्मा माया करके मोह को प्राप्त हुआ तब जगत मया महामुनि विष्णु ने अपने पुत्र ब्रह्मा को बोधित किया इसके पीछे वुह उग्र तप करने लगा परंतु तप कुछ फलित न हुआ और बहुत काल के तप करते २ उसके मन में जो खेद हुआ तो उस खेद से क्रोध उपजा और क्रोध करके नेत्रों से जल की बूंदे टपकने लगीं और भौंयें टेढ़ी हुईं और उस भौं से महादेव उत्पन्न हुआ जिसका स्वरूप निलाहट लिये लाल है ब्रह्मा ने उसे विविध भांति की सृष्टि रचने की आज्ञा दिई

फिर उसी ठौर में लिखा है कि महादेव ने सृष्टि रचने के समय बहुत से भूत प्रेत पिशाचों को उत्पन्न किये जो उत्पन्न होतेही संसार को भच्छण करने लगे यह चरित्र देखकर ब्रह्मा बड़ा बिस्मित हुआ और महादेवसे बोला

अलं प्रजाभिःसृष्टाभिरीदृशीभिः

अर्थात ऐसी सृष्टि रचने से तुम बस करो

दूसरे शास्त्रों से जाना जाता है कि काली भी सृजनहारी है जैसा लिखा है कि उसने कहा मैं आदि शक्ति होके बीज हों और बीज की शक्ति होके शिव और शिव की शक्ति होके विष्णु और विष्णु की शक्ति होके सारी सृष्टि मैंहीं हों किसी में लिखा है कि काली जो आदि शक्ति देवी है उसने तीन अंडे बनाये और तीनों से ब्रह्मा विष्णु महेश ऊए और किसी में लिखा है कि पृथिवी मधु कैतभ की लोथ से बनी है काशीखंड में लिखा है कि प्रकृति सब की सृजनहारी है हां वुह सब कुछ आपही है और विष्णु पुराण के प्रथम अंश के पहिले अध्याय में लिखा है कि विष्णु ने प्रधान और पुरुष से मिलके सृष्टि को उत्पन्न किया वरण उसी पुराण में बारंबार लिखता है कि विष्णु पुरुष और प्रधान आपही है फिर रामायण के अयोध्याकांड में दो प्रकार के बर्णन हैं जो ऊपर की बातों से बिरुद्ध हैं और अरण्यकांड के एकीसवें सरगः में लिखा है कि कश्यप की स्त्री मनुसतरूपा से चार बरण उत्पन्न ऊए ब्राह्मण उसके मुख से छत्री छाती से वैश्य जांघ से शुद्र पांव से सो अब बिचार किया चाहिये कि सृष्टि की उत्पत्ति के बर्णन तो अनेक प्रकार के हैं पर उन में सत्य कौन है

जैसे हिंदुओं के मत से ठीक नहीं जाना जाता है कि सृष्टि क्योंकर ऊई वैसाही यह भी नहीं खुलता कि उसका सृजनहार कौन है कोई ठौर तो ब्रह्मा को और कोई

ठौर विष्णु को ओर कोई ठौर काली को लिखा है और कोई ठौर से जाना जाता है कि देवते और मुनि भी उस सृष्टि के सृजने में साक्षी हैं लिंग पुराण से शिव सृजनहार ठहराता है जैसे लिखा है कि ब्रह्मांड से शिव निकला और उसकी बाईं ओर से विष्णु और लक्ष्मी और दहिनी ओर से ब्रह्मा और सरस्वती उसी में यह श्लोक है

विशुद्धो यस्ततोरुद्रःपुराणे शिव उच्यते।
शिवेन दृष्टाप्रकृतिःशैवी समभवतद्विजाः॥
सर्गादौसा गुणैर्युक्ता पुराव्याप्य जायत।
महदादिविशेषांतं बिश्वंतस्याःसमुत्थितं॥

अर्थात जब शिवन ने प्रकृति को जो सृष्टि के पहिले गुण संयुक्त सूक्ष्म थी देखा तो वुह शिव सामर्थ धारण करके महातत्वादि को उत्पन्न करती भई

ब्रह्म बैवर्त्त पुराण के ब्रह्म खंड से जाना जाता है कि कृष्ण सृष्टि कर्त्ता है कि उसकी दहिनी ओर से विष्णु और बाईं ओर से शिव और नाभि से ब्रह्मा उत्पन्न हुए और इन तीनों ने उसकी पूजा किई *

---

* हम जानते हैं कि सृष्टिकर्त्ता और सृष्टि की उत्पत्ति के बिषय में जो २ बिपरीत बर्णन शास्त्र और पुराणों में लिखे हैं उन्हें पंडित लोग कहते हैं कि यह और २ कल्पों अरु और २ मन्वन्तरों के बिषय के हैं सो हम पूछते हैं कि भला इस जगत का बर्णन कहां है अचंभे

दूसरे सृष्टि कथा और ज्योतिष और भूगोल विद्या इत्यादि के बिषय बेद शास्त्र और पुराणों में बड़ी भूल चूक है जैसे उन में लिखा है कि सुमेरु गिरि पृथिवी के मध्य में है और तीन लक्ष क्रोश उसकी उंचाई और चौसठ सहस्र क्रोश उसकी जड़ की मोटाई और एकसौ अट्ठाईस क्रोश उसके शृंग की चौड़ाई और उसके ऊपर विष्णु शिव इंद्र अरु और देवताओं का स्थान है और उसके आस पास और भी कितने पर्बत हैं जिनके ऊपर एक वृक्ष चार चार सहस्र चार चार सौ क्रोश के ऊंचे हैं

की बात है कि जिस सृष्टि में हम सब रहते हैं उसका वृत्तांत किसी शास्त्र पुराण में हुई नहीं फिर कल्पों और मन्नन्तरों की बातें बि- और पुरुषों के साम्हने मान्ने कें योग्य कब ठहर सक्ती हैं कि पुराणों में लिखा है कि प्रथम अर्थात स्वयंभू के मन्नन्तर में प्रियावर्त्त के बंश पृथिवी के राजा थे और उसके भाई उत्तानपाद के बंश दूसरे अर्थात स्वारोचिश के मन्नन्तर में थे फिर लिखा है कि दक्ष जो उत्तानपाद के बंश में था उसने सातवां अर्थात वैवस्वता के मन्नन्तर में अपनी पुत्री कश्यप से ब्याह दिई जाना चाहिये कि शास्त्र की बातों से चार युग मिलके एक महायुग कहलाता है और सहस्र महा युग का एक कल्प होता है और एक कल्प में चौदह मन्नन्तर होते हैं फिर कब हो सक्ता है कि दो भाई में से एक के बेटे पहिले मन्नन्तर में और दूसरे भाई के बेटे दूसरे मन्नन्तर में राज्य करें और दक्ष अपनी बेटी सातवें अर्थात अब के मन्नन्तर में कश्यप से ब्याहे

पर बड़े अचंभे की बात है कि सारी पृथिवी का समाचार तो अन्वेषण किया गया पर उस पर्बत और उन वृक्षों का कहीं पता ही नहीं लगता

फिर लिखा है कि उस पर्बत की जड़ चौसठ सहस्र कोश भूमि के नीचे गई है पर भूगोल बिद्या से ठीक जाना जाता है कि पृथिवी का व्यास चार सहस्र कोश से भी कुछ कम है * फिर जब यह पर्बत ही कहीं नहीं ठहरता तो बैकुंठ और ब्रह्मलोकादि कहां

फिर मारकंडेय पुराण और श्री भागवत में लिखा है

क्षारोदे क्षुरसोद सुरोदघृतोद क्षीरोददधि
मंडोदशुद्धोदाः सप्तसिंधवः परितउपकल्पिताः।

अर्थात खारे जल और ऊख रस और मदिरा और घृत और दुग्ध और छाछ और मिष्ट जल के ये सात समुद्र सुमेर के चारों ओर बने हैं * सो इनका भी कहीं ठिकाना नहीं लगता केवल भ्रम के समुद्र में डूब मरा है भूगोल बिद्या से निश्चय है कि पृथिवी गोल है और पुराणों में लिखा है कि कमल पत्ते के समान है फिर भूगोल बिद्या से जाना जाता है कि पृथिवी परमेश्वर की इच्छा से अधर में लटक रही है परंतु पुराण में लिखा है कि वुह कच्छप की पीठ पर है और किसी में लिखा है कि सेस नाग के सिर पर पृथिवी का घेर प्रमाण ठीक बारह सहस्र चार सै चौंतीस कोश है पर पुराण

में उसका घेर प्रमाण पचास कोटि योजन लिखा है सो इस में वे निस्संदेह लचों क्रोश दूर पड़े हैं फिर भूगोल बिद्या से पृथिवी सूर्य से चार करोड़ पचहत्तर लच्च क्रोश दूर ठहरती है पर पुराण में केवल चारही लच्च क्रोश दूर है * यह भी उनकी समझ का भूल है पृथिवी चंद्रमा से एक लच्च बीस सहस्र क्रोश दूर है परंतु पुराण में आठ लच्च क्रोश लिखा है सो हिंदुओं के शास्त्रों की ये बातें भूगोल विद्या और जोतिष से साचात भूल ठहरती हैं और भूगोल बिद्या ऐसी पूरी और सिद्धि है कि उस्से जल थल सर्वत्र की यात्रा होती है यदि यह बिद्या ठीक न होती तो इस भांति की यात्रा भी न होसक्ती जैसे कि अंगरेजों का हिंदुस्थान में आना इस बिद्या बिना कठिन था और यही बिद्या हिंदू के शास्त्रों को झुठलाती है वेद में लिखा है कि सूर्य अग्नि से ऊआ और चंद्रमा सूर्य से और मेंह चंद्रमा से और बिजली मेंह से होती है पर बिद्या से जाना गया है कि बिजली दो वादल की रगड़ से होती है और जिस बादल से मेंह आता है सो पृथिवी से तीन क्रोश से अधिक ऊंचा कभी नहीं हो सक्ता फिर चंद्रमा तो पृथिवी से एक लच्च बीस सहस्र क्रोश ऊंचा है

तीसरे वेद और शास्त्र के बीच मत की शिचा के विषय में और भी अधिक बिपरीतता है सब मानते हैं कि मत की पहली बात मनुष्य पर यह प्रगट करना है

कि उसका परमेश्वर और स्वामी कौन है पर वेद शास्त्र में इस बात की बड़ी गड़ बड़ है कभी नहीं जाना जाता कि स्वामी कौन है जिसकी आराधना कीजिये क्या ब्रह्मा है अथवा विष्णु अथवा महेश स्वामी है अथवा ये तीनों मिलकर जिनकी उत्पत्ति ही के बर्णन में बिरुद्धता है किसी पुराण में लिखा है कि ये तीनों आदिशक्ति देवी से उत्पन्न हुए और वुह इन्हें जन कर इन पर मोहित हो गई और इन तीनों से भोग किया फिर भागवत अरु और पुराण में यह बात है कि विष्णु के नाभि से एक कंवल का फूल निकला और उस्से ब्रह्मा उत्पन्न हुआ पुराणों में लिखा है कि आदि शक्ति देवी से एक बीज उत्पन्न हुआ और उस बीज से विष्णु का पिता शिव निकला उसने एक और बिरुद्धता का बीज बोया पर मत्स्य पुराण में लिखा है कि ब्रह्मा से शिव उत्पन्न हुआ जैसे यह श्लोक है

ततोसृजद्वामदेवं त्रिशूलबरधारिणं ।

अर्थात इसके पीछे ब्रह्मा ने बामदेव त्रशूल धारी को उत्पन्न किया * पर नारदीय पुराण में यों है कि नारायण की दहिनी ओर से ब्रह्मा और बाईं ओर से विष्णु और बीच से शिव निकला इन सबके बिरुद्ध लिंग पुराण में लिखा है कि शिव ब्रह्मांड से निकला और रूप धारण करके अपनी बाईं ओर से विष्णु और लक्ष्मी को और दहिनी ओर से ब्रह्मा और सरस्वती को उत्पन्न किया *

फेर मारकंडय पुराण में लिखा है कि महा लक्ष्मी से विष्णु और महाकाली से महादेव और महा सरस्वती से ब्रह्मा उत्पन्न हुए बाराह पुराण में है कि ब्रह्मा विष्णु महेश से एक शक्ति प्रगट हुई और वुह शक्ति तीन भाग होके लक्ष्मी सरस्वती और काली बन गई सो उन तीनों देवों की उत्पति के भ्रष्ट बिधि के बर्णन को कैसाही अज्ञान मनुष्य सुनेगा तो क्या संदेह न करेगा कि उन दस पांच में एक सत्य बात का कहनेहारा कौन है

जैसा उनके उत्पन्न होने के बिषय में बिरुद्ध है वैसाही उनके महत पद के बर्णन में भी बहुत बिरुद्ध है जैसे वेद में यह श्लोक है

सर्व्वव्यापी सभगवान्तस्मात्सर्वगतःशिवः।

जो सर्व्वव्यापी है वही भगवान है इसलिये शिव सर्व गत है * इसके बिरुद्ध भागवत में यह श्लोक है

भवव्रत धरायेच येचतान् समनुव्रताः।
पाषंडिनस्तेभवंतु सच्छास्त्रपरिपंथिनः॥
मुमुक्षवोघोररूपान् हित्वाभूपतीनथ।
नारायणकलाःशांताभजंतिह्यनुसूयवः॥

अर्थात जो शिव सेवी और उसके उपासक हैं सो पाषंडी और सच्चे शास्त्र के पर पंथी हैं और जो मुक्ति के अभिलाषी हैं सो भयानक भेष भूत पतिन को छोड़

शांत मन और निर्दोषता से नारायण की कथा को भजते हैं * पद्म पुराण के बीच शिव की बड़ाई में यह स्लोक है

विष्णुदर्शनमात्रेण शिवद्रोहःप्रजायते ।
शिवद्रोहान्नसंदेही नरकंयांतिदारुणं ॥
तस्मान्नविष्णुनामापिन वक्तव्यंकदाचन।

अर्थात जो लोग की विष्णु का केवल दर्शन करते हैं उन पर शिव का द्रोह होता है और शिव के द्रोह से निस्संदेह मनुष्य घोर नरक में जाते हैं इस लिये विष्णु का नाम कभी न लिया चाहिये * फिर उसी पुराण में इस स्लोक के बिरुद्ध यह है

यस्तुनारायणंदेवं ब्रह्मरुद्रादिदैवतैः ।
सममन्यैर्निरीक्षेत स पाषंडीभवेत्सदा ४
किमत्रबहुनोक्तेन ब्रह्मणायेप्यवैष्णवाः
न प्रष्टव्या न वक्तव्या न द्रष्टव्याःकदाचन॥ ५ ॥

अर्थात जो समझते हैं कि और देवते अर्थात ब्रह्मा रुद्र इत्यादि नारायण के समान हैं सो पाषंडी हैं इसमें बहुत क्या कहना क्योंकि जो ब्राह्मण विष्णु को नहीं मानते उनसे कभी न प्रश्न करना न बोलना न उन्हें देखना न छूना * बायु पुराण में लिखा है कि शिव ने ब्रह्मा और विष्णु को बर दिया और विष्णु को अपने से लघु ठहरा

के कहा कि मैं अग्नि तू धूम मैं दिन तू रात्रि तू असत्य मैं सत्य हूं इत्यादि

वेद में शिव का नाम महादेव है इसके विरुद्व पद्म पुराण में विष्णु की यह महत्व है

येन्यदेवं परंत्वेनं वदंत्य ज्ञान मोहिताः
नारायण ज्जगन्नाथात्तेवै पाषंडिनस्म्टताः

अर्थात जो किसी दूसरे देवते को नारायण से जो जगत का स्वामी है बड़ा जानते हैं सो अज्ञानी ओैर पाषंडी हैं * दूसरी ठैार यह श्लोक है

एष देवो महादेव विज्ञेयस्तु महेश्वरः
न तस्मात्परमं किंचित्पदं समधिगम्यते

अर्थात महादेव को महा ईश्वर जाना चाहिये क्योंकि उससे कोई परम पदो नहीं लिंग पुराण में लिखा है कि दक्ष के यज्ञ में बीरभद्र ने विष्णु के सिर को काटडाला ओैर पवन नेउसे अग्नि में डाल दिया * निदान एक अटा दो बयार प्रसिद्व है यहां एक अटा दस बयार हैं फेर राम ओैर कृष्ण विष्णु के अवतार कहलाते हैं इस कारण जो बातें ऊपर के श्लोकों में विष्णु के विषय लिखी हैं सो राम ओैर कृष्ण से भी सम्बंध रखती हैं ओैर एक ठैार में लिखा है कि कृष्ण का अवतार विष्णु के एक बाल से है

तौ भी ब्रह्म बैवर्त्त पुराण के कृष्ण जन्मखंड में लिखा है कि एक दिन जब विष्णु दंभ कर रहा था कि मैं सब का कर्त्ता हूं तो कृष्ण उसे निगल गया विष्णु पुराण के पांचवें प्रकरण के पहिले अध्याय में लिखा है कि कृष्ण पूरण ब्रह्म का अवतार है. काशीखंड से प्रगट है कि प्रकृति स्वामी है वरन जो कुछ है सो वही है जैसे लिखा है

सर्व्वमंत्रमयीत्वंब्रह्माद्यास्त्वत्समुद्भवाः ।
चतुर्वर्गात्मकीत्वंवै चतुर्वर्ग फलोदया ॥
त्वत्तःसर्व्वमिदं बिश्वंत्वयि सर्व्वजगन्निधे ॥
यद्दृश्यं यददृश्यंच स्थूलसूक्ष्म स्वरूपतः ॥
यत्तत्त्वं शक्तिरूपेण किंचिन्नत्वदृतेक्वचित् ॥

अर्थात सर्व्व मंत्र में तूही पुकारी जाती है और ब्रह्मादिक सब तुझी से उत्पन्न हुए जीवन का चार पदारथ और उनका सफल तूझी से है तूझी से सारी बिषय हैं हे जग दातार तूही में सब कुछ है क्या दृश्य क्या अदृश्य क्या स्थूल क्या सूक्ष्म स्वरूप जो कुछ है सो शक्ति रूप हो के तूही है और तुझ से परे किंचित वस्तु नहीं

ब्रह्मा के विषय में इतनी बिरुद्वता नहीं है पर उसका भला कारण यह है कि उसके पाप के कारण से उसकी पूजा सर्बत्र से उठाई गई निदान यह बात कि किसको सृजनहार और स्वामी जान कर पूजिये वेद शास्त्र से कभी नहीं जाना जाता

इन सब बातों के परे और बड़त सी बिरुद्धता हैं ऋषि और मुनियों में भी बड़ी बिपरितता है जैसे ऋग्वेद में लिखा है कि कोई तो यह कहता है कि ओं भूर्भुवःस्वः इस मंत्र के बिना पढ़े यज्ञ होम सिद्ध होता है और दूसरे निज करके जवल का पुत्र सत्यकामा आज्ञा देता है कि नहीं सब बातें पूरी किई चाहिये षट शास्त्रों में ऋषि मुनियों के बीच बड़ा बाद बिवाद है और वे वेद से भी बड़ी बिपरीतता रखते हैं

बिशेष शास्त्र का बनानेहारा कनाद कहता है कि तत्व की आदि ही नहीं फिर येह कि पहिले तो जल उत्पन्न ड़आ तब ब्रह्मांड फिर विष्णु जिसकी नाभि से कवल निकला और उस कवल से ब्रह्मा उत्पन्न ड़आ गेतम जो न्याय शास्त्र का कर्त्ता है यह कहता है कि कर्म और समय और जीव और पांच तत्व और ईश्वर इन सब की आदि अंत नहीं

ममानसा का लिखनेहारा जय मुनि कहता है कि सृष्टि तो अनादि और अनंत है और यह कि वेद भी अनादि है पर गेतम कहता है कि वुह तो उत्पन्न ड़ई है उसके बचन ये हैं

शब्दो अनित्यः कार्यत्वात् पठवत् ।

जै मुनि कहता है कि शब्द ईश्वर है

अपिवा शब्द पूर्वत्वाद्यज्ञ कर्मप्रधानं स्यादगुणत्वे देवताश्रुति

पर गौतम कहता है कि नहीं यह तो मनुष्य की ओर से है दोनों के परे कनाद कहता है कि ज्योति जो है ईश्वर है और ईश्वर ज्योति है

कपिल मनु का पोता सांख शास्त्र का कारक और पतंजल शास्त्र का कर्त्ता पतंजल ये दोनों कहते हैं कि आत्मा और परमात्मा को तत्व से कुछ सम्बंध नहीं पर गौतम कहता कि हैं सांख शास्त्र में लिखा है कि सृष्टि प्रधान से ऊई है और बिशेषक शास्त्र में लिखा है कि वुह प्रमान से ऊइ है वेदांत में लिखा है कि यह दोनों भूल हैं परमेश्वर सब कुछ आपही है भगवतगीता के तेरहवें अध्याय में लिखा है कि पुरुष और प्रकृति दोनों अनादि हैं फेर वेदांत में लिखा है कि आत्मा एक है और सांख और पतंजल में लिखा है कि अनेक हैं निदान शास्त्रों में ऐसे २ बखेड़े हैं और पुराण विरुद्ध बातों और कहानियों से भरे हैं (१) अचंभे की बात यह है कि हर एक

---

(१) भागवत में कृष्ण भगवान ठहरता है जैसा लिखा है कृष्णस्तु भगवान स्वयं अर्थात कृष्ण आपही भगवान है इसके विरुद्ध बिष्णु पुराण में लिखा है कि वुह अंशांशावतारः अर्थात केवल विष्णु के अंश के अंश का अवतार है फिर विष्णु पुराण अरु और पुराणों में लिखा है कि कपिल मुनि ने राजा सागर के साठ सहस्र पुत्रों को नाश किया परंतु भागवत में लिखा है कि यह मिथ्या है उसका यह श्लोक है न साधुवादो मुनि कोप भञ्जिता न्टपेंद्र पुत्ता इति सत्वधामनिकथं तमो दोषमयं विभाव्यते जगत्पवित्रात्मनिस्तं रजो भुवण इत्यादि

पुराण अपने को एक दूसरे से उत्तम और श्रेष्ठ ठहराता है हिंदू समझते हैं कि चार वेद बिशेष करके ब्रह्म की बाणी हैं पर शिव तंत्र में लिखा है कि तंत्र उनसे भला है जैसे यह श्लोक है

मम पंचमुखेभ्यश्च पंचाम्नाया विनिर्गताः ।
पुर्व्वश्च पश्चिमश्चैव दक्षिणश्चोत्तरस्तथा ॥
ऊर्द्ध्वाम्नायश्चपञ्चै ते मोक्षमार्गाःप्रकीर्त्तिताः ।
आम्नायावहवःसन्ति ऊर्द्ध्वाम्नायेननोसमाः ॥

अर्थात मेरे पंच मुख से पांच वेद निकले अर्थात पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर ऊर्द्ध्व इन पांचों ने मोक्ष मार्ग बतलाया हैं वेद तो बहुत हैं परंतु ऊर्द्ध्व मुखवाले वेद के समान कोई नहीं * और तंत्र में जिन्हें शिव ने वेद से श्रेष्ट ठहराया लिखा है कि सब धर्मों से वाम धर्म उत्तम है जैसे यह श्लोक है

सर्व्वेभ्यश्चोत्तमावेदावेदेभ्यो वैष्णवं परं
वैष्णवा दुत्तमं शैवं शैवाद्दक्षिण मुत्तमं
दक्षिणादुत्तमं वामंवामात्सिद्धान्तमुत्तमं
सिद्धान्ता दुत्तमं कौलं कौलात्परतरंनहि

अर्थात वेद जो है सब से उत्तम है और वेद से वैष्णव पंथ और वैष्णव पंथ से शिव पंथ और शिव पंथ से दक्षिण पंथ और दक्षिण पंथ से बाम पंथ और वाम पंथ से सि-

द्वांत मत और सिद्वांत मत से कौल पथ उत्तम है और कौल पथ से कोई दूसरा बड़ा नहीं *

चौथा फिर पूजा अर्चा और बिध व्यवहारों में बड़ी बिपरितता है जब जड़ ही ऐसी तो शाखा कैसी वेद में सूर्य चंद्र इंद्र बरुण पृथिवी पवन अग्नि जल सरस्वती की पूजा है और पुराणों में अनेक बस्तुन की पूजा है * कृष्ण ने इंद्र की पूजा छुड़वा के गोबर्द्धन पर्वत की पूजा करवाई (१) छवो शास्त्रों में बहुत सी वे बातें हैं जिन्हें हिंदू कहते हैं कि उनसे मनुष्य माया मोह से छूट के और सर्ब देव की आराधना तज के ब्रह्म को पहिचाने अर्थात अपने को ईश्वर करके माने सो वेद में तो थोड़ी सी बस्तुन की पूजा है और पुराण में अनेक वस्तुन की पर शास्त्र और वेदांत में तो आपही को ईश्वर जाने * उनकी यह भूल परमेश्वर अपने अनुग्रह और दया से दूर करे

कितने पुराणों में मद मांस बर्जित है और लिखा है कि जो कोई कलियुग में मद मांस खावे पीवे सो ठीक मलेच्छ है पर भागवत से जाना जाता है कि कृष्ण जो

---

(१) फिरिस्तः नामे तिथि ग्रंथ के लिखक ने लिखा है कि खलीफः खलीद के समय में जब कि महम्मद का सिमसन ७११ ईसवी में सिंध पर चढ़ा उस समय हिंदू मक्कः और मिस्र में तीरथ यात्रा को जाया करते थे

कलियुग के आरंभ में हुआ वुह और उसके कुटुंब और द्वारिका के सब वासी मद पान करते थे बरन जिस दिन उनमें बिगाड़ हुआ और परस्पर लड़ मरे सबके सब मत वाले थे *

धर्म शास्त्र में लिखा है कि जो जीव को खाने में आते हैं और जो लोग कि उन्हें खाते हैं दोनों को ब्रह्माही ने उत्पन्न किया इस लिये जिस भांति से कि शास्त्र में लिखा है यदि खावें तो कुछ दोष नहीं जैसे यह श्लोक है

देवान् पितृंश्चार्चयित्वा खादन् मांसंनदुष्यति
न भक्षयेदेक चरान ज्ञातांश्च मृगद्विजान् ।

अर्थात देवताओं और पितरों की अर्चना करके मांस खाना दोष नहीं है परंतु एक खुरवाले और बिनु जाने पशु पंछी को न खाना चाहिये * उसी शास्त्र की दूसरी ठैर में लिखा है कि शास्त्र की रीति से मांस खाना मद पान करना स्त्री से भोग कर्ना कुछ दोष नहीं फिर उसी शास्त्र में लिखा है कि ब्राह्मण को साही गिरगिट छिप कली मगरमच्छ गोधा गड़ाई खरहा इत्यादि का खाना उचित है और मताक्षरा में यह श्लोक है

भक्ष्याःपंचनखाःसेधा गोधा कच्छप शल्लकाः ॥
शशश्च मत्स्येषवपिहि सिंह तुंडकरोहिताः ॥

अर्थात पंच नखी पशुओं में से सेधा गोह कच्छुवा साही ससा और मच्छलियों में से सिंह तंडक रोहू खाने के

योग्य हैं * ऋग्वेद के सम्या के तीसरे अध्याय में गौ बलि दान करने की ऋचा है और उसी सम्या के तीसरे अ-ध्याय में लिखा है कि वुह जो पशुन का बलिदान करता है स्वर्ग की नाईं आनंद देनेहारा है ऋग केतु सत्ययुग में बलिदान करने से प्रसिद्ध ज्ञआ ब्राह्मण लोग एकबार विश्वामित्र के यज्ञ में दस सहस्र गौ खा गये (१) यदि वे इन दिनों में गौ खाते और मद पान करते तो उनकी क्या दशा होती वे अपनी जाति पांति और घर द्वार और

---

(१) मंत्स्य पुराण में यह बात लिखि है कि एक बार ऋषियों ने सुत से पूछा कि कौशिक के पुत्र किस रीति से परम गति को प्राप्त ज्ञए सुत ने उत्तर दिया कि कौशिक के सात पुत्र थे उसके मरने के पीछे बड़ा काल पड़ा जब उनकें पास कुछ खाने को न रहा तब वें गर्गमुनि के पास चले गये उसने अपनी गौ चराने के लिये उन्हें बन में भेज दिया वे बन में जा भूख के मारे गौ को मार अपने देवों पितरों को चढ़ा के खा गये सांझ समय जब स्थान को आये तो गर्गऋषि से कहा कि आप की गौ को सिंह मार के खा गया सो इस पुण्यार्थ से वे परम गति को प्राप्त ज्ञए * और वेद में लिखा है कि इंद्र के लिये सांड़ चढ़ाते थे और रामायण में लिखा है कि बशिष्ट की गौराब लाने हर प्रकार के भोजन और मांस और मदिरा बिश्वामित्र को उसकी सेना समेत खिलाया पिलाया इसी प्रकार भरद्वाज नें भी भरत और उसकी सेना को खिलाया पिलाया और राम ने भी मांस खाया इन बातों के प्रमाणिक होनें के लिये देखो रामयण के बाल कांड के ४१ सरगः और अयोध्या कांड के ६० सरगः से ७० सरगः तक

साध संगति से निकाले जाते और उनका अपराध क्या ठहरता यही न कि वेद और धर्म शास्त्र ने जो आज्ञा दिई सो किया फिर मनु के शास्त्र में लिखा है कि मांस खाना उचित ही नहीं परंतु सूर्य के उतरायण और दक्षिणायन के समय बलिदान करना और खाना अति आवश्यक है सो हिंदुओं के मत में एक मता नहीं पाई जाती यदि कोई कहे कि ये नाना प्रकार की बातें और व्यावहारें दूसरे युग के लिये थे तो हम कहेते हैं कि इसका ठिकाना लगाया चाहिये क्योंकि मनु ने कहां लिखा है कि इस शास्त्र की बातें और व्यवहारें निज कर के अमुक ही युग के लिये है परंतु जैसे चार वर्ण के व्यवहार हर युग के लिये ठहराये गये वैसाही इस शास्त्र से ये बातें और व्यावहारें हर युग के लिये हैं (१) फिर

---

(१) हम जानते हैं कि पंडित लोग बहुधा कहते हैं कि मनु की बहुतसी बातें कलियुग के लिये नहीं और इस पर बृहस्पति और परासर और नारदादि के बचन को प्रमाण लाते हैं पर इसकी कुछ प्रतीति नहीं क्योंकि कलक भठ ने जो उस शास्त्र के भाष्य का लिखने हारा है बृहस्पति को छोड़ और किसी का चर्चा नहीं किया और बृहस्पति ने केवल यह कहा है कि मनु की वुह बात कलियुग में बर्जित है जो लिखा है कि यदि कोई अपनी स्त्री निर्वंश जोड़ के मर जाय तो उसका भाई उसकी स्त्री को रखे और कलक ने इस के परे और किसी बात के उठजाने को नहीं लिखा इस्से ठीक २ जाना जाता है कि उसकी समझ में केवल इस एक बात को छोड़ मन की सब बातें सर्बकाल के लिये हैं।

यदि कोई कहे कि मांस खाना और मद पान करना कलियुग में बर्जित है तो हम उत्तर देते हैं कि उसका प्रमाण चार वेद और छःशास्त्र से लाया चाहिये और यदि कोई कहे कि पुराण में तो है तो हम यह कहते हैं कि क्या पुराण वेद शास्त्र को खंडन करसक्ता है फेर यदि पुराण में है तो सोचा चाहिये कि वेद शास्त्र और पुराण में परस्पर कैसी बिरुद्वता है वेद शास्त्र में तो लिखा है कि खाओ और पुराण में लिखा कि न खाओ तो भला उनका क्या ठिकाना और वे जो कहते हैं कि कलियुग में वर्जित है तो हम पूछते हैं कि कृष्ण और उसके संग साथी जो कलियुग के आरंभ में थे वे क्योंकर मद मांस खाते पीते थे (१) यदि कोई कहे कि ये बातें तो उनके बर्ण धर्म के योग्य थीं तो हां हम मान लेते हैं और आगे चार बर्ण की बात को खंडन करके यह निश्चित करेंगे कि सब मनुष्य एकही जाति हैं

जो कोई वेद शास्त्र पुराण की ऐसी बिरुद्वता को सोचेगा तो वुह जानजायगा उसे कुछ दुबधा न रहेगी कि

---

(१) कृष्ण कलियुग कें आरंभ के साढ़े छःसै बरस पीछे या जैसे कि इस स्लोक से निश्चित है

गतेषुषट सुसार्द्धेषु अधिकेषुच भुतलेकलैा
गतेषु वर्षाणाम भवन् कुरुपांडवाः

अर्थात जब कलिकाल के साढ़े छःसै बरस से कुछ अधिक बीत गये तब कैारव और पांडव ऊये *

हिंदू कैसे दुबधे में पड़े हैं और इसी लिये यह कहावत उन में प्रसिद्ध है कि जै मुनि तै मत और यह भी कि अट्ठासी सहस्र ऋषि ने अट्ठासी सहस्र मत को रोपा और लूकच्च ने भो कहा है कि वेद बिरुद्ध और स्मृती बिरुद्ध फिर उन में एक इतिहास यह है कि छ:जन बड़े ज्ञानी और वेद शास्त्र के बड़े ज्ञाता और बड़े धनमान और ऐश्वर्य्यमान थे वे केकय राजा के पुत्र असुर पति के पास जाके कहने लगे कि तुझे ब्रह्म ज्ञान है वुह ज्ञान हमें बतला फिर जब वे दूसरे दिन उसके पास गये तो उसने हर एक से भिन्न २ करके पूछा कि तुम किसको ब्रह्म समझ के पूजते हो एक ने कहा स्वर्ग को दूसरे ने कहा सूर्य को तीसरे ने कहा पवन को चौथे ने कहा आकाश को पांचवें ने कहा जल को छठवें ने कहा पृथिवी को उसने कहा कि तुम सब के सब भूल में पड़े हो यह कह उन्हें एक और प्रकार की मता सिखला दी

छठवीं परमेश्वर सर्ब सामर्थी है (१) बिचार किया चाहिये कि ये लक्षण ब्रह्मा बिष्णु महेश और राम कृष्ण में पाये जाते हैं कि नहीं रामायण के बालकांड के ६२ सरग: में लिखा है कि एक समय धनुष के कारण शिव और विष्णु से बड़ी युद्ध हुई फिर इन में जो एक भी सर्ब सामर्थी होता तो एक दूसरे का साम्ना क्योंकर कर सक्ता इस लिये दोनों का सर्बसामर्थी होना अनहोना

(१) देखो ४ पृष्ट में

ठहरता है फिर लिंग पुराण में ब्रह्मा के बिषय में लिखा है जैसा कि ऊपर बर्णन ज्ञआ कि वुह सृष्टि को न सृज सका इस लिये बिलाप कर २ रोने लगा तब शिव उत्पन्न होके सृष्टि को सृजने लगा पर जब उसके पिता ब्रह्मा ने उसकी ढीलाई और सिथिलता देखी तो फिर अपना हाथ उस में लगाया

सो वे जो सर्ब सामर्थी होते तो क्यों ऐसे अशक्ति और असमर्थ हो जाते और हियहार मानते इस्से जानाजाता है कि वे सर्ब सामर्थी न थे देखो समुद्र मथने के लिये ये तीनों और सकल देवते मिल कर एकत्र ज्ञए पर असुरों की सहायता बिना न मथ सके फिर ध्यान किया चाहिये कि एक बार असुरों ने उन्हें सारे देवताओं समेत स्वर्ग लोक से निकाल दिया और उनसे कुछ न बन पड़ा * फिर अत्रि मुनि की स्त्री ने उन तीनों बड़े बड़े देवों पर जल छिड़क के उन्हें छोटा २ बालक बना के पालने में डाल के झुलाया तब वे सयाने बन के वहां से क्यों न चले गये और जब शुंभ निशुंभ उन पर चढ़ आया तो उसका साम्ना क्यों न कर सके उस घड़ी उनकी सर्ब साम र्थता कहां गई थी फिर ब्रह्मा अपने सिर की रक्षा क्यों न करसका और महादेव अपने लिंग को क्यों न जोगा सका और विष्णु को भृगु के श्राप से क्यों सात जन्म लेना पड़ा और कृष्ण उसे क्यों निगल गया

होत जौ वामह कछु प्रभुताई
निगलत कृष्णकवनि बिधिभाई

फिर राम जो सर्व सामर्थी था तो उसने रावण से ल-ड़ाई करने के लिये बानर भालु की सहायता क्यों चाही और हनुमान की नाईं समुद्र लांघि के लंका को क्यों न गया किस लिये उसे बड़ा परिश्रम करके सेतु बांधना पड़ा

बांधे सेतु बहुत श्रम करिके
राम गये तब पार उतरिके
सामर्थी अति जो वुह रहेउ
हनुमत सम किमि लांघि नगेउ

कृष्ण के बिषय में बहुतेरी बड़ी बड़ी बातें लिखी हैं जैसे अजगरों और राक्षसों का मारना और गोबर्द्धन पर्वत का उठा लेना इत्यादि पर आश्चर्य यह है कि फिर वुह दूसरे समय में ऐसा असमर्थ और निर्बल हो गया कि उसको पुरुषार्थ और बीरता में सर्वथा संदेह होता है सब जानते हैं कि परमेश्वर केवल कभी २ नहीं परंतु सर्वकाल में सर्व सामर्थी है फिर जब कृष्ण जुरासिंधु से लड़ाई में हार गया और अपना प्राण लेके भाग निकला तो उसका सर्व सामर्थी होना कहां रहा इसके उपरांत उसने अपनी सामर्थ भर अपने परम मित्र भीम सेन से लड़ाई करने में कुछ धोखा न लगाया जिसतें राजा डंडा

की घोड़ी छीन लेय जो रात समय सुंदर स्त्री बन जाती थी पर कुछ न बन पड़ी फिर जब पांडो द्रोणाचार्य को न जीत सके तो कृष्ण ने जाके युधिष्ठिर से मिथ्या बोलवाया कि उसने द्रोणाचार्य से कहा कि तेरा पुत्र मारागया यह सुन के वुह मुर्छित हो गिरा इसमें कृष्ण और पांडो सभों ने मिलके उसे मारडाला कहावत है कि मित्र का डगे पांव तो शत्रु का लगे दांव महाभारत में लिखा है कि दुर्वसा ऋषि के श्राप से उसका और उसके सारे कुटुंब का नाश हो गया (१) सो इन बातों से जाना जाता है कि उनमें से कोई सर्ब सामर्थी न था फिर जब वे कुछ सामर्थी ही नहीं ठहरते तो अब वुह बात कहां रही कि सामर्थी को कुछ दोष नहीं जब पेड़ही नहीं तो फल कहां

सातवीं परमेश्वर एक है (२) परमेश्वर की पवित्रता के बिषय में जो ऊपर बर्णन हुआ है उस्से जाना गया कि हिंदुओं के मत में ईश्वर एक तो है पर बड़ी भूल यह है

---

(१) महाभारथ में लिखा है कि कृष्ण के मरने के पीछे जब अर्जुन उसकी स्त्रियों को द्वारिका से हस्तिनापुर को लिये जाता था तो पंथ में डाकू आये अर्जुन ने चाहा कि उन्हें बाणों से मारगिरावे पर उस काल उसका धनुष बाण बंध गया कितना यत्न उपाय किया पर न चलसका तब हियहार मानके रोने लगा और डाकू स्त्रियों और बस्त्र आभूषणों को लूट लेगये

(२) देखो चौथे पृष्ट में

कि उस मत के अनुसार से ईश्वर के परे और कोई जीव ही नहीं ठहरता*

सर्वं विष्णुमयं जगत्।

अर्थात सर्व जगत विष्णु रूप है * जैसा कि ऊपर ईश्वर की पवित्रता के वर्णन के बिषय वेद शास्त्र से निश्चित ऊआ वैसाही इस बात के लिये भी उनके पुस्तकों में बऊत से श्लोक हैं पर उनके लिखने का कुछ प्रयोजन नहीं क्योंकि कोई हिंदू पंडित अथवा मूर्ख इसको नाह नहीं करता परंतु मान लेता है कि एकोब्रह्म द्वीतोयो नास्ति और यह कि बोलता जो है सो वही है अब सोचा चाहिये कि इस बात में करोड़ों संदेह होते हैं क्योंकि जब मैंही जो बोलता चालता हों आपी ईश्वर हों तो फिर जब कहों कि ईश्वर हर एक में है तो किसके बिषय में कहोंगा क्या अपनेही बिषय में फिर इस बात के क्या अर्थ ठहरेंगे यह कैसी बे ठिकाने की बात है पंडित लोग इसके उत्तर में कहते हैं कि हां ईश्वर सब में है पर वुह माया के बश में पड़ के अपने को भूल गया फिर जब वुह जप तप करके माया से छूट जायगा तो वुह अपने को और सब को ब्रह्म जानेगा सो उनसे अब हम यह पूछते हैं कि जो ईश्वर माया के बश होगया तो उस का सर्व सामर्थी होना कहां रहा * और जब वुह माया के बश में होके अपने को भूल गया तो उसका सर्वज्ञानी होना कहां रहा क्या वुह आपही भूलजाके अपनाही

नाह करता है अर्थात मनुष्य होके कहता है कि मैं ईश्वर नहीं फिर क्या वुह रज और तम से मिल के हृष्ण के कहने के समान सब में करता होके जितने पाप कि जगत में होते हैं सबका करनेहार और कारण ज़ुआ जब ऐसा है तो उसमें पविचता और न्याय हृपा और सचाई कहां रही सो बिचार किया चाहिये कि इसी एक बात से कि एको ब्रह्म द्वीतोयो नास्ति परमेश्वर का होना और उसके सारे गुण उड़गये यदि कोई कहे कि ईश्वर नहीं पर माया और कर्म पाप पुण्य का कर्त्ता और कारण है तो हम कहते हैं कि माया क्या बस्तु है इस पर कोई कहे कि प्रहृति अथवा तीन गुण मिल के माया कहलाती है तो हर प्रकार से जाना जाता है कि वुह आप से कुछ नहीं कर सक्ता वुह केवल कल कांटेकी नाईं है करनेहारा और ही है यदी कोई कहे कि कर्म सब कुछ करता है तो उस्से पूछा चाहिये कि पहिले कर्त्ता अथवा कर्म जब लों कर्त्ता न हो कर्म क्योंकर हो सके फिर इस में एक बड़े संदेह की बात यह है कि जब परमेश्वर सगुण रूप होके कर्म के आधीन हो तो कर्म का कर्त्ता कौन है क्या वुह आपही स्वामी और सेवक भी है माया से परे और लिप्त भी है क्या ईश्वर दो प्रकार का है ऐसे ज्ञान और बुद्धि पर हाय है परमेश्वर हृपा करके हर एक के मन से ऐसे भूल चूक और पाषंडता को शीघ्र दूर करे

आठवीं परमेश्वर समभाव हैं (१) ऊपर की बातों से जाना गया कि परमेश्वर का यह लक्षण भी हिंदुओं के मत में नहीं मिल सक्ता क्योंकि जब वुह कभी एक है कभी अनेक कभी दृश्य है कभी अदृश्य आज इस तन में कल उस तन में आज मनुष्य है कल पशु हैं आज सज्ञान कल ऐसा अज्ञान कि आपको न जान सके ता क्योंकर कह सकिये कि उसके गुण स्वभाव और इच्छा बिचार में अदल बदल नहीं वुह तो बहुरूपिया ठहरा कि नित एक नया रूप बनाता है

सो बिचार की रीति से हिंदुओं के मत के बीच परमेश्वर के गुण एक भी नहीं मिलते इस्से ठीक जानागया कि उनके मत में परमेश्वर का ज्ञान नहीं है (२)

दूसरा अध्याय।

सत्य मत में सृष्टि और मनुष्य की उत्पत्ति और उसके उत्पत्ति के कारण का बर्णन जो कुछ है सो परमेश्वर के

---

(१) देखो चौथे पृष्ट में

(२) राम आप कहता है कि मैं ईश्वर नहीं देखो रामायण के अयोध्या कांड के ७५ सरगः में बरन वह आप कहता है कि अगस्ति मुनि जो है सो अयमग्नि रयं सोम एष धर्मः सनातनः अर्थात अग्नि और सोम और धर्म और सनातन का वही है और फिर राम ने उसकी पूजा किई देखो रामायण के अरण्य कांड के १८ सरगः २८ स्लोक से ३० तक फिर भागवत के दसवें स्कंध के भाग

गुण श्रीर महातम के योग्य ज्ञश्रा चाहिये (१) सृष्टि की उत्पत्ति के बिषय हिंदुश्रों के शास्त्रों में लिखा है कि तत्व की श्रस्ति ही नहीं जितनी बस्तु दृष्टिमान हैं केवल माया के पसारा हैं न्याय शास्त्र श्रीर विशेष शास्त्र में लिखा है कि तत्व श्रनादि श्रीर श्रनंत है फिर वेदांत श्रीर साखसार श्रीर कितने पुराणों में लिखा है कि सृष्टि के समय ब्रह्म से बुद्धि श्रीर बुद्धि से श्रहंकार श्रीर श्रहंकार से श्राकाश श्रीर श्राकाश से श्रग्नि श्रीर श्रग्नि से जल (२) श्रीर जल से पृथिवी श्रीर उनसे सारी बस्तु उत्पन्न होती हैं फिर वे उलट के महा प्रलय में सबके सब ब्रह्म में लीन हो जाते हैं सो सृष्टि का कर्त्ता कोई नहीं क्योंकि उन पुस्तकों से उसकी आदिही नहीं ठहरती वुह श्राप ईश्वर की श्रंश है श्रीर पुराणों के मत से वह श्रापही ईश्वर है श्रीर वेदांत कहता है कि वेद में लिखा है कि सृष्टि परमेश्वर का चतुर्थ भाग है श्रीर उसके तीन भाग सृष्टि के परे हैं फिर देवताश्रों ने जिस भांति से सृष्टि को रचा उस बात में इतनी बिरुद्धता है कि किसी को

में कृष्ण कहता हे। मत तुम मुझ को करो प्रणाम। मैं हों नंद महर का साम।

(१) देखो ५ पृष्ट में

(२) मनु इसके बिरुद्ध कहता है कि जल से श्रग्नि ९ श्रध्याय ३२ स्लोक में देखो

निश्चय श्रीर प्रतीति नहीं हो सक्ती जैसा परमेश्वर के सत्य होने के वर्णन में ऊपर लिखा गया हिंदुओं के मत के समान मनुष्य की उत्पत्ति इस प्रकार से है कि मनुष्य की आत्मा ईश्वर का अंश है उसी से निकलती है श्रीर फिर उसी की जोति में मिलजाती हैं जैसा कि इस पुस्तक के आरंभ में बर्णन हो चुका यदि कोई पूछे कि वुह ईश्वर से क्यों निकली श्रीर उस्से किस कारण पृथक हो गई तो इसका उत्तर हिंदुओं के शास्त्र में न मिलेगा पर इतना तो वे कहते हैं कि यह सब ईश्वर की लीला है सो भला कौन ज्ञान मान इसे सच जानेगा कि ईश्वर निर्बिकार होके अनेक भांति का शरीर धारण करे श्रीर उसकी नाना प्रकार की दुर्दशा में पड़े श्रीर यदि हम इसे सच भी मान लेवें कि हां हो सक्ता है तो परमेश्वर जो ऐसा करे तो चाहिये कि उसकी महिमा श्रीर महात्मं श्रीर पवित्रता श्रीर सत्यता ज्ञान श्रीर बुद्धि गुण श्रीर स्वभाव श्रीर अधिक बढ़े पर हिंदुओं के मन से यह कभी नहीं समझ पड़ता बरण इसके उलटे इस मता की रीति से परमेश्वर ने माया में मिलके अपने सारे गुण को खो दिया श्रीर उसके आधीन होके सारी प्रबीणता श्रीर श्रेष्ठता श्रीर महत्वता मिट्टी में मिला दिया श्रीर ऐसा मूढ़ श्रीर असामर्थ कि न अपने को पहिचानता न उस बंधन से छूट सक्ता फिर ऐसा अशुचि श्रीर अपवित्र हो गया कि संसार में कौन ऐसा अधर्म श्रीर

पाप है जिसे वुह नहीं करता हाय हाय यह कैसा ईश्वरा पनिंदक बचन और पाषंडता है ध्यान रखा चाहिये कि जब हिंदुओं की यह बात सत्य नहीं तो उनके मत में मनुष्य की उत्पत्ति और उसकी उत्पत्ति के कारण का भी ठिकाना नहीं बिवेकी पुरुष को टुक सोचना चाहिये

तीसरा अध्याय

परमेश्वर और मनुष्य के बीच में क्या क्या संबन्ध है (१) परमेश्वर मनुष्य से क्या संबन्ध रखता है क्या वुह सृजनहार और पालनहार और उस पर और जगत पर प्रभुता करनेहारा है कि नहीं

ऊपर की बातों से जाना गया कि हिंदुओं के मत में बिशेष कर के दो पंथ हैं एक निर्गुणिया कहलाता है दूसरा सगुणिया और सगुणिया पंथ निर्गुणिया पंथ में आने का द्वारा है जब मनुष्य सगुणिया से निर्गुणिया होता है तो बिद्या ज्ञान सीख के अपने को ब्रह्म समझता है सो वुह जब निर्गुणिया हुआ तो ईश्वर से उसको क्या संबन्ध रहा वुह तो आपही ईश्वर बन बैठा (२)

---

(१) देखो ५ पृष्ट में

(२) इसके बिरुद्ध वेद और पुराण के कितने ठौरों में लिखा है कि ईश्वर में लीन होना अनहोना है भाल्लवल्ला उपनिषद में यह बचन है

पर सर्गुणिये के मत से ईश्वर स्टजनहार और पालन हार कुछ कुछ समझा जाता है परंतु स्वयं ब्रह्म अद्वैत परमेश्वर जो अनादि और अनंत है सो हिंदुओं के यहां स्टजनहार और पालनहार नहीं है परंतु ब्रह्मा विष्णु महेश राम कृष्ण भवानी ऋषि मुनि इत्यादि हैं * ऊपर वर्णन हुआ कि ये सब ईश्वर कभी नहीं ठहर सक्ते क्योंकि उन में ईश्वर होने का कोई चिन्ह नहीं पाया जाता सो वे जब ईश्वर न ठहर सके तो स्टजनहार और पालन हार क्योंकर ठहर सकेंगे जब जड़ही नहीं तो पालव कहां और जब उन देवताओं को छोड़ और कोई स्टजन हार और पालनहार नहीं तो इस्से ठीक समझ पड़ता है कि हिंदू कभी नहीं जानते कि उनका स्टजनहार और पालनहार और प्रभु कौन है और उनको उस्से क्या प्रयोजन है इसके परे वेद शास्त्र और पुराण से जानाजाता है कि चिंवटीं से लेके ब्रह्मा तक सब का कम

आत्महि परम स्वतंत्रोधिगणो जीवोअल्प शक्तिर स्वतंत्रो ।

अर्थात आत्मा जो परमा है सो गुण के ऊपर है और जीव निर्बल और आधीन है और गरुड़ पुराण में यह स्लोक है

सर्व्वज्ञाल्पज्ञाभेदात्सर्व्व शक्तयल्प शक्तिनः । स्वातांत्र पारतंत्राभशां सम्भोगोनेश जीवयोः ।

अर्थात सर्वज्ञान और अल्पज्ञान में सर्व शक्ति और अल्प शक्ति में स्वामी और सेवक के पद में इतना बीच है कि जीव ईश्वर में लीन हो नहीं सक्ता ।

पहिले ही से ठहराया गया और यह भी जानाजाता है कि स्वयं ब्रह्म अद्वैत परमेश्वर भी इस कर्म से सर्वथा नहीं छूटा परंतु उस कर्म के समान समय समय के ऊपर अपना पसारा करता है और उस्से सृष्टि होती है फिर अपने को समेट लेता है और सृष्टि जाती रहती है यह तो भाल मती का सवांग ऊआ फिर शास्त्र के दूसरे ठैार में लिखा है कि निद्रा से जब वृह जाग उठता है तो सृष्टि बन जाती है और जब सो जाता है तो सृष्टि उसमें लीन हो जाती है जैसे कठपुतली की खेल यह सब अटल कर्म के समान होता है जैसा भरथरी शतक में ब्रह्मा विष्णु महेश और सूर्य के बिषय में लिखा है

ब्रह्मायेन कुलालवंनियमितो ब्रह्मांडभांडोदरे
विष्णुर्येन दशावतार यहणेक्षिप्तो महासंकटे
रुद्रोयेन कपाल पाणिपुटके भिक्षाटनंकारितं
सूर्योगच्छति नित्यमेव गगने तस्मैनमः कर्मणे

अर्थात जिस कर्म ने ब्रह्मा को ब्रह्मांडभांडा के बीच सृष्टि रचने के लिये कुम्हार की नाईं ठहराया और विष्णु को दस अवतार लेने के महा संकट में संजुक्त किया और रुद्र से कपाल पात्र में भिक्षा मंगवाया और जिस करके सूर्य भी आकाश में सदा भ्रमण करता है उस कर्म को मैं नमस्कार करता हों * फिर शुद्ध तत्व और जोतिष में लिखा है कि लड़के की छठी की रात भावी उसके कपाल में

कर्म लिखने आती है इस लिये षष्टि की पूजा होती है सो इसमें जो जो प्रश्न हम करेंगे उनका एकभी उत्तर वेद शास्त्र से कभी न मिल सकेगा जैसे यह कि कर्म क्या बस्तु है और वुह कहां से है और उसका कर्त्ता कौन है कि जिस्से परमेश्वर भी नहीं छूटा फिर वुह ईश्वर कैसा है जो और के बश में पड़ता है * भला इन बातों को छोड़ के हम यह पूछते हैं कि जब हिंदुओं के मत से कर्म ठहर चुका तो ईश्वर को मनुष्य से क्या प्रयोजन ठहरा बरण उस्से प्रयोजन कर्म से हुआ फिर मनुष्य क्या बस्तु ठहरा

फिर इस मत में मनुष्य परमेश्वर से क्या प्रयोजन रखता है क्या उसको अपने सब कामों का लेखा देना है कि नहीं यदि देना है और वुह पाप भी करता है तो उसे क्षमा होने की आशा है कि नहीं और यदि आशा है तो वुह कौनसी आशा है

जब हिंदुओं के मत से ठीक प्रगट हुआ कि मनुष्य की आत्मा ईश्वर है(१) और ईश्वर होके कर्म के बश में है तो चाहिये कि वुह मत और सारा पूजा पाठ व्यर्थ ठहर के उठ जावे परंतु इसके बिरुद्ध और सब बिपरीत रीतों

---

(१) किसी ठौर में यों लिखा है भक्ति भक्त भगवंत गुरु चतुर्नाम वपुएक अर्थात भगवान गुरु भक्त और भक्ति चार नाम पर एकही मूल हैं

की भांति उनके यहां पूजे पाठ इत्यादि की आज्ञा है दो मंहे सांप का डौल देख पड़ता है

मनु के शास्त्र में पाप मोचन के लिये देवताओं का पूजा पाठ और दान पुण्य तीरथ स्नान ध्यान करने को लिखा है और जाति के लिये भी हर प्रकार के व्यवहार हैं पर अचंभे की बात यह है कि जब मनुष्य यह सब कर्म कर चुका तो उसके फल भोगने के लिये देव लोक में केवल थोड़े दिन के लिये जा रहता है और ब्रह्मा इंद्र तक भी कोई कैसा हों हो पर जब उसका पुण्य चुक जाता है तो फिर उसे वहां से उतर के जन्म लेना पड़ता है अ· संख कोटि ब्रह्मा सप्त कोटि शंभु नव कोटि दुर्गा पद्म गणेश इत्यादि परंतु वेद शास्त्र कहता है कि ईश्वर में लीन होना ऐसे लड़कों की खेल से नहीं परंतु संसार के त्याग ने और बनांतर में जाके बड़ी २ जप तप और तपस्या और ध्यान करने और अपने को ब्रह्म जान्ने से यह परमार्थ प्राप्त होता है इसी कारण बड़े २ ऋषि मुनियों ने देवताओं को तुच्छ समझ कर उन्हें श्राप दिया और उनको सिंहासन से उतार के जन्म लेने का सम्बन्धी करदिया क्योंकि देव ता गण काम क्रोध लोभ मोह इंद्री के वश में हैं पर वे ज्ञानी अर्थात ऋषि मुनि महा ब्रह्म के समान हैं फिर भी लिखा है कि विष्णु की कृपा बिना जो लक्ष्मी समेत क्षीर समुद्र में सैन करता है किसी की मुक्ति हो नहीं सकी जैसा वेद में यह वाक्य है

मोक्षस्तु विष्णुप्रसादान्तरेण न लभ्यते

अर्थात विष्णु की कृपा बिना मुक्ति नहीं होती * पर वष्णु ने आप मुक्ति नहीं पाई जो पाये होता तो क्यों लक्ष्मी को लेके क्षीर समुद्र में सैन करता यद्यपि हिंदुओं के मत से ठीक जाना जाता है कि मनुष्य पापी और ईश्वर कोपी दोनों एक हैं इस लिये पाप क्षमा होने का यत्न उपाय कुछ आवश्यक नहीं तो भी पाप मोचन के लिये वेद शास्त्र में बहुत सी बातें हैं जैसे पूजा पाठ दान पुण्य इत्यादि पर आश्चर्य यह है कि वेदांती जो निर्गुणिये और सिद्ध कहलाते हैं उन सब कर्मों को गुड़िया का खेल जानते हैं

फिर बिचार करने से ठीक जाना जाता है कि ये सब बिधि पाप को कभी मिटा नहीं सक्तीं और इस बात के बिषय वेद शास्त्र की पहिली भूल यह है कि वे ठीक नहीं बतलाते कि पाप क्या वस्तु है (१) मनु के एक श्लोक से यह जाना जाता है कि तीनों लोक के लोगों को घात करना और नीच के हाथ से खाना दोनों बराबर है दूसरे ठौर में लिखा है कि यदि ब्राह्मण कुत्ते बिल्ली अथवा मेंडक छिपकली अथवा कौवे उल्लू को घात करे तो उसे वही प्रायश्चित करना अवश्य है जो शूद्र के मारडालने से करना पड़ता है [देखो ११ अध्याय १३२

---

(१) मनु के शास्त्र के ११ अध्याय २६२ श्लोक में देखो

श्लोक में] काला पीला एके रंग * उनकी समझ का देखो ढंग * उसी शास्त्र की दूसरी ठौर में लिखा है कि पाप पुण्य दोनों ईश्वर ही ने बनाया है

अब हम संक्षेप में बर्णन करते हैं कि पाप मोचन के लिये क्या क्या यत्न उपाय हैं शास्त्र में लिखा है कि स्नान ध्यान दान पुण्य तीरथ करने और काशी में मरने और प्रयाग में त्रिवेणी करवट लेने इत्यादि से पाप नाश होता है और मुक्ति मिलती है इसमें उन्हों ने क्या ही चुभकियां खाईं और शिथिलता के सागर में डूब कर थाह तक पहुंचे हैं

प्रायश्चित निर्णय शास्त्र में लिखा है कि यदि कोई ब्राह्मण को घात करे तो उसे चाहिये कि प्रजयत्या प्रायश्चित चौबीस बरस लग करे अथवा अपने प्राण को घात करे और जो कोई गौ को मारे उसें बड़ी २ प्रायश्चित करनी चाहिये यदि किसी दूसरे जीव को मारे तो ब्राह्मण को दान पुण्य करे और जो शूद्र किसी ब्राह्मणी के संग प्रसंग करे तो चाहिये कि अपने को घात करे और वुह स्त्री भी निकाल दिई जावे

यदि ब्राह्मण अपने जनेऊ बिना भोजन करे तो सत बार गायत्री पढ़े और उस दिन गौ मूत्र पीवे और कुछ भोजन न करे फिर यदि कोई ब्राह्मण किसी चांडाल के पोखर का जल पीवे अथवा उस में स्नान करे तो वुह गौ

का मल खावे और मूत्र पीवे तब शुद्ध होवे (१) असत्य बोलने के प्रायश्चित करने में केवल एक बार विष्णु का नाम लेलेवे और ब्राह्मण के प्राण बचाने और अपनी स्त्री का क्रोध ठंढा करने को असत्य बोलना पाप नहीं यह सब बातें प्रायश्चित निर्णय शास्त्र में लिखी हैं मनु के शास्त्र में यह श्लोक है (२)

तद्वदन् धर्म्मतोर्थेषु जानन्नप्यन्यथा नरः
न स्वर्गायवते लोकाद्दैवींवाचं वदन्तिताम्

अर्थात जो मनुष्य किसी की भलाई के लिये जानबूझ के झूठ बोले वुह स्वर्ग लोक से बिरहित न होगा क्योंकि ऐसी बात को देव बाणी कहते हैं * फेर तुलसी और कवलाच्छ का माला पहिरना और शंख चक्र की रेखा भुजा पर करनी और मस्तक में तिलक मूद्रा करना पाप मिटाने को एक रीति है और यम की आज्ञा है कि जिन पर ये चिन्ह होवें उनको न छूना यह काशी खंड में लिखा है

(१) दूसरी ठौर लिखा है कि एक पाप के लिये जो अवसेरनी कहलाता है मनुष्य न्हती देवी को काला अथवा काना गदहा बलि चढ़ावे और उसकी खाल पहिन के सात द्वारे भीख मांगे और अपने पाप को सबके साम्हने प्रत्यच्च करे देखो मनु के शास्त्र के ११ अध्याय ११९ से लेके १२४ तक

(२) आठवें अध्याय १०६ श्लोक में

फिर पाप क्षय होने के लिये गायत्री की जप और सब बातों से बड़ी बिशेषता रखती है इसके विषय मनु के शास्त्र में लिखा है कि पंडित गायत्री पढ़ने से निस्संदेह मुक्ति पाता है चाहे वृह अपने मत की और कुछ बात करे अथवा न करे वेद को वही जानता है जो गायत्री के पहिले अक्षर को जानता है फेर यह श्लोक है

योधीतेहन्य हन्येतांत्रीणिवर्षा रायतंद्रितः
सब्रह्म परमभ्येति वायुभूतः खमूर्त्तिमान्

अर्थात जो तीन बरस लों प्रतिदिन आलस बिरहित गायत्री पढ़ता है सो आकाश और पवन के समान निर्मल होके परब्रह्म में लीन हो जाता है * फेर उसमें यह भी श्लोक है

सावित्रायास्तु परं नास्तिमौनात्सत्यं बिशिष्यते
कुर्यादन्यं न वा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उचयते

अर्थात गायत्री से कोई श्रेष्ठ नहीं और मौनता से सत्य बड़ा है ब्राह्मण और कुछ करे अथवा न करे परंतु गायत्री की जप अवश्य करे क्योंकि वुह सूर्य का उपासक कहलाता है * और यह भी श्लोक है

सहस्र ह्त्वस्त्वभ्यस्य वहिरेतत्त्रिकं द्विजः
महतोप्येन सोमासात्वचेवाहिर्वि मुचयते

अर्थात जो ब्राह्मण सहस्र बार एकांत में सांग गायत्री

का जप करता है सो महीने भर में महा पाप से छूट जाता है जैसे सर्प अपनी केचुलि से सूर्य नारायण उपनिषद में लिखा है कि जो सूर्य के सन्मुख बैठ के गायत्री कीं जप करता है उसके मनकीं डर जाती रहती है और बिपत आपदा टलजातीं है और सर्ब प्रकार के अशुद्ध खान पान बुरी संगति से शुद्ध और पावन हो जाता है सो वुह अद्भुत गायत्री जिसके यह आश्चर्य कर्म हैं यह है

ओं भूर्भुवः स्वः

तत्वितुर्वरेण्यंभर्गोदेवस्यधीमहिधीयोयोनःप्रचोदयात्

अर्थात ओंभू आकाश स्वर्ग हम सूर्य की बड़ी ज्योति का ध्यान करते हैं वुह हमारे मन को प्रकाश करे यह ऋग्वेद के चैाथे अध्याय के तीसरे अस्टक में लिखा है पर ओं जो स्तब का शब्द है और भूर्भुःस्वः जो व्याहृती कहलाती है गायत्री के प्रारंभ में उसकी सिद्धता के लिये लिखे जाते हैं सो यहीं गायत्री है जिसके बिषय स्कंध पुराण में लिखा है कि वेद में गायत्री से कोई बात बड़ी नहीं और न कोई मंत्र उसके समान है जैसे कोई नगर काशी के समान नहीं है गायत्री वेद और ब्राह्मणों की माता है और वुह अपने पढ़नेहारों की रक्षा करती है जैसा लिखा है

गायं तंत्रायते

अर्थात वुह अपने जप करनेहारों की रक्षा करती है

इस लिये गायत्री कहलाती है * गायत्री के प्रताप से एक चत्री बिश्वामित्र नामे ऋषिराज से ब्रह्म ऋषि ऊआ और नई स्रष्टि रचने की सामर्थ पाई सो ऐसी कोई बस्तु नहीं है जो गायत्री से न हो सके गायत्री से तो ब्रह्मा विष्णुमहेश और तीनों वेद ऊए महा भारथ में लिखा है कि क्षष्णा भी पापहार कहै जैसे यह श्लोक

तव संदर्शनादेव मुक्तोहं सर्व्व किल्बिसे

अर्थात तेरे दर्शन मात्र से मैं सर्ब पाप से छूटा * फिर गीता में यों लिखा है

अहंत्वां सर्व्व पापेभ्यो मोच्चयिष्यामि

अर्थात मैं तुझ को सर्ब पाप से छुड़ाऊंगा *

ऋगवेद और महाभारथ और ब्रह्म पुराण अरु और शास्त्रों में लिखा है कि सती होने से पाप दूर होता है जैसा उनमें लिखा है कि जो स्त्री अपने पुरुष के संग जल जाती है सो उसको वुह नरक में से यों खींच लेती है जैसे मदारी सांप को बिल में से खींच लेता है और उसको लेके एक संग स्वर्ग लोक में बास करती है जबलों उसका समस्त पुण्य हो न जावे फिर जो स्त्री अपने पुरुष के संग सती हो जाती है वुह अपने को और अपने पति को और अपने पति के सारे घराने को तार देती है यद्यपि उसका पति कैसाही ब्रह्म मित्र घातक और क्षतघ्नी हो तथापि उसके सती हो जाने से उसका समस्त पाप

मिट जाता है सो स्त्री के लिये सती होने के बराबर कोई धर्म नहीं है मिताक्षरा में यह श्लोक है

मातृकं पैतृकंचैव यत्र कन्या प्रदीयते
कुलत्रयं पुनात्येषा भर्तारं यानुगच्छति
व्यालग्राही यथासर्पं बिलादुद्धरतेबलात्
तद्वदुद्धृत्य सानारी सहते नैव मोदते

अर्थात जो स्त्री अपने पति के संग अग्नि में जलती है वुह अपने माता कुल और पिता कुल और पति कुल तीनों को पवित्र करती है जैसे मदारी सांप को बिल से बरबसी निकालता है तैसे वुह स्त्री उन सब को नरक से निकाल के अपने पति के संग स्वर्ग में आनन्द करती है * जैसे गरूड सर्प को बरबसी बिल से निकाल लेता है वैसाही सती होने हारी स्त्री अपने पति को नरक से निकाल के स्वर्ग में उस के संग आनन्द करती है अचंभे की बात यह है कि वेद शास्त्र की रीति से स्त्री ऐसी बुरी हैं कि मानों पापही के स्वरूप हैं किसी बात में उनकी साक्षी प्रमाण नहीं और उन्हें पूजा पाठ और वेद शास्त्र से कुछ प्रयोजन नहीं * मनु के इस श्लोक के समान

नास्तिस्त्रीणां पृथग्धर्मोनव्रतं नाप्युपोषणं
पतिंशुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते

अर्थात स्त्रियों के लिये पृथक धर्म और व्रत उपवास

नहीं क्योंकि वे पति हो की सेवा करने से स्वर्ग लोक में महान होती हैं * फिर नीति शास्त्र में यह श्लोक है

अनृतं साहसं मायाबचनं परुषाच्चरं
अषुचित्वं निर्दयत्वं स्त्रीणां दोषाःस्वभावतः
स्वभावएष नारीणां नराणामिहदूषणं
अतोर्थान्न प्रमाद्यंति प्रमदासुबिपश्चितः॥

अर्थात झूठ बोलना सहसा करना और छल छिद्री और कठोर बात कहनी अशुचि रहना निर्दय होना यह सब स्त्रियों का स्वभाविक दोष है और उनका यह भी स्वभाव है कि पुरुषों पर दोष लगाती हैं इस लिये बुद्धिमान पुरुष स्त्रियों से चैाकस रहते हैं * स्त्री की प्रकृति पुरुषों पर दोष लगाने की है इस करके बुद्धिमान मनुष्य उनके बश में नहीं रहते * पर अचंभा यह है कि यद्यपि स्त्रियां ऐसी निकम्मी और बुरी हैं तथापि सती होने से वे पल मात्र में ऐसी पुण्यत्मा बन जाती हैं कि केवल अपने को नहीं परंतु अपने माता पीता और पति की तीन तीन पीढ़ी को भी नरक से निकाल के स्वर्ग में लेजाती हैं और वहां अपने पति के संग आनंद करती हैं

शास्त्र और पुराण में लिखा है कि लूला लंगड़ा असाध्य रोगी कोढ़ी किसी पवित्र स्थान में अपना प्राण अर्पण करें अर्थात जगन्नाथ की रथ के पहिये तले पड़के अपने

को पिसवा डालें अथवा त्रवेणी में जाके करवट लेवें तो उनके सारे पाप दूर हो जावें और स्वर्ग में जावें फिर लिखा है कि शिव के नैवेद्य के खाने से सारा पाप जाता रहता है जैसे सक्तानंद तरंगीनी में यह है

रोगं हरति निर्म्माल्यं शोकन्तु चरणोदकं
अशेशं पातकं हन्ति शम्भोर्नैवेद्य भक्षणं

अर्थात शिव का निर्माल्य रोग को और चरणो दक शोक को हरता है और उसके नैवेद्य भक्षण सर्व पाप को नाश करता है * कुलारनें में यह स्लोक है जिसकी सुघड़ता वर्णन नहीं हो सकी

अंतर्योगं शश्वद्भजतां अंते मोक्षःस्त्रीसंगाच्च
हिंसाधर्मः पानं सुकृतं गुप्तोमुक्तः प्रगटो भ्रष्टः

अर्थात जो लोग अंतर्योग पंथ को सेवन अर्थात ब्रह्म का ध्यान करते हैं वे स्त्री के प्रसंग से अंत में मोक्ष पाते हैं हिंसा उनका धर्म मद पान करना पुण्य प्रगट में भ्रष्ट गुप्त में मुक्ति है * श्याम रहस में यह स्लोक है

मद्यंमांसंच मत्स्यञ्च मुद्रामैथुनमेवच
मकार पंच कंचैव महापातक नाशनं

अर्थात मद मांस मछली और मुद्रा मैथुन ये पांच मकार महापाप को नाश करनेहारे हैं

ईश्वर के नाम जपने से भी सारे पाप दूर हो जाते हैं इस बात के प्रमान के लिये भागवत में यह इतिहास प्रसिद्व है कि अजामिल नामे एक मनुष्य महापातकी गै ब्राह्मण का बध करनेहारा और मद पान करनेहारा था वुह अपने जीवन भर कुकर्म्महीं करता रहा उसके चार पुत्र थे उनमें से एक का नाम नारायण था जिसे अजामिल ने मरते समय तृषा की अवस्था में पुकारा कि ओ नारायण ओ नारायण नारायण तू मुझे जल दे इतने में अजामिल मर गया तो जम के दूत उसे जम पूर ले चले कि इस में विष्णु के दूत भी उसके लेने को आन पहुंचे और दोनों ओर के दूतों में लड़ाई झगड़े होने लगे निदान विष्णु के दूत अजामिल को उनके हाथ से छीन के बैकुंठ को ले गये इसके पीछे जम दूत जमराज के पास जाके उसके आगे अपना सब अस्त्र शस्त्र फेंक दिया और रिसिया के बोले कि महाराज हम आज से आप की सेवकाई न करेंगे क्योंकि इसमें हमारी बड़ी अप्रतिष्ठा और अपमान होता है तब जम राज ने चित्र गुप्त को आज्ञा दिया कि तुम अपनी बही तो तनीक देखो उसने कैसी करणी किई है चित्र गुप्त ने बही देख कर कहा कि अजामिल तो महा अधर्मी और अघी है उसके अघ तो अनगणित हैं तब जम राज व्याकुल होके बैकुंठ को चला और वहां पहुंच के इसका कारण पुछा विष्णु ने जमराज से कहा कि हां

वुह बड़ाही अघी था परंतु मरते समय उसने तीन बार नारायण का नाम लिया इस लिये नरक से बच के यहां आया है निदान अब हम एक और श्लोक में इस भाग को समाप्त करते हैं

क्षणंब्रह्माहमस्मीतियः कुर्य्यादात्मचिंतनं
तत्सर्वं पातकं हन्यात्तमः सूर्य्योदये यथा

अर्थात जो कोई अपने मन में क्षण भर भी ध्यान करे कि मैंही ब्रह्म हों तो उसके सारे पाप नष्ट होजाते हैं जैसे सूर्य के उदय होने से तम का नाश होता है

निदान शास्त्रों से जाना गया कि ऐसी २ बातों से पाप मिट जाता है सो इन के खंडन के लिये कोई प्रमाण अवश्य नहीं ये तो आपही खंडन होती हैं बिचारी को यहां टुक बिचार किया चाहिये

चौथा अध्याय

ये भी सत मत के आवश्यक चिन्ह हैं अर्थात आश्चर्य और भविष्यवाणी जिन के बिना सत्य मत ठीक नहीं ठहर सक्ता जैसे ऊपर बर्णन ऊआ (१) सो हिंदुओं के मत में जिस में ऊपर के चिन्ह नहीं मिले ये दो चिन्ह पाये जाते हैं अथवा नहीं

---

(१) देखो ९ पृष्ट में

पहिले आश्चर्य बड़े अचंभे की बातें राम कृष्ण के बिषय में लिखी हैं जैसे धनुष तोड़ना सेतु बांधना राक्षसें को मारना गोबर्द्धन को उठा लेना इत्यादि पर पहिले इसमें ध्यान किया चाहिये कि हिंदू बड़ेही अबिवेकी हैं कि बिना बिचारे अद्भुत चमत्कारें पर निश्चय कर लेते हैं जैसे कि कीनाराम और तुलशी दाश की व्यर्थ बातें को आश्चर्य कर्म समझते हैं * फिर जब मूर्तें का प्राण प्रतिष्टा करते हैं तो समझते हैं कि उसमें शक्ति आगई इस लिये उसकी पूजा अर्चा करते हैं और उसके सन्मुख बैठ कर उसके हाथ पांव फैलाने और मुख मुसकाने और रिसिया जाने का ध्यान करते हैं फेर यह कहते हैं कि काशी सर्ब सोने की बनी है और उसके कंकर सब संकर समान हैं (१) फिर कहते हैं कि पशु पानी पत्थर

---

(१) इस रीति की कथा कहानी पुराणें में बहुत हैं जैसें रामायण में बातापि और इलबिलः की कथा प्रसिद्ध है कि बातापि बकरा बन जाता था और उसका भाई इलबिलः उसे रींध ब्राह्मणें को खिलाता था फिर बातापि उनके पेटें को फाड़ फाड़ के बाहर निकल आता योंही सहस्रों ब्राह्मणें को उन दो भाइयें ने मार डाला एक समय ऐसा हुआ कि अगस्ति मुनि उनके यहां गये और बातापि बकरा बन गया और उसके भाई ने उसे रींध कर मुनि को खिलाया पर अगस्ति मुनि ने गंगा जल पीके उसको ऐसा पचा डाला कि फिर वुह बाहर न निकल सका यदि चाहो तो रामायण के अरण्य कांड के १७ सरगः में देख लो जिसमें इसका स्पष्ट बर्णन है।

लकड़ी जिस पर बिस्वास लाओ वही ईश्वर है भला जिन लोगों की यह मति बुद्धि है क्या आश्चर्य कि बिना बिचारे व्यर्थ बातों और अद्भुत चमत्कारों पर निश्चय करें फिर यदि हम मान भी लेवें कि शास्त्र के लिखने के समान उनके देवताओं ने आश्चर्य कर्म किया पर ठक ठक तो यह है कि उनमें आश्चर्य कर्म का पहिला चिन्ह भी नहीं पाया जाता कि वुह मत के निश्चय ठहराने के लिये देखाया जावे क्योंकि शास्त्र में तो कहीं लिखाही नहीं है कि किसी देवता अथवा ऋषि मुनि ने वेद शास्त्र और पुराण ठहराने के लिये कोई चमत्कार किया है और हिंदू मत की रीति से अनहोना भी है कि आश्चर्य और अचंभे किसी स्वर्गीय पुस्तक के चिन्ह ठहरें क्योंकि उनसे जाना जाता है कि बहुतेरे राक्षसों ने भी तपस्या करके बड़ी बड़ी आश्चर्य और अचंभे देखाये और तैंतीस कोटि देवताओं को पकड़ के बंदीगृह में डाल रखा और ब्रह्मा विष्णु महेश को थर थरा दिया और सारी पृथिवी को उलट पुलट डाला और पवन को चलने से रोक दिया और समुद्र को लहराने से बंद किया जैसे रावण और शुंभ निशुंभ के बिषय में लिखा है (१) इस्से ठीक जाना

---

(१) यदि कोई कहे कि उनको यह सब बल पराक्रम शिव के बल से मिला था तो हम उस्से पूछते हैं कि उसी शिव से जिसने वुह बात मोहनी से कही जिसका बर्णन ऊपर हुआ जिसमें ईश्वर

जाता है कि वेद और शास्त्र से आश्चर्य और अचंभे मत के चिन्ह नहीं हो सक्ते क्योंकि जितने आश्चर्य कर्म ईश्वर के निज लोगों में पाये जाते हैं उस्से अधिक बुरे लोगों में बरन दैत्य दानव में भी पाये जाते हैं

दूसरे आगमज्ञान * हिंदू कहते हैं कि हमारे शास्त्र में भविष्यबाणी हैं जैसे रामायण कि राम के अवतार के पहिले लिखा गया पर यह भूल है क्योंकि बालमीक जो रामयण का बनानेहारा है राम के साथ ही साथ रहता था

फिर कहते हैं कि संसार में नाना प्रकार के बिपर्यय होंगे कि लोग अपने धर्म को छोड़ के अधर्मरत होंगे और बड़ा बड़ा दुख और क्लेश उठावेंगे इसके पीछे कलंकी अवतार होगा तब सत्ययुग व्यापेगा सो इस भांति के आगम ज्ञान से क्या ठहर सक्ता है जो अब लों पूरे न ज़ए यदि पूरे भी होते तो उनसे कौन से शास्त्र ठीक ठहर सक्ते क्योंकि उन में तो सारी बिरुद्धता भरी हैं जैसा ऊपर बर्णन ज़आ सो जो प्रमाण कि एक को ठहरावेगा दूसरे को अवश्य झुठावेगा

और यह भविष्यबाणी जो वेद शास्त्र में लिखा है कि हिंदू धर्म उठजायगा इस्से यह जानाजाता है कि जो उस धर्म के स्थापन करनेहारे थे वे जानते रहे होंगे कि

कें एक चिन्ह भी न पाये गये फिर जिसमें सामर्थता का लेश नहीं है वह किस प्रकार किसी को बर देसक्ता है

उसकी कुछ जड़ नहीं जैसे कोई जन सुंदर घर बनावे और जाने कि इसकी नेंव दृढ़ नहीं है और मसाले सब कच्चे लगे हैं इस लिये वुह कहता है कि यह घर नहीं ठहरनेका कुछ दिन में ढह के गिर पड़ेगा भला कोई ऐसी बातों को भविष्यबाणी समझेगा कोई नहीं फिर कोई कलंकी अवतार होने और सर्बत्र धर्म फैलने की बात को आगम ज्ञान समझे तो बड़ी भूल है क्योंकि लोग कहते हैं कि कलंकी अवतार विष्णु का होगा और विष्णु ईश्वर नहीं ठहर सक्ता जैसा ऊपर बर्णन हुआ तो फिर वुह कुंआरी कन्या से क्योंकर अवतार लेगा और किस भांति का धर्म फैलावेगा जिसने जलंधर दैत्य की स्त्री के संग अधर्म किया निदान अब सत्य मत के चिन्हों अर्थात परमेश्वर के गुण प्रभाव और सृष्टि और मनुष्य की उत्पत्ति और परमेश्वर और मनुष्य के बीच संबंध और आश्चर्य और भविष्यबाणी से हिंदू धर्म की परीक्षा हो चुकी पर इसमें उन में से एक चिन्हभी न पाया गया इस लिये निश्चय है कि हिंदुओं का मत परमेश्वर की ओर से नहीं परंतु मन मता है

द्वितिय खंड

सत मत के लक्षणों से हिंदू धर्म की परीक्षा हो चुकी और जो कोई ऊपर की बातों को सोचेगा वुह निस्संदेह मान लेगा कि हिंदू मत परमेश्वर की ओर से नहीं सो लक्षणों के बिषय में जो प्रमान हमें लाने थे ला चुके पर और भी कितनी बातें हैं जिनके बिचार करने से और अधिक खुल जायगा कि यह मत परमेश्वर की ओर से नहीं उनमें से थोड़ा यहां बर्णन होता है

पहिला अध्याय

युग और वेद के अनादि होने के बर्णन में

वेद शास्त्र में चार युग अर्थात सतयुग त्रेता द्वापर कलयुग का बर्णन है जिनकी लाखों बरस की संख्या है पर ऊपर के बर्णन से जाना गया कि ये पुस्तक सत्य नहीं इस लिये कि उनमें परमेश्वर के कोई लक्षण नहीं पाये जाते इस कारण युगों की बातों के खंडन करने का कुछ आवश्यक नहीं क्योंकि जब वे पुस्तक ही खंडन हो चुके तो फिर युग का कहां ठिकाना रहा फिर जिसमें किसी बात का झगड़ा रगड़ा न रहे उस बात को भी वेद ही शास्त्र से खंडन करते हैं

वेद शास्त्र में लिखा है कि सतयुग में पाप न था और यह भी लिखा है कि साधु संतों की रक्षा करने के लिये और दुष्टों का संघार करने को बारंबार अवतार होता है जैसे भागवत गीता में यह स्लोक है

परित्राणाय साधुनां बिनाशाय च दुष्कृतां।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

अर्थात मैं साधुओं की रक्षा करने और दुष्टों के नाश करने और धर्म के स्थापन करने के लिये हर युग में अवतार लेता हों * फिर लिखा है कि सत युग में चार अवतार ज़ए अर्थात मच्छ कच्छ बाराह नरसिंह मच्छ का अवतार इस लिये ज़आ कि हेगृव को मार डाले कि वुह वेद को चुरा लेगया था बाराह अवतार हृणाक्ष के मार डालने के लिये ज़आ कि वुह पृथिवी को बटोर के समुद्र में लेगया था फिर कच्छप का अवतार पृथिवी के स्थिर करने के लिये ज़आ जब दैत्य उसे डगमगाते थे * और नरसिंह अवतार हृणकश्यप के मार डालने के लिये ज़आ लिखा है कि उसने खंभ से निकल के अपने नख से उसका उदर बिदारा और उसकी अंतड़ियां निकाल के अपने गले में पहिना और उसके रुधिर को पिया * निदान जिस समय में ऐसी लड़ाई झगड़ा चोरी हत्या अधर्म होवे वुह सतयुग क्यों ठहरे वुह तो ठीक कलियुग है फिर यदि सतयुग को मानो तो अवतार

को झूठा जानो और अवतार को मानो तो सतयुग को झूठा जानो उन में से एक को जिसे चाहो उसे मानो पर उसके संग यह भी जान रखो कि जब एक बात असत्य ठहरी तो दूसरी का क्या ठिकाना है

वेद शास्त्र में लिखा है कि सतयुग में मनुष्य लाखों बरस जीते थे यदि यह बात सत्य है तो यजुर्वेद के इस बाक्य का क्या अर्थ है * अर्थात जो मनुष्य अपने धर्म की बात का प्रतिपालन करता रहता है यदि चाहे तो वुह सौ बरस लग जीता रहे पर तो भी चाहिये कि उस समय लों उसका कर्म कुछ और प्रकार का न हो * हिंदू मानते हैं कि यजुर्वेद सतयुग में बरन उसके बहुत आगे भी था सो जो उस समय मनुष्य लाखों बरस जीते थे तो सौबरस का जीना क्यों बड़ी बात मानी

३ मनु का शास्त्र सतयुग में लिखा गया जैसे यह श्लोक है

अब्दानां दशकं सहस्र दशकं यातंच सत्ये
युगेभाद्रेमासिकृतामयाहिमनुनाब्रह्माज्ञया
पूर्णिमा इत्यादि

अर्थात जब सतयुग के दस सहस्र दस बरस बीत गये मैं मनु ने भाद्रमास की पूर्णिमा को ब्रह्मा की आज्ञा से इस शास्त्र को समाप्त किया * फिर कहते हैं कि सतयुग में पाप न था और उसी शास्त्र में स्त्रियों की बुराइयों

की बड़त सी बातें हैं अर्थात यह कि वेद की वाक्यों से स्त्रियों को कुछ काम नहीं यह आज्ञा ठहराई गई है सो पापिनी स्त्री वेद से और व्यवस्था से अज्ञान होके ऐसी मलीन और अशुद्ध हैं कि माने पाप ही रूप हैं और यह भी श्लोक है

बालया वायु वत्यावा वृद्धयावापियो षिता
न स्वातंत्रेण कर्त्तव्यं किंचित्कार्यं गृहेष्वपि
बाल्येपितुर्बशे तिष्ठेत्पाणि ग्राहस्य यैावने
पुत्राणां भर्तरि प्रेते न भवेत् स्त्रीस्वतंत्रता

अर्थात स्त्री बाल हो अथवा युवा अथवा वृद्ध पर गृह में कोई काम स्वतंत्रता से न करे बालावस्था में पिता के बश में रहे युवा अवस्था में पति के बश में और पति के मरने के पीछे पुत्र के बश में परंतु स्वतंत्र कभी न रहे * और यह भी श्लोक है

अविद्वां समलं लोके विद्वां समपि वापुनः
प्रमदाह्युत्पथं नेतुं काम क्रोध बशानुगं
मात्रा स्वस्रादुहित्रावान बिबिक्ता सनोभवेत्
बलवानिंद्रिय ग्रामो विद्वां समपि कर्षति

अर्थात स्त्री काम क्रोध बशी पुरुष को मुर्ख हो अथवा बुद्धिवान कुमार्ग में ले जाने के लिये लैस है इस लिये मा अथवा बहिन अथवा बेटी के संग एकांत में न बैठा

चाहिये क्योंकि इंद्री बड़ी प्रबल है बिद्वान को भी फंसा लेती है * फिर यह लिखा है

नैतारूपं परीच्चंते नासां बयसि संस्थितिः
सुरूपं वा बिरूपं वा पुमानित्येव भुंजते
पौंश्चल्याच्चल चित्ताच्चनैस्नेहयाच्च स्वभावतः
रच्चिता यत्न तोपीह भर्तृष्वेता बिकुर्वते

अर्थात स्त्री पुरुष की सुंदरता और तरुणता को नहीं चाहतीं कुरुप हो अथवा सुरुप पर पुरुष मात्र को भजती हैं और उनका स्वभाव पुरुष प्रवृति और चंचल और निर्दय होता है इस कारण उनकी चौकसी यत्न से करनी चाहिये * सब जानते हैं कि हर समय से स्त्री गिनती में पुरुष के बरा बर बरण पुरुष से अधिक होती आती हैं सो जब सत युग में भी स्त्रियों की यही दशा थी तो वुह सतयुग क्योंकर हुआ परंतु भठयुग ठहरा और पुरुष का भी कैसा स्वभाव था कि अपनी मा वहिन अथवा लड़की के संग अकेले में न बैठ सके हाय हाय ऐसे को सतयुग समुझते हैं इसे तो ठीक कलियुग कहा चाहिये (१)

---

(१) मनु के शास्त्र में नाना प्रकार की मन मता और पाषंडता का बखान है जो वेद के बिरुद्ध है देखो १२ अध्याय ९५ और ९९ श्लोक में फेर १२ अध्याय १०९ श्लोक में शास्त्र और पुराणों चरचा है सो क्या सतयुग में मनमता और पुराणदिक रहे

४ वेद शास्त्र में लिखा है कि आगे के तीनों युग उन्नतालीस लाख बरस के लग भग ज्ञए पर यह कभीं नहीं ठहर सक्ता है क्योंकि शास्त्र के बचन से उन तीनों युग के लोग एकही समय में थे अथवा थोड़ासा कुछ आगे पीछे जैसे लिखा है कि स्वयंभू जिसे मनु कहते हैं ब्रह्मा का पुत्र था और मनु का पोता कपिल और कपिल ने सांख सार शास्त्र को लिखा और उस शास्त्र में गीता का बर्णन है जिस में कलि युग की बातें लिखी हैं इस्से जाना जाता है कि तीन युग में तीन ही पीढ़ी ज्ञई इसी प्रकार गैातम की बात से भी समझा जाता है बरन इतने समय के लिये दो ही पीढ़ी ठहरती हैं क्योंकि लिखा है कि गैातम ने ब्रह्मा की पुत्री से ब्याह किया और उसी ने न्याय शास्त्र को लिखा जिस में गीता का वर्णन है जो कलियुग से सम्बंध रखता है * सब पंडित जानते हैं कि बालमीक अरु वेदव्यास एक हो समय में थे क्योंकि वेदव्यास ने जब महाभारथ के बनाने का ठान ठाना तो बालमीक से परामर्ष किया तिस पर भी उनके समयों में आठ लाख चैांसठ बरस का बीच जाना जाता है जैसे शास्त्र में लिखा है कि बालमीक त्रेता के अंत में ज्ञआ और वेदव्यास द्वापर के अंत में इस्से यह भी जानाजाता है कि कृष्ण और पांडव वेदव्यास के समय में थे अथवा कुछ आगे पीछे क्योंकि उनका सारा वृतांत महाभारथ में लिखा है (१)

---

(१) मनु के शास्त्र में अनेक प्रकार के पाप की प्रायश्चित लिखी है

फिर बड़ी लड़ाई जो समुद्र मथने के समय सुर और असुरों के बीच एक सो बरष लों ऊई सतयुग में थी देखो रामायण के बालकांड के अमृत पत्या सरगः में इंद्र ने कामातुर होके अपने गुरु गौतम की स्त्री अहिल्या से कुकर्म किया सतयुग ही में विष्णु और शिव ने धनुष के लिये आपस में लड़ाई किये सतयुग ही में ब्रह्मा ने अपनी पुत्री से और विष्णु ने जलंधर दैत्यकी स्त्री से प्रसंग किया और महादेव मोहनी पर मोहा सतयुग ही में

फिर जो कहते हैं कि वेद अनादि है तो किस भांति से ठहर सक्ता है पहिले तो यही नहीं जाना जाता कि वे कहां से हैं और किस्से हैं कोई तो कहता है कि ब्रह्मा के चार मुख से और कोई कहता है कि अग्नि वायू सूर्य से जैसे मनु के शास्त्र में यह लिखा है

अग्निवायुर विभ्यस्तुत्रयं ब्रह्म सनातनं
दुदोह यज्ञसिद्ध्यर्थ मृग्यजुः सामलक्षणं

अर्थात ब्रह्मा ने अग्नि और वायु और सूर्य से तीन सनातन वेद दुहे * अब बिचार करो कि जब वेद उनसे निकला तो अनादि किस भांति से ठहरा जो कोई वेद की बातों को सोचेगा वुह कभी न मानेगा कि वेद

पर किसी में युग का प्रति बंध नहीं किया और इस में राजा दोनों का बर्णन प्राचीनों की रीति पर किया है जिसे ब्राह्मणों ने मार डाला देखो ९ अध्याय ३२ श्लोक में।

अनादि है क्योंकि उस में संसार की बहुत सी बातों का वर्णन है जो समय समय लिखी गईं ऋग्वेद के आठवें अस्टक में एक ऋचा है जिसे एक राजा ने अपने दान पुण्य की प्रशंसा में लिखा जब वुह नपुसंकता से किसी ऋषि के कर्त्तव्य से फिर अपनी पुरुषत्व को प्राप्त हुआ और उसने उस ऋषि को बहुत सा कुछ दिया * और उस में एक भजन भी है जो उसकी रानी ने उस आनंदता के कारण से अलाप किया फिर उसी वेद में दूसरी ठोर एक मंत्र है जिसे बशिष्ट मुनि ने अन्न चुराने के समय एक कुत्ते को भूंकने से चुप करने के लिये पढ़ा * अथर्बन वेद में लिखा है कि तोषता ऋषि ने इंद्र के नाश के निमित्त बलिदान चढ़ाया इस लिये कि इंद्र ने उसके तीन पुत्र को मार डाला था ऋग्वेद के पहिले अध्याय में यह ऋचा है

अस्यपीत्वाशत क्रतो घनो ब्रत्राणाम् भवः
प्रावोवाजेषुबाजिनं

अर्थात हे इंद्र तू उसको पी कर ब्यत्रसुर का संघार करनेहारा हुआ तूने रण में लड़नेहारों को रक्षा किई * फिर यह ऋचा हैं

त्वमंग्नें मनवेघा मवाशयः
पुरूरवसे सुक्त्ते सुक्त्तरः

अर्थात हे अग्नि तूने स्वर्ग की बात मनु पर प्रगट किई और धर्मी पुरुष से सु व्यवहार किया * फिर यह ऋचा है

मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्वदङ्गि रोय यातिवत्सदने
पूर्ववच्छुचे अच्छयाइंद्रत्यादि

अर्थात हे अग्नि तू मनुष्य और अंगिरस और अत्रात और अगिले दिनों के मनुष्यों की भांति जग में आ * फिर यह ऋचा है

इंद्रस्यनुवीर्याणि प्रवोचंया निचकारप्रथमानिवज्री

अर्थात अब मैं इंद्र के बड़े बड़े कर्मों की प्रशंसा करूंगा जो बज्र से ऊआ * इस्से समझ पड़ता है कि पहिले इंद्र ने बड़े बड़े काम किये पीछे से किसी ने वेद में उन्हें लिखा ऊपर की ऋचा वेद में से संग्रह किईगई और इसी आशय के और भी बऊत ऋचा ढूंढने से मिल सक्ती हैं पर क्या प्रयोजन

वेद में भेड़ बकरी घोड़ा गदह बैल इत्यादि का बलिदान लिखा है और अग्नि जल सूर्य चंद्रमा धरती आकाश इंद्र बरुण सरस्वती इत्यादि की पूजा है इस्से प्रगट होता है कि ये सब बस्तें पहिले थीं और इनके पीछे वेद ऊआ फिर उसमें बारह अवतार का बर्णन है जिसे कहते हैं कि सतयुग में ऊआ अथर्वन वेद के रामतापन्या उपनिषद और गोपालता पन्याउपनिषद में राम कृष्ण का बर्णन है

यद्यपि हिंदुओं में प्रसिद्ध है कि राम त्रेता में और कृष्ण द्वापर के अंत और कलियुग के आरंभ में हुये और साम वेद के छंदोगिया उपनिषद के तीसरे अध्याय में लिखा है कि कृष्ण देवकी से उत्पन्न हुआ और घोर से शिक्षा पाई इसकी यह ऋचा है

अथयत्तपोदानमार्जवमहिंसा सत्यबचनमितिता अस्यद क्षिणाः तस्मादाहुः सोष्यत्य सोष्टेति पुनरुत्पाद न मेवास्य तन्मरण मेवाव भ्टथस्त देतद घोरआंगिरसः कृष्णाय देवकी पुत्रायोक्त्वा वाचा पिपास हैवसबभूव सोन्तवेलायामे तत्रयं प्रतिपद्येता क्षितमसि अच्युतमसि प्राण संशितमसीति

तत्रैतेद्वेऋचौ भवतः।

निदान जो कोई पक्ष छोड़ के इन बातों को सोचेगा वुह अवश्य करके मान लेगा कि युग का बर्णन और वेद के अनादि होने का व्याख्यान सत्य नहीं बरन उसमें ऐसा भूल चूक है जैसे वुह बात जो लिखी है कि परमेश्वर मच्छ का अवतार लेकर वेद के निकालने के लिये समुद्र में डूबा और सूकर का अवतार लेकर पृथिवी को स्थिर किया और बावन का रूप धर के राजा बलि को छला और बोध अवतार लेकर नास्तिक मता फैलाई और कि वही सब घट व्यापक और सब में बोलता बन कर जितने पाप और बुराईयां जग में होती हैं उनका कर्त्ता है (१)

---

(१) और वुह बात कि अठारह पुराण वेदव्यास से लिखे गये

यह भी ध्यान रक्खा चाहिये कि जिन पुस्तकों में ये बातें हैं ऊपर के प्रमाणों से खंडन हो चुके

दूसरा अध्याय

इसके बर्णन में कि बुद्धि से जानाजाता है कि सतमत सारे जगत के लिये है और हिंदुओं की मत केवल हिंदुओं के लिये है

पहिले परमेश्वर एक है और इस बात को हिंदू भी जानते हैं सो जब परमेश्वर एक है तो उसका मत और आचार भी एक ही होगा और दया इत्यादि में सब के लिये अवसर हो इस करके जगत के सारे लोग मानो गुरु भाई हैं और परमेश्वर सबका गुरु और मत का तात्पर्य्य यह है कि उसके कारण से मनुष्य परमेश्वर के समान पवित्र और धर्मी होजायें और मत तो मानो एक सांचा है कि उसमें जो बस्तु ढालिए एकही प्रकार की ढलेगी दूसरे प्रकार की नहीं इस रीति से संसार के सारे मनुष्य परमेश्वर के मत से एक ही प्रकार के होजाते अर्थात पवित्र और धर्मी बनते इस लिये एक ही मत चाहिये क्योंकि जो सांचे अनेक होते तो अनेक प्रकार से लोग स्वर्ग लोक में जा सक्ते पर यह तो अन होना है

और उनमें से एक अर्थात पद्म पुराण है जिस में राम अनुज का बर्णन है जो सन १२०० ईसवी में था

दूसरे प्रगट है कि संसार के सब मनुष्यों की तन मन की प्रकृति एकही प्रकार की और सब की एक ही प्रकार की उत्पति और सब आंख कान नाक हाथ पांव में बरा-बर और उनकी एक ही भांति की आवश्यकता और एकही भांति की संतुष्टता जो एक के लिये अमृत है तो दूसरे के लिये बिष नही पीड़ा वेदन सोच चिंता बिपत आपदा हित मित अपने पराये छोटे बड़े के रोग शोक और समस्त दुख सुख में एक सार और अनंत जीवन की इच्छा भी सब के मन में बनी है और संसा-रिक बस्तुन के बिषय भी हर एक की बुद्धि और ज्ञान में बहुत ही समानता देखपड़ती है पर हां उनके पदों में बिभेद है कि कोई राजा कोई प्रजा कोई छोटा कोई बड़ा है तथापि सब के सब मन प्रकृति और तत्व प्रभाव में बराबर हैं जैसे समस्त संसार एक डा रखता है कि दो दो पांच कभी नहीं होते और न लोहा सोना न काष्ट पत्थर न सूर्य से अंधकार न शीत ऐसाही संसार की ब-हुत सी बातों में मेल पाया जाता है पर मत में इस फूट और भिन्नता का क्या कारण है कि कोई तो पाषण को पाषाण समझता है कोई देवता और सूर्य को कोई जग का दीपक जानता है कोई परमेश्वर (१) भला जब कि परमेश्वर एक है और सब मनुष्यों के देह और आत्मा

(१) बजनियः वलक कहता है कि सूर्य ब्रह्म है यह उपनिषद और वेद के कई साक्ष्य में लिखा है और ऐसा ही भविष्य पुराण

में भी ऐसी समानता पाई जाती है और हर एक इस बात को मान लेता है कि संसार के सारे लोगों को चाहिये कि एक दूसरे को प्यार करे और मत की भी अभिप्राय यही है कि ईश्वर को मनुष्य पर प्रगट करे जिस करके मनुष्य ईश्वर को पहिचाने यह बात सब में प्रमाणिक भी ठहर गई किसी प्रकार से खंडन के योग्य नहीं तो निश्चय करके ईश्वर का मत भी एक है और सबके लिये है क्योंकि सत्य जो पदारथ है एक है और सबके लिये है पर हिंदुओं का मत सबके लिये नहीं बरन अन होना है कि कोई दूसरा उनके मत में आ सके यद्यपि सब मान लेते हैं कि परस्पर प्रेम रखा चाहिये पर यह बात उनके मत में कहीं नहीं पाई जाती परंतु इसके बिरुद्ध और मतवालों से घिन रखने की आज्ञा है कदाचित उनसे कोई बोले चाले अथवा छू आ लेय तो उन्हें प्रायश्चित करना पड़े

तीसरा अध्याय

जाति के बिषय में

यदि हिंदुओं का धर्म सत्य भी होवे तो भी और मत वालों को उनके मत से कुछ लाभ नहीं क्योंकि वे उनके

भी कहता है कि सूर्य से श्रेष्ठ न कोई था न है न होगा इस लिये वुह वेद में ब्रह्म करके प्रसिद्ध है

मत में कभी नहीं आसक्ते हैं जैसे दूसरे अध्याय में वर्णन ज़ुआ फिर वे अपने मत से केवल और ही देश के लोगों से अलग नहीं ज़ुए परंतु आपस में भी बट गये ब्राह्मण से लेके डोम चमार तक जिनका नाम मात्र लेते ब्राह्मण घिनाते हैं सहस्रों जाति भीति की नाईं एक को दूसरे से पृथक पृथक रखता है चार वर्ण का वर्णन वेद शास्त्र में है और ये चारों ऐसे चिर्रैबातों हो गये कि कुछ वर्णन नहीं किया जाता और हिंदू की जाति ऐसी नि-र्जीव बातों पर ठहराई गई कि यदि उनकी परिच्छा शास्त्र की रीति से होवे तो कधी एक भी अपनी जाति पांति में न ठहरे

फिर जाति के स्थापित होने में बज़ुत ही संदेह होता है * साम वेद और स्मृती और कितने पुराणों के लिखे के समान ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से छत्री भुजा से और वैश्य जांघ से और शूद्र पांव से निकले और भागवत में यह बात है कि ब्रह्मा ने अपने को आधे आध कर डाला दहिना भाग पुरुष बना जिसका नाम स्वयंभू और बाम भाग स्त्री जिसका नाम सत रूपा और उन्हों ने अपना संतान चार वर्ण में बांटा मानो एक फल की फांक चौ मुखी काटी (१) वेद शास्त्र के बीच जाती पांति

(१) सब ब्राह्मण एक ही वंश से नहीं हैं बज़ुतेरे कैवर्त्त कुल से बज़ुतेरे राज कुल से और बज़ुतेरे चांडाल कुल से हैं और जब लों वे जगत में रहे चूड़ाकर्ण और मुंड बंधन और दंत काष्ठ यज्ञोपवीत

के स्थापित होने के बिषय ऐसा बिरोध है जैसा उनकी दूसरी बातें में जिस प्रकार से ऊपर बर्णन ऊआ सो अब हम उसका छोड़ के यह पूछते हैं कि जाति क्या बस्तु है अथवा ब्राह्मण होना क्या बस्तु है वुह जीव है अथवा जाति अथवा शरीर अथवा आचार अथवा कर्म अथवा वेद

यदि तुम कहा कि ब्राह्मण होना जीव से संबंध रखता है ता यह बात वेद के विरुद्व है क्योंकि वेद में लिखा है कि सूर्य चंद्रमा इंद्र अरु और देवते पहिले चतुष्पद थे और दूसरे देवते भी वैसाही थे इसके पीछे देवते हो गये बरण स्थापिक भी देवते हा गये महाभारथ में लिखा है कि कुंजलगिरि पर्बत के सात अहेरी और दस हरिण और मान सरोवर के एक हंस और सिंहलद्वीप के एक चकवा ने कुरुक्षेत्र में ब्राह्मण के जन्म पाये और वेद पढ़के बड़े पंडित ऊए फिर धर्म शास्त्र में मनु कहता है कि यदि कोई ब्राह्मण चारों वेद और वेदांग और उपांग को जान के किसी शूद्र से दान प्रतिग्रह करे ता वुह गदहे का बारह जन्म और सूअर का साठ जन्म और कुत्ते का सत्तर जन्म पावेगा इन बातों से निश्चय है कि

इत्यादि करते रहे और मरने के पीछे ब्राह्मण करके विदित ऊए निदान जैसे ब्राह्मणों की जाति में गड़ बड़ अध्याय वैसा ही क्षत्री इत्यादि की जाति में भी है

ब्राह्मण होना जीव से कुछ संबंध नहीं रखता क्योंकि यदि जीव से कुछ संबंध होता तो ये बातें नहीं हो सक्तीं

फिर यदि कहो कि ब्राह्मण होना कुल से है अर्थात जिसके माता पिता ब्राह्मण होयें वुह अवश्य करके ब्राह्मण होगा सो इस बात को स्मृति खंडन करती है कि अचल मुनि हस्ती से उत्पन्न ऊआ और केस पिंगल मुनि उल्लू से और अगस्ति मुनि अगस्त के फूल से और कौशिक मुनि कुशा से और कपिल मुनि मरकट से और गैातम ऋषि एक शाखा लता से और द्रोणाचार्य घट से तित्री ऋषि तीतर से और परसराम रज से और शरंग ऋषि हरणी से और व्यास मुनि कैवर्त्तिन से और कौशक मुनि शूद्रिन से और बिश्वामित्र चांडालिन से और बशिष्ट मुनि वेश्या से उत्पन्न ऊए इन में से एक की मा ब्राह्मणी न थी तथापि सब के सब ब्राह्मण कहलाये इस्से जाना गया कि शास्त्र की रीचि से ब्राह्मण होना कुल करके भी नहीं है

मनु के शास्त्र में लिखा है कि बऊत से शूद्र धर्म के प्रताप से ब्राह्मण हो गये जैसे कथन मुनि तपस्या करने से ब्राह्मण ऊआ और बशिष्ट मुनि जो उर्बसी बेश्या से था और नारद मुनि जो कलवारिन के पेट से था तपेस्या करके ब्राह्मण होते गये और लिखा है कि व्यास ने एक शूद्र को ब्राह्मण बनाया इस्से भी जाना गया कि ब्राह्मण होना कुल करके नहीं है

फिर कोई कहे कि जिसके माता पिता ब्राह्मण होयें वही ठिक ब्राह्मण है तो हम उस्से पूछते हैं कि मुख्य ब्राह्मण कैान है क्योंकि कोई ऐसा नहीं है जिसके घराने में कुछ कलंक दोष न लगा हो फेर मनु के शास्त्र में लिखा है कि जो ब्राह्मण मांस ग्रास करे वुह उसी घड़ी जाति पांति से निकाला जाय फिर जो कोई मधुरमल अथवा लोन अथवा दुग्ध बेचे तो वुह तीन दिन के बीच में शूद्र हो जावे इन बातों से भी जाना गया कि ब्राह्मण होना कुल जाति करके नहीं है क्योंकि जो जाति कुल करके होता तो ऐसी बातों से किस रीति जाता रहता क्या तुम ने कभी सुना है कि उड़ता घोड़ा भूमि पर उतरने से कहीं सूअर हो गया है यह तो अन होना है

फिर कोई कहे कि ब्राह्मण होना देह शरीर करके है तो यह भी बिरुद्ध है क्योंकि जो देह ब्राह्मण है तो अग्नि जिस्से वुह दग्ध किया जाता है ब्राह्मण की घातिक ठहरी ग्रैार इसी प्रकार से वे सब भी उसके घातिक ठहरे जो उसकी लोथ को जलने के लिये चिता पर रख देते हैं ग्रैार जब देह ब्राह्मण ठहरा तो हर एक मनुष्य जिसका पिता ब्राह्मण होय ग्रैार माता क्षत्रिणी अथवा बैश्यनी अथवा शूद्रणी वुह ब्राह्मण ठहरेगा क्योंकि वुह अपने पिता की हड्डी का टुकड़ा ग्रैार उसके मांस का लोथरा है पर इस बात को कैान मानता है

फिर जो यज्ञ करना कराना और पढ़ना पढ़ाना और दान देना लेना अरु और जितने धर्म के कार्य हैं सब ब्राह्मण ही के देह से होते हैं तो क्या उन सब कर्मों का पुण्य ब्राह्मण के देह जलाने से जाता रहता है इसे कोई न मानेगा सो जाना गया कि ब्राह्मण होना देह करके भी नहीं है

यदि कोई कहे कि ब्राह्मण होना ज्ञान से है तो यह भी भूल है क्योंकि जो ज्ञान से ब्राह्मण होता तो अबतक बहुत से शूद्र ज्ञान मान होकर ब्राह्मण हो गये होते इस लिये कि कितने शूद्र ऐसे हैं कि चारों वेद और व्याकरण और मिमानसा और सांख्य और बिशेष और ज्योतिष शास्त्र पढ़े हैं तथापि उनमें से कोई ब्राह्मण नहीं कहलाता इस्से जाना गया कि ज्ञान से कोई ब्राह्मण नहीं हो सक्ता यदि कोई कहे कि क्रिया आचार से ब्राह्मण होते हैं तो यह भी ठीक नहीं क्योंकि नट और भाट और किट्टत और भांड अरु और बहुत से लोग हैं जो धर्म के दुर्गम कार्यों को करते हैं क्रिया आचार में वे सब में प्रसिद्ध हैं तथापि उन्हें कोई ब्राह्मण नहीं कहता इस्से ठीक जाना जाता है कि ब्राह्मण होना क्रिया आचार से भी नहीं है

यदि कहो कि वेद के पढ़ने से ब्राह्मण होता है तो बतलाओ कि कौन से वेद पढ़ने से लंका में रावण के समय बहुत से राक्षस वेद को पढ़ते थे पर उनमें से कोई

ब्राह्मण न ज़ुआ सो जब वेद पढ़ने और संसकार और कुल बर्ण और कर्म से ब्राह्मण नहीं हो सक्ता तो फिर ब्राह्मण होना क्या बस्तु है * वेद में लिखा है कि देवते उसे ब्राह्मण जानते हैं जिसके मन में नेम धर्म दीनता और आधीनता और कोमलता हो और संग और परिग्रह और राग और द्वेश न हो और हर एक शास्त्र में लिखा है कि ब्राह्मण के लक्षण दया सत्य तपस्या इंद्रियों को बश में करना है और चांडाल के लक्षण इनके बिरुद्ध फिर शुक्राचार्य ने कहा है कि देवते कुछ जाति के ऊपर नहीं जाते परंतु जो सज्जन पुरुष हैं उसी को ब्राह्मण जानते हैं यद्यपि वुह सब से नीच जाति होय जैसे यह श्लोक है

शुचिसद्भक्तिदीप्ताग्निदग्धदुर्जातिकल्मषः
श्वपाकोऽपिबुधैःश्लाघ्योनवेदज्ञोऽपिनास्तिकः

अर्थात सद्भक्ति अग्नि करके जिस दुष्ट जाति के पाप जले हैं बुह चांडाल बुद्धि जनों के प्रशंसा के योग्य है और जो वेद का जान्ने हारा होके नास्तिक है वुह प्रशंसा के योग्य नहीं * फिर यह श्लोक है

नमेभक्तश्चतुर्वेदी मद्भक्तः श्वपचःप्रियः
तस्मैदेयंततोग्राह्यंसचपूज्यो यथाह्यहं

चतुर्वेदी भक्ति हीन मेरा प्रिय नहीं परंतु चांडाल

भक्तिमान मेरा प्रिय है उसी को देना लेना और उसी को मान्ना है जैसा मुझे

यह अचंभे की बात है कि पहिले तो तुम कहते हो कि एक ही अर्थात ब्रह्मा से सब उत्पन्न हुए और फिर चार वर्ण को भी ठहराते हो तो इसमें तुम्हारा बड़ा भूल है क्योंकि एक माता पिता के जो चार पुत्र होते हैं तो उन चारों की एक ही जाति कहलाती है जैसे उडुम्बर और पनस और कठहर के पेड़ कि उनकी डाली और स्तन और गांठ और जड़ सबमें फल लगते है पर सब ठौर के फल एक ही भांति के कहलाते हैं दूसरे प्रकार के नहीं फिर जो तुम कहो कि ऊपर का फल ब्राह्मण और नीचे का फल शूद्र है तो लोग तुम्हें क्या कहेंगे तुम ही टुक मन में सोचो हां पशुन की जाति पांति और उनके अंग ढंग अरु और उनकी कितनी बातों में बीच है जैसे हाथी के पांव घोड़े के पांव के ऐसे नहीं न बाघ के पांव हिरण के पांव ऐसे इसी प्रकार से हर एक भांति के जीव जंतुन के पांव में बिभेद है और इसी करके उनकी नाना प्रकार की जाति जानी जाती है पर हमने कभी नहीं सुना कि ब्राह्मण और क्षत्री के पांव में अथवा शूद्र और बैश्य के पांव में कुछ बीच है फिर गाय भैंस हाथी घोड़े बैल गदहे भेड़ बकरे इत्यादि के अंग ढंग मल मूत्र गंध बास और बोलियां अलग २ हैं और इन्हीं करके वे सब भिन्न २ जाने जाते हैं पर ब्राह्मण क्षत्री शूद्र बैश्य इन सब बस्तुन में

बराबर हैं और उनके तन मन की बात एक ही भांति की और रुधिर मांस और हाड़ चाम और रूप रंग खाने पीने हगने मूतने उत्पन्न होने पाले पोषने की रीति एक ही है और जिन बातों से ब्राह्मण को दुख सुख होता है उन्हीं बातों से और वर्ण को भी होता है * और चारों के जीने मरने की रीति एक है और उनकी बुद्धि बिचार और भय आशा में कुछ भेद नहीं सो निश्चय हुआ कि सब मनुष्य एक ही जाति हैं और ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र में जो भेद है सो केवल धर्म और व्यवहार और उद्यम में हैं और किसी बात में नहीं जैसे वैशम्पायन ऋषि और राजा युधिष्ठिर के बाक्य से जाना जाता है कि एक दिन पंडों के पुत्र युधिष्ठिर ने जो अपने समय का बड़ा ज्ञानी था हाथ जोड़ के वैशम्पायन ऋषि से पूछा कि महाराज आप ब्राह्मण किसको कहते हैं और ब्राह्मण के क्या लक्षण हैं वैशम्पायन ने कहा कि ब्राह्मण का लक्षण यह है कि उसमें धर्म और धर्म के गुण होवें और वह कभी अधर्म और अकर्म न करे और कभी मांस न खावे और किसी जीव को न सतावे दूसरा लक्षण यह है कि जो पराई बस्तु मार्ग में पड़ी पावे तो उसके स्वामी की बिनु आज्ञा न लेवे तीसरा लक्षण यह कि काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर से न्यारे रहे और संसार के बिषयों पर मन न लगावे चौथा यह कि मनुष्य हो अथवा देवता अथवा पशु काम के बश न होवे पांचवां

यह कि उसमें ये पांच पवित्र गुण हों दया सत्य इंद्रियों का बश में करना और तपस्या सब से प्रेम जिन में ये गुण होयें मैं उसी को ब्राह्मण जानता हों और जिसमें ये नहीं सो शूद्र है क्योंकि ब्राह्मण होना जाति बर्ण और कुल अथवा पूजा पाठ से नहीं पर चांडाल जो धर्मी हो और उसमें ऊपर के सब लक्षण पाये जायें तो वही ब्राह्मण है हे युधिष्टिर इस संसार में पहिले एक ही जाति थी पर धर्म अधर्म के करने से चार जाति हो गई सब मनुष्य स्त्री से एक ही रीति पर उत्पन्न ऊए सब को भूख प्यास शीत उष्णता होती है सबके एक ही प्रकार के अंग ढंग और प्रकृति स्वभाव पर जिसकी चाल चलन सदा से अच्छी है वही ब्राह्मण है नहीं तो शूद्र हां शूद्र से भी निकृष्ट इसके बिरुद्व जिस शूद्र में ये लक्षण होयें वही ब्राह्मण है हे युधिष्टिर जो अपनी इंद्री को बश किये है उसी को ब्राह्मण जान्ना और उसी को देना पुण्य है उसकी जाति पर भ्रमन करना बरन उसके गुण प्रभाव को देखना जो कोई इस संसार में भलाई करता अरु औरों का भला चाहता और भले कामों में रात दिन लगा रहता वही ब्राह्मण है और जो संसारिक कामों को छोड़ के केवल मुक्ति की खोज में रहता वही ब्राह्मण है और जिसमें कशमा दया दम दान सत्य सोच स्मृती रिघिरना ज्ञान बिद्या इत्यादि हैं वही ब्रह्मण है * वेशमपायन ऋषि की इन बातों में से यदि कोई निषेध के योग्य होय तो

होय पर उनका तात्पर्य यह है कि चार बरण का व्यवरा केवल भावना है सो वेदशास्त्र से जाति के ठहराये जाने का कुछ ठिकाना नहीं जाना जाता न चार बर्ण के होने की कुछ प्रतीति समझ पड़ती है बरण ऊपर के प्रमाणों से निश्चित ज़ुआ कि सब मनुष्य एक ही जाति हैं (१)

३ अब हम जाति की बुराई को संक्षेप में वर्णन करते हैं * पहिले चार बर्ण के नाम रखने के विषय में मनु के शास्त्र में लिखा है कि ब्राह्मण के नाम में दो शब्द चाहिये पहिले का अर्थ पवित्रता हो दूसरे का तेज प्रताप और इसी प्रकार से क्षत्री के नाम में दो शब्द चाहिये पहिले शब्द का अर्थ पराक्रम हो दूसरे शब्द का अर्थ रक्षा और वैश्य के नाम में भी दो शब्द होयें पहिले का अर्थ सम्पति दूसरे का अर्थ प्रतिपाल करना फिर शूद्र के नाम में भी दो शब्द होयें पहिले का अर्थ तुच्छता दूसरे का अर्थ दीनता से सेवा टहल करनी इस रीति से ब्राह्मण सब का स्वामी और क्षत्री उसका प्यादा वैश्य उसका बनजारा और शूद्र उसका दास ठहरता है (२) मनु के शास्त्र

---

(१) भागवत में लिखा है कि राजा परीरवास के पहिले एकही जाति और एकेही अग्नि और एकही नारायण थाे फिर लिखा है कि राजा सोनक ने चार बरण को ठहराया और सर्बत्र लिखा है कि सत युग में एकही जाति थी

(२) स्मृती में लिखा है कि ब्राह्मण से दस और क्षत्री से पंद्रह और बैश्य से बीस और शूद्र से पचास रूपये सैकड़े ब्याज लिया चाहिये

में लिखा है कि ब्राह्मण शूद्र से बरबस सेवा टहल करवा॰ वे चाहे उस का मोल का लिया हो चाहे मोल का न लिया हो क्योंकि शूद्र को जो सेवक की जाती है ब्राह्मण हीं की सेवा के लिये स्वंभू ने उत्पन्न किया जैसा मनु के शास्त्र में लिखा है

नस्वामिनानिसृष्टोपि शूद्रो दास्याद्विमुच्यते
निसर्गजंहितत्तस्यकस्तस्मात्तदपोहति

अर्थात स्वामी शूद्र को अपनी सेवकाई से छुड़ा देवे तोभी वुह सेवकाई से नहीं छूटता क्योंकि सेवकाई ही उसका धर्म है इस लिये कौन उसे सेवकाई से छुड़ा सक्ता है फिर उसी शास्त्र में लिखा है

एकजातिर्द्विजातींस्तुवाचा दारुण याक्षिपन्
जिव्हायाःप्राप्नुयाच्छेदंजघन्य प्रभवोहिसः॥

अर्थात यदि शूद्र ब्राह्मण को कठोर बाणी कहे तो उस की जीभ काटी जाय क्योंकि शूद्र नीचांग से उत्पन्न ऊआ है *

फिर यों लिखा है कि जो कोई द्विज को गारी देय तो उसकी जीभ बीचोबीच से चीर डाली चाहिये और यदि उसके नाम और जाति पांति की निंदा करके कहे कि अरे देवदत्त तो दस अंगुल का सूजा तप्त करके उसके तालू में कर दिया चाहिये और यदि दंभ से पंडितों को

उपदेश करे तो राजा को चाहिये कि तेल उष्ण करके उसके मुंह और कान में डलवा देवे फिर मनु के शास्त्र में लिखा है ८ अध्याय के २८१ श्लोक में

सहासनमभिप्रेप्सुरुत्कृष्टस्यापकृष्टजः
कट्यांकृतांकोनिर्वास्यःस्फीचंवास्यावकर्तयेत्

अर्थात जो निकृष्ट जाति उत्कृष्ट जाति के आसन पर बैठे तो उसकी कटि में चिन्ह करके बाहर निकाल देय अथवा उसके चूतड़ में घाव कर देय * और जो नीच उत्तम को देख के थूके तो राजा को चाहिये कि उसके दोनों होंठों को काट लेवे फिर मूतनेहारे का लिंग काटे और पादनेहारे का गुद छेद डाले फिर यह लिखा है ४ अध्याय के ८० श्लोक

न शूद्रायमतिं दद्यान्नोच्छिष्टं नहविष्कृत्तं
नचास्योपदिशेध्धर्मन्न चास्यव्रतमादिशेत

अर्थात शूद्र को ज्ञान न देना और न ब्राह्मण का जूठ और न होम का शेष और न धर्मोपदेश और न व्रत उसे बतलाना * शास्त्र में इसके परे और बहुत सी बातें हैं पर सब का वर्णन करना कुछ आवश्यक नहीं

दूसरी कोई जाति व्यभिचार करे तो शास्त्र की आज्ञा है कि वुह मारा जाय पर यदि ब्राह्मण व्यभिचार करे तो केवल उसकी चूंटी मुंडवाई जाय फिर यद्यपि ब्राह्मण

पर हर प्रकार के पाप ठहरें पर राजा उसे कभी न मारे हां उसको भला चंगा उसके धन संपत्ति समेत अपने देश से निकाल देवे जगत में ब्राह्मण के मारने के बराबर कोई पाप नहीं इस लिये राजा को चाहिये कि ब्राह्मण के मारने का ध्यान मात्र भी अपने मन में न करे फिर हर एक बर्ण की नरबली हो सक्ती हैं पर ब्राह्मण की नरबली कभी न किई चाहिये * मनु के शास्त्र में यह श्लोक है

मौढ़यंप्राणांतिकोदराडो ब्राह्मणस्य विधीयते
इतरेषांतु बर्णानां दंडः प्राणान्तिको भवेत्
न जातु ब्राह्मणं हन्यात्सर्ब पापेष्वब स्थितं
राष्ट्रा देनं वहिः कुर्य्यात्समग्रधन मच्चतं

अर्थात ब्राह्मण को प्राणांत दंड देना मूढ़ता है अरु और बर्ण को प्राणांत दंड देना चाहिये यद्यपि ब्राह्मण सर्ब पाप किये हो तो भी उसे वध न किया चाहिये परंतु उसको बिना घाव किये सर्ब धन समेत देश बाहर कर दिजिये * फिर बूंड बिवेक में यह श्लोक है

महापातक युक्तोपिन बिप्रो बध मर्हति
निर्बासनांक मौंडयंहितस्य कुर्य्यान्नराधियः

बृहस्पतिः

अर्थात यदि ब्राह्मण महापातकी हो तो भी बध के

योग्य नहीं परंतु राजा उसका मुंड मुड़वाके और शरीर में चिन्ह करके देश निकाल देवे * फिर यह श्लोक है

आचार्यञ्च प्रवक्तारं पितरं मातरं गुरुं
न हिंस्याद्ब्राह्मणान्गाश्च सर्वांश्चैव तपस्विनः

अर्थात आचार्य्य और पढ़ानेहारे और माता पिता और गुरु और गौ ब्राह्मण और तपस्वी को वध न करना चाहिये * ब्राह्मण के न मारने का एक बड़ा ही कारण यह है कि ब्राह्मण की देह समस्त देवताओं के रहने का स्थान है सो यदि वुह मारा जावे तो उनका कहां ठिकाना है जैसे उरहत पुराण में लिखा है

ब्राह्मणस्य तनुर्ज्ञेया सर्व्वदेव समाश्रिता
साचेत्संतापिता राजन्किमुवच्या महेवयम्

अर्थात ब्राह्मण का तन सर्व देवताओं का निवास स्थान है सो जो वुह तन दुखित हो तो हम क्या कहें * फिर यह श्लोक है

विस्रब्धं ब्राह्मणः शूद्रातद्रव्योपा दानमाचरेत
न हितस्यास्तिकिंचित् स्वंभर्टहार्य्यधनो हिसः

अर्थात ब्राह्मण शूद्र के द्रव्य को निधड़क लेलेवे क्योंकि शूद्र का कुछ भी नहीं है उसकी द्रव्य उसके स्वामी ही की है

दूसरी ठौर में लिखा है कि यदि कोई ब्राह्मण को एक तिनके से भी मारे तो उसे एक्कीस बार पशु का जन्म

लेना पड़ेगा देखो एक तिनके से अपराध का पहाड़ ऐस दंड * राजा यद्यपि भूखों मरता हो पर ब्राह्मण से कर कभी न लेवे पंडित यदि गड़ी ऊई संपत्ति पावे तो वुह सब की सब लेलेवे क्योंकि वुह सबका स्वामी है पर जो राजा गड़ी संपत्ति पावे तो आधा ब्राह्मण को बांट देवे फिर मनु की आज्ञा है कि जो धन बिना स्वामी का ठहरे तो उसका स्वामी ब्राह्मण है और शूद्र के लिये आज्ञा है कि धन न बटोरे फिर ब्राह्मण को कोई सतावे और वुह क्रोधित होवे तो वुह राजा को और राजा की सारी सेना को मार डाल सक्ता है और एक नई सृष्टि देवते मनुष्य राजा समेत उत्पन्न कर सक्ता है और सारा जगत उसकी कृपा और सहाय से स्थिति रहता है

निदान मनु की और वेद शास्त्र की बातों के बिचार करने से अब निश्चित ऊआ कि हिंदुओं का मत केवल ब्राह्मणों की बनावट है क्योंकि शास्त्र की रीति से महि-सुर वही और उन्हीं से और उन्हीं के लिये सब कुछ उत्पन्न ऊआ है सो यह कैसी पाषंड की बात है ऐसी २ बातों के पढ़ने सुने से ब्राह्मणों का मन यद्यपि कैसाही दीन हो पर अवश्य करके बिगड़ जायगा और घमंड में आ जायगा क्योंकि अपने को देवता समझ कर अरु और सभों को अपना सेवक जान कर क्योंकर हो सक्ता है कि उनका जी ठिकाने रहे और वुह भलमनसी और मनु-षत्व से अपना समय निबाहें और जब वे अपने को आप

ईश्वर समझते हैं तो उनके मन में भय डर कहां यें ही शयतान के जाल में फंस रहे और उसमें असमर्थ और बेबस हो गये हैं (१)

इसके परे जाति के कारण से हिंदुओं में बड़ी २ फुट

---

(१) यदि कुछ अवश्य होता तो इस बात का कि हिंदू मत ब्राह्मणों की बनावट है प्रमाणिक करना कुछ बड़ी बात न थी इस लिये संक्षेप से सोलह सत्रह प्रमाणों में लिखते हं

१ प्रमाण ब्राह्मण पृथिवी के देव ते हैं

२ प्रमाण ब्राह्मण किसी कारण से मारे न जावें

३ प्रमाण शुद्र से पचास रुपये सैकड़े ब्याज लेनेकी अज्ञा है पर ब्राह्मणों से दस ही रुपये सैकड़े

४ प्रमाण ब्राह्मण ही वेद के पढ़नेहारे और उन्हीं के लिये सारा दान पुण्य और भेंट पूजा इत्यादि

५ प्रमाण ब्राह्मण ही गुरू हो सक्ते हैं

६ प्रमाण ब्राह्मण कदचित किसी को मारडाले और उस मारेगये के लिये कोई रोदन करे तो उसे प्रायश्चित करना पड़ेगा

७ प्रमाण लिखा है कि देवी मनुष्य के रुधिर चढ़ाने से सहस्र बरस लों प्रसन्न रहती है पर ब्राह्मण का रुधिर चढ़ाना बरजित है

८ प्रमाण गरुड़ सकल जीव जंतुन को खा सक्ता पर जो ब्राह्मण को खावे तो उसका पेट ऐसा पिरावे कि वुह सह न सके

९ प्रमाण ब्राह्मण ही को दान देने से सर्व प्रकार के पाप की प्रास्चित होती है

१० प्रमाण ब्राह्मण का कोई कुछ बुरा करे तो एकीस बार आपावन जीव जंतुन का जन्म लेना पड़े

मत ऊई कि एक दूसरे के खताड़ता और चिथाड़ता है और इसका बिष छोटे बड़े में भीन गया है यहां लों कि उन में से कोई अपनी जाति के संग बिन जानेबूझे नहीं खा पी सक्ता और अड़ोसी पड़ोसी हित मित कैसा ही बड़ा प्रिय हो पर हर एक के आगे रुकावट के एक २ पहाड़ खड़े रहते हैं जाति उन लोगों के हाथ में लड़ने का अस्त्र देकर उनके मन में दंभ क्रूरता अत्यंत भरा देती है और सारी माया मोह को खींच लेती है यहां लों कि एक को दूसरे की भलाई करने से रोक रखती है उनमें उत्तम जातिवाला यद्यपि प्यास के मारे मर

---

११ प्रमाण यदि कोई गो बेचे तो बुह नरक में पड़े पर जो ब्राह्मण को संकल्प करे तो स्वर्ग को प्राप्त हो

१२ प्रमाण ब्राह्मण के बचाने के लिये झूठ बोलना पुण्य है

१३ प्रमाण लिखा है कि सारा जगत ब्राह्मण ही के पुण्य प्रताप से जीते और चलते फिरते हैं

१४ प्रमाण जगत और जो कुछ उस में है ब्राह्मण ही का है

१५ प्रमाण ब्राह्मण से कर लेना बर्जित है यदि बुह गड़ी ऊई द्रव्य पावे तो सब लेलेवे और जो राजा पावे तो आधा ब्राह्मण को देवे

१६ प्रमाण जिस संप्रदा का कोई अधिकारी न ठहरे उसका अधिकारी ब्राह्मण

१७ प्रमाण ब्राह्मण ही मनुष्य के इरलोक परलोक का स्वामी निदान यह मत ब्राह्मण को साचात ईश्वर ठहराता है इसी निश्चय है कि इसमत के ठहरानेहारे ब्राह्मण ही हैं स्वयं ब्रह्म परमेश्वर नहीं

जावे तथापि नीच जाति के हाथ से कभी पानी न पीवेगा यदि शूद्र ब्राह्मण की रसोईं के घर में जावे तो वुह अपने मिट्टी का सब बासन निकाल के फेंक फांक देगा फिर शूद्र के छूने से ब्राह्मण के छूत लग जाती है और उसे स्नान करना पड़ता है निदान जाति सारी सुजाति के नष्ट करके एक कामन दूसरे से ऐसा रुका देती है कि बन पशुन में भी यह झिझक कभी नहीं पाई जाती उनके यहां जाति की बात केवल इसी लोक के लिये नहीं परंतु पर लोक से भी संबंध रखती है और शूद्र के लिये सब से बड़ा धर्म पुण्य यह है कि ब्राह्मण का दास बने और जीवन भर उसकी सेवा टहल किया करे जिसतें दूसरे जन्म में ब्राह्मण के घर जन्म पाके मुक्ति की आशा रखे निदान ब्राह्मण ही गुरु और वही वेद के पढ़ानेहारे और उन्हीं के हाथ में लोक पर लोक की सब पदार्थों की कुंजी है फिर यह स्लोक

देवाधिनं जगत सर्बं मंत्राधिनंतु देवता
तेमंत्रा ब्राह्मणाधिना ब्राह्मण मम देवता

अर्थात सर्ब जगत देवताओं के आधीन हैं और देवते मंत्र के आधीन और मंत्र ब्राह्मण के आधीन सो ब्राह्मण मेरा देवता है * इसके समान हिंदू बापुरा जब से माता के गर्भ में पड़ा और जब लग गया में उसका पिंडा न पारा गया ब्राह्मणें के लिये लूट का धन है

चौथा अध्याय

तीरथ तपस्या मूर्त्ति पूजा इत्यादि के बिषय में

जब हम हिंदुओं के मत को उनके तीरथ तपस्या इत्यादि के बिषय सोचते हैं तो नहीं कह सक्ते हैं कि वुह मनुष्य की संसारिक दशा के लिये भी भला है और फिर जब उसकी मूर्त्ति पूजा और स्वर्ग लोक के बीच थोड़े दिन के लिये शरीराभिलाषा के रहने में और फिर जग में आके जन्म लेने अथवा मोक्ष पाके ईश्वर में लीन होने को सोचते हैं तो नहीं कह सक्ते कि हिंदुओं का मत मनुष्य की बुद्धि और आत्मा के लिये अच्छा है अथवा कि वुह मत कभी उन बांछाओं को पूरी कर सक्ती है जो परमेश्वर की पहिचान और सर्बदा के जीवन और आत्मा की आनंदता के लिये मनुष्य के मन में होती हैं * सब जानते हैं कि जो मत परमेश्वर की ओर से होय अवश्य है कि उस्से मनुष्य की शरीर और आत्मा दोनों की भलाई होवे सो जब यह हिंदुओं के मत से प्राप्त नहीं हो सक्ता तो और भी निश्चय है कि वुह परमेश्वर की ओर से कभी नहीं *

* दोहा *

कुशल आत्मा देह को, जेहि मत से नहिं होय।
सो मत ईश्वर को नहीं, यह जानेउ सबकोय॥

चैापाई

यामें जाकहू संशय होई
तेहि सम मूरख अहै न कोई
मानऊ सत्य बचन यह नीके
तजऊ भावना दुबधा जीके
खोजऊ सत्यमता जगमाही
जेहिते पऊंचा ईश्वर पाही
नहिं ताभटकि भटकि मरिजैहा
रतन जन्म यह वृथा गवैहा

अब टुक सोचा चाहिये कि जो सारे जगत का ईश्वर है वही सत मत का भी ईश्वर है दूसरा नहीं * संसार की सारी बातों के बिषय जिन में मनुष्य को परीश्रम करना पड़ता है बऊधा हर एक अपने २ परीश्रम के समान फल पाता है जैसे किसान जब खेत को जातता बोता है तो बऊधा उस्से अन्न पाता है फिर जो कुछ कि वुह बोता है उसीकी बढ़ती बटोरता है जैसे गोहूं बोने से गोहूं मिलता है पर जो बबूल लगावेगा आम का फल न खावेगा कहावत है पेड़ लगावे बबूल का आम कहां से खाय * इसी भांति करणी और करणी के फल से जाग है पर जब कि लाग अपना घर द्वार छोड़ के लड़केबाले समेत सैकड़ों कोस की यात्रा करते हैं तो उनके आने जाने में बरसों बीत जाते हैं और उन्हें यात्रा के हर

प्रकार के दुख और क्लेश होते हैं चलते २ थक जाते हैं और बिराम पड़ते हैं मार्ग में औषध बारी पथ्य कहां से मिल सके शीत उष्णता और वृष्टि के क्लेश में पड़ते हैं कितने अपने घर तक भी नहीं पज्जंचते मार्ग ही में मर जाते हैं बरन सहस्रों खपजाते हैं तीर्थ के आसपास उनकी हड्डियों की ढेर की ढेर लगी रहती हैं बिशेष करके जगन्नाथ के निकट कि उन बपुरों के लिये हड़ावर स्थान सा बन रहा है और इन आपदों के परे तीर्थ में एक बड़ी उपाध यह है कि स्त्री पुरुष के कुकर्म करने के लिये बड़ा सुभीता है जिस्से सहस्रों कुलवंतिन का भ्रष्ट होना बिदित है

चौपाई

भ्रष्ट भईं कुलवंतिन जाई
सो तीरथ कैसो रे भाई
श्रवण सुनें अरु नयनज्ञ सूझें
ताज्ज पर मूरख नहिं बूझें
आपु गये अरु औरहि घाला
दुज्जं लोक से भये खुआरा

भला जो जन अपना घर द्वार छोड़ के तीर्थ यात्रा को गया और अपनी धन संपत्ति को नष्ट किया फिर आने पर यद्यपि वुह ऋणी न ज्ञआ और उसकी स्त्री की पतन गई और उसके लड़के जीते जागते भले चंगे रहे और

अपनी सब वस्तें ओर ठौरें ज्योंकी त्यों पाईं तो भी उस-
ने इतने परोश्रम और श्रम करके क्या पाया क्या पदार्थ
प्राप्त किया कहावत है * पहाड़ खोदे मूसा हाथ * बगुला
मारे पंख हाथ * हां इतना तो ऊआ कि काशी में गंगा
स्नान और मूर्त्तों का दर्शन पर्सन किया और गया में
जाके पिंडा पारा और जगन्नाथ में जाके सर्व जातों के
संग खाया पिया और एक कुरुप और भयानक स्वरुप का
दर्शन किया इस पर यदि उस्से पूछो कि अब तेरी गति
निश्चय करके ऊई तो वुह बोलेगा कि भगवान जाने
हम नहीं जानते और मरने समय उस पर ऐसा उत-
पात होता है कि उसके आंखों के साम्ने अंधेरा छा
जाता है और वुह ऐसा थरथराता और कांपता है जै-
से वुह जन जो कभी तीर्थ यात्रा को नहीं गया * तीर्थ
करने से उसका मन निर्मल और आत्मा शुद्ध नहीं ऊआ
वुह इन बातों के लिये तीर्थ यात्रा को गया भी न था
जैसे घर से निकलते समय उसकी मति अंधी और मन
कठोर था वैसाही घर फिर आने में बना रहा बरन
और अधिक हो गया परमेश्वर की पहिचान उसने कुछ
प्राप्त न किई मन की शांति और कुशल आनन्द जितने
कि उस्से दूर थे जब वुह तीर्थ को निकला उतने बरन
और भी दूर होगये *

सुनते हिता सुआगमन भाई
सौ डग पीछे हटी भलाई

फिर शुद्धतत्व में लिखा है कि गंगा किसी अपवित्र मनुष्य को पवित्र नहीं कर सक्ती

गङ्गातोयेन कृत्स्नेनमृद्भारैस्चन गोपमैः
आमृत्योः स्नातकश्चैव भाव दुष्टोन शुद्धति

अर्थात जिसका दुष्ट भाव है यदि वुह जीवन भर पर्वतों के इतनी मिट्टी से अपने शरीर को मांज के सर्व गंगा जल से स्नान करे तो भी शुद्ध नहीं * परमेश्वर ने हर एक मनुष्य के मन में सुख और चैन की इच्छा उत्पन्न किई है फिर तपस्या के बड़े २ कष्टों को सहना जैसे उर्द्धमुख और उर्द्धबांह होना और पंचाग्नि तापना चरख पर लटकना त्वेणी में करवट लेना और जगन्नाथ के पहिये तले दब के मर जाना इत्यादि किस की आज्ञा से है यह परमेश्वर की ओर से कभी नहीं क्योंकि उसने मनुष्य के मन में मरने और दुख उठाने की इच्छा नहीं डाली है फिर इसे छोड़ शरीर के मारने से आत्मा को क्या लाभ है क्योंकि करने वाली आत्मा है और शरीर केवल हथियार है सो करनेवाले को दंड दिया चाहिये कि हथियार को बध करनेहारे को फांसी दिया चाहिये कि खड्ग को फिर संसार को परमेश्वर ने खाने पीने और हर भांति की अच्छी वस्तुन से भर दिया पर जोगी जती तपस्वियों ने अहंकार करके यह सब कुछ दया सागर परमेश्वर पर पटक देके और बन में

जाके भूख प्यास मार दुख क्लेश सह के आत्मघाती होते हैं यद्यपि उन्हों ने न अपने को उत्पन्न किया न अपने को जिला सक्ते हैं *

मारे ज्यावे वही जगन्नाता
यामें काहू मनुज की बाता

जब ऊपर की बातों से वेद शास्त्र खंडन हो चुके तो मूर्त्ति पूजा भी झूठ ठहर चुकी अब उसके झुठलाने के लिये प्रामाण का कुछ प्रयोजन नहीं (१) परंतु यहां हम उसके औगुण का कुछ बर्णन करते हैं * मूर्त्ति पूजा बुद्धि को ऐसी अंधी करदेती है कि कुछ सूझ ही नहीं पड़ता और शास्त्र में यह लिखा है

म्टच्छिला धातु दार्व्वादि मूर्त्ता वीश्वरबुद्वयः
क्लिश्यन्ति तपसामूढ़ाः परां शान्तिंनयान्तिते

अर्थात जो मूर्ख म्टतिका पाषाण धातु काष्ट इत्यादि के मूर्त्ति को ईश्वर करके मानते हैं सो क्लेश को पाते हैं

---

(१) ब्रह्म वैवर्त्त पुराण से जाना जाता है कि राजा सूरथ ने पहिले दुर्गा की मूर्त्ति की थापना किई और राजा मंगल ने लक्ष्मी की और अश्वपति ने शाविची की और राजा सुपगन ने राधा की और राजा राम रथ ने कार्तिक की और राजा शिव ने सूर्य की और बुधायन मुनि ने गणेश कीं इसे समझा जाता है कि मूर्त्ति पूजा मनुष्य के मन से निकली है

और मोक्ष को प्राप्त नहीं होते * सो जो कि पशु पाषाण इत्यादि को पूजते हैं वे अपने को उनसे अति लघु समुझते हैं

जो नर पूजहिं काठ पखाना
सो उनसे हैं अति अज्ञाना
जगमह जानत यह सब कोई
इष्ट बड़ा पूजक से होई

फिर इसकी साक्षी गीता में भी है जैसे यह श्लोक

बिषयान् ध्यायतश्चित्तं बिषयेषु प्रसज्जते
मामनुस्मरतश्चित्तं मामेव प्रवि लीयते

अर्थात बिषय की चिंतन करनेहारे का चित्त बिषय में लीन होता है और मेरे स्मरण करनेहारे का चित्त मुझ में लीन होता है * और दूसरी ठौर यह श्लोक है

योमांसर्व्वेषु भूतेषु सन्तमात्मान मीश्वरं
हित्वार्च्चां भजते मौढ्यात् भस्मन्येवजुहोतिसः

अर्थात जो लोग मुझ सर्बभूत व्यापक ईश्वर को तज के प्रतिमा की पूजा करते हैं सो भस्म में आहुति देते हैं * ये लोग बालक और पशु से भी निर्बुद्धि हैं पशु गंगा को पानी जान कर पीता है और तुलसी और पीपल को घास पात समझ कर खाता है और बालक भी सालिग्राम और महादेव को पत्थर करके समझते हैं पर जब वे सयाने

ऊए और पूजना सीखा तो ज्ञान खोके उन्हें ईश्वर समझने लगे और उन मूर्तों का जिन्हें वे पहिले पत्थर समझते थे प्राण प्रतिष्ठा करके सिंगार करने लगे और उन से कहने कि आइये बैठिये अपनी अंगूठी पहीनिये और इस फूल को सूंघिये और नैवेद्य लीजिये फिर चंवर करते कि वे ठंढे रहें और बस्त्र पहिनाते ओढाते कि शीत न सतावे और खस की टट्टियां लगाते कि उष्णता न पहुंचे मसहरी लगा देते कि मक्खी मच्छर न सतावें रोली चंदन अच्छत लगाते कि अपनी छबि के सिंगार को निरख के प्रसन्न होयें और लेटा देते कि बिश्राम करें और उनसे स्वप्नार्थ पूछते और शकुन करते फिर एकही देवते की मूर्त्तों में बिभेद समझ कर कहते हैं कि अमुक मूर्त्ति लड़केबाले धन संपत्ति देने में औरों से अधिक सामर्थी है फिर समझते हैं कि यदि कोई मुसलमान अथवा अंगरेज उनको छूलेवे तो उनकी महत्व और पवित्रता जाती रहती है इस लिये उन्हें पवित्र करना पड़ता है और बिराम समझ के कभी उन्हें इधर उधर फिराते हैं

फिर हिंदुओं की मूर्त्ति के रूप ऐसे हैं कि देखनेहारे को बरबस हंसी आती है अथवा घिन अथवा बुरी इच्छा मन में उपजती है गणेश का हाथीकासा सिर और गोल सा पेट और विष्णु और शिव और रामकृष्ण के अद्भुत रीति के हाथ और उनमें लकुट और संख चक्र गदा

पद्म ग्रोर मुंडमाल इत्यादि ग्रोर देवी के सिंह के से दांत ग्रोर बिल्ली कीसी ग्रांख ग्रोर कुत्ते कीसी जीभ ग्रोर बिकराल स्वरूप ग्रोर ब्रह्मा को हंस का बाहन ग्ररु ग्रोर ग्रनेक प्रकार के काष्ट पाषाण की घिनौनी डरावनी गढ़ी बनाई मूर्त्तें हैं यह तो सच मुच खेलवने ठहरे ग्रोर शास्त्र के लिखे ज्ञए के समान लड़कों के लिये गुड़ियां की खेल हैं फिर इन पर ध्यान करने से लोक परलोक सुधरने का ज्ञान क्योंकर प्राप्त हो सक्ता है ग्रोर मन की निर्मलता ग्रोर पवित्रता कैसे मिल सक्ती है हां जब उनके कामों को चित में ग्रानते जिनकी ये मूर्तें हैं तो ग्रोर ग्रधिक मन बिगड़ जाता ग्रोर बुरी इच्छा उपजती है जब देवते ऐसे तो ग्रर्चक कैसे ग्रंधकार से प्रकाश क्योंकर होवे ग्रोर काम क्रोध मद लोभ मोह की बातों पर ध्यान करने से पवित्रता ग्रोर ब्रह्म ज्ञान कैसे मिलसके जड़ मूर्त्ति से ग्रात्मा कभी ब्रह्म ज्ञान प्राप्त कर सक्ती है बुद्धि कहीं निर्बुद्धि से ईश्वर का भेद पासक्ती है ग्रथवा ग्रोखली मूसल पूजने से कहीं सृष्टि कर्त्ता की पहिचान होती है कि लिंग के पूजने से काम की इच्छा जाती रहती है ग्रथवा ग्रधिक होती है भला ग्राग बुझाने के लिये कोई उसमें तेल भी डालता है हाय हाय ऐसी बुद्धि पर चाहिये कि मता मनुष्य को सुधारे न कि बिगाड़े ग्रब जीवन उन पर मृतु हो गया क्योंकर जीवन प्राप्त करें ग्रोर बिन मारे क्यों न मरें जैसे कोई स्त्री ग्रपना पति छोड़ के जब दूसरे

को करती है तो फिर वुह सैकड़ों सहस्रों पुरुष करने को लैस है वैसाही इन लोगों ने जब सच्चे ईश्वर को छोड़ दिया तो एक दो दस बीस सौ पचास लाख को नहीं परंतु तैंतीस कोटि देवताओं को ईश्वर बना लिया और बहुतेरी बस्तुन को पूजने लगे जैसे सूर्य चंद्र तारे आकाश अग्नि पृथिवी ब्राह्मण ब्राह्मण की कन्या गुरु (१) गौ बंदर कुत्ता गदहा गीदड़ हाथी सांड सांप सद्य चूहा उल्लू अरु और कितनी भांति के पंछी और वृक्ष और नदियां और मच्छलियां और पुस्तकें लिखिनी और मसिसौल और चक्की इत्यादि पूजते हैं निदान जब इन सबकी पूजा कर चुके और अपनी मति बुद्धि और बय उनके पीछे खो चुके तो वेद शास्त्र उन्हें मूर्ख बना के कहते हैं कि तू इा सबके पीछे किसके खोज में है क्या तू इनसे मुक्ति की आशा रखता है (२) इन में जिसे तू ढूंढता है तू आपही है यदि आप को पहिचाने तो ब्रह्म तूही है

---

(१) बभ्रनाम्रतका यह श्लोक है हरौरुष्टे गुरुस्त्राता गुरौरुष्टेन कश्चन अर्थात जब हरि रूठता है तो गुरु रक्षा करता है और जब गुरु रूठे तो कौन बचा सके सो गुरु ईश्वर ठहरा *

(२) प्रगट है कि हिंदुओं की मत में मूर्त्ति पूजा से मुक्ति नहीं होती क्योंकि लोग मूर्त्तियों से केवल संसारिक बस्तोंकी अभिलाषा रखते हैं जैसे जो इंद्री का स्वाद चाहता है सो इंद्री की पूजा करता है और जो धन संपत्ति चाहता सो लक्ष्मी की पूजा करता है और

एकंब्रह्म द्वितीयं नास्ति

अर्थात एक ब्रह्म ही है द्वितीय कुछ नहीं * वुह बात जो दूसरी ठौर लिखी है कैसी सत्य ठहरती है कि जो मूर्त्ति को बनाते हैं सो उसी के तुल्य बन जाते हैं और वैसाही वुह जो उनको पूजता है

फिर जब मनुष्य वेदांत के जाल में फंसा और परम हंस होकर आप ईश्वर बन बैठा तो उसकी यह दशा है कि वुह अपनेही स्वार्थ के रत होके किसी से कुछ प्रयोजन नहीं रखता वुह मुरझाये ऊए पत्ते और मिट्टी के टीले समान है जिसमें न कुछ नबीनता है न कुछ गुण हां उस मनुष्य के समान है जिसकी हड्डी टूट गई हो और सर्वथा असमर्थ और निकम्मा है परमेश्वर नित्या-

---

जो बल पराक्रम चाहता है सो रुद्र की और जो बऊत खाने की इच्छा रखता है वुह उदती की और जो राजा ऊआ चाहता है सो वेश्वादेव की और आर्युदा बढ़ने के लिये अश्वनी कुमार की ओर शरीर पुष्ट होने के लिये पृथिवी की और सुंदरता के लिये गंधर्ब की और शत्रु के नाश होने के लिये नायरत की पूजा करते हैं इत्यादि और देवतेमुक्ति के लिये ईश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ भी नहीं क्योंकि हिंदुओं के मत से मुक्ति पदार्थ ईश्वर में लीन होना है और यह ज्ञान बिवेक और जोग तपस्या से होता है इसमें देवतों की कुछ नहीं चलती क्योंकि वे आप इस पद को नहीं पऊंचे औरों को कब देसक्ते अथवा दिला सक्ते हैं

नन्द और आनन्ददाता और हर एक का कल्याण कर्त्ता है उसने मनुष्यों को इस लिये उत्पन्न किया कि आपस में प्रेम रक्खें और एक दूसरे की भलाई करके हर्षित होवें यह बातें हर एक के मन में पत्थर की लीक हो गई हैं परंतु परमहंस अपनी मति बुद्धि खोके ईश्वर के गुण पराक्रम और उसके काम काज से आंख मूंद के और अपने भाईबंदों और सारे मनुष्यों से न्यारे होके बन में कुंदे की नाईं पड़े रहते हैं सृष्टि और सृष्टि कर्त्ता दोनों को मिटा के नेत्र मूंदे बौड़हे की नाईं समझते हैं कि जो कुछ हम देखते हैं सो सब ईश्वर है ऐसी समझ पर हाय है

पांचवां अध्याय

बार बार जन्म लेने के बर्णन में

वेद की एक ऋचा यह है जिस्से जाना जाता है कि बारबार जन्म लेना पड़ता है

कर्मणा ब्रह्मलोक गतस्यानावृत्तिः

अर्थात कर्म करके जो ब्रह्म लोक को गया उसका आगमन फिर नहीं होता है * और इसका बर्णन शास्त्र पुराण में बहुत हैं मनु भी कहता है कि जो कोई ब्राह्मण का सोना चोरावे तो दूसरे जन्म उसके हाथ में घिन ही हो और जो मद पान करे उसका दांत काला हो और

जो किसी पर कलंक लगावे उसका मुंह बसावे और जिसको वेद पढ़ने की आज्ञा नहीं यदि वुह पढ़े तो गूंगा हो और जो बस्तु चुरावे कोढ़ी हो जो घोड़ा चुरावे लंगड़ा जो दीपक चुरावे अंधा हो जो दुष्टता से दीपक को बुझा देय काना हो इत्यादि इसी रीति से वे पूर्व जन्म की करनी के समान मूर्ख अज्ञान लुंजे लंगड़े अंधे बहिरे उत्पन्न होते हैं और उत्तम जन के समीप तुच्छ गिने जाते हैं इस कारण से ऐसे लोगों के लिये धर्म शाला नहीं बनाते सब उन्हें कुकर्मी और कुभागी समझते हैं उनका उपकार करना पुण्य नहीं जानते परंतु उनकी बंधुआ कीसी दशा समझते हैं कि जब अपने पापों का दंड भोग चुकेंगे तो इस्से छूट जायेंगे यह बिचार के हिंदू लोग अपने अड़ोसी पड़ोसी के दुख संकट रोग शोक को देख के निठुर और निर्दय बने रहते हैं बरन वे आपभी जानते हैं कि हमारी ऐसी दशा केवल पूर्व जन्म के पाप से ऊई है इस लिये निराश होके अपनी प्रारबध और देवताओं पर धिक२ करते हैं पर यह बात उनके मन में नहीं समाती कि पश्चाताप करें और परमेश्वर से अपने पापों का क्षमा चाहें कि वुह उनकी सुने और उन पर कृपा करके उनकी भलाई करे इसको तो वे वृथा समझते हैं क्योंकि प्रारब्ध और बारंबार जन्म लेने का निश्चय कर के समझते हैं कि जो कुछ हमने आगे किया उसका फल अब भूगतना अवश्य है और जो कुछ अब करते हैं इसका

फल प्रारब्ध के समान दूसरे जन्म में भुगतना होगा (१)

निदान प्रारब्ध और बारंबार जन्म लेने में ये लोग ऐसे फंसे कि उस्से छूटने की आशा छोड़ के शयतान के हाथ बिक गये और जो कुछ मन में आता सोई झटपट कर डालते हैं और कहते हैं कि इस में हमारा क्या बश है जो कुछ प्रारब्ध में लिखा है वही अवश्य करके होता है भला जिसकी यह समझ है वुह पाप से कैसे बच सक्ता है और कैसे पवित्र होके परमेश्वर के पास जा सक्ता है

फिर हिंदू के शास्त्र में लिखा है कि मनुष्य पूर्व जन्म के पाप करने से केवल लुंजे लंगड़े अंधे बहिरेही नहीं होते परंतु पशु पक्षी वृक्ष तृण भी होते हैं मनु के शास्त्र में लिखा है कि जो प्राणी बिना दांवा अनाज चुरावे तो उसका जन्म चूहे का हो और जो जल चुरावे तो बुड़ुये का और जो तेल चुरावे तो पतिंगे का और जो हिरण चुरावे तो भेड़िये का और जो फल चुरावे तो बंदर का और जो पंडित का धन चुरावे तो घड़ियाल का अथवा उसके

---

(१) गौतम कहता है कि मनुष्य समय और ठौर और पाप पुण्य के आधीन होके जन्म पाता है और भृगु कहता है कि ईश्वर ने अटल कर्म से उनकी करणी के समान उन्हें को उतपन्न किया और दुर्बासा का पुत्र अशीरा कहता है कि ईश्वर आप क णी के आधीन है और न्याय शास्त्र में लिखा है कि देह और इंद्री करणी के फल हैं इस बात के बिषय और भी देखो ११७ और ११८ पृष्ट में

समान दूसरे जंतु का ओर जो रत्न चुरावे तो वुह सैंकड़ों सहस्रों बार घास पात बेल बूटे इत्यादि का जन्म लेगा बरण जिस जिस भांति के पाप करेंगे वैसे २ जन्म भी पावेंगे क्रोधी ओर बैर लेनेहारा बाघ सिंह का जन्म पावेगा ओर जो कामी ओर कुचाली हैं उनके जन्म अशुद्ध ओर अपावन बस्तु खानेहारे पंछी ओर कीड़े मकोड़े के होंगे * ओर अग्नि पुराण में लिखा है कि जिसने मनुष्य की योनि से बाहर होके ओर किसी योनि में जन्म लिया तो वुह अस्सी लक्ष योनि भ्रमणे के पीछे मनुष्य का जन्म फिर पासक्ता है * हाय हाय ऐसी बातों से मनुष्य कब पवित्र हो सक्ता है परंतु ओर भी अशुद्ध ओर अपवित्र हो जाता है जैसे पानी अच्छे सोते से निकल के मैली नारीयों में बहे तो जहां लों वुह नारी मैली होगी वहां लों पानी भी मैला हो जायगा इसी भांति जो कोई मनुष्य का जन्म पाके बड़ा खाऊ होवे ओर फिर वुह सूअर का जन्म पावे तो क्या उसके खाने की होंस जाती रहेगी अथवा क्रोधी ओर हत्यारा बाघ का जन्म पावे तो क्या वुह कोमल ओर दयाल होगा क्या यह हो सक्ता है कि कोई अध्यक्ष चोर को चोरी करने से रोकने के लिये चोरों में भेजे अथवा कोई व्यभिचारी व्यभिचारियों में रहने से पवित्र होवे कभी नहीं इसी रीति से असंभव है कि मनुष्य बारंबार जन्म पाके सुधरे ओर संवर जाय

अथवा परमेश्वर जो धर्माध्यक्ष और सर्वज्ञ है उस्को ऐसा व्यवहार करे

छठवां अध्याय

हिंदुओं के धर्म की दूसरी हानि का बर्णन

बुद्धि यह चाहती है कि जो मत परमेश्वर की ओर से हो वुह द्रोह द्वेष बैर दूर करने और माता पिता और लड़के बाले के प्रेम उपजाने और सबको अपने समान प्रिय जान्ने बरन सारी बातों के बिषय मनुष्यों की चाल चलन और मन के सुधारने में शक्ति रखे अब हम पूछते हैं कि हिंदुओं के मत में यह गुण है कि नहीं हाय है कि वुह जैसे और भलाइयों से रहित वैसाही उस में यह पदार्थ भी नहीं जाति पांति मूर्त्ति पूजाइत्यादि को छोड़ वे द्रोह लोभ व्यभिचार करने और बैर लेने को उभाड़ता है

अथर्व्वन वेद जो स्रापिक कहलाता है उस में बैरियों के मारने के लिये अनेक प्रकार की मंत्र हैं और उन बलिदानों का बर्णन है जो भगवती को चढ़ाना चाहिये जिसतें मनुष्य अपने बैरीयों को मार डालें एक ठौर लिखा है कि जिसे मारडालना हो उसका पुतला कागज पर बना और उसका सिर काट के देवी को चढ़ा * और उसी वेद में दूसरी ठौर यह स्नोक है कि हे पवित्र कुश तू मेरे सब बैरियों को मारडाल

और हे बज्र मुख्य मोती तू उन सब को जो मुझ से बैर रखते हैं मिटा डाल * फिर यों लिखा है कि हे अग्नि तू जो घृत को भक्षण करता है और सदा तेजवंत रहता है हमारे शत्रुन को जो हमारा बुरा चाहते हैं और हम से वैर रखते हैं मिट्टी में मिला दे और हे इंद्र तू हमारे सब शत्रुन का नाश कर और हमारे दाता मित्रों को पाल हमें सहस्रन अच्छी २ गायें और घोड़े दे और महान बना * उसमें ऐसा २ निवेदन है जिस्से वेद का मनुष्य को लालची बनाना ठीक जाना जाता है हे इंद्र हम तुझ से बज़त धन चाहते हैं तू मनुष्यों अथवा स्वर्ग बासियों अथवा नभ निबासियों अथवा और किसी ठौर जहां से हो तहां से हमें धनमान कर दे हे इंद्र हम तेरी बिनती करते हैं कि तू हमें अनमोल रत्न हीरा मणि और बज़तसा द्रव्य दे हम उन धनों को जो भोगने के योग्य है बिभो कहते हैं और बज़त धनों को प्रभु कहते हैं हे इंद्र और हे बरुण तू हमारी बांछा के समान हमें दे और सर्बथा हम को भरपूर कर हम तेरी बिनती करते हैं कि तू नित हमारे संग रहे हे इंद्र और हे बरुण हम यह सब कुछ पूजा और बलिदान तेरे संतुष्ट होने के निमित्त करते हैं और उस करके तुझ से धन पाते हैं और धन पाके भोग करते हैं और भोग करने से जो बचता है उसे बटोरते हैं सो अब भोग करने और बटोरने से भी तू अधिक धन हमें दे हे इंद्र

हम में से हर एक अपनी २ स्त्री के संग चैन से दिन काटें और जम के प्यादे से जावें कि हमें न देखें तू हमें सहस्त्रन अच्छी २ गायें और घोड़े दे और हमें बड़े लोगों में गिन फेर ऋग्वेद में यह ऋचा है

सघानोयोगआभुवत्सरायेसपूरंध्यां। गमद्वाजेभिरासन

अर्थात हे इंद्र तू हमें बड़े लोगों में मिला और धन दारा और ज्ञान और भोजन देने का लैस हो (१) भागवत गीता में कृष्ण कहता है कि संपत्ति चाहनेहारे भले हैं दोष के योग्य नहीं भला जो पुस्तक लालच बढ़ानेहारा है वुह परमेश्वर की ओर से हो सक्ता है

मनु के शास्त्र में व्यभिचार करने की आज्ञा है पर इस रीति से कि जो स्त्री चाहे फेर एक ठौर में लिखा है कि यदि स्त्री पुरुष से रति करने को कहे और पुरुष उस का कहना न माने तो वुह कोढ़ी हो जावे जैसे महाभारथ में भी लिखा हैं कि एक बार ऐसा ऊआ फिर इस को सैन मनु के शास्त्र के नवें अध्याय के एक सैा सत्तर

---

(१) ऐसी बातों के साम्हने उस प्रार्थना को जो प्रभु ईसा ने अपने लोगों को सिखाया सोचो अर्थात हे हमारे पिता जो स्वर्ग पर है तेरा नाम पवित्र होवे तेरा राज आवे तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग पर है पृथिवी पर भी होवे हमारे प्रति दिन की रोटी आज हमें दे और हमारे अपराधों को क्षमा कर जैसे हम अपने अपराधियों को क्षमा करते हैं इत्यादि

श्लोक में है बामा मत में वेश्या बिना कोई पूजा पूरी नहीं हो सक्ती

मनु के शास्त्र में लिखा है कि पूजा पाठ की सामग्री के लिये चोरी करना पाप नहीं और किसी पुण्यार्थ कर्म के लिये झूठी किरिया खानी अयुक्त नहीं बरन वुह देव बाणी है और ब्राह्मण के प्राण बचाने और स्त्री का क्रोध मिटाने और उढ़री के प्रसन्न करने के लिये झूठ बोलना उचित है जैसा ऊपर बर्णन हुआ

अपने लाभ के लिये हत्या करनी उचित है जैसे शुक्र ने दित के बंश को मार डाला रामायण बालकांड के ३७ सरगः में देखो और जब कंस ने बसुदेव के लड़कों को मारडाला तो पीछे से कहा कि मेरा कुछ दोष नहीं कर्म में जो लिखा था सो हुआ और बसुदेव ने भी मान लिया कि हां ठीक है बिधनाने तो ऐसा ही लिखा था महाभारथ के १० स्कंध में देखो

शास्त्र में यह भी आज्ञा है कि अंधे बहिरे लुंजे लंगड़े गूंगे कोढ़ी जुमेहरे सिडी बौड़हे को स्त्री हो अथवा पुरुष भाग का अधिकार नहीं और इस मत की रीति से ऐसे लोगों के लिये सब से अच्छी बात अपने तईं मार डालना है

मनुष्य बुराई करते समय यदि ईश्वर का नाम लेय तो उसके लिये बुरा नहीं परंतु भला और फलोदय है ठग और डाकुओं के भी देवते हैं जिनकी वे पूजा करके

अपनी ठगई और डकैती को जाते हैं और हर प्रकार की हत्या हां ब्राह्मण का भी प्रायश्चित रुपये पैसे से हो सक्ता है और यह भी कहते हैं कि मनसा का कुछ पाप नहीं पर नहीं सोचते की लालच सब पापों का मूल है

माता पिता लड़के बाले स्त्री पुरुष के परस्पर प्रेम रखने की आज्ञा शास्त्र में कहीं नहीं पाई जाती और इस मत के समान असंभव भी है क्योंकि जहां मया तहां माया फिर पिता पुत्र को कैसा ही बुरी आज्ञा देय उसे मान्ना अवश्य है यदि वह न माने ते। अपराधी ठहरे और भलाई से हाथ धोवे इसी लिये वे कहते हैं कि परसराम ने जो अपने पिता की आज्ञा से अपनी माता को मार डाला ते। उसे कुछ पाप न ऊआ बरन उसने अच्छा किया पर बड़ी अंधेर यह है कि प्रहलाद ने जो अपने पिता हिरण्यकश्यप की बात न मानी और उसे मरवाडाला सो बड़ा पुण्यात्मा ठहरा और उसकी कीर्ति जग में फैली निदान इस मत की रीति तो यही है कि सर्वथा बिरुद्धता चली आती है कहीं मेल नहीं देख पड़ता फिर इस मत में स्त्रियों का पद अत्यंत निकृष्ट है मनु के शास्त्र में लिखा है कि स्त्री के लिये सब से बड़ी बात यह है कि अपने पति की आज्ञा माने यद्यपि पति स्त्री को व्यभिचार करने कहे ते। भी स्त्री का अपने पति का बचन मान्ना अवश्य है जैसे शास्त्रों में कितनी ठैार ऐसी

स्त्रियों का बर्णन हुआ और उन पर पाप नहीं ठहरा स्कंध पुराण में यह स्लोक है

तीर्थस्नानार्थिनोनारी पतिपादोकंपिवेत्
शंकरादपि विष्णोर्वा पतिरेकोधिकः स्त्रियः
भर्त्तादेवोगुरुर्भर्त्ता धर्मतीर्थब्रतानिच
तस्मात्सर्बं परित्यज्यपतिमेकंसमर्चयेत्
विष्णोस्तुपूजनं कार्यं पतिबुध्यानचान्यथा
पतिमेवसदाध्यायेद्विष्णुरूपधरंहरिं

अर्थात जो स्त्री तीर्थ स्नान करने की इच्छा रखे सो अपने पति का चरणो दक पीवे क्योंकि पति स्त्री के लिये संकर और विष्णु से भी अधिक है पति तो स्त्री का ईश्वर और गुरु और उसका धर्म और तीरथ ब्रत है इस कारण वुह सब को छोड़ के केवल अपने पती ही की पूजा में लवलगावे और विष्णु की पूजा पति समझ कर करे और पति को विष्णु रूप समझ कर सदा ध्यान करे*

वेद शास्त्र बारंबार कहता है कि कोई स्त्री ब्याकरण को न पढ़े और मनु यह कहता है कि उसको वेद से भी कुछ काम नहीं (१) और उसका सब से बड़ा पुण्य

---

(१) ९ अध्याय का १८ स्लोक

नास्ति स्त्रीणां क्रियामंत्रैः अर्थ त स्त्रियों को मंत्र संजुक्त कर्म नहीं है और भागवत में यह स्लोक है

यह है कि अपने पति के संग जल मरे यद्यपि मनु के कहने के समान स्त्री सर्वथा पाप रूप है पर अपने पति के संग जल मरने से केवल अपने ही को नहीं परंतु अपने पति और अपनी कितनी पीढ़ियों को नरक से बचा के बैकुंठ में पहुंचाती है जैसे ऊपर बर्णन हुआ शास्त्र में कहीं नहीं लिखा है कि पुरुष केवल एकही स्त्री रखे परंतु जितनी उसकी इच्छा हो मनु के शास्त्र के ९ अध्याय १४९ के इस श्लोक से जाना जाता है कि ब्राह्मण चाहे तो चार स्त्रियां ब्याहे

ब्राह्मणस्यानुपूर्ब्बेणचतस्त्रस्तुयदिस्त्रियः
तासांपुत्रेषुजातेषुबिभागेयंबिधिःस्मृतः

अर्थात जिस ब्राह्मण को चार बर्ण की स्त्रियों से पुत्र उत्पन्न हुए होयें उनके बिभक्ति की यह आज्ञा है * इस के बिषय में मनु के ११ अध्याय ५ श्लोक और ८ अध्याय के २०४ श्लोक और ९ अध्याय के ८५ श्लोक को देखो और प्रसिद्ध है कि कुलीन ब्राह्मण जो सब ब्राह्मणों से उत्तम कहलाते हैं सो सौ सौ स्त्रियों से ब्याह करते हैं

इस मत की रीति से पुरुष मेध करना योग्य है जैसे

स्त्रीशुद्रद्विजबंधूनांत्रयीन श्रुतिगोचरा

अर्थात स्त्री और शूद्र और भ्रष्ट ब्राह्मण को तीनों वेद के सुन्ने का अधिकार नहीं

ऋग्वेद में यह ऋचा है जो शुनःशेफ ने कहा जब वुह बलिदान होने के लिये बांधा गया था

कस्यनूनंकतमस्यामृतानांमनामहेचारुदेवस्यनाम
कोनमह्या अदितये पुनर्दात्पितरंचदृशेयं मातरंच

इस का भावार्थ यह है कि मैं किस देवता को मनाओं अथवा किस प्रजापति की स्तुति करों कि वुह मुझ को छुड़ावे जिसतें मैं अपने माता पिता को देखें * (१) कालिका पुराण के रुधिर अध्याय में पुरुष मेध का बर्णन है और उसमें यह भी लिखा है कि एक मनुष्य के बलि करने से काली सहस्र बरस के लिये प्रसन्न हो जाती है और तीन मनुष्य के बलि करने से लक्ष बरष के लिये आनंद होती है फिर एक ठौर लिखा है कि आगे लोग महा नौमी में मनुष्य को बलिदान करते थे और भविष्य पुराण में यह लिखा है कि भैंसा के बलिदान करने से जितना दुर्गा प्रसन्न होती है उस्से सहस्र गुण मनुष्य के सिर चढ़ाने से संतुष्ट होती है

यह रीति भी हिंदुओं में बिदित है कि उनकी कोई जाति बेटियों को जन्मतेही मार डालते हैं और उनके बध करनेहारे उस कर्म के कारण से अपने लोगों में कुछ अपराधी पापी और निंदित नहीं ठहरते और क-

---

(१) इस नर मेध का स्पष्ट बर्णन जो अयोध्या के राजा अंबरिष से हुआ रामायण के बालकांड के ४८ और ४९ सरगः में देखो

भी अपयशी नहीं कहलाते फिर त्रिवेणी में करवट लेना भी धर्म समझते हैं और वेद से जाना जाता है कि जिस किसी का मन जीवन से भर गया अथवा उदास ऊआ तो वुह जो अपने को घात करे तो कुछ दोष नहीं जैसे कलन नामे एक ब्राह्मण ने जो सिकंदर के संग गया अपने को बाबुल में जलाया

सो हे प्रियहिंदुओ तुम आपही बिचार करो कि जब तुम्हारी मत में ऐसी २ बाते हैं तो उनके गुण कैसे होंगे क्योंकि जैसा पेड़ वैसा फल होता है जो बात आपही बुरी है वुह मान्ने से कब भली हो सक्ती है इस लिये कि संसार में कोई लोग अपनी मत से बढ़के अच्छे नहीं हो सक्ते परंतु उस्से बुरे हों तो हों जैसे त्रिदेव और राम कृष्ण के कुकर्म से प्रगट ऊआ है और उन से किसी दूसरे देवताओं और ऋषियों मुनियों की चाल अच्छी नहीं ठहरती जैसे इंद्र की बात सब जानते हैं कि उसने राजा सागर का घोड़ा चोराया अरु अपने गुरु गौतम की स्त्री को भ्रष्ट किया इस लिये गौतम ने उसे श्राप दिया और वुह नपुंसक हो गया दूसरे पुराण में लिखा है कि उसके सारे शरीर में भग ही भग हो गया (१) महाभारथ में

---

(१) यह सब कथा रामायण के बालकांड कें ४८ और ४९ सरगः में लिखा है और उसमें यह भी है कि जब उसका लिंग गिर पड़ा तो ऋषियों ने बकरे का लिंग उस ठौर लगा दिया

लिखा है कि सूर्य ने एक कुंआरी कन्या से बरबस्ती कुकर्म किया जिसका नाम कुंती था जिस्से राजा कर्ण उत्पन्न ऊआ चन्द्रमा ने अपने गुरु बृहस्पति की स्त्री का भ्रष्ट किया इस लिये बृस्पति ने क्रोधित होके उसे समुद्र में डाल दिया जहां वुह आठ सौ चौसठ कोटि बरस लग अंगारे की नाईं पानी में सन सनाता रहा और सारे जगत को अंधकार में छोड़ गया कृष्णनाथ की सौ बेटियों पर पवन देव मोहित ऊआ और उसने केशरी बानर की स्त्री से कुकर्म किया जिस्से हनुमान उत्पन्न ऊआ * बरुण ने उर्बशी से कुकर्म किया और उस्से अगस्त मुनि की उत्पति ऊई * महाभारथ में लिखा है कि यम ने क्रोधित होके अपनी माता को एक लात मारी इस लिये उसकी माता ने उसे शाप दिया और उसका पांव सूज आया और उस में कीड़े पड़ गये और कहते हैं कि उस के पांव को कीड़े आज लों खाते हैं फिर उसीने अपनी बहिन यमना से कुकर्म करने को चाहा * अग्नि देवता छः ऋषियों की छः बेटियों पर मोहित ऊआ पर अपनी स्त्री की डर से उनके संग कुछ न कर सका * और बलराम बड़ा मद्यप था (१)

---

(१) बिष्णु पुराण के चौथे अंश के ११ अध्याय से १५ अध्यायलों लिखा है कि जब लोगों ने कृष्ण को मणि की चोरी लगाई तो आपस में बड़ा झगड़ा ऊआ और कृष्ण नें कहा कि बलराम इसके यतन करने के योग्य नहीं क्योंकि वुह बड़ा कामी और मद्यप है

फिर महाभारथ में लिखा है कि दृहस्पति ने जो देवताओं का गुरु है अपने बड़े भाई औतथ्या की पत्नि का चीरा तोड़ा * वेदव्यास जो चार वेद का संग्रह कर्त्ता और वेदांत और शास्त्र और अठारह पुराण का कारक कहलाता है व्याभिचार से उत्पन्न ऊआ और अपने भाई की तीन स्त्रियों से उसने तीन बेटे उत्पन्न किये उनमें से एक का नाम पंडु दूसरे का नाम धृतराष्ट्र पंडु के पांच पुत्र थे अर्थात युधिष्टिर भीम अर्जुन नकुल सहदेव और उन पांचों की एक ही पत्नी द्रौपदी थी विश्वामित्र ने बशिष्ट के सौ पुत्रों को श्राप दिया और उन्हें चांडाल बना डाला इसके उपरांत अपने पुत्र को भी श्राप दिया और उन्हें चांडाल बना डाला और आप अपसरा के बश में हो गया और सहस्रों बरस का तप खोया उसी वेद में एक मंत्र है जिसे एक ऋषि ने अन्न चुराते समय पढ़ा कि कुत्ते का भूकना बंद हो जाय और भृग ने जो ऋग्वेद के एक साख का बनानेहारा है अपनी माता का सिर काट डाला * फिर एक और बुरी बात यह है कि दुर्गा काली इत्यादि के पूजे में ऐसी २ बुरी गीतें गाई जाती हैं और होली में पुरुष और कजली में स्त्रियां ऐसी फूहरपा तर बकतीं और सवांग बनतीं और बनाती हैं कि कभी कोइ भल मनुष्य उनका चर्चा अपने मुख से न करेगा * देवाली में उनके यहां जुआ भी खेलना उचित है यदि कोई न खेले तो उनकी समझ में उसका छछूंदर का जन्म होय

कि ऐसी बातों का करना मताचार समझते हैं जो सा-
क्षात अप कर्म है

सातवां अध्याय

इस बात के उत्तर में कि सामर्थी को कुछ दोष नहीं इत्यादि

जब देवताओं के पाप का बर्णन होता है तो बहुतेरे हिंदू यह कहते हैं कि सामर्थी को कुछ दोष नहीं ऊपर परमेश्वर के सर्ब सामर्थी होने के बर्णन में वेद और शास्त्र से निश्चित हुआ कि ब्रह्मा बिष्णु महेश और राम कृष्ण सर्ब सामर्थी नहीं सो जब इन्हों में यह बात नहीं ठहर सक्ती फिर दूसरे किसी में कब ठहर सकेगी फिर अब उनकी यह बात कहां रही कि सामर्थी को कुछ दोष नहीं क्योंकि उनके पुस्तकों से तो कोई सामर्थी ठहरता ही नहीं सब के सब काम क्रोध लोभ मोह में पड़के माया के बश और कर्म के आधीन हो रहे जैसे रामायण में लिखा है

चौपाई

को जग जाहि न ब्यापी माया
को जग जाहि न काम न चाया

दोहा

तुलशी याजग आय के, कोउन भये समरत्थ।
एक कंचन एक कुचन पर, को न पसारा हत्थ॥

भला यह बात तो खंडन हो चुकी पर अब हम इसे छोड़ दूसरे चार प्रमाणों से और भी प्रमानिक करते हैं कि कदाचित हिंदू इन्हीं करके उस भूल से बचें कि सामर्थी को कुछ दोष नहीं

पहिले परमेश्वर निस्संदेह सर्ब सामर्थी है और जो चाहता सो करता है पर वृह पवित्रता के विरुद्ध कभी कुछ नहीं करता जैसा नाम वैसा काम झूठ कपट व्यभिचार इत्यादि उसके स्वभाव के विरुद्ध हैं वृह न अपने पर न किसी दूसरे पर उनका करना योग्य समझता है परंतु जो कोई ऐसा ऐसा करे वृह उसे अवश्य करके दंड देगा

दूसरे ऐसा कौन कारण है कि परमेश्वर आप बुराई करे अथवा दूसरे से करावे * यदि कोई कहे कि औरों के सिखाने के लिये करता है तो ऐसी बात मूर्खता और अज्ञानता और महापाषंडता की है उत्तर देने के योग्य नहीं

तीसरे देवताओं ने अपने सरीखे देवताओं के बहुत सा अपराध किये सो सामर्थी परस्पर लड़े झगड़े और सिरफ डावल किये और फिर निष्पापी ठहरे फिर जब निष्पापी नहीं तो सर्ब सामर्थी परमेश्वर कैसे ठहरे

चैाथे परमेश्वर ने जो जो बुराइयां औरों के लिये बर्जी उन्हें वुह आप क्योंकर करेगा छीछी: क्या वुह अपने को उदाहरण बनावेगा अथवा और के लिये उपदेशक अपने लिये निंदक होगा कभी नहीं बुह तो निस्संदेह सब से उत्तम और सब से भला है इस करके वुह सारी पवित्रता और सत्यता में सबके लिये एक निदर्शन है यदि बुह झूठा और छली होवे तो उसकी प्रतीति कौन करे और जो वुह आप अंधेर करे तो उसकी दोहाई कौन देय यदि उसके गुण प्रभाव सर्व्व प्रकार से सर्व्वथा पवित्र और पावन न ठहरें तो साधु संत कोई उस्से प्रेम प्रति काहे को करे निदान जो वुह बिगड़े तो सभी बिगड़ जावें जैसे इसका साक्षी भागवत गीता में है

कर्म्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः ।
लोकसंग्रहमेवापि सम्पश्यन्कर्त्तुमर्हसि १ ॥
यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
सयत्प्रमाणंकुरुते लोकस्तदनुवर्त्तते २ ॥
नमेपार्थास्ति कर्त्तव्यं त्रिषुलोकेषु किंचन ।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त्तएवचकर्म्मणि ३ ॥
यदिह्यहंनवर्त्तेयं जातुकर्म्मण्यतन्द्रितः ।
ममवर्त्मानुवर्त्तन्ते मनुष्याःपार्थसर्व्वशः ४ ॥
उत्सीदेयुरिमेलोकानकुर्य्यांकर्म्मचेदहं ।
संकरस्यचकर्त्तास्यामुपहन्यामिमाःप्रजाः ५ ॥

अर्थात जनकादि कर्म ही करके सिद्ध ऊए इस लिये हे अर्जुन तू भी लोगों का हित समझ के कर्म कर क्योंकि श्रेष्ट जन जो जो कर्म करते हैं सोई सब लोग भी करते हैं और जिस प्रमाण को वे मानते हैं उसी को और लोग भी मानते हैं हे पार्थ तीनों लोक में मुझे कोई कर्म कर्त्तव्य नहीं और ऐसी कोई बस्तु नहीं जो मुझे प्राप्त नहीं तथापि मैं कर्म करता हों यदि कर्म मैं न करों तो मेरे समान लोग भी न करेंगे और सब भ्रष्ट हो जायंगे क्योंकि मैं वर्ण संकर का करनेहारा होऊंगा और लोगों का नाश करनेहारा बनोंगा *

फिर हिंदू कहते हैं कि देवताओं के पाप का फल अच्छा था क्योंकि जिनके संग उन्होंने बुराई किई उन की भलाई ऊई जैसे कृष्ण ने गोपियों के संग कुकर्म किया पर उन्हें मुक्ति तो दिया और परासर ने जो मछुये की कन्या के संग कुकर्म किया तो वुह ऐसा पुत्र जनी कि ऐसा पुत्र व्याही से कभी नहीं उत्पन्न हो सक्ता है जिसका जस तीनों लोक में बिदित है हाय हाय भला ऐसी बातों को कौन मानेगा क्या व्यभिचार व्यभिचारिणी स्त्री से प्रसन्न हो केउसे मुक्ति दान देसक्ता है अथवा कोई बड़े सपूत का अभीलाषी अपनी स्त्री छोड़ कर और की बेटी बहू पर जा गिरता है बिचार किया चाहिये कि जो आपको न बचा सका वुह और को किस भांति बचावेगा और जो

आप माया में लिप्त है वुह दूसरे को मुक्ति क्योंकर दे सकेगा

फिर हम कहते हैं कि उनके पाप का फल अच्छा न था जैसे कि ब्रह्मा ने अपना सारा धर्म और अपनी सारी मर्यादा हां अपना सिर भी पाप के कारण खोया और शिव ने पाप के कारण अपना लिंग गंवाया राम अपने भाई स्त्री लड़के बालों को खो खा के सरयू नदी में डूब मरा और कृष्णभी पशुन के समान बन में व्याधा के हाथ मारा गया और उसका क्रिया कर्म कुछ भी न हुआ उस की लोथ को चील कौवे और गीदड़ सब खागये

फिर यदि कोई हम से कहे कि भला तुम तो शास्त्र की इस बात को मान लेते हो कि देवताओं ने ऐसे २ काम किये पर शास्त्र की इस बात को क्यों नहीं मानते हो कि उनसे पाप नहीं हुए तो हम इसके उत्तर में यह दृष्टांत कहते हैं कि जैसे एक मनुष्य हम से आके कहे कि हम ने चोरी किई है और हम उसकी बात को मान लवें और फिर वृह हम से कहे कि चोरी करना पाप नहीं तो क्या हम ने जो उसकी पहिली बात मानी दूसरी भी मान लेगें यदि कोई स्त्री व्यभिचार करे और फिर कहे कि मुझे कछ पाप नहीं तो क्या कोई उसकी बात पर प्रतीति करेगा सो जब देवताओं और ऋषियों मुनियों ने ऐसे ऐसे कर्म किये और फिर कहा कि यह पाप नहीं तो भला उनका यह कहना कब प्रमाणिक हो

सक्ता है निदान जब पक्ष का कपाट मन के द्वार से खुल जाय तो अच्छी रीति से सब को देख पड़े कि परमेश्वर अवतार लेके ऐसा काम कभी न कर सकेगा जैसे हिंदुओं के देवताओं और ऋषियों मुनियों ने किया और यह कि यदि कोई पुस्तक कहे कि ऐसे काम पाप नहीं तो दोनों बात भूल की हैं

इस बात से यह सारार्थ निकलता है कि यदि देवते ऋषि मुनि इत्यादि सच मुच थे भी तो हिंदुओं के पुरखाओं में थे और पिछले लोगों ने उन्हें देवता करके समझा जैसा कि और देश के मूर्त्ति पूजकों में हुआ है और यदि ये बुरे कर्म जो शास्त्र और पुराण में लिखे हैं उन्हों ने किये तो निस्संदेह बड़े पापी हुए और यदि नहीं किये तो लोगों ने अपनी समझ से ऐसी २ बातें लिखीं सो वे अब उन देवताओं के पापों को अपना आड़ समझ कर पाप करने को सुभीता पाये हैं कि नित प्रति निधड़क किया करते हैं और उनके बड़े २ अचंभे और चमतकार जो पुस्तकों में लिखे हैं सो राजाओं और महत जनों ने अपनी इच्छा के समान कबियों और पंडितों से लिखवाया और उन्होंने भी उनकी अभिप्राय के समान उनके प्रसन्न होने के लिये मन लगा के बनाया और रचा जैसे कि अगिले समय के यूनानी और रूमी मूर्त्ति पूजकों के पुस्तकों में सहस्रों बातें ऐसी २ लिखी हैं कि उन्होंने अपने पुरखाओं को उनके मरने के पीछे

मूर्त्ति बना २ के पूजा और उनका महातम पुस्तकों में गाय २ के देवता ठहराया बरन सिकन्दर इत्यादि ने जीते जी अपनी पूजा करवाई कदाचित उन लोगों की समझ कुछ आगे अच्छी थी पर आप से आप परमेश्वर को कौन पासक्ता है उसकी गति को कौन लख सक्ता है उसका पद स्वर्ग से भी अत्यंत ऊंचा है किसी की बुद्धि वहां लग नहीं पहुंच सक्ती उसका भेद समुद्र से भी गहिरा है कोई थाह नहीं पा सक्ता उसका बिस्तार पृथिवी से भी अत्यंत अधिक है कोई परिमाण नहीं कर सक्ता उसका ज्ञान समुद्र से भी बड़ा अपरंपार है किसकी बुद्धि पार लह सक्ति है (१) मनुष्य परमेश्वर की सहायता बिना परमेश्वर की गति कब जान सक्ता है उन्होंने सच्चे परमेश्वर का ज्ञान न पाके औरों को उसका नाम पद और महातम देके रोपा जो कभी परमेश्वर नहीं ठहर सक्ते इसी लिये वे हर भांति के भूल चूक में पड़े हैं जो कोई इस बात को सोचेगा वुह जान लगा कि वेदशास्त्र से

---

(१) मनु का पोता कपिल कहता है कि कोई ईश्वर को नहीं जान सक्ता और संकराचार्य भी मत की बातों में अपने को अज्ञत समझता था जैसे उसने लिखा है

अज्ञानंकेन भवतीतिचेतनकेनापि भवतीतिअज्ञानमनाद्यनिर्व्वचनीयं

अर्थात यदि पूछो कि किस कारण से अज्ञान हुआ तो उसका कोई कारण नहीं वुह तो अनादि और अवाच्य है

परमेश्वर की पहिचान होनी अनहोनी है क्योंकि उन में केवल दो ही मत हैं एक निर्गुण दूसरा सर्गुण निर्गुण होके ईश्वर न कुछ बोलता न चालता न कुछ करता न धरता तो फिर उस दशा में उस्से वेद शास्त्र किस रीति से बन सकेंगे और जब सर्गुण होता तो भूलकर माया के बश में पड़ता तो फिर उस समय उसके करने धरने में भूल चूक अवश्य होगी और वेद शास्त्र की बिस्तृति इस की पूरी साक्षी है जैसा ऊपर बर्णन हुआ

हिंदू मत की निर्णय हो चुकी अब हम उनकी दुर्दशा पर हाय मार के इन समस्त बातों से यह आशय निकालते हैं तनिक ध्यान रखा चाहिये

पहिले हिंदुओं की मत के समान कोई इष्ट देवता नहीं है जिसमें सच्चे परमेश्वर का एक भी लक्षण पायाजाय

दूसरे सृष्टि और मनुष्य की उत्पत्ति के बर्णन में ऐसी बिरुद्धता है कि कभी प्रतीति के योग्य नहीं

तीसरे उसमें मनुष्य और परमेश्वर के बीच संबंध का कुछ यथार्थ और योग्य बर्णन नहीं

चौथे उसमें सच्चे मत की छाप अर्थात आश्चर्य और भविष्य बाणी नहीं

पांचवे उस मत के आचार और गुण से ठीक जाना गया कि वुह परमेश्वर की ओर से कभी नहीं इस लिये कि वुह केवल एक ही लोग के लिये है यद्यपि बुद्धि कहती है कि परमेश्वर की बात जो सब

का सृजनहार है सब के लिये है * फिर यह कि एक जाति चार बरण और चार बर्ण सहस्र शाखा हो गये इस लिये प्रेम स्नेह मेल उनमें से जाता रहा * फिर बारंबार जन्म लेने और तीर्थ करने और मूर्त्ति और पशुन हां ओखली मूसल इत्यादि को पूजने और बैर लेने लालच और व्यभिचार करने की अनुसासन और शत्रुन के मारने की मंत्र और स्त्रियों के सन्तप्त और सती होने और पती को पति के और लड़के बाले माता पिता की आज्ञा में इस भांति रहने को कि जो वे उन्हें पाप करने को भी आज्ञा देयें तो उनको करना उचित है और छोटे छोटे बालकों को मार डालने और आत्मघात करने और पुरुष मेध और देवताओं के बुरे २ कर्म करने और यह कि पाप पुण्य दोनों ईश्वर ही कराता बरन वुह सब कुछ आपही करता और आपही बनता है ऐसी २ बातों के सोचने से निश्चय जाना जाता है कि यह मत परमेश्वर की ओर से नहीं इस लिये जो अपनी भलाई और मुक्ति चाहते हैं उन्हें अवश्य है कि उस मत को त्यागें *

सो हे प्रिय हिंदू लोगो इस बात को तनिक सोचो और बिचारो और ऊपर ही के केवल चार पांच प्रमाणों की ओर न देखो परंतु सभों पर ध्यान करो यदि तुम ऊपर के प्रमाणों में से किसी को अपनी समझ में खंडन भी कर सको तो भी इसे न समझो कि हमारा मत प्रमाणिक है और हमारा सारा संदेह जाता रहा क्योंकि

यह अनहोना है जब लों ऊपर के समस्त प्रमाणों का ठीक उत्तर न देलो और सच्चे मत के लच्छण उसमें पाये न जावें परमेश्वर का मत एकही ओर से प्रकाशित नहीं परंतु उसपर तो चारोंओर से जोति को जगजगाहट है और वुह कुछ कच्चा नहीं बरण सर्बथा पक्का है सो परमेश्वर तुम पर अनुग्रह करे और तुम्हें शिच्छा देवे और तुम्हारे मनों को सत्य की ओर फेरे * हे प्रिय यह न समझो कि हमने यह पुस्तक बैर से लिखा है अथवा अपने कुछ स्वार्थ से क्योंकि तुम्हारे मत से हमारा कुछ अकाज नहीं है और न तुम्हारे इसके छोड़ देने और दूसरे के ग्रहण करने से हमें कुछ काज परंतु हम तुम्हें केवल अपना भाई समझ कर तुम्हारी भलाई चाहते हैं इस लिये तुम्हें चाहिये कि अचेतता और पच्छपात को मन से दूर करके सत्य की ओर फिरो और सत्य मार्ग का खोज करो कि परमेश्वर तुम्हारा भलाकरे

चौपाई

भलाकरे प्रभुतुम सब केरू
निज बुद्धिज्ञान देयबज्जतेरू
जेहिते लहो परम गतिभाई
छूटे भवबंधन कठिनाई
यहिते अधिक का कहों निहोरी
बचि होबात जौ मनि होसोरी

समाप्त

शेष कथा

१ [देखो राम के चरित में जो इस पुस्तक के बीसवें पत्रे इत्यादि में लिखा है]

रामायण में लिखा है कि रामावतार नारद मुनि के श्राप से ऊआ

२ [देखो इस पुस्तक के दूसरे खंड के छठवें अध्यायमें]

हिंदू की मता से लंगड़ा लूला अंधा बहिरा इत्यादि मोच्च नहीं पासक्ते क्योंकि ऐसे पदारथ के प्राप्त के लिये भला चंगा शरीर चाहिये ग्रैार भविष्य पुराण में लिखा है कि कृष्ण का पुत्र सांभ कोढ़ी था ग्रैार नहीं जाना जाता कि कृष्ण ने उसे चंगा किया

३ [देखो हिंदू धर्म की बिरुद्धता में जो इस पुस्तक में लिखा है]

पद्म पुराण में लिखा है कि ब्रह्मा अहंकारी ग्रैार शिव कामातुर केवल विष्णु पवित्र है

बऊतेरे हिंदू समझते हैं कि भागवत पुराण वेदव्यास का कृत है पर प्रमाणिक बातों से निश्चय ऊआ कि बोपदेव से जो ईसवी सन १२०० में था लिखा गया इसे बऊत पंडित लोग भी कहते हैं

सुमेर गिर के विषय में विष्णु पुराण में लिखा है कि वुह गाव दुम की नाईं है नीचे मोटा ऊपर पतला पद्म पुराण में लिखा है कि वुह धतूरे के फूल की नाईं है सावर्नी कहता है कि वुह अस्टखूंट है अत्री कहता है कि वुह सत खूंठ है भृगु कहता है कि गुथे ऊए बाल के समान है अर और कहते हैं कि गोल है और मत्स्य पुराण में यह स्लोक है

चतुर्वर्णं सुसैावर्णश्चतुरस्त्रः समुश्रितः

अर्थात वुह चैारंगा स्वर्ण और चैाखूंट्टा ऊंचा है * फिर लिंग पुराण में लिखा है कि जिस समय ब्रह्मा विष्णु इस बात पर लड़ रहे थे कि हम्में श्रेष्ट कैान है शिव ने उन्हें अलग २ कर दिया और उस पुराण में लिखा है कि शिव के अट्ठाइस अवतार हैं और विष्णु के चैावीस फेर उसी पुराण में है कि दधिच ने विष्णु और उसके सेवियों को मारा और कालिका पुराण में लिखा है कि शिव ने शरभ हो कर विष्णु को बाराह अवतार में और उसके सब बच्चों को मारडाला बामन पुराण में लिखा है कि शिव अपने ससुर दच्च के मारने से ब्रह्मघाती ऊआ और इस पापमोचन के लिये काशी तीर्थ किया

रामायण में लिखा है कि राम ग्यारह सहस्त्र बरस तक जीता रहा परंतु वेद और मनु का शास्त्र इसके ना करते हैं

प्रजापति की बात

४ [देखो पिंडा पारने के बिषय में जो इस पुस्तक में लिखा है]

पुराणों से निश्चय जाना जाता है कि जो प्रजापति श्रोर उनकी स्त्री कहलाती हैं सो केवल दृष्टान्त की रीति पर हैं अर्थात बुद्धि श्रोर धर्म श्रोर पूजा पाठों के लचण हैं जैसे कि विष्णु पुराण में लिखा है कि धर्म ने श्रद्धा को व्याहा श्रोर उस्से काम उत्पन्न ऊआ फिर उसने लच्मी को व्याहा श्रोर उस्से दर्प उत्पन्न ऊआ फिर धृति को व्याहा श्रोर उस्से नियम उत्पन्न ऊआ फिर तुष्टी को उस्से संतोष उत्पन्न ऊआ फिर पुष्टी को उस्से लोभ उत्पन्न ऊआ श्रोर मेधा से श्रुति उत्पन्न ऊआ फिर क्रिया को श्रोर उस्से दंड न्याय श्रोर बिनयी उत्पन्न ऊए श्रोर बुद्धि से क्रोध श्रोर शांति से चेम श्रोर सिद्धि से सुख श्रोर ज्ञात से यश उत्पन्न ऊआ फिर लिखा है कि यज्ञ ने दचिणा को व्याहा श्रोर धर्म के पुत्र काम ने नंदी को व्याहा श्रोर उस्से हर्ष उत्पन्न ऊआ हे भाईयो इस में तनिक बिचार करो यही प्रजापति कहलाते हैं पर केवल ये गुण हैं जो दृष्टांत की रीति पर शिचा के लिये लिखे गये हैं परंतु ब्राह्मणों ने अपने लाभ के लिये उन्हें स्त्री पुरुष ठहरा के प्रजापति स्थित कर रखा है * श्रोर उनमें पितरों को मिला दिया

है कि जिस्से पिंडा पारने का लाभ उन्हें हो पुराणों में लिखा है कि प्रजापति और पित्र एकही लोक में रहते हैं अर्थात पित्र लोक और प्रजापति लोक एकही स्थान है सो जब प्रजापति नहीं ठहरे तो उनका लोक कहां फिर जब उनका लोक नहीं तो पित्र लोक कहां और जब पित्र लोक नहीं तो फिर किस लिये पिंडा पारना है हे भाइयो टुक सोचो और धोखा न खाओ * वेद शास्त्र में बारंबार जन्म की बात लिखी है फिर हिंदू क्या जानते हैं कि उनके पित्र कहां हैं कोई चंद्रमा में कोई तारों में कोई पृथिवी पर पशु पक्षी अथवा सागपात बने होयें अथवा उन्हीं के पुत्र हो गये होयें हे प्रिय हिंदू पिंडा पारना और श्राद्ध करना और ऐसी ऐसी वृथा बातों को छोड़ देना अति आवश्यक है

फिर उसी शास्त्र में लिखा है कि अधर्म ने हिंसा को व्याहा जिस्से अनृत अर्थात झूठ उत्पन्न हुआ और उनकी पुत्री निकृत थी और इन दोनो भाई बहिन ने परस्पर व्याह किया और उनके दो पुत्र अर्थात भय और नरक उत्पन्न हुए और उनकी दो पुत्री माया और बेदना थीं जो अपने दोनों भाइयों से व्याही गईं और भय और माया से मृत्यु उत्पन्न हुई और नरक और बेदन का पुत्र दुख हुआ और मृत्यु के पुत्र व्याधि और जरा और शोक और तृषना और क्रोध ये सब अधर्म के बंश हैं * जो चाहो तो इन बातों के स्पष्ट बर्णन भागवत और विष्णु

पुराण के पहिले अंश के सातवें अध्याय अरु और पुराणा में देख लो

५ [देखो विष्णु और कृष्ण के चरित में जो इस पुस्तक में लिखे हैं]

विष्णु पुराण के पांचवें अंश के पहिले अध्याय में लिखा है कि जब देवते गण ब्रह्मा समेत विष्णु के पास जा के बिनती करने लगे कि संसार में जा अवतार लेवें तो विष्णु ने अपने शरीर से दो बाल एक श्वेत और एक काला निकालके कहा कि श्वेत बलराम और काला कृष्ण होके पृथिवी का भार उतारेंगे फिर ये दोनों बाल मनुष्य बनके परस्पर झगड़े रगड़े किये और एक ठौर में लिखा है कि कृष्ण ने कहा कि बलराम तो बड़ा मद्यप और बड़ा जुआरी है मणि की रखवाली करने के योग्य नहीं

६ [देखो जाति के वर्णन में जो इस पुस्तक में लिखा है]

शास्त्र से जाना जाता है कि ब्राह्मण को जो जो पूजा पाठ अर्थात स्नान ध्यान गायत्री पंच संस्कार वेद पढ़ना इत्यादि प्रति दिन अवश्य है सो यदि वे ये सब करें तो उन्हें और कुछ काम करने का अवकाश न मिलेगा यदि कंगाल होके कुछ संसारिक काम किया चाहें तो शास्त्र की रीति से पापी और अधर्मी ठहरेंगे और यदि अपने धर्म और पूजा

पाठ में लगे रहें तो भूखों मरें हां यह उस समय होता जब कि सब जाति ब्राह्मण के सेवक थे पर इस समय तो अत्यंत कठिन है कि शास्त्र की रीति से ब्राह्मण का हर लोक पर लोक दोनो बने इस लिये अवश्य है कि ऐसी भावना की बातों को छोड़ के सतमत ग्रहण करें फिर लिखा है कि जीव के चार आश्रम हैं अर्थात ब्रह्मचारी गृहस्थ बाणप्रस्थ भिक्षु सो अपने लड़कों के सिखाने और और सुधारने अरु और ऐसे २ अवश्य काम के लिये हिंदू के जीवन का चौथा ही भाग है

७ देखो तंत्र के बिषय जो इस पुस्तक में लिखा गया है]

मनु के शास्त्र के दूसरे अध्याय के पहिले श्लोक के कुलूक भट्ट के टीका में लिखा है कि श्रुति दो प्रकार के हैं अर्थात वैदिक और तांत्रिक उसके बचन ये हैं

श्रुतिश्चद्विबिधावैदिकीतांत्रिकीच

फिर लिखा है कि गायत्री ने ब्राह्मणों को श्राप देके कहा कि तुम कलियुग में तांत्रिक होओ

८ [देखो आश्चर्यों के बर्णन में जो इस पुस्तक में लिखे गये हैं]

रावण की सामर्थ के विषय में बालमीकी रामायण के बालकांड के १३ सरगः १६ और १७ श्लोक में लिखा है

नतत्र सूर्य्यस्तपतिनभयाद्वति,मारुतः
नाग्निर्ज्वलतिबै तत्र यत्र तिष्टति रावणः
जलोर्मिमालीतं दृष्ट्वा,समुद्रोऽपिचकम्पते
नष्टोबै श्रवणस्तत्रकृ।लंकान्तद्वीर्य्य पीडितः

अर्थात रावण के डर से सूर्य तपन नहीं करता और पवन बहता नहीं और आग जलन नहीं करती और समुद्र देख कर कांपता है और कुबेर भय के मारे लंका छोड़ भागा

९ [वेद के पवित्र होने के बिषय में]

वेद और विष्णु पुराण अरु और ठारों में लिखा है कि येजुर्वेद का तैटया अंश याज्ञ बलिक ने बमन किया तब उसके गुरु वेश्य मयापन ऋषि ने अपने दूसरे शिष्यों को आज्ञा दिई कि उसे निगल जायें वे तीत्री बन के उसे घोंट गये इस लिये वुह तीत्री कहलाया बहुधा कहानियों में तो कुछ रस की बात भी है पर इस कहानी में तो वुह भी पदार्थ नहीं है

१० [देखो तप के बिषय में जो इस पुस्तक में लिखा है]

शास्त्र की रीति से जाना जाता है कि तप से मनुष्य का भला नहीं होता देखो कि जब रावण ने बड़ा उग्र तप किया और उसका फल लह के सारी सृष्टि को बश

में कर लिया तो ऐसा उपद्रव मचाने लगा कि उसे नाश करने के लिये ईश्वर को अवतार लेना पड़ा हाय २ एक देवते ने उसे बर दिया कि वुह बरश्राप ठहरा जिस्से वुह कुल समेत दूसरे देवते से नाश हुआ फिर बेश्यामित्र जो सहस्रों बरस तप किये जब उर्बसी उस पास आई तो वुह उसे देख के अपने को सभाल न सका और अपने तप का सारा फल खोके उस्से भोग करके भ्रष्ट हुआ और कोढ़ी हो गया अंत में स्वान बन के उसके पीछे २ इंद्र लोक लों गया फेर विष्णु पुराण के २ अंश के १३ अध्याय में लिखा है कि राजा भरथ एक हरिण को ऐसा प्यार करने लगा कि उसका तप भंग हो गया और दूसरे जन्म में उसका हरिण की योनि में जन्म हुआ

११ [देखो युग के बिषय में जो इस पुस्तक में लिखा है]

राज तरंगिनी तिथ ग्रंथ में यह लिखा है जिस्से जाना जाता है कि कृष्ण कलियुग के साढ़े छःसौ बरस के लग भग था उसके बचन ये हैं

अष्टसप्तयधिकामब्द शतद्वाबिंशतिं नृपाः। अपीपलंस्ते काश्मीरान् गोनर्दाद्याः कलौयुगे। भारतं द्वापरांते मूद्वार्त्त येति बिमोहितः। केचिदेतां मृषातेषां कालसंख्यां प्रचक्रिरे। लब्धाधिपत्यसंख्यानां बर्षान् संख्यायभूभुजां मुक्तात्का

त्कालेः शेषोनास्त्येतं तद्विवर्जितात्। शतेषुषटसुसार्धेषु च्यधिकेषु भूतले। कलेर्गतेषु बर्षाणाम भवन् कुरुपांडवाः। लौकिकेब्दे चतुर्विंशे शक कालस्यसांप्रतं। सप्तत्यात्यधिकंयातं सहस्रंपरिवत्सराः। प्रायस्तृतीय गोनर्दादारभ्य शरदान्त दा। द्वेसहस्रेगतेत्रिंशद धिकंच शतत्रयं। बर्षाणां द्वादशशति षष्टिःषड्‌भिश्चसंयुता। भूभुजां कालसंख्यायां तद्वापंचाशत्तो मता। च्टच्चाद्दशं शत्तेनाद्वैर्यात्सुचित्र शिखंडिषु। उच्चारे संहिता कारैरेबंदत्तोत्रनिर्णयः। आसन्मघासुमुनयः शास तिपृथ्वीं युधिष्टिरे नृपतो। षड्‌द्वियुतः शककालस्तस्य रा-ज्यस्य।

११ [देखो मूर्त्ति पूजा के बिषय में जो इस पुस्तक में लिखा है]

वेद में मूर्त्ति पूजा कहीं नहीं है जाना जाता है कि मूर्त्ति पूजा पहिले सूर्य चंद्र ग्रह इत्यादि के बिलोकने से ज्ञआ कि लोग उन्हें ईश्वर के समीपी समझ के उनका आदर मान करने लगे होते होते देवता जानके पूजने लगे फिर जब सूर्य अस्त होता तो अग्नि जलाके सूर्य की संतीं उसकी पूजा प्रतिष्टा घी करते और पृथीवी जल (१) आकाश से अपना लाभ बिचार के उनकी भी पूजा करने लगे पुनि मनुष्यों में जो बड़े २ बुद्धि मान और ऐश्वर्य

---

(१) बरुन कोई देवता नहीं है वुह तो केवल जल है और यह भी बचन का अर्थ ही ह

मान और सूर बीर ऊए कि किसी ने जोतने बोने की यत्न सिखाया और किसीने चित्रकारी इत्यादि उत्पादन किया और किसी ने महासंग्राम करके धन धाम और कोष को बचाया इस लिये उनके मरने के पीछे कर्म २ से उनकी पूजा स्थापित ऊई तिथ ग्रंथ से जाना जाता है कि पहिला मनुष्य जिस की पूजा इस रीति से ऊई बाबुल का राजा निमरूद का पुत्र बेलस था इस प्रकार से कितने राजाओं ने अपने जीते जी अपनी पूजा करवाई बरन यहां काशी में महल्ले ब्रह्मनाल सन इसवी १८०१ लाला शिवनाथ सिंह नामे एक चत्री महा जुआरी और बड़ा गुंडा था जिसके घर में सैकड़ों खेलाड़ी हरदम रहते थे और नाल की आमद से उसकी खर्च बर्च चलती थी यह खबर पाके हाकिम ने उसे तलब किया पर वुह हाजिर न ऊआ रूपोश हो गया बाद इसके उसकी गिरफ़तारी के लिये जब सिपाही गये तो वुह और उसका संगी बहादुर सिंह दरवाजे के बाहर निकले कि एक डेवढ़ तिलंगो की उन पर छुटी और वे वहीं तमाम ऊए लोगों ने वहां जिस जगह कि शिवनाथ सिंह मरा उसके नाम की एक बेदी बनाके चंदन अच्छत फल फूल और जल चढ़ा २ के पूजा और दंडवत करते हैं तो क्या आश्चर्य कि कुछ दिन बीते लोग उसकी एक मूर्त्ति बनाके खड़ी करें और उसके महातम का एक पुस्तक बनावें इसी प्रकार पूजा पाठों की जड़ समझनी चाहिये

१३ [ब्रह्मा की लड़ाई में सब जानते हैं कि अंगरेज समस्त देश जीत पश्चात रंगून नगर को लेके आवा नगर को जो ब्रह्मा देश की राज धानी है चले जाते थे जब नगर के निकट पहुंचे तो वहां के राजा ने अपना वकील भेज कर सुलह का अहदा पैमा किया और बहुत सा रुपये पैसे और देश देकर उन्हें प्रसन्न किया इसके पीछे राजा ने इस वृत्तान्त को अपने दफ़तर में यों लिखवाया कि पूर्ब का राजा जो श्वेत हाथियों का प्रभु और समुद्र का अध्यक्ष और जीवन मरन का स्वामी है उसके राज के अमुक सम्वत में गोरे लोग आये और महाराज ने उन्हें रंगून नगर से एक मंजिल अपनी राजधानी तक आने दिया जब वे वहां पहुंचे तो महाराजाधिराज के तेज प्रताप से ऐसे घबरा गये कि एक क़दम आगे न बढ़ सके इसके पीछे उन्हों ने महाराज के पास अरज़ी भेजी कि हमारे अपराध को क्षमा कीजीये और हमें फेर अपने देश को जाने दीजीये तब महाराजाधिराज जो कृपानिधान है अपनी अपरंपार दया से उनकी बिनती मान लिई बरन उन्हें राहखर्च के लिये बहुत सा धन संपति भी दिया कितने जो अपने देश को फिर जाने को न चाहे उन्हें महाराज ने कई एक सूबे रहने के लिये दिये सो इस बात को कदाचित सौ पचास बरस पीछे ब्रह्मा देश के लोग योहीं समझ लेयें तो क्या आश्चर्य इसी प्रकार जाना चाहिये कि पुराणों की बहुत कथा

लोगों ने पक्ष करके उलटा बर्णन किया है और अब के लोग बिचार न करके उन्हें सत्य समझते हैं

१४ [देखो निर्गुण सर्गुण के बिषय में जो इस पुस्तक में लिखा है]

वेद शास्त्र और पुराणों में कहीं लिखा कि ईश्वर निर्गुण है और कहीं लिखा कि सर्गुण है कहीं लिखा कि ईश्वर होकर विष्णु शिव इत्यादि बनकर लीला क्रीड़ा करता है और वेदांत यद्यपि ईश्वर को निर्गुण कहता है तौभी उसे सर्बज्ञानी सर्ब सामर्थी सृष्टि कर्त्ता इत्यादि लिखता है और वेद में यह ऋचा है

अपाणिपादो जवनोग्रहीतापश्य
त्यचक्षुः सश्रणोत्यकर्णः सवेत्तिवेधं
न चतस्यवेत्तातमाहुरग्यं पुरुषंमहान्तं

अर्थात् वुह बिना हाथ पांव चलता और धरता और बिना नेत्र देखता और बिना कान सुनता और सब कुछ जानता है पर उसे कोई नहीं जानता महा पुरुष उसी को कहते हैं * निदान परमेश्वर के ज्ञान जो मता की जड़ है उसके बिषय हिंदुओं के यहां ऐसा गड़ बड़ है कि ठीक वुह दृष्टांत जो उनके यहां प्रसिद्ध है सुर्त्त आता अर्थात किसी गांव में सब अंधही रहते थे वहां एकदिन संयोगन एक हाथी आया किसी ने उसके पांव को पकड़ा

कहा कि ताड़की नाईं है किसी ने कान को कहा कि सूप की नाईं है किसी ने सूंड को पकड़ा और दोनों को झुठाके कहा कि हाथी मूसल के समान है इत्यादि ठीक इसी प्रकार शास्त्रवालों ने अटकल से परमेश्वर के बिषय बकवाद किया पर किसी ने भेद न पाया

ऊपर के लक्षणों से ईसाई मत का निरूपण

प्रथम खंड

पहिला अध्याय

अब बिचार किया चाहिये कि सत मत के लक्षण जो ऊपर लिखे हैं (१) ईसाई मत में हैं अथवा नहीं यदि उस में हैं तो उसे ग्रहण करना और तन मन से मान्ना उचित है नहीं तो उसे भी खंडन करना चाहिये * वे पुस्तकें जो ईसाई मत के हैं सो तौरेत जब्बूर और भविष्यद्वक्तों के पुस्तक और इंजील हैं जो सब मिल कर बैबल कहलाती है

बैबल से जाना जाता है कि परमेश्वर एक है और सकल सृष्टि से परे सो इसका बर्णन आगे स्पष्ट और सप्रमान होगा और इस मत के निरूपण करने के लिये यह भी सोचा चाहिये कि इस मत की रीति से परमेश्वर कि अद्वैतता में तीन एक हैं अर्थात पिता पुत्र पवित्रात्मा और

---

(१) देखो ३ और ४, ५ पृष्ठ

ये तीनों अनादि और अनंत और अविनाशी हैं और एक ही स्वभाव प्रभाव और एकही सामर्थ रखते हैं और ये तीनों एकही अद्वैत परमेश्वर हैं और इस घड़ी हमारा काम नहीं कि इसमें कुछ छेड़ छाड़ करें कि एक परमेश्वर में तीन क्योंकर हैं परंतु यह पूछा चाहिये कि जिस परमेश्वर का बर्णन बेबल में है उस में वे लच्छण जो इस पुस्तक के आरंभ में बर्णन किये गये पाये जाते हैं अथवा नहीं जैसे कि हम ने हिंदू के मत के अनुसंधान करने में यह बिबाद नहीं किया कि परमेश्वर एक होके अनेक क्योंकर होता अथवा निर्गुण होकर सर्गुण किस रीति से बनता परंतु पहिले तो हम इस बात की खोज में थे कि वुह निर्गुण हो चाहे सर्गुण पर परमेश्वर के लच्छण उसमें हैं अथवा नहीं अब हम इसाई मत का निरूपण भी इसी रीति पर करते हैं परमेश्वर चाहे तो अद्वैतता और तीन एक होने का अनुसंधान आगे चल के करेंगे * अब बैबल की रीति से बिचार किया चाहिये कि

१ परमेश्वर पवित्र है अथवा नहीं (१) इस गुण के बिचार करने में हमको उचित है कि उसके बचन और कर्त्तव्य को सोचें जिसतें निश्चय हो कि वुह पवित्र है अथवा नहीं * बैबल में बर्णन है कि परमेश्वर पवित्र

---

(१) देखो ३ और ४ पृष्ठ

है जैसे तौरेत में लिखा है (१) कि इसराईल के संतानों से कह कि तुम पवित्र हो कि मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर पवित्र हों और जब्बूर में लिखा है (२) कि हमारे प्रभु परमेश्वर की महिमा कर और उसके चरण पर गिर के आराधना कर क्योंकि वुह पवित्र है (३) प्रभु अपने सारे पंथों में सत्य और अपने सारे कामों में पवित्र है * फिर भविष्यद्वक्तों के पुस्तकों में लिखा है (४) कि एक दूत दूसरे को पुकार के कहता है कि पवित्र पवित्र पवित्र सेनों का प्रभु सारा जगत उसकी महिमा से भर पूर है और इंजील में भी यही बातें लिखी हैं (५) कि दूत रात दिन उसी की स्तुति करते हैं कि पवित्र पवित्र पवित्र परमेश्वर सर्व सामर्थी जो था जो है जो आनेहारा है * जब परमेश्वर ने मनुष्य का रूप धारण किया तबभी उसका यही गुण सदा बर्णन होता है कि वुह पवित्र है (६) और पवित्रात्मा अपने नाम ही से प्रगट होता कि वुह कैसा है * सारे बैबल से जाना जाता है कि परमेश्वर के पवित्रता के गुण से उसके और सब गुण शोभायमान हैं मानों यह गुण उसके सब गुणों का मुकुट मणि है क्योंकि वुह बारंबार पवित्र ही कहलाता है और कहीं नहीं

---

(१) लैव्य व्यवस्था १९ पर्व्व २ पद (२) जब्बूर ९९ पर्व्व ५ पद (३) जब्बूर १४५ पर्व्व १७ पद (४) अशियाह ६ पर्व्व ३ पद (५) प्रकाशित ४ पर्व्व ८ पद (६) लूका १ पर्व्व ३५ पद

लिखा कि सामर्थी सामर्थी सामर्थी अथवा ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी प्रभु परमेश्वर परंतु पवित्र पवित्र पवित्र प्रभु परमेश्वर ही बर्णन है (१) और यद्यपि उन पुस्तकों में खोल २ के लिखा है कि वुह पवित्र है तौभी परमेश्वर के बचन और कर्त्तव्य को बिचारा चाहिये जिसतें उसकी पवित्रता अच्छी रीति से प्रगट हो * इस बात पर हम तीन प्रश्न करते हैं कि परमेश्वर ने आप को सृजनहार और व्यवस्थादायक और त्राण कर्ता किस रीति से प्रगट किया * तौरेत के पहिले पर्ब्ब से समझ पड़ता है कि परमेश्वर ने पृथिवी और स्वर्ग और जो कुछ उसमें है बनाया और जब बना चुका तो देखा कि सब अच्छा है (२) उसने सब दूतों को पवित्र बनाया और मनुष्यों कोभी अपने स्वरुप में उत्पन्न किया अर्थात अपने समान पवित्र (३) और बैबल में कहीं नहीं है कि वुह पाप का उत्पादक है अथवा किसी के प्रारब्ध में उसका लिखनेहारा है क्योंकि वुह ज्योति है (४) उसमें कुछ अंधकार नहीं अर्थात पाप का लेश नहीं और न हो सक्ता है इस्से ठीक समझा गया कि परमेश्वर ने उत्पति के बिषय अपने को पवित्र ठहराया * फिर परमेश्वर ने अपने को व्यवस्था दायक किस प्रकार से प्रगट किया * जब आदम और

---

(१) अशिया ६ पर्ब्ब, ३ पद (२) उत्पत्ति १ पर्ब्ब ३१ (३) उत्पत्ति १ पर्ब्ब २७ पद और अफसी ४ पर्ब्ब २४ पद (४) यूहन्ना की पत्री १ पर्ब्ब ५ पद

ह्व्या को उत्पन्न किया तो उनको इस भांति की समझ दिई थी कि जिस्से वे जानते थे कि हमें क्या क्या करना योग्य है इस लिये उन्हें केवल एक यह आज्ञा दिई (१) कि तुम भले और बुरे की पहिचान के वृक्ष का फल न खाना यद्यपि मनुष्य उस वृक्ष का फल खाके पापी होगया तोभी उस समझ का कुछ बिशेषण उसमें रहगया जिस कर के वुह परमेश्वर की पवित्रता की साक्षी देता है * कि परमेश्वर ने मूसा के द्वारा अपनी व्यवस्था को प्रगट किया और कहा (२) कि मैंहीं परमेश्वर हों मुझे छोड़ किसी दूसरे को ईश्वर मत समझ अपने लिये कोई मूर्ति न बना * और मुझे छोड़ किसी दूसरे की पूजा न कर* मेरे नाम को वृथा न ले * और सात दिन में से एक दिन पवित्र जान कर मेरी आराधना कर * अपने माता पिता का आदर कर * मनुष्य का घात न कर * व्यभिचार न कर (३) चोरी न कर * किसी प्रकार का झूठ न बोल * और लोभ न कर * निदान मुझ को अपने सारे मन और सारे जी और सारी सामर्थ से प्यार कर (४) और अपने परोसी को ऐसा प्रिय समझ जैसे आप को * (५) सो सर्ब प्रकार से उसकी यही आज्ञा है कि

(१) उतपत्ति २ पर्व्व १६ और १७ पद (२) यात्रा २० पर्व्व १ पद (३) मत्ती ५ पर्व्व २७ और २८ पद (४) बिवाद ६ पर्व्व ५ पद (५) लेव्य व्यवस्था १९ पर्व्व १८ पद मत्ती २२ पर्व्व ३८ पद से ४० पद तक

अपना मन पवित्र कर बरण जिस भांति तुम्हारा बुलानेहारा अर्थात परमेश्वर पवित्र है उसी प्रकार तुम भी अपनी सारी चाल चलन में पवित्र होओ (१) और यह पवित्र होना कुछ शरीर की फर्छाइ और नहाने धोने से नहीं परंतु पवित्रता से तात्पर्य यह है कि अपने तन मन को पापों से पवित्र रखो इस कारण अपने अंगों को परमेश्वर को सौंपो कि तुम एक जीवता और पवित्र और ग्राह्य बलिदान होओ (२) क्योंकि बिनु पवित्रता परमेश्वर के साम्ने कोई नहीं जासक्ता जैसे लिखा है (३) कि पवित्रता का पीछा करो क्योंकि उस बिना कोई परमेश्वर को न देख सकेगा * सो परमेश्वर की आज्ञा है (४) कि तुम पवित्र बनो जैसा मैं पवित्र हों * यही परमेश्वर की व्यवस्था है और वुह उसको अचल भी रखता उसका उलंघन करनेहारा परमेश्वर के समीप कभी रह नहीं सक्ता बरन दंड के योग्य ठहरता है इस लिये जब स्वर्गीय दूत ने परमेश्वर की व्यवस्था को न माना तो उसने उन्हें अपने साम्ने से निकाल दिया (५) और जब आदम और हव्वा ने पाप किया तो उनको अदन की वाटिका से निकाल दिया * क्योंकि परमेश्वर को पाप से

---

(१) १ पतरस १ पर्व्व १५ पद (२) रूमी १२ पर्व्व १ पद (३) इबरानी १२ पर्व्व १४ पद (४) १ पतरस १ पर्व्व १६ पद (५) २ पतरस २ पर्व्व ४ पद

ऐसी घिन है कि कभी कोई पापी उसके साम्ने नहीं जा सक्ता और उन्हीं के पाप से सारी पृथिवी श्रापित हुई इसी भांति उत्पत्ति के सोलह सौ बरस के पीछे नूह के दिनों में जब सारा जगत पाप में डूब गया और लोगों का मन मुकुर मलीनता की काई से सर्वथा अंध होगया और सब अधर्म में लिप्त हुए तो परमेश्वर ने अपनी पवित्रता के कारण उनको जल मय से नष्ट कर डाला (१) क्योंकि वे सब उसके आगे निपट अभाये और घिनौने थे केवल नूह और उसका बंश बचा * इसी रीति से लूत के दिनों में जब सदूम और गमूरा के लोग कुकर्मों और पापों के दलदल में गले तक फंस रहे थे परमेश्वर ने अपनी पवित्रता के लिये अग्नि बरसा के उन्हें भस्मांत कर डाला (२) और किनानियों ने यद्यपि सदूम और गमूरा के लोगों की यह दशा अपनी आंखों से देखी तिस पर भी पाप से हाथ न उठाये इस लिये परमेश्वर ने इसराइलियों के द्वारा उन पापियों का ध्वंस किया (३) फिर जब इसराइली जो परमेश्वर के बड़े प्रिय थे पाप में लिप्त हुए तो परमेश्वर ने उन्हें भी नहीं छोड़ा बरन छिन्न भिन्न कर डाला और वे आज लों परमेश्वर की पवित्रता के एक प्रत्यक्ष चिन्ह हैं * इन बातों के सोचने

---

(१) उत्पत्ति ६ और ७ पर्व्व (२) उत्पत्ति १९ पर्व्व (३) गिनती ३३ पर्व्व ५२ पद से ५६ पद तक से १८ पद और बिबाद २० पर्व्व १६ पद तक

से जाना जाता है कि परमेश्वर ने व्यवस्था से अपनी पवित्रता प्रगट किई फिर केवल व्यवस्था ही से नहीं परंतु उसके स्थापित करने से भी क्योंकि जिस किसी ने उसके बिरुद्व पाप किया चाहे मनुष्य हो चाहे स्वर्गीय दूत परमेश्वर उस्को घिनाता और उसको दंड देता है इस्से भी निश्चय ज़ुआ कि वुह पवित्र है और यद्यपि जगत की उत्पति और व्यवस्था और व्यवस्था के अचल रखने से परमेश्वर की पवित्रता प्रगट ज़ुई तो भी संसार के लिये मुक्ति मार्ग ठहराने से और अधिक प्रगट ज़ुई क्योंकि जब मनुष्य पाप के कारण परमेश्वर के साम्ने अभाया और घिनौना ज़ुआ यद्यपि वुह पापी पर अपनी पवित्रता के कारण दया नहीं करता और अपने समीप आने नहीं देता तो भी उसने अपनी सर्वज्ञता से ऐसा सुंदर उपाय किया कि न्याय पूरी हो गई और दया का द्वार खुल गया और पवित्रता ने भी हर भांति से बड़ाई पाई अर्थात परमेश्वर पुत्र मनुष्य ज़ुआ और उसने जीवण भर पाप से पवित्र रहके परमेश्वर की व्यवस्था को पूरा किया और मनुष्यों के पाप का दंड अपने ऊपर उठाके अपने प्राण का बलिदान किया फिर तिसरे दिन उठकर स्वर्ग पर गया और पवित्रात्मा के भेजने से अपने बलिदान पर एक पक्की छाप किई कि वुह परमेश्वर की पवित्रता के योग्य और उसके मन मान ज़ुआ (१) और जिस

(१) रूमियों की पत्री ३ पर्ब्ब २१ पद से ८ पर्ब्ब के अंत पद तक

रीति कि शैतान और उसके संगियों के सर्बदा के दंड से परमेश्वर की पवित्रता प्रगट ऊई यदि सारे जगत के लोग भी नरक में पड़ते और वहां सर्बदा दुख सहते तो भी परमेश्वर की पबित्रता इतनी प्रगट न होती जितनी पिता के प्रिय पुत्र के क्रूस पर खोंचे जाने और दुख उठाने से प्रगट ऊई और यदि पाप से उसको घिन न होती तो वुह क्यों मनुष्यों के पाप की संती अपने प्रिय पुत्र के देने से पापों को मिटाता और उसके मरने का सारार्थ यह था कि पवित्रात्मा के सहाय से मनुष्यों की आत्मा पवित्र होयें और स्वर्ग के जाने के योग्य ठहरें उनके मनकी अंधेरी कोठरी उंजियाली हो जाय और पवित्रात्मा की ज्योति से भर पूर हो * इन बातों पर ध्यान करने से निश्चय ऊआ कि परमेश्वर पवित्र है और उसका स्वभाव पवित्र अर्थात कर्त्तारत्व में पवित्र और व्यवस्था की रीति और उसके अचल रखने में पवित्र निज करके मनुष्यों की मुक्ति के उपाय में पवित्र ठहरा है

२ अब बिचार किया चाहिये कि इस मत की रीति से परमेश्वर न्यायी भी है कि नहीं (१) यह गुण बैबल में बारंबार प्रकीर्त्तित है जैसे तौरेत में लिखा है (२)

और गलतियों का ३ और ४ पर्ब्ब और यूहन्ना का १४ और १५ और १६ और १७ पर्ब्ब इत्यादि

(१) देखो ३ पृष्ठ में (२) बिवाद ३२ पर्ब्ब ४ पद

कि परमेश्वर का कार्य सिद्ध है और उसके सारे पथ न्याय के हैं वुह परमेश्वर सत्य स्वरूप है और बुराई से परे वुह यथार्थी और धर्मी है * और जब्बूर में लिखा है (१) कि न्याय और बिचार तेरे सिंहासन के पाये हैं कृपा और सच्चाई तेरे साम्ने है * और भविष्यद्वक्तों के पुस्तक में भी यों ही है (२) कि मैं परमेश्वर न्यायी और रक्षक हों और इंजील में भी यही बात है कि जब परमेश्वर ने अवतार लिया तो उसका एक मुख्य नाम न्यायी और धर्मी हुआ और लिखा है [३] कि वुह न्याय और बिचार की रीति से राज करेगा और पवित्रात्मा का काम यही है कि संसार में न्याय प्रगट करे जैसे लिखा है [४] जब वुह अर्थात पवित्रात्मा आवेगा तो जगत को पाप और धर्म और न्याय के बिषय दोषी करेगा * इन पदों से ठीक जाना जाता है कि परमेश्वर न्यायी कहलाता है कि उसके सब कार्य न्याय से पूर्ण हैं और उसका सिंहासन स्थान न्याय और बिचार है और यदि वुह सच मुच न्यायी है तो उसकी आज्ञा भी वैसाही होंगी उन आज्ञाओं में का सारार्थ जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये दिईं इन दो आज्ञाओं में समाप्त हैं [५] अर्थात कि तू

---

(१) जब्बूर ८९ पर्व्व १४पद (२) अशिया ४५ पर्व्व २१ पद (३)अशिया ६ पर्व्व ७ पद (४) यूहन्ना १६ पर्व्व ८ पद (५) मत्ती २२ पर्व्व ३७ पद

परमेश्वर को सब से अधिक प्यार कर और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रीति रख फिर जितनी बस्तें सत्य हैं और जितनी बस्तें योग्य हैं और जितनी बस्तें सिद्ध हैं और जितनी बस्तें पवित्र हैं और जितनी बस्तें सबके मन भावन हैं और उजागर हैं और जितनी सुंदरता सुघरता हैं उन में ध्यान करो [१] निदान जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम से करें तुम भी उनसे वैसा ही करो • [२] अब उन बातों पर ध्यान करने से निश्चय होता है कि प्रभु की आज्ञा पूरी और सच्ची और सीधी और फर्म्मी है और पवित्र और न्याय संजुक्त और उत्तम हैं इनबातों से जाना गया कि जिस प्रकार से परमेश्वर न्यायी है बैसाही उसकी आज्ञा भी न्याय की है इसलिये जो मनुष्य कि न्यायी और धर्मी नहीं सो परमेश्वर के समीप अप्रिय है जैसे लिखा है [३] कि जो न्यायी नहीं वुह धर्मी के समीप घिनौना है जो पाप करता है पर-मेश्वर के साम्ने आ नहीं सक्ता क्योंकि कोई हो जिसने उसकी आज्ञा न मानी वुह उसको बिना दंड दिये नहीं छोड़ता है * दूतों ने उसकी आज्ञा को उलंघन किया उनका दंड घोर नरक ऊआ आदम और हव्वा ने पाप

---

(१) फिलिप ४ पर्व्व ८ पद (२) मत्ती ७ पर्व्व १२ पद लूका ६ पर्व्व ३१ पद जब्बुर १९ पर्व्व ७ और ९ पद रूमियों ७ पर्व्व १२ पद (३) सुलेमान के दृष्टांत २९ पर्व्व २७ पद बिबाद २५ पर्व्व १६ पद

किया उनको भी दंड मिला परमेश्वर ने आदम से कहा कि जो तू मेरी आज्ञा न मानेगा तो मर जायगा और इसी प्रकार से आदम को हुआ और वैसाही उसके वंश को भी आज लों होता चला जाता है और यद्यपि संसार में किसी को उसके कर्मों के समान अभी पूरा प्रतिफल नहीं मिलता परंतु बैबल की रीति से परमेश्वर ने इसबात के लिये एक दिन ठहराया है जिस में हर एक को उसके मनसा बाचा कर्मना के समान प्रतिफल देगा जो वुह न्यायी परमेश्वर अपने न्याय के सिंहासन पर बैठकर न्याय करता तो कोई मनुष्य उसके साम्ने निषपापी नहीं ठहरता क्योंकि उसके न्याय का पंथ जो बाल से भी सूक्ष्म है इस रीति पर है कि जिसने उसकी एकआज्ञा के भी बिरुद्व किया तो उसने मोक्ष पदार्थ कहां पाया बरन आपिन हुआ फिर जिसने कि व्यवस्था की सब बातों पर अपना पांव दृढ़ता से नहीं जमाया उसके लिये यहां तो मृत्यु और वहां नरक का दंड ठहरा यही परमेश्वर की न्याय है जो बैबल में लिखा है उसके बिरुद्व परमेश्वर कभी नहीं करता

फिर यद्यपि परमेश्वर न्यायस्वरूप और धर्ममय है तो भी नहीं चाहता कि कोई पापी पाप के समुद्र में डूब मरे बरन उसको यही भावता है कि सब मुक्ति पदारथ पावें इसलिये परमेश्वर ने एक ऐसा मार्ग निकाला कि पाप का दंड पूरा हो और पापी उद्धार भी पावें जिसमें

परमेश्वर की न्याय ओर दया दोनों अचल रहें इस लिये कि ईश्वरत्व में दूसरा अर्थात प्रभु ईसा मसीह ईश्वर ओर मनुष्यों का बिचवई हुआ ओर उसने नर रूप धारण करके उनकी संती परमेश्वर की सब आज्ञाओं को जो उन्होंने नहीं माना था माना ओर पूरा किया फिर मनुष्यों के पापों का दंड आप भोगा ओर उनके अपराधों का बोझ उसके सिर पर ऐसा भारी था कि उसके तन से पसीना रुधिर की नाईं होकर भूमि पर गिरा तीन वार उसने प्रार्थना किई कि हे पिता यदि हो सके ओर न्याय में बट्टा न लगे तो इस कष्ट का कटोरा मुझ से दूर हो परंतु न हो सका जब मसीह क्रूस पर लटकाया गया तो परमेश्वर की न्याय संपूर्ण हुई क्योंकि जिस भांति मनुष्यों ने तन मन ओर आत्मा से पाप किया उसी प्रकार मसीह ने भी तन मन ओर आत्मा से दुख उठाया ओर ऐसा कष्ट सहा कि जिसका बर्णन नहीं होसक्ता * देखो उसकी न्याय का क्या ही महत पद है कि पिता ने अपने प्रिय पुत्र का छोड़ना अंगीकार किया पर अपनी न्याय को न छोड़ा इस रीति परमेश्वर न्यायी होके मसीह के बलिदान के कारण से पापियों का पाप क्षमा करता है जैसे लिखा है [१] कि वुह अपनी सत्यता ओर न्याय से हमारे पापों को क्षमा करता [२] ओर उसके पुत्र का

---

[१] यूहन्ना १ पर्ब्ब ९ पद [२] १ यूहन्ना १ पर्ब्ब ७ पद

रुधिर हमें सारे पापों से पवित्र करता है और उसी बलिदान के द्वारा परमेश्वर आप धर्मी ठहरा और उन को जो ईसा मसीह पर बिश्वास लाते हैं धर्मी जानता और उन्हें न्याय स्वभाव बनाता है [१] इन बातों से परमेश्वर हर प्रकार से पूरा न्यायी ठहरा और सारी बैबल इस पर साची देती है कि उसकी सब आज्ञा न्याय से परिपूर्ण हैं और उसने पाप के दंड और मुक्ति पदार्थ के देने से अपनी न्याय प्रगट किई बरन अपने प्रिय पुत्र अर्थात प्रभु ईसा मसीह को देदिया पर अपनी न्याय को न छोड़ा

यद्यपि संसार में परमेश्वर की न्याय अभी संपूर्ण प्रगट नहीं होती और सब लोगों को उनकी करणी के समान प्रतिफल नहीं मिलता क्योंकि अबलों मनुष्यों की न्याय नहीं ऊई परंतु उस न्यायी की पूरी न्याय बिचार के दिन प्रगट होगी और उसी दिन पूरी न्याय किई जायगी और क्या धर्मी क्या अधर्मी क्या आगमज्ञानी क्या गुरज्ञानी जो कुछ परमेश्वर ने उन्हें दिया वैसाही उनसे लेखालिया जायगा और हर एक को उनकी अंतर गति और चाल चलन के समान ठीक ठीक प्रतिफल देगा और एक को जब किसी बात के लिये प्रतिफल देगा तो दूसरे को उस बात के लिये कभी न छोड़ेगा जैसे मती २५ पर्व्व

[१] रूमियों ३ पर्व्व २६ पद

और प्रकाशित के २० पर्ब्ब में लिखा है सो ईसाई मत में परमेश्वर की न्याय की महत्व सूर्य की नाईं जग प्रकाशक है भला यह तो निश्चय हुआ कि बैबल की रीति से परमेश्वर न्यायी है

३ अब बिचारा चाहिये कि परमेश्वर दयाल भी है कि नहीं [१] ऐसा न हो कि उसकी न्याय उसकी दया को कहीं कलंक लगावे जब परमेश्वर मूसा पर प्रगट हुआ तो अपने बिषय में यों कहा [२] कि मैं प्रभु परमेश्वर दयाल और कृपाल और धीर और सचाई और भलाई में अधिक हों और ज़बूर में भी लिखा है [३] कि प्रभु दयाल और कृपाल और वुह क्रोध में धीमा और उसकी दया अपरंपार है * आगम ज्ञानियों के पुस्तक में भी यही है [४] कि हे प्रभु कौन तेरे समान है जो पापों को क्षमा करता है और अपने अधिकार के बचे हुए लोगों के पापों पर दृष्टि नहीं करता वुह प्रतिदिन क्रोध में नहीं रहता क्योंकि दया करने में वुह हर्षित होता है और इंजील में भी लिखा है [५] कि परमेश्वर बड़ा दयावान और दयाशील है और जैसा आप दयाल है वैसाही उसने आज्ञा दिई कि मनुष्य भी दयावंत होवे

---

[१] देखो ४ पृष्ट [२] यात्रा ३४ पर्ब्ब ५ और ७ पद [३] ज़बूर १०३ पर्ब्ब ८ पद [४] मीका ७ पर्ब्ब १८ पद [५] याकूब ५ पर्ब्ब ११ पद

जैसे लिखा है [१] कि जिस प्रकार तुम्हारा पिता दयाल है वैसाही तुम भी दयाल होओ * इन पदों से निश्चय होता है कि बैबल में तो परमेश्वर दयाल कहलाता है अब उसके कार्यों पर ध्यान किया चाहिये जिसतें अच्छी रीति से प्रगट हो कि सचमुच वुह दयाल है कि नहीं बैबल में लिखा है कि परमेश्वर ने आदम और हव्वाको अदन की बाटिका से निकाला और पृथिवी को श्राप दिया जल मय से नूह और उसके बंश को छोड़ और सब मनुष्यन को नष्ट करडाला किनानियों को भी इस-राइलियों के द्वारा नाश किया और यहूदियों को जो उसके ग्राह्य थे सर्बदा छिन्न भिन्न किया क्या यही दयाल के कर्म हैं यद्यपि यह सब बातें दया को नहीं देख पड़ती हैं पर जो तनिक ध्यान से देखा जाय तो ठीक जाना जाय कि यह कर्म दयाल के हैं अथवा आन्यर्थी के जिस समय आदम और हव्वा ने पाप किया तो परमेश्वर ने अपने दया के कारण उन्हें अदन की बाटिका से निकाला और पृथिवी को भी श्राप दिया क्योंकि वुह न्यायी और पवित्र है परंतु जहां यह लिखा है कि उनको अदन की बाटि का से बाहर निकाल दिया तहां यह भा लिखा है कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा पर बड़ी दया किई क्योंकि उनको पाप परिताप में छोड़ न दिया बरन

---

[१] लूका ६ पर्ब्ब ३६ पद

उनसे एक ऐसे मुक्तिदाता भेजने की प्रतिज्ञा किई कि जिसके द्वारा आदम और हव्वा और उनके सारे बंश के लिये उद्वार का मार्ग निकला * नूह के जल मय से एक सा बीस बरस पहिले परमेश्वर ने उसके द्वारा सब का जता दिया कि यदि तुम पश्चाताप न करोगे ता नाश हाओगे उन्हों ने परमेश्वर की दया और आज्ञा का तुच्छ जाना और कुछ ध्यान में न लाये इस लिये परमेश्वर की न्याय और पवित्रता ने उन्हें प्रतिफल दिया * किनानी भी नष्ट ज़ए पर नष्ट हाने के पहिले उनके मध्य परमेश्वर ने इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब का जा भविष्यद्वक्ता थे भेजा तिसपर भी उन्हों ने परमेश्वर की दया का सर्बथा तुच्छ जाना अंत का जब उनके पाप का नपुआ भर गया तब वे नष्ट हा गये * यह्रदी भी छिन्न भिन्न ज़ये परंतु पहिले परमेश्वर ने उन पर ऐसी दया किई थी कि वैसी किसी पर न किई क्योंकि उनका अपना बचन सांपा और उनके पास भविष्यद्वक्तों का भेज दिया बरन प्रभु ईसा मसीह आप उनके बीच प्रगट ज़आ फिर जब उन्हों ने उन सब बातों का तुच्छ जान कर भविष्यद्वक्तों और मुख्य प्रभु और उसके प्रेरीतों का मार डाला तब परमेश्वर की पवित्रता और न्याय की आग भड़की और उनका छिन्न भिन्न कर डाला सा इस्से निश्चय है कि परमेश्वर की दया सत्य दया है कि उसके न्याय में

तनिक बाधा नहीं पड़ता बरन उसकी महिमा उससे प्र-
ट होती है

फिर उस सर्व्व दया सागर ने निज करके मनुष्य की मुक्ति के उपाय से अपने दया के सूर्य को संसार पर ऐसा उदय किया कि जिसकी ज्योति से दूतों को भी चकचोंधी लगी और उसकी स्तुति पवित्र जन और दूतगण एकाग्र और एक मुख होकर रात दिन करते हैं अर्थात जब मनुष्य पापी हो गये और उनके बचने की आशा कुछ न रही और ऐसी दशा पड़ंची कि मनुष्य के लिये परमेश्वर की पवित्रता और न्याय के कारण नरक की आग छोड़ कोई ठिकाना और मृत्यु को छोड़ कुछ प्रतीकार न रहगया और कोई उद्धार करनेहारा दूतों और मनुष्यों में न मिला कि आप ईश्वर और मनुष्य होके एक हाथ से परमेश्वर का हाथ और दूसरे हाथ से मनुष्य का हाथ लेके धरा देय तब परमेश्वर ने अपने बड़े प्रेम का भंडार खोला और अपनी परम दया से मुक्ति मार्ग निकाला कि जिस करके परमेश्वर की दया ऐसी चमकने लगी कि उसके साम्ने सूर्य की ज्योति फीकी पड़ गई जैसे लिखा है [१] कि परमेश्वर ने जगत पर ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एक लौता पुत्र दान किया जिसतें जो कोई उसपर बिश्वास लावे नाश न होवे परंत

---

[१] यूहन्ना ३ पर्व्व १६ पद

अनंत जीवन पावे यही दया का बाचा परमेश्वर ने आदम से किया * और इबराहीम इसहाक याकूब मूसा और दाऊद और उन्हें छोड़ और जितने भविष्यद्वक्ता संसार में होते आये सब ने उस पर साक्षी दिई कि परमेश्वर दया सागर है क्योंकि उसने पापियों के लिये एक मुक्तिदाता ठहराया और प्रभु ईसा मसीह ने जगत को ऐसा प्यार किया कि उसका चाणकर्त्ता हुआ और मनुष्यों की दुर्दशा देखकर उन पर दया किया शारीरिक और आत्मिक दुख उनके लिये सहा जिसतें वे उद्धार पावें और धर्मी गिने जावें और जब उनके कारण मुक्ति प्राप्त कर चुका तो अपना पवित्रात्मा उनके लिये भेजा जो मनुष्यों के मनों में समा कर समझाता है कि उस बड़ी दया को ग्रहण करें और यद्यपि मनुष्य उसका कहना नहीं सुनते परंतु अपने मन को कठोर कर लेते हैं तथापि जब लग उनके बचने की आशा रहती है तब लग वुह उन्हें नहीं छोड़ता सो परमेश्वर पिता ने अपनी दया और प्रेम से अपना प्रिय पुत्र जगत के कारण दे दिया और परमेश्वर पुत्र ने अपनी दया और प्रेम के कारण मनुष्यों के लिये मुक्ति प्राप्त किई परमेश्वर पवित्रात्मा ने अपनी दया और प्रेम के कारण मनुष्य का मन प्रकाश करता और सत्य मार्ग पर ले जाता और अगुआई करता है और जब मनुष्य को स्वर्ग के जाने के योग्य बना चुकता है तो उसको अनंत सुख में पहुंचा

देता है [१] यही परमेश्वर की दया है और यही सत्य दया जो न्याय और पवित्रता में बाधा नहीं डालती परंतु मर्यादा देती है

सो दया का गुण तो सत्य मत के लक्षणों के समान बैबल में पाया गया अब बिचारें कि बैबल की रीति से परमेश्वर अन्तर्जामी और सर्बज्ञानी है कि नहीं [२] सभझ पड़ता है कि अन्तर्जामी होने का गुण बैबल की रीति से परमेश्वर के बिषय में है कि लिखा है [३] प्रभु उन भेदों को जो अंधियारे में हैं प्रकाश करेगा और मनों के भेदों को प्रगट करेगा और दाऊद कहता है [४] कि हे प्रभु तू ने मुझे परखा और पहिचाना तू मेरे बैठने उठने को जानता है तू मेरी दूर दूर की चिंतों को समझता है तू ने मेरे मार्ग और सयन स्थान को घेरा और मेरी सारी चाल चलन को देखता है क्योंकि हे प्रभु मेरी रसना पर कोई ऐसी बात नहीं है जिसे तू सर्बथा नहीं जानता तू आगे पीछे मुझे घेरता है और तू ने अपना हाथ मुझ पर रखा है यह पहिचान मुझे निपट व्याकुल करती है यह उतंग है मैं उस तक नहीं पहुंच

---

[१] १ करंतियों २ पर्ब्ब १२-१६ पद तक १२ पर्ब्ब ३ पद तीतस ३ पर्ब्ब ५ पद रूमियों की पत्री ५ पर्ब्ब ५ पद १५ पर्ब्ब १३ और १६ पद [२] देखो ४ पृष्ठ [३] १ करंतियों ४ पर्ब्ब ५ पद [४] जबूर १३९

सक्ता तेरी आत्मा से किधर जाऊं और मैं तेरे साम्ने से कहां भागूं यदि मैं स्वर्ग पर चढ़ जाऊं तो तू वहां है और यदि मैं समाधि में बिछौना बिछाऊं तो देख तू वहां भी है यदि मैं उड़के सूर्य की ज्योति बनूं अथवा समुद्र के पार जा बैठूं तो वहां भी तेरा हाथ मेरा पता पावेगा और तेरा दहिना हाथ मुझे पकड़ेगा यदि मैं कहों कि अंधेरे में छिप जाऊं तो रात मेरे चारों ओर उंजियाला हो जावेगा सच मुच अंधियारा तुझ से कभी छिपा नहीं सक्ता और रात दिन की नाईं उंजियाली है रात दिन दोनों तेरे समीप बराबर है इन पदों से ठीक जाना जाता है कि बैबल में अंतर्जामी होने के गुण का स्पष्ट बर्णन है क्योंकि जो सारी बातों का जान्ने हारा है अवश्य है कि अन्तर्जामी ही है इसके परे यह भी प्रगट है कि बैबल की रीति से परमेश्वर ने जल मय का संदेश एक सौ बीस बरस पहिले दिया कि जल मय आवेगा और मनुष्यों को नष्ट करेगा (१) इबराहीम इसहाक याक़ूब से बाचा बांधा कि उनके बंश को चार सौ बरस पीछे किनान का देश दिया जायगा (२) और इसराइलियों को मूसा के द्वारा कहा कि यदि वे परमे-

---

[१] उत्पत्ति ६ पर्व्व ३ और १३ पद [२] उत्पति १२ पर्व्व १-७ पद तक और २६ पर्व्व ३ और ४ पद और २८ पर्व्व ३-१५ पद तक

श्वर की आज्ञा पर चलेंगे धन्य होंगे नहीं तो समस्त संसार में तीन तेरह हो जायेंगे और मूसा और दाऊद और भविष्यद्वक्तों के द्वारा परमेश्वर ने भविष्यद्वाणी की रीति पर यहूदी और ईसाइयों का वृतान्त वर्णन किया उसमें से कुछ तो पूरा हुआ और कुछ होता है और और बातें न्याय के दिन लों पूरी होंगी

फिर जब परमेश्वर ने अवतार लिया तब भी यह गुण उसमें प्रत्यक्ष था जैसे उसके बिषय में लिखा है [१] कि वुह सब को जानता था और कुछ आवश्यक न रखता था कि कोई मनुष्यों के विषय में साक्षी देय क्योंकि जो कुछ मनुष्यों में था जानताथा और उसने संदेश दिया था कि यहूदा अस्करयूती मुझ को पकड़ावेगा और यहूदी लोग मेरा बैर रखके मुझ को रूमियों को सौंप देंगे और मैं क्रूस पर लटकाया जाऊंगा और मरजाऊंगा फिर तीसरे दिन जी उठोंगा फिर कहा कि वे मेरे सब शिष्यों को भी सतायेंगे और यरोशलीम नष्ट हो जायगा और मंदिर का एक पत्थर दूसरे पत्थर पर न रहेगा और इंजील यरोशलीम से आरंभ होके सारे जगत में सुनाई जायगी यदि इन बातों में कुछ संदेह हो तो तिथि ग्रंथ में देखलो [२] मसीह के चालीस बरस पीछे

---

(१) यूहन्ना २ पर्ब्ब २४ और २५ पद (२) देखो आगम की बात १७८ पृष्ठ

रूमियों के राजा बेस्पेश्यान ने अपने बेटे टैटस को भेजा जिसने आके यरोशलीम को घेर लिया और उसके सिपाहियों ने मंदीर को सर्वथा नष्ट किया यहां लों कि उसका कुछ नाम ठाम भी न रहा और मसीह के शिष्य भी हर भांति से सताये गये और इंजील यरोशलीम से प्रारंभ होके आज लों सारे जगत में सुनाई जाती है सो अन्तर्जामी के छोड़ाय कौन ऐसे २ समाचार को पहिले से कह सक्ता है पवित्रात्मा में भी यह गुण है क्योंकि समस्त भविष्यबाणी उसी के द्वारा प्रगट हुई जैसे लिखा है [१] कि तुम यह सब से पहिले जानते हो कि पुस्तक में हर एक आगम की बात आप से आप बर्णन नहीं किई गई क्योंकि आगम की बात मनुष्यों की इच्छा से कभी नहीं हुई परंतु परमेश्वर के पवित्र लोग आत्मा के बुलवाये बोलते थे इन बातों से ठीक जाना जाता है कि अन्तर्जामी होने का गुण बैबल की रीति से परमेश्वर में साक्षात है और यह सब समाचार भविष्यबाणी के लक्षण में स्पष्ट बर्णन होंगे फिर ईश्वर का सर्वज्ञानी होना इस्से भी निश्चित है कि बैबल की रीति से परमेश्वर सब लोगों की अवस्था और आवश्यकता को आदि से अंतलों जानता है और सब लोगों के लिये एकही मुक्ति का मार्ग ठहराया जिसे सब मान सक्ते और उस्से सब उद्धार पा

(१) २ पतरस १ पर्ब्ब २० और २१ पद

सक्ते हैं भला वुह मुक्ति का मार्ग कौन है जिसके द्वारा परमेश्वर पाप का भी दंड देता और पापियों को भी क्षमा करता है यदि सारे जगत के लोग क्या बुद्धिमान क्या ज्ञानमान क्या धनमान क्या कंगाल क्या छोटे क्या बड़े पूर्ब पश्चिम उत्तर दक्षिण से एकट्ठे होवें और स्वर्ग पर जाके वहां के सब दूतगण के संग जिनकी समझ बूझ अत्यंत है और उनका ज्ञान भी अकथ्य है मिल बैठें और जो ज्योति मंडल से उंजियाला पाके समस्त संसार का भेद जान सक्ते वुह भी एकत्र होवें और परामर्ष करें और चिंता के अथाह समुद्र में डूबें और अपने बूझ बिचार के रोकड़ को उस सूक्ष्म के निर्णय करने में उठावें और अपने चिंतों के उड़न खटोलनों पर बैठके पाताल से स्वर्ग और स्वर्ग से पाताल तक पहुंचे बरन जगत की सारी लंबाई चौड़ाई और गहिराई में फिरें और स्वयंब्रह्म पमेश्वर की न्याय और दया और समस्त पराक्रम को बिचारें और भलाई बुराई से और खोट निषखोट से और बैर प्रीति से तोलें और उसकी पवित्रता न्याय और सचाई को मनुष्यों की अपवित्रता और अघ और असत्य से मिलान करके चाहें कि एक ऐसा पथ निकालें कि जिस्से परमेश्वर पापों का यथा योग्य दंड भी देय और पापियों का उद्धार भी करे कभी न पावें और उनके यह श्रम क्लेश और बूझ बिचार उस भेद के जान्ने में केवल व्यर्थ होगी ऐसा पथ निकालनेहारा वही अद्वैत

परमेश्वर है जो पिता पुत्र पवित्रात्मा है जिस्से परमेश्वर के सब गुण बड़ाई पाते हैं और उसका सर्वज्ञानी होना प्रगट होता है और ऐसा मुक्ति मार्ग कि जो न केवल एकही जाति और एकही देश और एकही समय के लोगों के लिये है बरन समस्त देश के लोगों के लिये जो आदम के समय से आजलों उत्पन्न हुए और अबलों बने हैं और अंत लों उत्पन्न होंगे परमेश्वर को छोड़ कोई नहीं निकाल सक्ता सच तो यों है कि जो किसी की बुद्धि में न आई वुह उस सर्व ज्ञानी ने कर देखाई यही परमेश्वर का सर्वज्ञानीं होना और सत मत का पक्का लक्षण है

अब हम सर्वज्ञानी होने के गुण के सोते से तृषा मिटा के प्रश्न करते हैं कि परमेश्वर सत्य और सत्य बादी है (१) अथवा नहीं * बैबल में परमेश्वर बारंबार सत्य कहलाता है जैसे लिखा है (२) कि तेरी दया आकाश से ऊंची है और तेरी सचाई बादलों तक है (३) प्रभु के सारे पथ उन के लिये जो उसकी बाचा बचन को ध्यान में रखते हैं दया और सचाई है (४) तेरी सचाई अपरंपार सचाई है तेरी व्यवस्था सत्य है (५) तू ने अद्भुत कर्म किये तेरी परामर्ष सनातन से सत्य और ठीक हैं (६) तू हे परमेश्वर पवित्र और सत्य है तेरे काम अकथ्य और अगम्य हैं हे प्रभु परमेश्वर (७) सर्वसा-

---

(१) देखो ४ पृष्ठ (२) जबूर ५७ पर्व्व १० पद (३) जबूर २५ पर्व्व १० पद (४) जबूर ११९ पर्व्व १४२ पद (५) अशीया २५ पर्व्व १ पद (६) प्रकाशित ६ पर्व्व १० पद (७) प्रकाशित १५ पर्व्व ३ पद

मर्थी तेरे पंथ सच और ठीक हैं (१) हे प्रभु परमेश्वर सर्वसामर्थी तेरी न्यायें सच्ची और यथार्थ हैं * इन पदों से प्रगट है कि सचाईका गुण बैबल के समान परमेश्वर के बिषय में है और उस सारी पुस्तकों में एक बात ऐसी नहीं है जिस्से परमेश्वर की सचाई में हानि होवे झुठ बोलना बर्जा है और बैबल के समान ऐसा पाप कि झुठ बोलने हारा कभी स्वर्ग में प्रवेश नहीं करसक्ता जैसे लिखा है (२) टोनहे छिनलेह हत्यारे मूर्ति पुजक और जो कोई झुठ का कहने और चाहने हारा है स्वर्ग हीन हैं * और यद्यपि बैबल के लिखने में सोलह सौ बरस लगे अर्थात मूसा के समय से लेके यूहन्ना के समय तक तो भी एक बात दूसरे के बिरुद्ध नहीं (३) बैबल के समान आदि से अंत लों सब लोगों के त्राण का मार्ग एकही है पहिले आदम के समय से मूसा तक लोगों ने उस आने हारे पर बिश्वास लाके बलिदान किया और वे उस आनेहारे बलिदान के कारण ग्राह्या ऊए फिर मूसा के समय से भी वुही पहिला पंथ स्थिर रहा और निषेध नहीं ऊआ बरन पहिले आचरण के समान परमेश्वर ने मूसा के द्वारा और अधिक ठहराया अर्थात खाने पीने बस्त्र पहिन्ने और यरोशलीम में प्रति बर्ष तीन बार एकट्ठे होने इत्यादि के बिषय और मूसा और दूसरे भविष्यद्वक्तों के द्वारा खोल

---

(१) प्रकाशित १६ पर्ब्ब ७ पद (२) प्रकाशित २२ पर्ब्ब १५ पद (३) इबरानीयों की पत्री १ पर्ब्ब

खोल के कहा कि वे सब बिधिब्यवहार जस के तस रहेंगे जबलों मसीह न आवेगा और इन बिधिब्यवहारों का कारण तौरेत और जबूर और भविष्यद्वक्तों के पुस्तक और इंजील में स्पष्ट बर्णन है कि पहिले परमेश्वर ने चाहा कि यहूदियों को अपने बचन का जोगानेहार करे और उनमें आप अवतार लेवे इसलिये उसने ऐसा बिधिब्यवहार ठहराया कि जिन करके यहूदी और लोगों से न्यारे रहे जब यह अभिप्राय पूरी हो चुकी तो उन बिधिब्यवहारों का कुछ प्रयोजन न रहा क्योंकि सब बातें पूरी हो चुकी (१) दूसरे जो आदम के समय से मसीह तक लोगों ने बलिदान चढ़ाया और जो बलिदानों के बिधब्यवहार बिशेस करके यहूदियों में स्थापित थे वे सब प्रभु ईसा मसीह के लक्षण थे परमेश्वर ने उस आनेहारे बलिदान पर दृष्टि करके पापियों और उनके बलिदानों को ग्राह्य किया परंतु सच मुच वे केवल चिन्ह और प्रतिबिम्ब की रीति पर थे मुख्य बलिदान प्रभु ईसा मसीह था जैसे कि इबरानियों की पत्री में स्पष्ट बर्णन है इस लिये जब प्रभु ईसा मसीह आप जगत में आके बलिदान हुआ तो ये सब बातें पूरी हुईं और कुछ प्रभु ईसा मसीह इस लिये नहीं आया कि अगिले पंथ को निषेध करे बरन उस

---

(१) बिवाद १८ पर्ब्ब १५-१७ पद तक प्रेरितों की क्रिया ३ पर्ब्ब २२-२६ पद तक इरमिया ३१ पर्ब्ब ३१-३४ पद तक इबरानियों की समस्त पत्री

के पूरा करने को आया जैसे लिखा है (१) यह बिचार मत करो कि मैं इस लिये आया हों कि तौरेत और भविष्यद्वक्तों के पुस्तकों को उठा देऊं मैं उठा देने को नहीं आया बरन पूरा करने को आया हों क्योंकि मैं तुम से सत्य कहता हों कि जबलग स्वर्ग और पृथिवी बिलाय न जाय एक बिंदु अथवा एक बिसर्ग तौरेत से जाता न रहेगा जब लों सब पूरा न होवे फिर जब उन बलिदानों की अभिप्राय पूरी हो चुकी तो फिर उन पर चलने से क्या लाभ बरन हानि है * इन बातों के समान जब प्रभु ईसा मसीह एक पहाड़ पर चढ़गया और उसका स्वरूप सूर्य के समान चमकने लगा तो उस समय मूसा जिसके द्वारा तौरेत है और इलियास जो मूसा से लेके मसीह तक जितने भविष्यद्वक्ता आये सब में श्रेष्ट है प्रभु की सेवा में उपस्थित थे कि एक शब्द स्वर्ग से आया कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस्से मैं प्रसन्न हों तुम उसकी सुनो [मत्ती की इंजील १७ पर्ब्ब १ पद से ५ तक] फिर सारे बैबल में जहां जहां मनुष्य के पाप क्षमा किये जाने और परमेश्वर के समीप उसके ग्राह्य होने का संदेश है तहां तहां सर्बत्र मंगल समाचार अर्थात इंजील को साक्षात जानो चाहे वुह स्थान तौरेत में हो चाहे जबूर में अथवा भविष्यद्वक्तों के पुस्तक में अर्थात जब परमेश्वर ने आदम और

---

(१) मत्ती ५ पर्ब्ब १७ पद

हव्वा से कहा कि स्त्री का बंश सांप का सिर कुचलेगा और वुह उसकी एड़ी को काटेगा और इब्राहीम से कहा कि तेरे बंश से सारे संसार के घराने आशीश पावेंगे सो वुह इंजील ही है और ऐसेही ज़बूर और भविष्यद्वक्तों के पुस्तकों में भी सहस्रों बचन हैं और इंजील में यों लिखा है कि व्यवस्था हमें मसीह लों पहुंचाने को हमारी गुरु है जिसतें हम मसीह के बिश्वास से धर्मी ठहरें [गलतियों का ३ पर्ब्ब २४ पद] तात्पर्य यह है कि बैबल की रीति से जब मनुष्य पापी न था तब मुक्ति उस की करणी से थी पर जब पापी हो गया तो ईसा मसीह पर बिश्वास लाने से उसकी मुक्ति ठहरी और इन दोनों पथ का बर्णन तौरेत और ज़बूर और इंजील में है कि एक नरक को दूसरा स्वर्ग को ले जाता है धन्य वुह जिस के अंतःकरण की आखें खुली हैं और अपनी करणी का भरोसा छोड़ के सारे बैबल में तौरेत से लेकर प्रकाशित पुस्तक तक मसीह पर बिश्वास लाने का पथ समझ कर उसको अंगीकार करता और मसीह के समान पवित्र होके उसके अनुग्रह से स्वर्ग में जाने की आशा रखता है* इस बात के बिषय में इस पुस्तक के जिस पृष्ट में यह चिन्ह ☞ मिलेगा और बातें पाई जायेंगीं *सो उद्धार का मार्ग अगिले लोगों और अब के लोगों का एक ही है और अंत लों एकही रहेग अर्थात मनुष्य अपनी करणी से नहीं बरन ईसा मसीह की करणी और उसके बलिदान होने से पाप

मोचन होता और धर्मी गिना जाता और पवित्र होके स्वर्ग लोक को प्राप्त करता है इस लिये ईसाइयों की पुस्तक एक बड़े मंदिर से उपमा दिया गया है कि तौरेत उस की नेंव ज़बूर और भविष्यद्वक्तों की पुस्तक उसके नीचे का खन और इंजील उसके ऊपर का खन और उसी से सारे मंदिर की शोभा है यदि उस मंदिर से एक ईंट अर्थात बैबल से एक पत्ना अथवा एक पद निकालें तो सारे मंदिर में हानि हो जावे

और जिस भांति ये पुस्तकें एक दूसरे से बिरुद्ध नहीं वैसाही लौकिक बिद्या से भी बिरुद्ध नहीं और ऐसी २ बातें कि सूर्य पांक की नदी में डूबता है अथवा मधु दुध इत्यादि के समुद्र हैं अथवा ऐसे २ पर्बत जो लाखों कोश ऊंचे हैं और सच पूछो तो इन में एक भी कहीं नहीं है पर सूर्य की अवस्था में इतना तो लिखा है कि वुह चल्‌ता है यद्यपि पृथिवी चलती है परंतु यह इस कारण है कि मनुष्यों की बोल चाल यों ही है और कि योंही प्रत्यक्ष देख पड़ता है और बैबल में परमेश्वर मनुष्य से मनुष्य की रीति बात करता है कि मनुष्य की समझ में अच्छी रीति से आवे इसके परे बैबल कुछ लौकिक बिद्या की शिक्षा के लिये नहीं बरन मत धर्म के निमित्त है कि जिसमें संसार का भला होवे और सब का परलोक बने*

अब बर्णन हो चुका कि परमेश्वर सच्चा है और उसकी सचाई इन बातों से निश्चय हुई कि यद्यपि यह पुस्तक

सोलह सो बरस के मध्य लिखी गई पर तोभी उसकी एक बात दूसरी से बिरुद्ध नहीं श्रीर श्रादि से श्रंत लों मुक्ति मार्ग भी एकही है (१) श्रीर लैाकिक बिद्या से भी इसमें कुछ बिरुद्ध नहीं सो यह गुण भी ऊपर के लक्षणों से श्रच्छी रीति से मिलता है इस लिये सत मत का एक श्रीर लक्षण परमेश्वर की महिमा के बिषय हाथ लगा है

६ अब सत्यता के गुण के बर्णन से श्रांत पाके प्रश्न करते हैं कि बैबल के समान परमेश्वर सर्व सामर्थी है कि नहीं (२) यह गुण तो बैबल में जैसा कि चाहिये बर्णन है परमेश्वर ने इबराहीम से कहा कि मैं सब सामर्थी हों (३) ज़बूर श्रीर भविष्यद्वक्तों के पुस्तकों में भी यही बात है श्रीर मसीह अपने बिषय में कहता है कि मैं अलफा श्रीर उमीगा श्रादि श्रीर श्रंत हों जो है जो था जो श्रानेहारा सर्व सामर्थी (४) इसके परे परमेश्वर ने श्राप अपने को सर्व सामर्थी ठहराया कि जगत को उत्पन्न किया श्रीर सब का प्रतिपालन करता है इस्से जाना जाता है कि परमेश्वर बैबल के समान सर्व सामर्थी है पर कितने संदेह करते हैं कि यदि परमेश्वर सर्व शक्तिमान श्रीर पवित्र है तो किस लिये शयतान को श्रीर पाप को नष्ट

(१) इबरानियों की पत्री ११ पर्व्व श्रीर १२ पर्व्व के १ श्रीर २१ पद इत्यादि (२) देखो ४ पृष्ठ (३) उत्पत्ति १७ पर्व्व १ पद (४) प्रकाशित १ पर्व्व ८ पद

नहीं करता बैबल में इस बात के बिषय में यों लिखा है कि वुह सर्ब सामर्थी होके पाप और पापी और पापत्मा अर्थात शयतान को एक क्षण मात्र में नाश कर सक्ता है परंतु अपनी सर्बज्ञता से नहीं चाहता बरन उसकी यह इच्छा है कि हर एक उसकी सृष्टि में से चाहे भला करे चाहे बुरा परंतु न्याय के दिन उन्हें अपने सारे काम काज और चाल चलन और चिंता भावना का लेखा देना पड़ेगा और उसी दिन परमेश्वर पापियों को दंड और धर्मियों को प्रतिफल देगा पाप के होने का कारण कोई मनुष्य अच्छी रीति से बर्णन नहीं करसक्ता और यह बात इसाई मत के ठहराने से कुछ प्रयोजन भी नहीं रखती यह मत सत्य हो चाहे असत्य पर पाप का होना तो है और उसका होना इसाई मत से नहीं क्योंकि यद्यपि इसाई का नाम ठाम भी संसार में न होता तो भी पाप है और इस मत का सारार्थ यह है कि पाप कैसे मिटे और मनुष्य उस्से कैसे बचे न कि बर्णन करे कि उसका होना किस लिये हुआ

फिर जब परमेश्वर ने अवतार लिया तो क्या उस समय में भी सर्ब सामर्थी था जाना जाता है कि तब यह गुण प्रगट नहीं हुआ क्योंकि उसने खाया पिया सोया थका प्रार्थना किई बैरियों ने उसे पकड़ा और क्रूस पर खींचा फिर वुह मरगया और गाड़ागया * इन बातों से प्रगट है कि यह सर्ब सामर्थी के लक्षण नहीं बरन मनुष्य

के हैं यही बात बैबल और सब इसाई कहते हैं क्योंकि लिखा है कि वुह न केवल परमेश्वर परंतु मनुष्य भी था और बैबल में कहीं नहीं लिखा है कि उसकी मनुष्यत्व सर्ब सामर्थी थी परंतु उसकी ईश्वरत्व में यह गुण था वुह मनुष्य हो कर बालक बना तरुण हुआ खाया पिया सोया थका प्रर्थना किई क्रूस पर खींचा गया फिर मर गया (१) निदान पाप को छोड़ मनुष्य के सब लक्षण उसमें प्राप्त थे और यदि यह लक्षण उसमें न होते तो मनुष्य न होता फिर क्योंकर मनुष्य की संती दुख उठा सक्ता और उसके उद्धार का कारण होता ईसा मसीह मनुष्य हो कर दुख क्लेश में पड़ा और मरा परंतु परमेश्वर होके इन सब से परे रहा परमेश्वर हर प्रकार के दुख से न्यारे है और बैबल की रिती से ईसा मसीह परमेश्वर है इन दोनों बातों से यह अर्थ निकलता है कि जो कुछ दुख क्लेश ईसा मसीह को था सो उसकी मनुष्यत्व को था वुह मनुष्य था और परमेश्वर भी था परंतु मनुष्य हो कर सर्ब सामर्थी न था और परमेश्वर होकर सर्ब सामर्थी था और उसने सर्ब सामर्थी होकर आश्चर्य कर्म देखाये भविष्यद्वक्तों ने परमेश्वर के नाम से अचरज देखाये परंतु ईसा ने आप परमेश्वर हो कर उन्हें अपने नाम से प्रगट किये अंधो को आंख लंगडों को पांव टुंडों को

---

(१) १ तिमताऊस २ पर्व्व ५ पद और इबरानियों का २ पर्व्व ९ से १८ पद तक

हाथ बहिरों को कान दिया कोढ़ियों को पावन किये देवों को भगाया मृतकों को जिलाया थोड़ी सी रोटियों से दस पांच सहस्र मनुष्यों को खिलाया समुद्र पर चला बयार और लहरों को रोका और उन सब कामों को केवल आपही नहीं किया बरन अपने शिष्यों को भी सामर्थ दिई कि ऐसे २ अद्भुत कर्म करें (१) सो उन्हों ने भी मसीह के नाम से वैसेही काम किये [देखो मत्ती मरकस लूका यूहन्ना में और प्रेरितों की क्रिया] इन बातों पर ध्यान करने से निश्चित है कि प्रभु ईसा मसीह सर्व सामर्थी है क्योंकि जो ऐसी आश्चर्य अपने नाम से कर सक्ता है जैसे उसने किये अरु औरों को भी ऐसे कर्म करने की सामर्थ दिई तो निश्चय वुह प्रभु परमेश्वर सर्व सामर्थी है उसी से स्वर्ग पृथिवी उत्पन्न हुआ जैसे लिखा है कि प्रभु ईसा मसीह के द्वारा सब कुछ उत्पन्न हुआ और उसी से सारी बस्तें देखी और अन देखी जो स्वर्ग और पृथिवी में हैं क्या सिंहासन क्या प्रभुता क्या प्रधानता क्या अध्यक्षता उत्पन्न हुई सारी बस्तें उस्से और उसके लिये उत्पन्न हुईं * (२) सो तात्पर्य इसका यह है कि सर्व सामर्थी होने का गुण भी ऊपर के लक्षणों के समान ईसाई मत में परमेश्वर के विषय निश्चित है

---

(१) मत्ती १० पर्व्व लूका ८ पर्व्व १-६ पद तक (२) कलिस्सी १ पर्व्व १६ पद

७ अब हम प्रश्न करते हैं कि बैबल की रीति से परमेश्वर एक है कि नहीं (१) बैबल में बारंबार लिखा है कि परमेश्वर एक और उसे छोड़ दूसरा कोई परमेश्वर नहीं जैसे तौरेत में लिखा है (२) सुन हे इसराईल हमारा प्रभु परमेश्वर एक परमेश्वर है फिर भविष्यद्वक्तों के पुस्तक में प्रभु यों कहता है (३) कि मैं आदि और अंत और मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं (४) मैंही परमेश्वर हों दूसरा कोई नहीं मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं और इंजील में लिखा है (५) कि वुह प्रभु जो हमारा परमेश्वर है एकही परमेश्वर है सो परमेश्वर एक है और उसे छोड़ और कोई नहीं और यह भी लिखा है कि मूर्त्ति कुछ वस्तु नहीं और कोई परमेश्वर नहीं केवल एक यद्यपि स्वर्ग और पृथिवी में बहुत से देवते कहलाये जाते हैं जैसे भ्रान्ती बहुतेरे देव और बहुतेरे प्रभु को मानते हैं परंतु हमारा परमेश्वर एक है (६) इन पदों से प्रगट है कि बैबल की रीति से परमेश्वर एक और उसे छोड़ कोई दूसरा परमेश्वर नहीं और जो कहता है कि इस एक परमेश्वर के परे दूसरा कोई परमेश्वर है वुह परमेश्वर को झूठा बनाता है क्योंकि उसने कहा

---

(१) देखो ४ पृष्ठ (२) बिवाद ६ पर्व्व ४ पद (३) आशिया ४४ पर्व्व ६ पद (४) अशिया ४५ पर्व्व ५ पद (५) मरकस १२ पर्व्व २९ और ३२ पद (६) १ करंती ८ पर्व्व ४-६ पद तक और गलती ३ पर्व्व २० पद

कि मैं एक हों और मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं सृष्टि में सहस्रों लाखों बस्तु हैं पर उनमें से हरएक को अपने २ पद के समान मान्ना चाहिये जैसे सूर्य सूर्य को मान्ना और जल जल को और मनुष्य मनुष्य को मान्ना इत्यादि परंतु सारी सृष्टि में किसी को परमेश्वर करके न मान्ना वुह तो एक है और सृष्टि से परे और सब पर प्रधान है और उस एक परमेश्वर में तीन हैं अर्थात पिता पुत्र पवित्रात्मा (१) और वे कुछ तीन परमेश्वर नहीं बरन एक अद्वैत परमेश्वर हैं क्योंकि लिखा है कि जो स्वर्ग पर साक्षी देते हैं तीन हैं पिता पुत्र पवित्रात्मा और यह तीनों एकही हैं और जब कि यह बैबल से बड़त प्रमाणिक है कि पिता पुत्र पवित्रात्मा तीन नहीं परंतु एक परमेश्वर हैं इस लिये हमें चाहिये कि उस पदारथ को हम यों ही समझें और मान लेवें और मिथ्याबाद बिवाद न करें क्योंकि लिखा है कि (२) पिता पुत्र एक है और मसीह कहता है कि जिसने पुत्र को देखा पिता को भी देखा क्योंकि मैं और पिता एक हों और यद्यपि एक हों तो भी तीन जैसे लिखा है कि (३) पिता ने पुत्र को जगत में भेजा और पुत्र ने अपना प्राण मनुष्यों के लिये बलिदान किया (४) फिर पवित्रात्मा पिता और

(१) मत्ती २८ पर्ब्ब १९ पद और १ यूहन्ना ५ पर्ब्ब ७ पद (२) यूहन्ना १० पर्ब्ब ३० पद और यूहन्ना १४ पर्ब्ब ९ पद (३) १ यूहन्ना ४ पर्ब्ब ९ पद (४) मत्ती २० पर्ब्ब २८ पद और १ तिमताऊस २ पर्ब्ब ६ पद

पुत्र से निकलता है [१] और मनुष्य का मन प्रकाश करता है और उन में बिस्वास उपजाता और उन्हें स्वर्ग के जाने के योग्य बनाता है और बैबल की रीति से मनुष्यों के उद्धार के लिये तीन एक होना अवश्य है क्योंकि उस बिना कोई मनुष्य उद्धार नहीं पा सक्ता परंतु जगत के लोग जिन्हें अभी निश्चय के फल का स्वाद नहीं मिला है और इस भेद के थाह को नहीं पहुंचे कहते हैं कि यह बात हम कभी नहीं समझते इस लिये ग्रहण भी नहीं कर सक्ते हैं यद्यपि यह ऐसी सूक्ष्म बात है कि जब ऊपर की बातों को जो हर भांति के प्रमाणों से प्रमाणिक हो चुकी अपने मन में निश्चय करे तो आप से आप इस बात का भी प्राश्चत टल जाय और उस भेद का मुखड़ा उसकी बुद्धि मुकुर में देखाई पड़े तो भी वुह गुप्त भेद रहेगा और इस में कुछ आश्चर्य नहीं क्योंकि ईश्वरत्व की बरन सृष्टि की भी बहुतेरी ऐसी बातें हैं जो हमारी समझ में नहीं आतीं पर तो भी उन्हें मान लेते हैं जैसे कि परमेश्वर सर्बब्यापी और सर्बदर्शी है भला यह क्योंकर हो सक्ता है कि जिस घड़ी परमेश्वर यहां सम्पूर्ण उपस्थित हो तो उसी घड़ी दूसरी ठौर में भी सम्पूर्ण उपस्थित हो यद्यपि हम जानते हैं कि सच मुच ऐसाही है परंतु किस भांति से है सो हम नहीं जानते क्योंकि वुह समझ से दूर है

---

(१) यूहन्ना १५ पर्व्व २६ पद और २० पर्व्व २१ और २२ पद और गलती ४ पर्व्व ६ पद

और अल्पबुद्धि ज्ञान अपरंपार गुण का समुद्र पार क्यों कर पावे फिर किसने आज लों समझ बूझ के बर्णन किया कि लड़का माके पेट में किस रीति से बन जाता है और कौन बतला सक्ता है कि आकाश का सीमा कहां है यह तो सृष्टि की बातें हैं जो हम देखते और बिषय भावना से बिचार कर सक्ते हैं पर तो भी उनका सारा भेद नहीं पा सक्ते जब सृष्टि में ऐसी कठनि बातें हैं तो सृष्टि कर्त्ता में कुछ कठिन बात होने से आश्चर्य है * सो यदि एक बात उस अद्वैत परमेश्वर के बिषय में बुद्धि के प्रमाण बिना निश्चय करलेयें और उसके कहे से मान लेवें तो क्या अचरज है * इसके परे संसार में भी कितनी बस्तुन से तीन एक होना प्रगट है और यद्यपि हम समझते हैं कि वुह ऐसा ही है तो भी उसके होने की रीति समझ नहीं सक्ते जैसे मनुष्य शरीर और प्राण और आत्मा से बना है और ये तीनों अलग अलग हैं परंतु सच मुच एकही मनुष्य हैं और उनके एक होने की रीति कोई नहीं कह सक्ता इसी प्रकार आग की भी बात है कि एक आग और एक ज्योति और एक उष्णता है और उष्णता कुछ ज्योति नहीं और ज्योति कुछ उष्णता नहीं और आग कुछ उष्णता से पहिले नहीं और न उष्णता कुछ आग से पहिले और आग इन दोनों से अलग है तो भी वे तीनों तीन आग नहीं बरन एकही आग हैं इसी रीति संसार की सहस्रों बातें हैं जो बुद्धि में नहीं आतीं फिर जिस

दशा में कि इस छोटे से जगत में ऐसी २ बातें हैं तो क्या उस महत ईश्वरत्व में ऐसी कोई बात नहीं हो सक्ती जो मनुष्य की बुद्धि में न आसके और इस बात को बुद्धि मान से मूर्ख तक मान लेते हैं कि परमेश्वर असीम अनादि और अनंत है और उसके संपूर्ण ज्ञान दूतों के ध्यान में भी नहीं आते फिर मनुष्य क्योंकर जान सके सो यदि ईश्वरत्व में तीन एक का भेद वैसाही समझें तो बुद्धि के समीप कुछ अचंभित नहीं इस्से अधिक बैबल में लिखा है कि जो उस अद्वैत परमेश्वर के परे दूसरे को परमेश्वर समझें तो वुह पापी है और स्वर्ग में प्रवेश नहीं करसक्ता जैसे कि लिखा है [१] कि भयमान और अबिश्वासी और घिनौने और हत्यारे और छिनले और टोनहे और मूर्त्ति पूजक और सारे झूठे उसी झील में जो आग और गंधक से जलती है एक संग पडेंगे यह दूसरी मृत्यु है इस प्रसंग पर एक बात की सुर्त आई है कि मसीह के चार सौ बरस के पीछे अगस्तीन नामे इसाई मत का एक आचार्य्य था एक दिन इसी बात के चिंता के भंवर में डूबा था कि पिता पुत्र पवित्रात्मा किस रीति से एक परमेश्वर हो सक्ते हैं यद्यपि वुह इन तीनों की आवश्यकता और उत्तमता को अच्छी रीति से जानता था कि उनके बिना मनुष्य के उद्धार का ठिकाना नहीं जाना जाता है परंतु मन

---

(१) प्रकाशित २१ पर्ब्ब ८ पद

में यही सोचता था कि किस रीति से तीनों एक हो सक्ते हैं यह सूक्ष्म बात उसके मन में नहीं समाती थी निदान उसी सोच के तरखे में पड़के बहते २ कहीं समुद्र के तीर पर जा निकला तो वहां क्या देखता है कि एक सुंदर सुघड़ छोटे से लड़के ने बड़े जत्न और परीश्रम से रेती में एक गड़हा खोदा है और एक अंडे के त्वचे में समुद्र का जल दौड़ २ कर भर भर ले जाता है और उस गड़हे में डाल दिया करता है अगस्तीन ने यह चरित्र देख के उसे पूछा कि क्यों बच्चे यह तू क्या करता है उसने उत्तर दिया कि मेरा बिचार है कि समुद्र के सारे जल को इस गड़हे में भर दों अगस्तीन यह बात सुन कर हंसा और कहा कि हे बाले भोले बच्चे तू कैसा अज्ञान है और यह तेरी कैसी समझ है भला तेरे परीश्रम से कहीं समुद्र का सारा जल उस गड़हे में जा सक्ता है उस लड़के ने उसकी ओर टक लगाके कहा कि भला हम तुम में से अज्ञान कौन है मैं तो चाहता हों कि इस समुद्र को जिसका कुछ सीमा है अंडे की त्वचे से गड़हे में भरूं और तू तो चाहता है कि उस असीम अनादि और अनंत परमेश्वर को चिंतन से अपनी नन्हीं सी खोपड़ी में लावे यह कहकर अंतर्ध्यान हो गया * सो सारे बैबल में यह बर्णन है कि पिता और पुत्र और पवित्रात्मा तीन नहीं बरन एक अद्वैत परमेश्वर हैं और निश्चय ज्ञआ कि उसके द्वारा से परमेश्वर के सारे गुण

की महिमा और बड़ाई होती है और यह मनुष्य के उद्धार के लिये आवश्यक है

अब एक और गुण रह गया है उसका भी बिचार किया चाहिये अर्थात परमेश्वर समभाव है (१) यह गुण परमेश्वर के विषय में बैबल की रीति से प्रगट है जैसे लिखा है कि (२) तूने आरंभ से पृथिवी की नेव डाली ये सारे स्वर्ग तेरे हाथ की छत हैं वे नाश होंगे परंतु तू सर्बदा रहेगा हां ये सब बस्त्र की नाईं पुराने होंगे तू उन्हें बागे के समान बदल डालेगा और वे बदल जायेंगे परंतु तू वैसाही रहेगा तेरे बरसों का अंत नहीं फिर भविष्यद्वक्तों के पुस्तक में लिखा है कि मैं प्रभु हों और बदलता नहीं इंजील में भी (३) यही बात लिखी है परंतु यद्यपि प्रत्यक्ष लिखा है कि परमेश्वर समभाव है तो भी सोचा चाहिये कि परमेश्वर ने अपने को बचन और कर्त्तव्य से समभाव ठहराया है कि नहीं * समभाव उसे कहते हैं कि जिसके गुण स्वभाव और इच्छा बिचार बदलते नहीं बैबल में लिखा है कि परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथिवी को उत्पन्न किया संसार का पालन करता है और लोगों को त्राण देता है परंतु वह तो पहिले सृष्टि कर्त्ता था अब क्योंकर हुआ इस बात से तो असम भाव ठहरता है और जब कोई सृष्टि न थी तो किसका

---

(१) देखो ५ पृष्ठ (२) जबूर १०२ पर्ब्ब २५ और २७ पद (३) इबरानियों १ पर्ब्ब १० और १२ पद

प्रतिपालन करता और जब मनुष्य पापी न थे तो त्राण कर्त्ता क्योंकर होता था * पर समझने की बात है कि इन बातों से उसके गुण और स्वभाव में बीच नहीं होता है और ऐसी बात किसने कही और कौन कहसक्ता है * इसी प्रकार ऊपर की बातों पर दृष्टि करने से जाना जाता है कि परमेश्वर के अवतार लेने से उसके समभाव होने में अवश्य करके बड़ा लगा भला कहीं लिखा है कि उसकी ईश्वरत्व मनुष्यत्व हो गई अथवा उसकी मनुष्यत्व ईश्वरत्व बनी वुह परमेश्वर हो कर समभाव बना रहा प-रंतु उसकी मनुष्यत्व में बीच होता था पर उसकी ईश्वरत्व में नहीं सो जैसे उसका स्वभाव जगत के उत्पन्न करने से बदल न गया परंतु उसकी सामर्थ और सज्ञानता प्रगट हुई और जैसा प्रतिपालन करने से परमेश्वर के सोच बिचार नहीं बदले परंतु उसकी भलाई और उत्तमता प्रगट हुई इसी भांति उद्धार करने में भी उसका स्वभाव न बदला परंतु उसकी पवित्रता और न्याय और दया और प्रेम प्रगट हुआ और परमेश्वर एक ही रहा परंतु उसके सम्बंध और हो गये अर्थात वुह मनुष्यों का सृजनहार और पालन कर्त्ता और मुक्ति दाता हुआ कुछ वुह नहीं बदल गया और न उसका कोई गुण परमेश्वर ने अवतार तो लिया परंतु उसके सारे गुण अर्थात पविचता सत्यता न्याय दया अन्तर्जामी सर्बज्ञानी सर्बशक्तिमान होना इत्यादि

ज्यों का त्यों रहा बदलने की बात केवल उसके मनुष्यत्व के बिषय समझा चाहिये

और यह जो बैबल में लिखा है कि परमेश्वर खेदित होता और हर्षित होता सुनता नहीं सुनता क्या यह समभाव के लक्षण हैं यदि बिचार न करें तो निश्चय करके वैसाही समझ में आवे परंतु कुछ सोचने से जाना जाता है कि परमेश्वर सच मुच नहीं बदलता (१) पर मनुष्यों से मनुष्य की रीति बोलता नहीं तो वे कैसे समझते वुह उदास नहीं हो सक्ता क्योंकि वृह तो सच्चिदानन्द सर्बदा बना रहता है जब लिखा है कि परमेश्वर खेदित होता है इस्से यह अभिप्राय है कि मनुष्यों के बिगड़ जाने और पाप करने से उनसे ऐसा व्यवहार करता कि माना उन पर खेदित है और जहां लिखा है कि परमेश्वर हर्षित होता तो उसी प्रकार से उसको भी समझा चाहिये * जैसा और मत के पुस्तकों से प्रगट होता वैस हम सारे बैबल में कहीं नहीं पाते कि परमेश्वर आज एक आज्ञा देता और कल उसे खंडन करता फिर अपने को पवित्र कहता और पाप का कारण ठहरता अपने को सच्चा कहता फिर अपने बचन को आपही झुठलाता अथवा वुह कभी एक है और कभी अनेक आज एक देह में कल दूसरे देह में आज मनुष्य रहता कल पशु हो जाता

---

(१) मलाखी ३ पर्ब्ब ६ पद इरमिया १८ पर्ब्ब ७ पद

कभी बुद्धिमान है कभी ऐसा मूर्ख कि अपने को भी नहीं जानता ऐसी बातों का चिन्ह बैबल में कहीं नहीं बरन उसमें यह लिखा है कि वुह यह्ववाह अर्थात स्वयंब्रह्म बदलनेहारा नहीं और उसमें अदल बदल का कहीं लेश भी नहीं [मलाखी के पुस्तक ३ पर्ब्ब ६ पद और याक़ूब की पत्री १ पर्ब्ब १७ पद] सो बैबल की रीति से परमेश्वर समभाव है और उसके बचन और कर्त्तव्य से उसके सारे गुण बड़ाई पाते हैं अब यदि ऊपर की बातों पर कोई ध्यान करे तो साक्षात प्रगट होगा कि ईसाई मत में परमेश्वर के मत के लक्षण सब ऐसे मिलते हैं जैसे दहिनी आंख बाईं आंख से और बैबल में उन्हीं के समान सारा बर्णन है इस लिये ईसाई मत में सत मत का पहिला लक्षण सूर्य के समान चमक रहा है और निश्चय है कि जगत में यदि सत मत है तो वही ईसाई मत है

दूसरा अध्याय

चाहिये कि सत मत में जगत की और मनुष्य की उत्पत्ति और उसके कारण का बर्णन जो कुछ कि हो परमेश्वर की महिमा और उसके गुण के योग्य होवे जैसा ऊपर बर्णन ज़ुआ (१)

---

(१) देखो ५ पृष्ठ

पहिले जगत की उत्पत्ति और उसके कारण का बर्णन* बैबल से प्रगट होता है कि परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथिवी को छः दिन में बनाया और सातवें दिन को अपनी आराधना के लिये ठहराया उत्पत्ति के पुस्तक के पहिले और दूसरे पर्ब्ब में जगत की उत्पत्ति का समाचार स्पष्ट बर्णन है और जबूर और भविष्यद्वक्तों के पुस्तक और इंजील में भी वही बर्णन है * तौरेत में लिखा है कि (१) आरंभ में परमेश्वर ने पृथिवी और स्वर्ग को उत्पन्न किया और भविष्यद्वक्तों के पुस्तक में लिखा है कि प्रभु जिसने स्वर्गों को रचा (२) परमेश्वर जिसने पृथिवी को बनाया यों कहता है उसने पृथिवी को स्थिर किया और व्यर्थ नहीं बनाया उसने उसको बनाया जिसतें वुह बसाया जावे और इंजील में भी यही बात है (३) कि परमेश्वर ने जगत और सब कुछ जो उसमें है उत्पन्न किया जैसे लिखा है (४) कि उस्से सारी बस्तें जो स्वर्ग और पृथिवी पर हैं देखी अन देखी क्या सिंहासन क्या प्रभुता क्या प्रधानता क्या अध्यक्षता उत्पन्न किई गई सारी बस्तें उस्से और उसके लिये उत्पन्न हुई हैं

जगत की उत्पत्ति का कारण यह है कि परमेश्वर अ-

---

(१) उत्पत्ति १ पर्ब्ब १ पद (२) अशिया ४ पर्ब्ब १७ पद (३) प्रेरितों की क्रिया १४ पर्ब्ब १५ पद और १७ पर्ब्ब २४ पद से २८ तक (४) कलिसी १ पर्ब्ब १२ पद

पनी महिमा और महत्व को प्रगट करे जैसे १९ ज़बूर का पहिला पद और १४८ ज़बूर और रूमियों की पत्री पहिला पर्ब्ब १९ और २० पद में लिखा है

दूसरे मनुष्य की उत्पत्ति और उसके कारण का बर्णन*

बैबल से जाना जाता हैं कि परमेश्वर ने पहिले मनुष्य को मिट्टी से बनाया और उसे अपने स्वरूप पर रचा जैसे लिखा है (१) कि प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को पृथिवी के धूल से बनाया और परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप पर रचा परमेश्वर के स्वरूप पर उसने उन्हें बनाया नर और नारी उन्हें उत्पन्न किया यही बात ज़बूर और भविष्यद्वक्तों के पुस्तक में और इंजील में बहुत ठौर लिखी हैं परंतु परमेश्वर के स्वरूप पर बनाने से यह तात्पर्य नहीं कि परमेश्वर ने मनुष्य के प्रगट स्वरूप को अपने स्वरूप पर बनाया बरन उसकी अन्तर दशा को अपने स्वरूप पर बनाया अर्थात जैसा परमेश्वर आप चैतन्य स्वरूप और पवित्र और सच्चा है वैसाही उसने मनुष्य को भी चैतन्य और धर्मी और पवित्र बनाया जैसा लिखा है (२) कि नई मनुष्यत्व को जो ज्ञान में अपने सृजनहार के स्वरूप के समान नई बन रही है पहिना (३) फिर नई मनुष्यत्व को जो परमेश्वर के समान धर्म

---

(१) उत्पत्ति १ पर्ब्ब २६ और २७ पद और २ पर्ब्ब ७ पद (२) कलिसी ३ पर्ब्ब १० पद (३) अफ़सि ४ पर्ब्ब २४ पद

और सत्य और पवित्रता में बना हो पहिनो जब प्रथम में परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया तो वुह पापी न था परंतु निष्पाप और उसने मनुष्य को इस लिये बनाया कि वुह अपने सृजनहार को पहिचान के उस्से प्रीति रखे (१) और उसकी इच्छा पर चले और सदा अपने सारे मन से परमेश्वर की बड़ाई करे और (२) अपने पड़ोसियों की भलाई करके और परमेश्वर से मेल रख के आनन्द और मगन रहे और यद्यपि मनुष्य ने पाप किया तो भी वही अर्थ जो निर्दोषता में उसके लिये था बना रहा परंतु उसके प्राप्त करने की रीति बदल गई कि परमेश्वर ने एक मुक्तिदाता ठहराया और मनुष्य को अपना बचन दिया जिसनें वे उसे पहिचानें और पाप और नरक से बचें (३) सच पूछो तो परमेश्वर ने नरक को मनुष्य के लिये नहीं बनाया पर केवल शयतान और उसकी सेना के लिये जैसे लिखा है (४) हे स्रापितो मेरे सन्मुख से अनन्त अग्नि में जो शयतान और उसकी सेना के लिये सिद्ध किया गया है जाओ मनुष्य

---

(१) उत्पत्ति १ पर्व्व २३ पद और बिवाद ६ पर्व्व ४ पद और लूका १० पर्व्व २७ (२) लैव्य व्यवस्था १९ पर्व्व १८ पद मत्ती २२ पर्व्व ३९ पद रूमियों १३ पर्व्व १९ पद याकूब २ पर्व्व ८ पद (३) १ तिमताऊस १ पर्व्व १५ पद और इज़कियल १८ पर्व्व २३ पद और ३३ पर्व्व ११ पद (४) मत्ती २५ पर्व्व

को निज करके स्वर्ग के लिये बनाया है पर पाप के का रण वुह नरक के योग्य हुआ तो भी उसे वहां जाना अवश्य नहीं क्योंकि परमेश्वर ने ऐसा उपाय किया कि वुह नरक से बच के उद्धार पासक्ता है और इस उद्धार से मनुष्य ऐसा श्रेष्ठ पद प्राप्त करसक्ता है कि जो उसक निष्पाप होने की दशा में नहीं हो सक्ता था सो जब वुह अपने पाप से नरक में जाने के योग्य ठहरा तो दोष उसी का है और इस बात पर उसे दोहरा दंड मिलेगा एक यह कि वुह परमेश्वर की आज्ञा भंग करके पापी हुआ दूसरे यह कि पाप के औषध को जो ईसा मसीह का बलिदान होना है उसने ग्रहण न किया (१) और उस पर बिश्वास न लाया जैसा लिखा है कि वुह जो उसका बिश्वासी है (२) दोषी नहीं पर वुह जो बिश्वासी नहीं दोषी हो चुका कि वुह परमेश्वर के एकलौते पुत्र पर बिश्वास न लाया सो जो पापी अपने पापों से पश्चा ताप करके प्रभु ईसा मसीह पर बिश्वास लावे वुह उद्धार पावेगा पर जो अपने पापों में बना रहेगा और प्रभु ईसा मसीह पर बिश्वास न लावेगा सो निश्चय नरक में पड़ेगा

---

(१) बिवाद २८ पर्ब्ब १५ पद जबूर १९ पर्ब्ब ११ पद रूमियों का ५ पर्ब्ब १२ पद से २१ तक गलतियों ३ पर्ब्ब १० पद मरकस १६ पर्ब्ब १५ और १६ पद करंतियों १५ पर्ब्ब ४५ पद ४९ तक २ करंतियों ३ पर्ब्ब १८ पद (२) यूहन्ना ३ पर्ब्ब १८ पद

जैसे लिखा है (१) कि जो पुत्र पर बिश्वास लाता है अनन्त जीवन उसी का है और जो पुत्र पर बिश्वास नहीं लाता जीवन को न देखेगा बरन परमेश्वर का क्रोध उस पर है।

तीसरा अध्याय।

सत मत में परमेश्वर और मनुष्य के परस्पर के संबंध का बर्णन अवश्य चाहिये (२) बैबल में यह बर्णन है कि परमेश्वर मनुष्य का सृजनहार और पालनहार और सारे जगत पर प्रभुता रखता है और जगत की सारी बस्तुन की इच्छा करता है और हर एक जीवधारी को हर घड़ी का स्वास और जोवन देता है बैबल में कर्म लिखे की बात का कुछ लेश नहीं बरन उस के बिरुद्ध लिखा है कि परमेश्वर ने मनुष्य को सामर्थ दिया चाहे वुह उसे पहिचान के उसकी आज्ञा माने चाहे उसे भुलवा के उसकी अवज्ञा करे मरने के पीछे अपनी करणी के समान फल पावेगा और परमेश्वर ने तो उसे ठीक २ बतला दिया है कि यह काम योग्य और यह काम अयोग्य है आगे मनुष्य का मन जैसा चाहे वैसा करे सो इस मत के समान मनुष्यों को अवश्य है कि परमेश्वर पर बिश्वास लाके उस्से डरता

---

(१) यूहन्ना ३ पर्ब्ब ३६ पद (२) देखो ४ और ५ पृष्ठ

ओर अपने सारे अंतःकरण ओर बल बुद्धि से उसे प्यार करता ओर आत्मा ओर सचाई से उसकी आराधना करता ओर हर दशा में उसका गुण गाता ओर हरघड़ी उसपर भरोसा रखता रहे उसके नाम ओर बचन की बड़ाई करता ओर जीवन भर सच्चे मन से उसकी पूजा करता ओर सदा उसी की प्रार्थना करता रहे ये बातें परमेश्वर से संबंध रखती हैं * ओर मनुष्यों से यह (१) कि उन्हें अपने जीसे प्रिय रखे ओर सब से वुह रीति प्रीति करे जो वुह उसे चाहता हो वुह माता पिता से प्रेम रखे ओर उनकी प्रतिष्ठा करे ओर उनकी हर अवस्था में सुधि लेता रहे अपने राजा ओर उसकी ओर के अध्यक्षों का आदर मान करे ओर उन्हें माने ओर अपने स्वामी की आज्ञा की बातें ओर मत के प्रधानों से आधीनता रखे ओर उनकी प्रतीष्ठा करे बड़ों का संभ्रम दीनताई से करे ओर अपने चलते किसी के दुख क्लेश ओर क्षति का कारण न होवे ओर अपने सब काम काज में निष्ठा प्रमाण से रहे कभी किसी बात के निमित हां अपने प्राण के लिये भी झूठ न बोले किसी से बैर द्रोह न रखे ओर धूर्तता ओर छल छिद्रता से दूर भागे किसी पर कलंक दोष न लगावे ओर आप अत्यंत चौकसी ओर सुचेती से

---

(१) रूमियों १२ पर्व्व अफसियों ५ ओर ६ पर्व्व १ करंतियों १३ पर्व्व मत्ती ५ ओर ६ पर्व्व

रहे और किसी से कुछ लालच न रखे बरन अपनी जीविका अपनी बांहबल से उपराजे अपने शत्रुन से प्रेम रखे और उनका भला करे और अपने सतानेहारों और दुखदायकों के लिये प्रार्थना करे जिसतें वुह अपने पिता का जो स्वर्ग पर है योग्य पुत्र ठहरे जिस रीति परमेश्वर भले और बुरे और न्यायी और अन्यायी पर सूर्य उदय करता उन्हें उंजियाले में रखता उन पर मेंह बरसाता और उन्हें जीविका पहुंचाता उनको जीवन और कुशल देता है बरन उसकी सृष्टि में से गाय कसाई को दूध पिलाती और वृक्ष अपने काटनेहारों को फल खिलाता और छाये में रखता है वैसाही इस मत में मनुष्य के लिये आज्ञा है कि परमेश्वर का ऐसा स्वभाव और उस कीसी पवित्रता और उत्तमता प्राप्त करे और अकेले दुकेले और मंडली में और अपने घरके लोगों के संग परमेश्वर का पुस्तक पढ़ता और उसकी आराधना करे और जो कुछ हाथ अथवा मुंह से करे सो परमेश्वर की महिमा प्रगट करने के लिये करे इस मत में यह भी बात है कि मनुष्य को परमेश्वर से एक ऐसा संबंध है कि जिस करके अपनी सब बातों का उत्तर और अपने सब कामों को उसको लेखा देना पड़ेगा इस लिये परमेश्वर ने मनुष्य के कारण व्यवस्था ठहराई जिसतें वे उसके समान सोच बिचार और बोल चाल को सुधारे पर मनुष्य व्यवस्था के बिरुद्ध चले और पापी हुए तिसपर भी परमेश्वर

ने उन्हें पाप दशा में न छोड़ा बरन उनके लिये एक मुक्ति मार्ग ठहराया और उस मार्ग को अपने बचन अर्थात् तौरेत जबूर और भविष्यद्वक्तों के पुस्तक और इंजील में प्रगट किया कि परमेश्वर ने (१) जगत को ऐसा प्यार किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दान किया कि जो कोई उस पर बिश्वास लावे नाश न होवे परंतु अनंत जीवन पावे इस लिये (२) यह बात बिश्वास मय और समस्त ग्राह्य के योग्य है कि मसीह ईसा पापियों के बचाने के लिये जगत में आया है * जब मनुष्यों ने परमेश्वर की व्यवस्था से आज्ञा भंग किया और दंड के योग्य ऊए तब मसीह ने आ और व्यवस्था को पूरी कर पाप का दंड अपने ऊपर उठाया और अपना प्राण पापियों की संती दिया इस रीति से परमेश्वर और मनुष्यों में मेल करवाया जैसा लिखा है (३) कि परमेश्वर ने मसीह में होके जगत को आप से मिलाया कि उनके अपराधों का लेखा न लिया स्वर्ग का द्वार खुला और पुरी मुक्ति मनुष्यों के लिये जोड़ी इस लिये मनुष्यों को भी उचित है कि अपने पापों से पश्चाताप करें अर्थात् अपने पापों को पहिचानें और उनके लिये मन से पछतावें और उनसे घिनाके उन्हें छोड़ देयें और प्रभु ईसा मसीह की

---

(१) यूहन्ना ३ पर्व्व १६ पद (२) १ तिमंताऊस १ पर्व्व १५ पद (३) २ करंतियों ५ पर्व्व १९ पद

ओर फिरें और उसपर बिश्वास लावें और उसका प्राय-
श्चित्त ग्रहण करके उसपर अपने निस्तार का पूरा भरोसा
रखें और तन मन से उसकी आज्ञाओं के पालन करने
में लवलीन रहें फिर जो इस चाल चलन पर चलेगा
मसीह उसका मन प्रकाश करके उसके पापों को क्षमा
करेगा और उसको अपना पवित्रात्मा देके उसका मन
पवित्र करेगा और स्वर्ग पर जाने के योग्य बनावेगा और
अंत के दिन उसे फेर जिलावेगा और इस मृतिका की
शरीर से आत्मिक शरीर बनावेगा और इसी भांति शय-
तान और पाप और मृत्यु पर जयमान कराके उसे स्वर्ग
में प्रवेश करावेगा जहां वुह सारे पवित्र लोगों और सब
दूतों से एक मन और एक तन होकर सर्वदा उनके संग
परमेश्वर के साम्ने आनंद किया करेगा (१)

चौथा अध्याय

यदि इसाई मत सत मत है तो परमेश्वर ने ऊपर के
लक्षणों के समान अपनी छाप उसपर अवश्य करके किई
होगी (२) अब बिचार किया चाहिये कि वुह छाप

---

(१) यूहन्ना ५ पर्व्व २४ पद यूहन्ना ३ पर्व्व १ यूहन्ना ४ पर्व्व
यूहन्ना १५ पर्व्व यूहन्ना ८ पर्व्व ६१ पद यूहन्ना ५ पर्व्व २८ और
२९ पद १ करंतियों १५ पर्व्व ४२ और ४९ पद १ करंतियों १५ पर्व्व
५४ पद से ५७ तक प्रकाशित ५ पर्व्व ५ पद से १४ तक ४ पर्व्व और
२० पर्व्व ११ पद से २२ पर्व्व के अंत तक (२) देखो ५ और ६ पृष्ठ

ईसाई मत में पाई जाती है अथवा नहीं और वुह आश्चर्य और भविष्यवाणी हैं पहिले आश्चर्य * जाना जाता है कि यह भी इसाई मत में पाये जाते होंगे

मूसाने जिसके द्वारा बैबल का पहिला पुस्तक अर्थात् तौरेत लिखा गया बज्जत आश्चर्य देखाये * मिसरकी सारी नदी रुधिर करडाला * उस सारी भूमि को मेंडकों से भर दिया * और उस देश की धूलों से चिल्लड़ ही चिल्लड़ बना डाला और झुंड के झुंड मच्छड़ उत्पन्न किये और वहां के सारे चतुष्पदों पर ऐसी उपाधि मचाई कि वे सब मरगये * फिर वहां एक और आग बरसी कि वहां के सब लोगों के तन में फफोले उत्पन्न हो आये * इसके पीछे इतने ओले और पत्थर पड़े कि वहां कि भूमि के सारे वृक्ष और सब घास पात नष्ट हो गये * तब ऐसी ठिडी आई कि जो कुछ ओले पत्थर से बच रहा था उन्हों ने चाट लिया * फिर एक और अंधेर टूटी कि मिसर का सारा देश ऐसा अंधकार से छागया कि तीन दिनलों एक दूसरे को न देख सक्ता था * इस के उपरांत मूसा ने मिसर के राजा से कहा कि आज की रात तेरे और तेरे प्रजाओं के पहिलौठे सब मर जायेंगे और वैसाही ज़ुआ (१) परमेश्वर ने अपना क्रोध मूसा के द्वारा मिसर पर इस कारण प्रगट किया कि वहां के राजा फरऊन ने इब-

---

(१) यात्रा ७ और ८ और ९ और १० और ११ और १२ पर्ब्ब

राहीम के बंश इसराइलियों को अपने देश से जाने न दिया और बहुत ठौर लिखा है कि ये आश्चर्य इस लिये देखाये गये कि मूसा स्वर्गीय बसीत और भविष्यद्वक्ता ठहरे और उसका फैलाया मत ईश्वर की ओर से और परमेश्वर का नाम सारी पृथिवी पर प्रसिद्ध हो * (१) इसके पीछे फरऊन ने उन आश्चर्यों से हार मान के और भय खाके इसराईलियों को जाने दिया * तब मूसा ने उन लोगों को लाल समुद्र के पास पहुंचाया इसके उपरांत फरऊन ने उन्हें जाने देने से पछता के अपनी सेना समेत उनका पीछा किया कि उन्हें फेर पकड़ लावे (२) निदान उसने उन्हें लाल समुद्र के तीरे जा लिया और अपने दहिने बायें बड़े २ पहाड़ और साम्ने लाल समुद्र और पीछे मिसरियों की सेना देख चिल्ला २ रोने लगे और मूसा से कहने कि क्या मिसर में हमारे लिये समाधि की ठौर न थी कि यहां तू हमें नाश करने को लाया है तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपनी छड़ी समुद्र की ओर बढ़ा उसने वैसाही लाल समुद्र पर किया और वहीं दो भाग हो गया और समस्त इसराईली उसमें होके सूखे सूखे चले गये और मिसरियों ने चाहा कि उन का पीछा करें परंतु जब इसराईलियों का जथा उस पार

---

(१) यात्रा ९ पर्ब्ब १३ और १६ पद और १० पर्ब्ब १ और २ पद (२) यात्रा १४ पर्ब्ब

जा पहुंचा और मिसरी समुद्र के बीचो बीच थे तो पर-
मेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ समुद्र की ओर
फैलाव जिसतें पानी मिसरियों और उनकी गाड़ियों
और उनके अश्ववारों पर फिर आवे तब मूसा ने वैसाही
किया और समुद्र का जल पहिले की नाईं फिरा
और परमेश्वर ने मिसरियों को समुद्र में डुबाया और
एक भी उनमें से न बचा और इसराईली यह बड़ी आ-
श्चर्य जो परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया देख के डरगये
और परमेश्वर और उसके दास मूसा पर बिश्वास
लाये (१)

फिर मूसा परमेश्वर की आज्ञा से इसराईलियों को
अरब के अरण्य की ओर ले गया और जब वहां उन्हें
जल न मिला तो मूसाने परमेश्वर की आज्ञा से अपनी
छड़ी लेकर चटान पर मारी और उस्से जल निकल
आया और वुह जल नदी की नाईं अरण्य में बहा (२)
फिर जब रोटी न मिली तो स्वर्ग से मन्न बरसने लगा
जो हर प्रातःकाल उनके तंबूओं के आस पास ओस की
नाईं पड़ता (३) वे उसे बटोर २ रींधते और खाते थे
इसी प्रकार चालीस बरस लों बन में फिरा करते और
यही खाया करते थे न उनके पांव फूलते न उनके

---

(१) यात्रा १४ पर्व्व २६ पद से ३१ तक (२) यात्रा १७ पर्व्व ५
और ६ पद ज़बूर १०५ पर्व्व ४१ पद (३) यात्रा १६ पर्व्व

बस्त्र पुराने होते थे (१) कदाचित कोई यह समझें कि उस समय मूसा के संग थोड़े मनुष्य थे सो नहीं लिखा है कि छः लाख शस्त्र धारी उसके संग बने थे (२) इसको छोड़ यदि उनके स्त्री लड़के बाले और वृद्ध इत्यादि का लेखा किया जाय तो जाना जाता है कि तीस लाख से घटती न होंगे इतने मनुष्य चालीस बरस लग इसी रीति से पाले जाते रहे सोचा चाहिये कि ऐसे आश्चर्य कर्म जगत के कीसी दूसरे पुस्तक में नहीं है

इसके परे और बहुत से आश्चर्य मूसा से प्रगट हुए जिनका बर्णन यहां नहीं होसक्ता बिशेष करके जिस समय परमेश्वर ने सैना पर्बत पर प्रत्यक्ष होके दस आज्ञा अपने मुख से उच्चारी (३) सो जो उन आश्चर्यों का स्पष्ट वर्णन देखा चाहे तो तौरेत में यात्रा से बिवाद के पुस्तक तक बिचार के देखे

जब मूसा स्वर्ग धाम को गया परमेश्वर ने यहूशूआ को उसके कार्य के पद पर ठहराया कि इसराईलियों को किनान के देश में पहुंचावे उसने भी भांति भांति के आश्चर्य देखलाये अर्दन नदी लाल समुद्र की नाईं दो भाग हो गई और इसराईली बीचो बीच होके सूखे २

---

(१) बिवाद ८ पर्ब्ब ३ और ४ पद नहमियः ९ पर्ब्ब २० और २१ पद (२) यात्रा १२ पर्ब्ब ३७ पद गिनती १ पर्ब्ब ४५ और ४६ पद (३) यात्रा १९ और २० पर्ब्ब

पार उतर गये (१) और जब इसराईल ने भेड़ के सोंग की तुरही फूकी तो ऐसा प्रलय हुआ कि रैहा नगर के चारों ओर की भीति गिर गई (२) फिर यसुआ की प्रार्थना से आठ पहर लों सूर्य अस्त न हुआ (३) योंही हर प्रकार के आश्चर्य भविष्यद्वक्तों से प्रगट होते गये जैसे मृतकों का जिलाना कोढ़ियों का चंगा करना तीन रात दिन मच्छली के पेठ में रहना इत्यादि (४)

इंजील के आश्चर्य

जो आश्चर्य मसीह और उसके प्रेरितों ने प्रगट किये इंजील में इतने हैं कि बिचार में नहीं आसक्ते कि हम कहां से लेके आरंभ करें और कहां समाप्त वे मृतकों को जिलाते कोढ़ी को पवित्र करते देवों को निकालते अंधों को आंख बहिरों को कान देते थे फिर मसीह सहस्रों को पांच चार रोटी से संतुष्ट करता और आंधी को रोकता और समुद्र पर पांव पांव चलता औ उसके मरने की बेला सूर्य दो प्रहर से तीसरे प्रहर तक अंधकार में पड़ा रहा फेर वुह मरके आप तीसरे दिन जी उठा और अपने शरीर में होके शिष्यों के सन्मुख स्वर्ग पर चलागया

---

(१) यशूआ ३ और ४ पर्व्व (२) यशूआ ६ पर्व्व (३) यशूआ १० पर्व्व १२ और १३ और १४ पद (४) न्यायी और दोनो समुईल और राजा बली और कितने भविष्यद्वक्तों की पुस्तकों में प्रत्यक्ष लिखा है देख लो

और इंजील के समस्त आश्चर्यों में एक अद्भुत बात यह है कि वे मसीह ही के नाम से देखाये गये * मूसा और दूसरे भविष्यद्वक्ता जो मसीह के पहिले थे उन्होंने जो आश्चर्य प्रगट किये सो परमेश्वर के नाम से पर मसीह अपने ही नाम से इसी भांति प्रेरितों ने भी उसी का नाम लेके देखाये इस बात से मसीह का ईश्वरत्व प्रतच्च है

निदान ये आश्चर्य जो उन पस्तोकों में लिखे हैं सो मत के प्रमाणिक होने के लिये किये गये [१] और मनुष्य की भलाई और परमेश्वर की भलाई के लिये देखाये गये सो सच्चे आश्चर्यों के लच्चण इसाई ही मत के आश्चर्यों में पाये जाते हैं [२]

दूसरे भविष्यबाणी [३] यह भी इस मत में है सब लोग चाहे मुसलमान चाहे और जाति जो कुछ भी तिथ ग्रंथ को जानते हैं मानते हैं कि तीन सहस्र चार सौ बरस बीते कि तौरेत लिखी गई और उसमें बहुतही भविष्य बाणी हैं

पहिले नूह की भविष्य बाणी [४] उसने कहा कि

---

(१) यात्रा ४ पर्व्व १ पद ५ तक १९ पर्व्व ९ पद यूहन्ना ११ पर्व्व ४२ पद और १४ पर्व्व ११ पद और २० पर्व्व ३० और ३१ पद और इबरानियों २ पर्व्व ४ पद (२) देखो ५ और ६ पृष्ठ (३) देखो ६ और ७ पृष्ठ (४) उत्पति ९ पर्व्व २५ पद से २७ तक

किनान स्रापित होगा और वुह अपने भाईयों के दासों का दास बनेगा फिर उसने कहा कि यहवाह शाम का परमेश्वर धन्य हूजियो किनान उसका दास होगा और याफस को परमेश्वर फैलावेगा और वुह शाम के तंबुओं में रहेगा और किनान उसका दास होगा प्रसिद्ध है कि किनान के बंश ने किनान देश और अफ़रिक: को बसाया और शाम से इसराईली और अशिया के लोग उत्पन्न हुए और याफस से पश्चिम के लोग अब बिचार किया चाहिये कि नूह की भविष्य बाणी किस रीति पूरी हुई और होती चली जाती है * इसराईलियों ने किनान के बंश को किनान देश से निकाल दिया और जो आज लों अफरिक: में हैं अपने भाई शाम और याफस के बंश के दास होते हैं कि मुसलमान और इसाई के दास होने से अब तक नहीं छूटे और उनमें से लाखों दास बना के बसतंडैन अरु और देशों में बेचडाले जाते हैं * नूह ने कहा कि याफस शाम के तंबू में रहेगा * अब सोचा चाहिये कि ईसा मसीह मनुष्यत्व की रीति से शाम के बंश में था और अंगरेज़ फरांसीस रूस इत्यादि याफस के बंश हैं और इसाई होने से शाम के तंबुओ में प्रवेश किये फिर हिंदुस्थान के लोग शाम के बंश है अंगरेज़ हिंदुस्थान के ले लेने से भी शाम के तंबू में आये हैं यह क्या हीभविष्यबाणी है जिसे सहस्रों बरस बीते और हम सब के साम्ने पूरी होती है और तौरेत में यद्यपि कोई दूसरी

भविष्य बाणी न होती तो भी उस्से परमेश्वर की ओर से इस पुस्तक का होना प्रगट होता

दूसरे इसमाईल के विषय भविष्यबाणी * इसमाईल इबराहीम का बेटा था जो हाजिरः लौंडी से उत्पन्न हुआ और सारे अरब उसी के बंश हैं उसके उत्पन्न होने के पहिले उसका नाम और बृतांत दूत ने हाजिरा: से बर्णन किया उन स्थानों में जिनके चिन्ह पत्रे के ऊपर हैं लिखा है [१] कि वुह बड़ा लोग होगा और वैसाही हुआ बिशेष करके जब अरब के लोग महम्मद के समय में और उसके पीछे दूसरे लोगों पर चढ़ाई करके उन पर जय मान हुए तो उन का अत्यंत बड़ा राज हुआ जैसे तिथ ग्रंथ से प्रगट है * फिर लिखा है कि वुह जंगली मनुष्य होगा और यह भी पूरा हुआ कि उसके कितने बंश जो अपनी जन्म भूमि में रहते तंबुओं के बीच जंगल के अनस्थिति ठौर म फिरा करते हैं और नगर से घिन रखते हैं फिर लिखा है कि उसका हाथ हर एक से और हर एक का हाथ उस्से बिरुद्ध होगा यह भी बिना बिरुद्धता पूरा हुआ वे बहुधा लुटेरे और डाकू हैं नगर बस्ती बणिकों पथिकों यात्रियों पर जा गिरते और उनको धन संपदा लूट ले के अपना निर्बाह करते हैं सो जब कि वे सब के बैरी हैं तो सब उनके भी बैरी होंगे यह भी कैसी अद्भुत

(१) उत्पति १६ पर्ब्ब १० पद से १२ तक

भविष्यबाणी है जो इस अद्भुत जाति के पिता की उत्पति के पहिले प्रगट ऊई और अब तीन सहस्र सात सौ बरस के पीछे सब के साम्ने पूरी ऊई

तीसरे भविष्यबाणी इस्राईलियों के विषय में * यह लोग इसहाक् के बंश हैं और इसहाक् इबराहीम का पुत्र है और जो भविष्य बाणी कि तौरेत और भविष्यद्-क्तों के पुस्तक में इस लोग के विषय लिखी हैं अत्यंत अचंभित हैं

१ तौरेत की भविष्यबाणी जो इस लोग के विषय में है जब इबराहीम को सारः से जो उसकी पत्नी थी कोई लड़का न था और वे दोनों पुरनिया थे सारः नब्बे बरस और इबराहीम सौ बरस का था तब परमेश्वर ने उसे कहा कि सारः तुझ से पुत्र जनेगी उसका नाम इसहाक् रखियो [१] और उसके बंश आकाश के तारे और समुद्र की रेत की नाईं होंगे सो यह सब बातें समय पर ठीक ठीक पूरी ऊईं कि इसहाक् ठहराये ऊए समय पर उत्पन्न ऊआ और इस भविष्यबाणी को पांच सौ बरस न बीते थे कि उसका बंश इसराईल के संतान मूसा के समय में तीस लाख चालीस बरस के लग भग ऊए और जब लग कि परमेश्वर की आज्ञा मानते रहे योंहीं बढ़ते गये [२]

---

(१) उत्पत्ति १७ पर्ब्ब १८ पद से २० तक और २२ पर्ब्ब १५ और १८ पद तक (२) यात्रा १२ पर्ब्ब ३७ पद

परमेश्वर ने इबराहीम से कहा कि मैं तुझे और तेरे बंश को किनान का देश देउंगा परंतु पहिले वे दूसरे देश में दास होंगे वहां से मैं उन्हें छुड़ा किनान के देश में लाऊंगा [१] सो यह भविष्यबाणी चार सौ बरस पीछे मूसा के समय पूरी ऊई

अब हम तौरेत की और सब भविष्यबाणियों के छोड़ के केवल बिवाद की पुस्तक के २८ पर्ब्ब की भविष्यबाणी वर्णन करते हैं इस पर्ब्ब में मूसा ने परमेश्वर की ओर से कहा कि इसराईल के संतान जगत के समस्त जाति गणों में छिन्न भिन्न होंगे और कहीं बिश्राम न पावेंगे वे संतापी और दुखी हो कर गिनती के बच रहेंगे और वे समस्त लोगों में उद्वेग से रहेंगे और उदाहरणी बनेंगे और और लोग उन्हें मेहना मारेंगे और धिक्कारेंगे और यह सब भविष्य बाणी तनिक २ नबूकदनीज़र और रूमियों के आने और उन पर जयवंत होने से पूरी ऊई और वे समस्त जाति गणों में छिन्न भिन्न ऊए फिर मूसा ने कहा कि उनके शत्रु उनके नगर को घेर लेंगे यह बात पूरी ऊई कि मिसर के राजा शशाक और असरिया के राजा शलमंदर और बाबुल के राजा नबूकदनीज़र और इनताकस अफ़नियस और सासीयस और हिरूदीस और तैतस ने पारी पारी उनके नगरों को लेलिया

(१) उत्पत्ति १५ पर्ब्ब १२ पद से अंततक

ओर उन्हें तीन तेरह करडाला फिर मूसा ने कहा कि उन आपदा के दिनों में ऐसा काल पड़ेगा कि नगरों के घेरे जाने के समय वे अपने पुत्र को भक्षण कर डालेंगे यह भविष्यबाणी मूसा के छःसौ वरस पीछे पूरी ऊई [१] फिर मूसा के नौ सौ बरस पीछे जब यरोशलीम को बाबुल की सेना ने लेलिया यह बात उन पर दुहराय निश्चित ऊई [२] फिर तीसरी बार उन लोगों में यह बात सच्ची ठहरी कि रूमियों ने यरोशलीम को लेलिया * सो जैसा कि परमेश्वर ने इबराहीम से बांचा बाधा था कि तेरा बंश आकाश के तारों के समान अनगणित होगा वैसाहीं सूर्य के समान उंजियाला ओर चन्द्रमा के समान पुरा ऊआ ओर जैसे कि मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा के समान उन लोगों से कहा कि तुम जो आकाश के तारों के समान अनगणित हो थोड़े से रह जाओगे क्योंकि तुम अपने प्रभु परमेश्वर की बात न सुनी ओर वहीं पूरा ऊआ निदान मूसा के एक सहस्र पांच सौ बरस पीछे यरोशलीम रूमियों के हाथ से लूटा गया यूसीफस ने जो यह्रुदियों में एक महत जन था इस वृतांत को अपने पुस्तक में लिखा ओर उसमें लेखा करके बर्णन कि-

---

[१] राजा बली ६ पर्ब्ब २६ से २९ पद तक [२] यिरमिया ५९ पर्ब्ब ९ पद ओर यरमिया का २ पुस्तक ४ पर्ब्ब को ८ पद

या है कि काल ग्रैार लड़ाई में बारह लाख चालीस सहस्र चार सैा नब्बे मनुष्य ऊए ग्रैार उनके परे निन्ना-नवे सहस्र दे। सैा पकड़े जाके शत्रुन के हाथ बेचे जाके दासी दास बने इसके पीछे जब रूम के राजा हाड्रयान ने उन्हें सत्यानाश किया तब उनमें से सहस्रों दास दासी बनाके बेचे गये बरन वे इतने बिके कि उन्हें निकम्मो सस्ती बस्तु की नाईं किसी ने बात न पूछी तब वे मिसर में भेज दिये गये ग्रैार उधर जाते ऊए नावें के फट टूट जाने से बऊतें का डुबंत बेड़ा ऊग्रा ग्रैार उनमें से जो बचे वे काल ग्रैार दुर्भिच्च के कारण से छिन्न भिन्न होके मारे पड़े इन बातें से मूसा की बातें में क्या ही समानता पाई जाती है कि उसने कहा था [१] परमेश्वर तुम्हें नावें पर चढ़ा के मिसर को भेजेगा ग्रैार वहां तुम दास दासियें की नाईं शत्रुन के हाथ बेचे जाग्रोगे ग्रैार कोई तुम्हें न कीनेगा इन बातें की सारी निर्णय रूमि-यें के तिथ ग्रंथ से ऊई जो न यऊदी न ईसाई बरन मूर्त्ति पूजक थे से मूसा ने इन सब बातें का संदेश सचह सैा बरस पहिले दिया था जो समय पर रती २ पूरी ऊई देखो यह कैसी ग्रदभूत भविष्यबाणी है

इन सब से ग्रधिक मूसा ने केवल यही न कहा था कि वे ग्रपनी भूमि ग्रैार ग्रपने देश से निकाले जायेंगे

---

[१] बिवाद २८ पर्ब्ब ६८ पद

श्रीर उनके नगर फूंक दिये जायेंगे श्रीर उनकी बस्ती उजाड़ होगी बरन यह भी कहा था कि वे सब लोगों में छितर बितर होंगे यह बात हम सब के साम्ने पूरी होती चली जाती है कौन देश है जिसमें यहूदी नहीं सच है उन आग की चिनगियों ने अपने लिये ऐसेही आग बोई जिसमें उनके नगर श्रीर घर द्वार जल कर भस्म हो गये श्रीर वे जलते फूस की नाईं उड़ कर जहां तहां जा पड़े * फिर मूसा ने कहा था कि वे यद्यपि सब लोगों के बीच छिन्न भिन्न हो जायंगे तिसपर भी उनमें कभी न मिल जायंगे बरन वे सदा सर्बदा अलग रहेंगे इसके प्रमाण का कुछ प्रयोजन नहीं क्योंकि सब जानते हैं कि यहूदी हरएक लोगों से न्यारे रहते हैं यह भी एक बड़े अचंभे की बात है क्योंकि यहूदियों के परे कौन लोग हैं कि अठारह सौ बरस तक दूसरे लोगों में छितर बितर रहे तिसपर भी उनमें न मिले उनके इस समय का समाचार जो तौरेत श्रीर भविष्यद्वक्तों के पुस्तकों श्रीर इंजील की बातों से मिलान किया जाता तो यद्यपि कोई श्रीर भी प्रमाण न होता तो भी उन पुस्तकों के परमेश्वर की श्रोर से होने के प्रमाण के लिये यही बहुत था

९ भविष्यद्वक्तों के पुस्तक श्रीर ज़बूर में भी यहूदियों के बिषय श्रीर बहुत भविष्यबाणी हैं

पहिले यशुआ ने कहा है कि जो कोई अरिहा नगर

को बनावेगा उसकी नेंव ड़ालते उसका पहिलौठा मर जायगा और उसका फाटक लगाते उसका छोटा बेटा सो पांच सौ बरस पीछे यह कहा पूरा हुआ [१]

दूसरे जोसाया राजा के बिषय उसके उत्पन्न होने के तीन सौ बरस आगे भविष्यद्वक्ता के द्वारा यह भविष्यबाणी पूरी हुई थी कि जोसाया नामें मूर्त्ति पुजकों की वेदी ढावेगा और पंडों को बलिदान करके उसपर चढ़ावेगा और मनुष्यों की हड्डियां उसपर जलावेगा [२]

तीसरे तौरेत और भविष्यद्वक्तों के पुस्तक से साक्षात प्रगट है कि मूसा के समय से बाबुल को चले जाने तक जिसे नव सौ बरस के लग भग हुआ यहूदी मूर्त्ति पुजा की ओर बहुत लग रहते थे पर अशिया भविष्यद्वक्ता ने जो उन के बाबुल को चले जाने से डेढ़ सौ बरस पहिले था उसने उनकी मूर्त्ति पूजा छूट जाने के बिषय भविष्य बाणी कही है [३] और दो सौ बरस पीछे जब वे बाबुल से चले आये तो फिर मूर्त्ति पूजा की ओर उन्हों ने कभी मन न लगाया

चौथे यरमिया भविष्यद्वक्ता ने भविष्यबाणी की रीति

[१] यशुआ ६ पर्ब्ब २६ पद और १ राजा बली १६ पर्ब्ब ३४ पद [२] १ राजा बली १३ पर्ब्ब २ पद और २ राजा बली २३ वर्ब्ब १५ पद से २० तक [३] अशिया २ पर्ब्ब १८ पद से २१ तक ३० पर्ब्ब २२ पद

से कहा कि यहूदा और चारों ओर के जाति गण बाबुल के राजा नबूकद्‌नीजर से पराभव होके उसकी सेवकाई करेंगे [१] और परमेश्वर ने उसको आज्ञा दिई कि तू एक एक जुआ बना के आस पास के सब राजाओं और यहूदियों के राजा पास भेज दे जिसतें आनेहारी बात उन पर प्रगट हो सो उसके आगमज्ञान की परीक्षा उन सब के सन्मुख योंहो हुई उस भविष्यवाणी के कारण यहूदियों ने उसे बंदी गृह में डाला और जब लों कि बाबुल के राजा नबूकद्‌नीजर ने उस नगर को लिया और उसे छुड़ाया वुह वहीं रहा [२]

कई झूठे भविष्यद्वक्तों ने यरमिया का साम्ना किया और यहूदियों के भुलावे के लिये उन्हें चिकनी चुपड़ी बातें सुनाईं उन में से एक के बिषय जो हनानिया कहलाता था यरमिया ने कहा कि इसी बरस वुह मर जायगा और वैसाही हुआ [३] और उसने यह भी कहा था कि अहाब कलाया का पुत्र और जडकाया मासाया का पुत्र जो झूठे भविष्यद्वक्ते थे नबूकद्‌नीजर उन्हें पकड़ के कुक्कट की नाईं आग में भूनेगा और सारे यहूदियों के साम्ने उनका पंछी सा जी निकाललेगा [४]

---

[१] इरमिया २७ पर्ब्ब [२] इरमिया ३९ पर्ब्ब १ पद से १४ तक [३] इरमिया २८ पर्ब्ब १६ और १७ पद [४] इरमिया २९ पर्ब्ब २१ और २२ पर्ब्ब

पांचवें यरमिया के समय में हिज़कील नामे एक दूसरा सच्चा भविष्यद्वक्ता था और यहूदियों के मन में उन दोनों भविष्यद्वक्तों के बिषय संदेह था क्योंकि उनकी बातों में बिरुद्ध देख पड़ता था यरमिया ने यहूदियों के राजा ज़ड़ीकाया के विषय में कहा कि [१] वुह बाबुल के राजा को देखेगा और अवश्य करके बाबुल में जायगा और हिज़कील ने कहा कि वुह बाबुल को न देखेगा फिर यरमिया ने कहा कि वुह बिना दुख और क्लेश के मरेगा और अपने बाप दादे की रीति के समान गाड़ाजायगा और हिज़कील ने कहा कि वुह बंधुआ होके मरेगा यह दोनों आगम की बातें यद्यपि प्रगट में दो बिपरीतों का एकत्र होना समझी जाती हैं पर सच मुच में दो समताओं की भांति परस्पर ठीक हैं कि ज़ड़ीकाया ने बाबुल के राजा को देखा जिसने उसकी आंखें निकलवालीं और उसे बंधुआ करके बाबुल को ले गया जहां वुह बिना दुख और क्लेश के मरा और अपने बाप दादों की रीति के समान गाड़ा गया [२] ऐसी बात में जो प्रगट में बिपरीतता एक है उन दोनों भविष्यद्वक्तों के बीच यद्यपि कि एक बाबुल में दूसरा यरोशलीम में था मेल होना

---

[१] इरमिया ३४ पर्ब्ब २ पद से ७ तक ज़ीकल ११ पर्ब्ब १३ पद
[२] इरमिया ३९ पर्ब्ब ४ पद से ७ तक २ राजा वली २५ पर्ब्ब ६ और ७ पद

अद्भूत और बड़ा आश्चर्य है जिसके बिचार करने में बुद्धि बिस्मित होती है हिज़कील भविष्यद्वक्ता ने जब बाबुल में बांधुआ था यहूदियों के बिषय में बहुत भविष्य बाणीयां कहीं जैसे यह कि जो यहूदियः के देश में बाबुल वालों के हाथ से बचे वे बहुत सी बिपतों में पड़ेंगे और सिंह से बच के सतारोहन के घेरे में पड़ेंगे उनमें से एक तिहाई काल से नाश होगी दूसरी तिहाई तलवार से काट डाली जायगी तीसरी तीहाई बची हुई तीन तेरह होके चौबाई बयार की नाईं चारों ओर उड़ जायगी और तलवार सर्बत्र उसका पीछा करेगी [१] ये सब बातें थोड़ही दिन पीछे बाबुल की सेना के आने और यरोशलीम के नष्ट होने से इन लोगों के बिषय में पुरी हुईं

छठवें दानियाल ने इनताकस राजा के यहूदियों के मंदिर को अपवित्र करने और उसके मरने और उसका समस्त वृतांत बरन उसके स्वरूप और स्वभाव की बातें भी चार सौ आठ बरस पहिले प्रत्यक्ष होने से बतलाईं [२] उसने एक भविष्यबाणी भी कही कि रूमी यरोशलीम को नष्ट करेंगे और यहूदियः और यरोशलीम नष्ट हो जायेंगे और यहूदियों के मताचार और बिधि व्यावहार और बलिदान इत्यादि जाते रहेंगे [३] दानियाल के

---

[१] इज़ीकल ४ और ५ पर्ब्ब [२] दानियाल ८ और ११ पर्ब्ब [३] अशिया १९ पर्ब्ब यरमिया ४३ पर्ब्ब ८ पद से १३ तक और

छः सो बरस पीछे उन सब बातें के पूरी होने के सारे तिथग्रंथ साची हैं होशिया ने जिसे दो सहस्र पांच सो अस्सी बरस बीते यहूदियों के इस समय के समाचार की भविष्यबाणी किई है कि वे जातिगणें के मध्य बहेत होंगे * ये सब भविष्यबाणी यहूदियों के बिषय में हैं इन के उपरांत और भी उन पुस्तकों में बहुत हैं कि सब मिल कर दो सो के लग भग होंगी

उन लोगों के बिषय भविष्यबाणी जो यहूदियः के चारोंओर रहते थे

जो लोग कि यहूदियः देश के चारों ओर रहते थे उन के बिषय में उन पुस्तकों में बहुत भविष्यबाणी हैं यदि हम सब का बर्णन करें तो एक बड़ी भारी पुस्तक हो जायगा इस लिये यहां हम थोड़ा सा संक्षेप में बर्णन करते हैं

१ असुर नगर के बिषय * यह बहुतही सुंदर मनोहर मरणीय नगर यहूदियः देश के समीप मडिट्रेनिअन समुद्र के तीर था उस नगर निवासियों के सुख बिलास के ठीक समय में कि उन्हें किसी रीति की कुछ चिंता भय नहीं और उनका कोई द्रोही दुर्जन न था उस समय के भविष्यद्वक्तों ने सैकड़ों बरस पहिले उसपर धावा होने और उसके बार बार घेरे जाने और लूट जाने

४६ पर्ब्ब और इज़ीकल २९ पर्ब्ब से ३२ तक

ग्रैार ग्रंत को समस्त नष्ट होने के ठीक २ संदेश दिये [१] ग्राज कल यह नगर उजाड़ ग्रैार खड़हर है कभी कभी कुछ मच्छुये ग्राके उसमें रहते हैं ग्रापदा के जाल में उस नगर के फंसने का संदेश जो परमेश्वर ने भविष्यद्वक्तों के द्वारा कहा था पूरा ज़ग्रा कि परमेश्वर ने उस नगर को कहा था कि मैं तुझे पत्थर के समान करडालोंगा तू मच्छुग्रों के जाल फैलाने का स्थान ठहरेगा [२] ग्रब यह नगर तुरुकों के हाथ है वे उसकी ग्रगिली बड़ी बस्ती ग्रैार ग्रब की ग्रत्यंत उजाड़ ग्रच्छी रीति से जानते हैं

दूसरा मिसर देश के बिषय में * सब जानते हैं कि ग्रागे यह बज़त हो बसा ज़ग्रा देश था कि उसमें ग्रठारह सहस्र बड़े बड़े नगर थे ग्रैार उसके बिभव बिभूति के समय में उसके ग्रनेक प्रकार के बार बार के ग्रदल बदल ग्रैार ग्रंत में समस्त नष्ट हो जाने के संदेश जिसे ग्राज तीन सहस्र बरस बीते भविष्यद्वक्तों से ठीक २ मिले [३] भला उस समय में कैान चिन्ह थे जिनसे उन्हों ने जाना हो कि इतना बड़ा राज ग्रैार

---

[१] दानियाल ९ पर्ब्ब २६ ग्रैार २७ पद [२] ग्रशिया २३ पर्ब्ब ग्रैार इरमिया २५ पर्ब्ब ग्रैार इज़ीकल २६ ग्रैार २७ ग्रैार २८ पर्ब्ब ग्रैार ग्रामुस १ पर्ब्ब १ ग्रैार १० पद ग्रैार जकरिया ३ ग्रैार ४ पद ९ पर्ब्ब [३] इज़ीकल २६ पर्ब्ब ३ पद से ५ तक

अदन सी विकसित भूमि इतने बरस के लिये औरों के हाथ में रहेगी और वहां के लोग सेवकाई से न छुटेंगे और न उनमें से कोई राजा होगा इस रीति वुह भविष्यवाणी ठहरी और इस प्रकार से वह पूरी ऊई कि पहिले बाबुल फिर फारस के लोग उसपर चढ़ाई करके जयवंत ऊए इसके पीछे सिकंदर फिर रूमी अंत को मुसलमानो ने जिनके हाथ में इन दिनों वुह देश है उस पर जयमान ऊए और ठीक हिज़कील भविष्यद्वक्ता की अदभुत बातों के समान तीन सहस्र बरस से मिसर के राज बंश में से कोई राजा न ऊआ [१] आज लों उस अटल महाराजाधिराज की आज्ञा चलती रही वाह्ड़े क्याही यह भविष्यवाणी है जिसके सोचने से बुद्धि दुरदर्शी मंद और समझ बेगवंत पंगुही जाती है यह केवल परमेश्वर अंतर्जामी और आदि अंत के जाननिहार की ओर से है

६ हबश देश जो मिसर से मिला है * उसका वुह समाचार जो आनेहारा था अशिया और हिज़कील भविष्यद्वक्ता ने प्रगट किया [२] तिथ ग्रंथ से यह निश्चय होता है कि पहिले असूरिया वालों फ़ेर फारसियों ने उस देश को लूटा और मसीह के जन्म के होने के लग

---

(१) हज़ीकल ३० पर्ब्ब १३ पद [२] अशिया १८ और २० पर्ब्ब हज़कील ३० पर्ब्ब ४ पद से ६ तक

भग रूमियें ने फिर मुसलमानों ने उस पर चढ़ाई कर के उसे लूटा

४ निनिवी नगर के बिषय में यह नगर अशूरिया देश की राज धानी था उसमें छ लाख से अधिक लोग रहते थे और तीन दिन के मार्ग का उसका बिस्तत था और उसकी चारें ओर की भीति पचास गज़ ऊंची और तीन गाड़ी चौड़ी और उस पर सा सा गज़ के उचे २ पंद्रह सा गर्गज और सैंकड़ें फाटक थे बलि रे तेरी बस्ती जिसके साम्ने सारे संसार की बस्ती एक पासंग है फिर उसके बिभव बिभूति के समय नाह्म और जफनाया ने उसकी नष्टता का संदेश दिया और यह भविष्यबाणी ऐसी पूरी ऊई कि निनिवी नगर का चिन्ह ऐसा मिट गया कि नहीं जान पड़ता कि कहां था * नाम निशान एक नहीं रहेऊ * जस प्रभु बिमुख के फल तस भेऊ

५ बाबुल नगर के बिषय में * यह निनिवी नगर से भी बऊत बड़ा और सुंदर और द्रब्य से पूर्ण था यदि उसे इंद्र पुर कहिये तो योग्य है और बैकुंठ धाम का शोभा दायक और छबी उपजायक कहिये तो ठीक है नई सृष्टि नहीं परंतु बड़ी सृष्टि उसे कहा चाहिये उसके बिषय में यह भविष्य बाणियां हैं कि [१] फारसवाले आके उसे लेलेंगे और फरात जो उसके चैादिशा बहता है

---

(१) यशैया १३ पर्ब्ब और इरमिया ५१ पर्ब्ब

सूख जायगा [१] और वुह नगर किसी पर्व्व के दिन जब उसके राजा और अध्यक्ष और प्रधान सब एकट्ठे होके मत्त बत होंगे अचानक ले लिया जायगा सो जिस समय फारस के राजा कोरस ने फुरात नदी को काट के फेर दिया और नगर को ले लिया और वहां के राजा को सहस्रों अध्यक्ष प्रधान समेत बध किया उस घड़ी यह सब भविष्यबाणी रती रती पूरी ऊई जैसे फारसियों के तिथ ग्रंथ से प्रगट है फिर अशिया भविष्यद्वक्ता के पुस्तक के १४ पर्व्व में लिखा है कि वुह नगर बगले का घोला और झील बन जायगा उस नगर के इस समय की दाशा से यह सब आगम की बातें निश्चय ऊईं यरमिया का ५० पर्व्व ३९ और ४० पद और ५१ पर्व्व और २६ और ३७ और६४ पद और आशिया का १३ पर्व्व १९ पद से २२ मिलान करो

६ दानियाल ने चार बड़े राजाओं का समाचार जिन में तीन होने को थे बर्णन किया अर्थात बाबुल और फारस और यूनान और रूम के राज्य का * इन बातों का पूरा होना उन राजाओं के तिथ ग्रंथों से निश्चित है

तौरेत और ज़बूर और भविष्यद्वक्तों के पुस्तकों में से ईसा मसीह के बिषय में भविष्यबाणी

---

(१) अशिया ४४ पर्व्व २७ पद इरमिया ५० पर्व्व ३८ पद और ५१ पर्व्व ३६ पद

इन पुस्तकों में मसीह के विषय भविश्यवाणियां बहुत हैं सो हम उन में से थोड़ीसी चुन कर लिखते हैं

पहिले जाना चाहिये कि मलाखिया जो पिछला भविश्यद्वक्ता था मसीह के जन्म लेने से चार सै। बरस पहिले था श्रोर तैारेत श्रोर ज़बूर श्रोर भविष्यद्वक्ता की सब पुस्तकें मसीह के दे। सै। पचीस बरस पहिले मिसर के राजा तलमी की श्राज्ञा से इबरानी भाषा से यूनानी बोली में उलथे किये गये श्रोर वे इबरानी भाषा समेत श्राज लें। यहूदियों श्रोर ईसाइयों पास बने हैं सो श्रनहोना है कि उसमें कुछ श्रदल बदल हुश्रा हो क्योंकि यदि ईसाई श्रपनी श्रोर से कुछ पद मसीह के बिषय बना कर तैारेत श्रोर ज़बूर श्रोर भविश्यद्वक्तों के पुस्तक में मिला देते तो यहूदी श्रवश्य उनकी चोरी पकड़ते श्रोर यदि कुछ यहूदी ऐसा करते तो ईसाई श्रवश्य करके उन्हें चोर बनाते क्योंकि दोनों में ऐसी बैर श्रोर बिरुद्धता है कि ऐसीं बातों में मेल मिलावट श्रनहोनी है भला श्रब उन पुस्तकों से थोड़ी सी भविष्यबाणी मोती के दानों के सादृश्य मसीह के विषय जो मोती श्रनमोल है श्रोर रत्न बहुमूल्य हैं चुन कर निकालते हैं

पहिले श्रर्थात मसीह के उत्पन्न होने का संदेश याक़ूब ने सत्रह सैा बरस श्रागे दिया श्रोर उसका समय बतला या [१] कि जब लों सैलूह न श्रावे यहूदा से राज छूड़ी

---

(१) उत्पत्ति ४९ पर्ब्ब १० पद

और उसके वर्ण से अध्यक्ष जाता न रहेगा अब अठारह सौ बरस बीते कि यहूदियों से कोई अध्यक्ष अथवा कोई राजा न हुआ और वे दूसरे लोगों में फैल जाके उनके बश में रहे याक़ूब को समस्त बंश की वंशाउरी में बड़ी हानि हुई फिर जब कि सब यहूदी मानते हैं कि सैलूह से तात्पर्य मसीह है तो अवश्य उस भविष्यबाणी से निश्चय हुआ कि मसीह के आने को अठारह सौ बरस से अधिक बीत गये

दूसरे जबरईल ने दानियाल को संदेश दिया

कि तेरे लोग और तेरे नगर पर अपराधों के मिटाने और पापों के दूर करने और दुष्टता की प्रायश्चित और सर्बदा को धर्मशीलता और दर्शन और आगम पूरा करने और पवित्र मय मसीह के आने के लिये सतर सप्ताह ठहराये गये [१] सो सोचेत होओ और जानो कि यरोशलीम के दोहराबनाने और बसाने की आज्ञा निकलने से प्रभु मसीह के आने तक बहतर सप्ताह होंगे कि सकेती के दिनों में गैल और भीत बनाई जायेंगी और बासठ सप्ताह के पीछे मसीह मारा जायगा पर अपने लिये नहीं * इन पदों के बर्णन का बड़ा बिस्तार है पर हम थोड़ा सा संक्षेप में लिखते हैं कि उस समय से कि आरतक ज़रकसीस राजाधिराज ने नहमिअः भविष्यद्वक्ता

(१) दानियाल ९ पर्ब्ब २४ पद से २६ तक

को यरोशलीम बनाने और बसाने की आज्ञा दिई मसीह के क्रूस पर टांगे जाने तक चार सौ नब्बे बरस होते हैं जो उन पदों के अभिप्राय से ठीक २ मिलते हैं और उनसे यह भी निश्चित होता है कि मसीह पापों के लिये प्रायश्चित होगा और आगम समाप्त करेगा और इंजील के पीछे कोई स्वर्गीय पुस्तक न होगा * तीसरे हज्जी और मलाखी भविष्यद्वक्ता ने संदेश दिया [१] कि दूसरे मंदिर के रहते जो यहूदियों के आने के पीछे बना था मसीह आवेगा अब एक सहस्र सात सौ बरस से अधिक हुए कि वुह जड़ मूल से खोदी गई और उसका नाम भी न रहा

इन दो बातों के भविष्यबाणी के बिषय में

अर्थात मसीह कहां और किस के घराने में जन्म लेगा मीका भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर की ओर से कहा [२] कि वुह बैतलहम में यहूदा के घराने से उत्पन्न होगा और उसकी साक्षी इंजील में है [३] दाऊद के घराने की एक कुंआरी से उसके उत्पन्न होने और आश्चर्य दिखाने और उसके दीन होने और यहूदियों के अग्राह्य होने अंधों को आंख लंगड़ों को पांव देने रोगियों को

---

(१) हज्जी २ पर्ब्ब ६ पद से ९ तक और मलाखी ३ पर्ब्ब १ पद (२) मीका ५ पर्ब्ब २ पद (३) मत्ती २ पर्ब्ब १ पद इबरानियों १ पर्ब्ब १४ पद

चंगा करने ओर कंगालों को इंजील सुनाने का बर्णन देखो उत्पत्ति के पुस्तक का ३ पर्ब्ब १५ पद अशिया भविष्यद्वक्ता के पुस्तक ७ पर्ब्ब १४ पद ओर ९ पर्ब्ब ६ ओर ७ पद ओर ११ पर्ब्ब १ ओर पद ओर ८ पर्ब्ब १४ ओर १५ पद ओर ४२ पर्ब्ब ओर ६० पर्ब्ब १० पद

आशिया भविष्यद्वक्ता के पुस्तक के ५३ पर्ब्ब में मसीह की बहुत ही भविष्यबाणी हैं कि वुह अत्यंत दीन हीन ओर दुखी ओर दुखियारा होगा ओर बड़ी धीरता से उन सब क्लेशों को सहेगा ओर दुष्ट के संग मारा ओर धन मान से गाड़ा जायगा ओर फिर जी उठकर पापियों को क्षमा करावेगा ओर बहुत लोग उस पर बिश्वास लावेंगे वाह्विड़े क्याही कंगाल दो लोक में धनी करनेहारा क्याही दीन हीन हरलोक पर लोक की मर्यादा देनेहारा ओर क्याहो दुखी ओर दुखियारा सब के दुख संकट को दूर करने वाला ओर क्याहो संतोषी सब के संतोष का फल देनेहारा ओर क्याही क्षमा करनेहारा सब के पापों को मिटा देनेहारा ओर अपने बिश्वासियों को स्वर्ग पावन में पहुंचाने हारा है यदि कोई पवन के घोड़े पर चढ़के पृथिवी से आकाश तक जावेगा पर उसके ऊंच पद का पता कभी न पावेगा ओर बहुतेरी सीढ़ी आकाश पर लगावेगा परंतु अपनी समझ को उसके बड़े ऐश्वर्य तक कभी न पहुंचावेगा

☞भविष्यद्वक्तों के पुस्तकों के ओर बहुत ठौरों में मसीह

के बड़त संदेश हैं जबूर में लिखा है कि उसका एक शिष्य उसे पकड़वा देगा और दूसरी ठौर म लिखा है कि यद्यपि वुह मरके गाड़ा जायगा पर सड़ने का नहीं परंतु तीसरे दिन जी उठके स्वर्ग पर चला जायगा और स्वर्ग पृथिवी की समस्त सामर्थ पाके अपने पिता के दहिने बैठेगा और सारे जगत पर प्रभुता करेगा [१] जो ऊपर की बर्णन किई ऊई भविष्यबाणियां इंजील से मिलान करे तो उनके पूरी होने की बात अच्छी रीति से समझेगा

फिर यह भी लिखा है कि मसीह पुराने नियम अर्थात मूसा के समस्त व्यवहार और रीति की बातें जो उसके समय से मसीह के समय तक यहूदियों के लिये स्थापित थीं बंद कर देगा ११० जबूर में लिखा है कि वुह मलकिसिदक के समान होगा अर्थात राजा और याजक दोनों होगा इस्से जाना जाता है कि हारून के बंश जो याजक होते थे मसीह के आने से उस अधिकार के पद से रहित हो गये क्योंकि मसीह आप याजक

---

(१) जबूर ४१ पर्ब्ब ९ पद यूहन्ना १३ पर्ब्ब १८ और २६ और २७ पद होशिया ६ पर्ब्ब २ पद १ करंतियों १५ पर्ब्ब १ पद से १६ तक जबूर ११० पर्ब्ब असिया १ पर्ब्ब ७ पद मत्ती २७ पर्ब्ब १८ और २० पद लूका २४ पर्ब्ब ५० और ५१ पद प्रेरितों की क्रिया १ पर्ब्ब ९ पद

ज़ुआ फेर मलाखी भविष्यद्वक्ता कहता है कि सूर्य के उ-
दय से अस्त लों हर स्थान में लोग सुगंध जलावेंगे और
पवित्र बलिदान चढ़ावेंगे इस्से भी निश्चय ज़ुआ कि म-
सीह के आने से तौरेत की रीति और व्यहार बंद हो
गये क्योंकि उस समय तक केवल यरोशलीम ही में सुगंध
जलाना और बलिदान करना योग्य था (१)

---

(१) मलाखी १ पर्व्व ११ पद जबूर ११० अरमिया ३१ पर्व्व
३१ पद से ३४ तक दामियाल ९ पर्व्व २४ पद ज़करिया ६ पर्व्व
१२ पद से अंत तक इस बात में और उस में जो ऊपर १९७ और
१९८ और १९९ पृष्ठ में लिखा है सोच ने से समझ पड़ता है
कि तौरेत और इंजील के बीच विरुद्धता नहीं और यह कि इसके
आने से वुह खंडित नहीं हो गई बरन उसने सारी सिद्धता और
पूरा प्रमाण प्राप्त किया इसीं प्रकार ईसाई तौरेत इत्यादि को
इंजील के बरा बर परमेश्वर का पुस्तक समझ कर पढ़ते और उस
में ध्यान करते और ईसा मसीह के चिन्ह बिचार करने और परमे
श्वर की आज्ञा को और नूह और इबराहीम और दूसरे साधुओं
के जिन की चर्चा उन पुस्तकों में है समाचार के सोचने से बज़ुत
उपदेश प्राप्त करते और उन पवित्र पुस्तकों को बज़ुत ही गुण
दायक समझते हैं पर उनमें जो व्यवहारें कि निज करके यहू
दियों के लिये ठहराये गये थे और किसी लोगों के लिये नहीं
उन पर चलने से ईसाइयों को कुछ प्रयोजन नहीं निदान तौरेत
और इंजील में इतना बीच है जितना लड़के और सयाने में पर
कौन कहेगा कि लड़का सयाना होने से नाश हो गया वुह नाश

सच है सूर्य के साम्हने दीपक का क्या काम और सागर के होते कूप से क्या बिश्राम इस लिये जब मसीह आप बलिदान हो कर तौरेत के व्यवहारों और रीतिन को पूरा कर चूका तो उसके पीछे मंदिर और यज्ञ बेदी ढाई गई और तब से फिर न बनी और यहूदी आज लों उस देश और यरोशलीम से निकाले हुए हैं और होनी नहीं कि वे किनान देश से बाहर होके तौरेत की आज्ञाओं को प्रतिपालन करें क्योंकि उसकी बहुत बातों पर चलना उनके किनान ही देश में रहने से है

मसीह के बिषय में और बहुतसी भविष्यबाणी हैं जिन का बर्णन यहां नहीं हो सक्ता * ऊपर के भविष्यबाणियों का संग्रह तौरेत और भविष्यद्वक्ता के पुस्तकों से है और उनसे प्रगट हुआ कि उत्पति होने के समय और उसके जीवन काल और उसके सारे कार्य और उसके आश्चर्य और उपदेश और उसके क्रूस पर टांगें जाने और मारे जाने और जी उठने और स्वर्ग पर जाने और पापों के छमा कराने का और सकल जगत में अपने मत फैलाने

नहीं परंतु सिद्ध हुआ और जो कोई उस सयाने को प्यार करता हुए न केवल उसके सयाने होने को परंतु उसकी लड़काई के समाचार को भी तब मन से सोचेगा वैसाही तौरेत और इंजील को समझा चाहिये

का सकल संदेश उन पुस्तकों में है यहां लों कि यह बात वि-
दित है कि उन पुस्तकों में से चुन कर मसीह का वृत्तांत लिख
सके हैं यदि किसी एकही भविष्यद्वक्ता से ये भविष्यबाणीयां
ऊई होतीं तोभी बड़ी अचरज की बात होती पर किस
भांति अचरज की बात न हो जब कि समझा जावे कि
एक दो भविष्यद्वक्ता से नहीं परंतु बऊत से ऊए जो एक
साथ एक समय में न थे बरन चार सहस्र बरस के येर
फेर में एक पर एक मेंह के बूंदों के येसे थे

फिर यदि किसी के मन में यह संदेह उपजे कि ये
समस्त भविष्यबाणियां मसीह के विषय में नहीं तो इन
बातों के ध्यान करने से उसकी यह संदेह जाती रहेगी

१ यह कि उन सब पुस्तकों में दो चार को नहीं परंतु
एक हीं मुक्तिदाता के आने का संदेश है

२ यह कि वुह मुक्ति दाता कुंआरी से उत्पन्न होगा

३ यह कि याक़ूब के पुत्र यहूदा के बंश और दाऊद
के घराने से जन्म लेगा

४ यह कि यहूदियः के देश बैतलहम नगर में उत्पन्न
होगा

५ यह कि दूसरे मंदिर के रहते प्रगट होगा

६ यह कि हर भांति के आश्चर्य कर्म देखावेगा

७ यह कि वुह यहूदियों का अग्राह्य होगा और उसे
उसका एक शिष्य पकड़ावेगा

८ यह कि उसके हाथ पांव छेदे जावेंगे और बुरों के संग क्रूस पर टांगा जाके मारा जायगा फिर तिसरे दिन जी उठेगा

९ यह कि उसके नाम से उपदेश अन्य देशियों में किया जायगा और वुह उनकी आशा होगा

इन सब बातों के विषय में पर्ब्ब और पदों के चिन्ह ऊपर लिखे गये सो जिसमें यह सब बातें पूरी ऊई हों वही मसीह है जो आनेहारा था और ये सारी बातें ईसा नासरी में पूरी ऊईं किसी दूसरे में नहीं सो निसंदेह मसीह जो आनेहारा था यही है

भविष्यवणियें जो इंजील में हैं जिस प्रकार कि तौरेत और जबूर और भविष्यद्वक्तों के पुस्तक में भविष्यबाणियां अनगणित हैं वैसाही इंजील में भी बऊत हैं जिनका बर्णन कर्ना बड़ा बिस्तारित है इस लिये हम उनमें से थोड़ी सी चुन कर यहां लिखते हैं

पहिले मसीह ने बारंबार अपने सुखार बिंदु से अपने मरने का स्थान और रीति और अपने बधिकों के चिन्ह पहिले से बतलाया कि उसका एक शिष्य यहूदा असकर यूती उसे पकड़वा देगा और दूसरा शिष्य पतरस उससे मुकर जायगा और सब चोर की रीति भाग जायेंगे [१] क्या

---

(१) मत्ती १६ पर्ब्ब २१ पद मरकस १० पर्ब्ब ३३ और ३४ पद मत्ती २० पर्ब्ब १८ पद और २६ पर्ब्ब यूहन्ना ६ पर्ब्ब ७० और ७१ पद १६ पर्ब्ब ३२ पद

ही आश्चर्य की बात है कि उसने अपनी सर्बज्ञता से अपने मरने का बिध ठीक २ बतलाया कि ऊपर उठाया जायगा अर्थात क्रूस पर मारा जायगा [१] जाना चाहिये कि क्रूस पर लटकाना यहूदियों की रीति न थी परंतु रूमियों की आश्चर्य यह कि जब रूम के अध्यक्ष पंतूस पीलातूस ने चाहा कि उसे यहूदियों के हाथ में सैांप देय कि वे उसको अपनी रीति पर उसे मारडालें अर्थात पत्थरवाह करें तब उन्होंने नाह किया [२] और यों बिना जाने मसीह के बचन पूरा करने के वे आप ही कारण ऊए जो कोई इस बात को बिचारेगा कैसा ही कठोर हो पर वुह अपना पत्थर सा मन मोम करके उसमें नाह न करेगा परंतु मसीह के बचन की सच्चाई का हां करेगा

दूसरे ईसा ने अपने जी उठने का सब समाचार आगे से पृथक पृथक बतलाया और कहा कि मैं तीसरे दिन जी उठोंगा और तुम से पहिले जलील देश को जाऊंगा* इसमें मृतक जीवों के जीते जी के बलिदान का क्या ही साज समाज किया है

तीसरे मसीह ने प्रेरितों पर पवित्रात्मा के उतरने और उन्हें आश्चर्य देखाने की सामर्थ देने की भविष्यबाणी कही

(१) मत्ती २० पर्ब्ब १९ पद और यूहन्ना १२ पर्ब्ब ३२ और ३३ पद (२) यूहन्ना १८ पर्ब्ब ३१ पद

चौथे उसने यरोशलीम के नष्ट हो जाने का आगम कहा कि वुह कब होगा अर्थात उस समय के लोगों के रहतेही और यह कि किन लोगों के हाथों होगा अर्थात रूमियों के जिन की सेना के झंडे में गिद्ध का आकार बना था कि यहूदी उसे अशुभ जान कर उस्को घिनाते थे फिर कहा कि मंदिर की ऐसी नष्टता होगी कि पत्थर पर पत्थर न छूटेगा और यह नष्टता की दशा कब लग रहेगी * मसीहके तीन सौ बरस पीछे रूम के राजा जोलीन ने जो इसाई मत से फिर गया था चाहा कि मसीह के आगम की बात खंडन करने के लिये मंदिर को फिर बनावे पर जब वुह बन्ने लगा तो उसकी नेव से इतने आग के गोले निकले कि उसके बनानेहारे छोड़ कर उड़ भागे और पत्ता हो गये कि उनका पता भी न लगा इस बात के सोचने से बुद्धि चम्पित हो जाती और समझ चक्रित उसका समाचार बक़त तिथ ग्रंथों में है निज कर के उसी राजा के परम मित्र अमीनियस मारसलियस नामे ने उसका वर्णन किया है

पांचवों मसीह ने आगम से कहा कि उसके शिष्य उसके नाम के कारण सताये और उनमें से कितने मारे जायेंगे सो यह आज लों पूरा होता चला जाता है योंही एक ठौर में उनको कहा कि देखो मैं तुम्हें भेड़ों की नाईं भेड़ियों में भेजता हों और फिर कहा कि नरक के फाटक मेरी कलीसिया पर दृढ़ न होंगे अर्थात मसीह

के लोगों पर शयतान और उसकी सेना जयवंत न होगी क्याही दृढ़ बचन और आश्चर्य्य का स्थान है कि यद्यपि मसीह ने अपने लोगों को मत के बिषय लड़ाई झगड़े से बर्जा तो भी उनके जय बिजय का वृतांत यों बर्णन किया कि वे बिना अस्त्र शस्त्र भी पराभव न होंगे बरन सब पर जयवंत होंगे भला यदि थोड़ी सी भेड़ें भेड़ियों में भेज दीजिये तो वे कब तक जीती बचेंगी पर देखो ये भेड़ें अठारह सौ बरस भेड़ियों में रही परंतु नाश न हुईं बरन भेड़ के रोम की नाईं दिन दिन बढ़ती गईं और प्रति दिन बढ़ती जावेंगी जबलों एक झुंड और एक चरवाहा न होगा अर्थात एक इष्ट और एक आस बिश्वास होगा सरिता जल और आकाश के तारों की नाईं ईसाई मत का संसार में फैलते जाना और बिदित और प्रसिद्ध होना केवल उसकी भविष्यवाणी का पूरा होना ही नहीं परंतु उसके बचन की सत्यता का भी एक दृढ़ प्रमाण संदेह भंजक है सोचा चाहिये कि बारह बपुरे मछुये अपढ़े और असमर्थ ने सर्बत्र फिर २ के इंजील सुनाया जैसा कि मसीह ने उन्हें आज्ञा दिई इसके अधिक मसीह ने उनसे खोल के कहा था कि इस जोखिम कार्य्य में तुम को सब कुछ छोड़ना होगा और हित मित तुम से अलग हो कर तुम्हारे बैरी बन जावेंगे बरन तुम्हारे प्राण के बधिक भी हो जावेंगे और तुम को मेरे नाम के लिये ऐसी बिपत्ति और कष्ट

उठाना होगा कि बर्णन नहीं हो सक्ता तो भी इस लोक में प्रतिफल की कुछ आशा न रखना और सब के आगे कहना कि केवल मसीह ही जगत का त्राण कर्त्ता है क्योंकि स्वर्ग के तले उसी का नाम प्रत्यक्ष हुआ जिस्से मनुष्य त्राण पावे और यह कि उसी के मत से यहूद का मत पूरा और दूसरे सब मत खंडित हो गये * और अचंभा यह कि जब वे उसका उपदेश सुनाने लगे तो पहिले ही दिन तीन सहस्त्र मनुष्य विश्वास लाये उसके पीछे और और देशों मे फिर २ कर बिन युद्ध लड़ाई और बिना अस्त्र शस्त्र के उपदेश किया और इतने मनुष्य बिश्वास लाये कि मसीह के स्वर्ग पर जाने के पीछे अस्सी बरस के लग भग पंटस और बैतिनिया के सुबेदार पिलनी ने अचेत होकर महाराजा के पास लिख भेज के आयसु चाही कि मैं लोगों के संग कैसा व्यवहार करों क्योंकि सब अपना अपना मत छोड़ कर इसाई होते चले जाते हैं सो उसके बिनय पत्र का उतार अब लों बना है उसने यह भी लिखा है कि हर एक बय के और हर एक पद के लोग स्त्री पुरुष के इसाई हो जाने के कारण मेरी सभा में दुहाई दिई जाती है और नगरों ही में नहीं परंतु बाहर की छोटी २ बस्तियों में भी यह मतसरिता की बाढ़ सा फैला जाता और देवल सूने हुए जाते हैं और लोग पुरानी चाल चलन को त्याग करते हैं और जो पशु कि बलिदान के लिये हाट में बिकने को आता है उनका गाहक

नहीं कोई ठहरता और न उन्हें कोई मोल लेता है जो कोई अपनी बिषय भावना तज के इस में कुछ ध्यान करे तो उसे जान पड़े कि यह कैसा सत मत है जिसके तेज ने इतने बड़े सुबेदार को अचेत और भय भीत कर दिया * यह मत ईश्वर ओर से भाई * जो नहिंमाने तासु खोटाई * कहों सत्य यह बचन पुकारी * सादर सुनऊ सकल नर नारी * बड़े अचंभे की बात यह है कि उन्हों ने जो उन दिनो में ईसाई ऊये चले जाते थे सो नये प्रकार के बिध व्यवहार को अंगिकार किया और उनकी धन संपत्ति घर गृह सब लूट पाट गये उनके प्राण छः पांच में पडे बरन लाखों मारे गये और उनकी दशा ठीक उस मनुष्य की सी ऊई जो हिंदुस्थान में राजाओं के समय ईसाई हो जाता इस मत पर यही दृष्टांत कहा गया कि जैसे मूसा ने एक जलती झाड़ी देखी कि वुह जल नहीं जाती वैसा ही उस मत की अवस्था ऊई कि न आग जला सके न पानी डुबा सके न मनुष्य घटा सके *

भविष्यबाणी के विषय ऊपर की बातें बस और बऊत है इंजील की पत्रियों में निज करके प्रकाशित पुस्तक में और बऊत सी भविष्यबाणियां हैं पर यहां उनके बर्णन का कुछ प्रयोजन नहीं निदान ईसाई मत की भविष्य बाणियों का चिन्ह सूर्य सा प्रकाशित है बर्णन के दीपक की कुछ आवश्यकता नहीं उनकी आदि तो आदम के समय से है और वे जगत के अंत लों भी सब लोगों की

अवस्था निज करके परमेश्वर के लोगों की अवस्था का संदेश देते हैं इन सब का संग्रह माना एक वृक्ष है जिस की जड़ पृथिवी के तले और उसकी फुनंग आकाश पर पऊंची और उसकी डालियां पूर्ब से पश्चिम और दक्षिण से उत्तर तक पऊंची और समस्त पृथिवी पर छाया किये हैं जो कोई उनका छाया सिरों से न ग्रहण करेगा वुह परलोक के तिक्षण आतप में तड़प कर नरक की आग में जा गिरेगा और जलभुन कर भस्म हो जायगा

अब हम ईसाई मत को सत मत के लक्षणों से निरूपण कर चुके और उसके चोखे स्वर्ण के बिचार की कसैाटी पर कस चुके और दृढ़ प्रमाण से निश्चित ऊआ कि उसमें सत मत के सब लक्षण साक्षात हैं * इस मत से यह निश्चय ऊआ कि परमेश्वर पवित्र और न्यायीं और दयाल और सत्यबादी सर्ब सामर्थी अद्वैत और सम भाव है इस मत में मनुष्य और सृष्टि की उत्पत्ति का और उसके उत पन्न होने के कारण का भी यथार्थ बर्णन है और मनुष्य और परमेश्वर के बीच क्या क्या संबंध है और परमेश्वर की न्याय और पवित्रता में बाधा होने बिना बरन उस की महिमा और महातम और प्रशंसा प्रगट करने के संग मनुष्य यद्यपि पापी होने के किस रीति मुक्ति पावेगा निदान इस में सच्चे मत की छाप अर्थात आश्चर्य और भविष्यबाणियां मेघ के बूंद और सूर्य की किरण के बऊतायत से हैं सो इस रीति से यह तात्पर्य निश्चित ऊआ कि

वुह सच्चा और परमेश्वर की ओर से है और यह भी कि कोई दूसरा मत सच्चा नहीं परंतु सब झूठ और मिथ्या है क्योंकि इस में सैकड़ों ठौर लिखा है कि ईसा नाम छोड़ दूसरा नाम स्वर्ग के तले नहीं जिस्से मनुष्य उद्धार पा सके इस लिये उसको जो अपने हर लोकपर लोक की भलाई और कल्याण चाहता अवश्य है कि और सब का भरोसा छोड़ के मसीह से मुक्ति की आशा रखे जैसे कि लोग आत्मा से जीवन की आश रखते हैं क्योंकि मसीह ने आप कहा कि जो मुझ पर बिश्वास न लावेगा उस पर दंड की आज्ञा होगी सो हे प्रिय मेरी बात प्रिय समझ कर आनेहारे क्रोध से भागो इंजील के मत को ग्रहण करो और मसीह के सरणागत होओ कि आत्मा और कलीसिया कहती है कि आ और जो सुनता हो वुह दूसरों को कहे कि आओ और जो पिया-सा हो आवे और जो कोई अमृत चाहे सेंत ले जावे

सो हे प्यारो तुम मन चित लगा के मेरी बातें सुनो और ध्यान करो और उन्हें अपने सच्चे बिश्वास से मान लो कि वे सब मनुष्य के लिये तन में प्राण और आंख में ज्योति की नाईं हैं जो कोई उन्हें ग्रहण करे सर्बदा के जी-वन और बिश्वास के प्रकाश को दोनों नेत्रों की ज्योति की नाईं एक संग एकट्ठे पावेगा नहीं तो मन का अंधा जी का मरा रह जावेगा उस के सन्ने और मान्नेहारे को

परमेश्वर दोनों लोक में कुशल और आनंद रखे और कृतार्थ और कृतकार्य करे

दूसरा खंड

पहिला अध्याय

बिवादों के उत्तर में

अब परमेश्वर की ओर से ईसाई मत का होना तो निश्चित हुआ क्योंकि वे सब लक्षण जो सत मत के बिषय उचित और योग्य हैं और सब लोग उन्हें मान भी लेते हैं उस में साक्षात हैं इस लिये जो मुक्ति का ढूंढने हार हो उसे उचित है कि इस मत को निश्चय करके ग्रहण करे यद्यपि इस में कोई बात ऐसी होयें कि जो मनुष्य की समझ से बाहर अथवा मन मान न होयें तो भी उस पर बिश्वास लावे और नाह नूह न करे जिस रीति से वे लोग जो परमेश्वर का होना मानते हैं उसकी प्रभुता सारे जगत पर और उसकी आज्ञा के मान्ने को अंगिकार करते और उसका न्यायी और बिचारी होना भी निश्चय करते हैं यद्यपि बहुत बातें ऐसी प्रगट होतीं कि जिन्हें न वे समझ सक्ते और न उन्हें मन मान करते इसी रीति इस मत को भी यद्यपि इस की सब बातें न भावें और समझ में भी न आवें तो भी ग्रहण किया चाहिये इसके परे ईसाई मत में सोचने से न केवल यही प्राप्त

होता है कि वुह सत मत है और इस रीति से और सब मत बांधन और बनावट हैं बरन इस मत की उत्तमता और बिशेषण भी प्रति दिन अत्यंत अधिक मन में समावेगी और अच्छी से अच्छी बात हृदय में आवेगी फिर जब वुह समय पहुंचेगा कि सब उसे ग्रहण करेंगे तब लोग पवित्र बनेंगे और इस जगत के चौगान वैकुंठ की फुलवारी की नाईं होंगे सब मनुष्य परमेश्वर से प्रेम रखेंगे और परोसी को अपने समान प्रिय और प्यारा समझेंगे कि लिखा हैं (१) वे अपने खड्ग को तो उफालें और अपने भालों के हंसुये बना डालेंगे और एक दूसरे पर तलवार न चलावेगा वे फिर समर करने को कभी न सीखेंगे

अब ईसाई मत की उत्तमता प्रगट करने से पहिले उचित है कि कितनी बिवादों और छेड़नेहारों का उत्तर देयें * पहिला बिवाद ईसाईयों के मांस खाने और मद पान करने के बिषय में बिदित है कि हिंदू मांस के खाने और मुसलमान मद के पान करने पर ईसाई-यों से बाद बिवाद करते हैं सो जब कि पहिले ही नि-श्चित हो चुका कि हिंदू और मुसलमान दोनों का मत परमेश्वर की ओर से नहीं है बरन उसके बिरुद्ध तो ऐसों का बिवाद भी उनके मत ही के ऐसा होगा इसे

---

(१) अशिया २ पर्ब्ब ४ पद

छोड़ चार वेद और छः शास्त्रों से जो हिंदुओं के मतों का जड़ मूल हैं निश्चय नहीं होता कि मांस खाना और मद पान करना बर्जा है तब वुह उनका यह बाद बिवाद करना कहां से आया ऐसी आज्ञा सारे इंजील में कहीं नहीं कि तुम मांस खाओ अथवा न खाओ फिर यदि खाया भी तो कुछ अपने सत मत से विरुद्वता न किई क्योंकि लिखा है (१) कि परमेश्वर की हर एक उत्पन्न किई ऊई बस्तु अच्छी है और कुछ अग्राह्य के योग्य नहीं यदि धन्यवाद से लेवे और जितने जीव जंतु और वृक्षादिक हैं परमेश्वर ने मनुष्य को उनका खामी बनाया मनुष्य की आत्मा छोड़ कोई आत्मा इस संसार में अविनाशी नहीं इस लिये मनुष्यों को मांस खाना पाप नहीं और न उसके न खाने में भी कुछ पुण्य है इसके परे सारे संसार में कोई मनुष्य नहीं कि जो पशु पंछी के खाने बिना जी सके जैसे जल कि यदि एक घड़ी मनुष्य को न मिले तड़प जावे सर्बथा जीवों से भरा है और उसे सब हिंदू के भक्त पीते हैं यद्यपि सहस्रों जीवों का खाना निश्चय ऊआ यद्यपि मनु के शास्त्र में लिखा है कि साग पात में भी जीव है और उनको दुख सुख होता है तो भी हिंदू सब के सब खाते हैं और मत्स्य पुराण में लिखा है कि कौशिक मुनि के सात पुत्रों ने और गर्ग

---

(१) १ तिमताऊस ४ पर्ब्ब ४ और ५ पद

ऋषि की गौ के खा जाने से मोक्ष पाये परंतु जीवों का वृथा सताना और क्रोधित दशा में उन्हें मारना अथवा भूखे रखना अथवा उनसे अधिक परीश्रम कराना ईसाई मत से परमेश्वर के समीप पाप है और मदिरा जो दाख रस है परमेश्वर की उत्पन्न किई ऊई वस्तु मनुष्यों के लिये है परंतु उसे पान करके मत्तवत और मद माता होना सर्वदा बर्जित है और जो मदिरा पान करके अ-चेत हो जाते हैं वे इस मत से सर्वथा पापी और नरक के योग्य हैं फिर यह बात तो पहिले ही निश्चय हो चुकी कि और मतों के बिरुद्व ईसाई मत केवल एकही देश के लोगों के लिये नहीं परंतु समस्त संसार के लिये है फिर ध्रुव के समीप कितने देशों में जहां थोड़ा अन्न उप-जता है अथवा कुछ भी नहीं उत्पन्न होता वहां के रहने हारे यदि मांस न खावें तो किस भांति जीवें इस लिये ईसाई मत उन बस्तुन का जिन्हें परमेश्वर ने उत्पन्न किया प्रमाण से खाना और पीना नहीं बर्जता बरन हर एक ईसाई को कहता है (१) कि तुम खाते हो और पीते हो और जो कुछ करते हो सब कुछ परमेश्वर की महत्व के लिये करो इसके परे चेत रखा चाहिये कि यह मत कुछ निज करके शरीर के लिये नहीं और न खाने पीने के व्यवरा से कुछ बिषय रखता है बरन उसे आत्मा और

(१) १ करंतियों १० पर्व्व ३१ पद

मुक्ति से प्रयोजन है जैसे लिखा है (१) कि खाना पेट के लिये और पेट खाने के लिये पर परमेश्वर उसको और उनको नाश करेगा क्योंकि परमेश्वर का राज खाना पीना नहीं बरन धर्म शीलता और पवित्रता से आनंदता है *

सो ईसाई मत से यह भलाई है कि उस्से मनुष्य परमेश्वर की पहिचान प्राप्त करे और ऐसी बात सीखे कि जिस्से उसका मन शुद्ध और पवित्र हो जावे और वुह स्वर्ग में जाने के योग्य बने

यह तो सत्य है कि यहूदियों को परमेश्वर ने कई एक प्रकार की मांस खाने को बर्जा (२) और वुह बर्जना कुछ इस कारण से न था कि उसका खानेहारा अशुद्ध होगा परंतु इस लिये कि वे लोग और सब लोगों से न्यारे रहें और परमेश्वर अपना बचन उन्हें सौंपे और आप उन में अवतार लेवे फिर जब वुह बात पूरी हो चुकी तो उस रीति व्यवहार का प्रयोजन रहा इस लिये इंजील न कुछ मांस के खाने और मद के पीने को कहता है न बर्जता है खानेहारे और न खानेहारे दोनों वहां बराबर हैं और दोनों को अपनी करणी का लेखा देना होगा न अपने खाने पीने का * खान पान से

---

(१) १ करंतियों ६ पर्ब्ब १३ पद रुमियों १४ पर्ब्ब १७ पद (२) देखो १९३ और १९४ और १९५ और १९६ और १९७ १९८ पृष्ठ

सरगन नरका । मूरख वृथा हि करें कुतरका । करे जो कर्म मिले फल सोई * यह प्रसंग जानत सब कोई

परमेश्वर के पुत्र होने के विषय

फिर कितने कहते हैं कि परमेश्वर को कहीं पुत्र होता है ईसाई क्योंकर मसीह को परमेश्वर का पुत्र कहते हैं जब निश्चित ऊआ कि हिंदूओं के मत और मुसलमानों के मत में परमेश्वर के पहिचान का कुछ मार्ग नहीं तो फिर उनके मान्नेहारे क्या जानें कि परमेश्वर का कोई पुत्र है अथवा नहीं इसके परे जहां लिखा है कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है तो उस्से यह तात्पर्य नहीं कि वुह ऐसा पुत्र जैसे मनुष्यों का होता है सच पूछो तो ऐसी वात का कहना वैवल की रीति से सर्वथा ईश्वर अपनिंदा है और पाषंडता है बरन उसका तात्पर्य यह है कि जैसे पिता और पुत्र एकही देह और एकही रुधिर और एकही प्रकृति हैं वैसाही पिता और पुत्र की एकही ईश्वरत्व और एक ही गुण है फिर परमेश्वर समभाव है इस लिये जब कहा है कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है तो उस्से यह तात्पर्य कि वुह उसका अनादि पुत्र है क्योंकि इस मत के समान पिता भी अनादि और पुत्र भी अनादि है देवस्य सुत एक एवाद्वितीयः तो उसकी ईश्वरत्व के विषय यह सोचना कि वुह कब उत्पन्न ऊआ और कहां रहा निपट अनुचित और वृथा है * और

यदि यह संदेह है कि पिता और पुत्र और पवित्रात्मा तीनों एक अद्वैत परमेश्वर कैसे हैं अथवा क्योंकर परमेश्वर अवतार ले सक्ता है तो हमारा उत्तर यह है कि परमेश्वर ने यों ही आपको हम पर प्रगट किया उसकी कुछ यही इच्छा थी परंतु उसके होने की रीति जो बर्णन नहीं किया है इस लिये हम भी बता नहीं सक्ते (१) और न केवल यही बात गुप्त बात है परंतु ईश्वरत्व के और बहुत भेद अबलों हमारी समझ से गुप्त हैं उसे कौन बर्णन कर सक्ता है जैसे कि परमेश्वर किस रीति सर्ब दर्शी और सर्ब ब्यापी है कि एक ही समय में सारे जगत के बीच और उससे बाहर भी है यह बात यद्यपि सर्बथा ध्यान में नहीं आती तथापि ज्ञानी से अज्ञानी तक सब उसे निश्चय करके मानते हैं पर यदि उसके सर्ब दर्शी और सर्ब ब्यापी होने की रीति स्पष्ट पूछा जाय तो किसी मत का बिद्वान और बुद्धिमान बर्णन न कर सकेगा परंतु उसके उत्तर में मूरख और अज्ञान बनेगा इसी प्रकार जैसे यह बात कोई बर्णन नहीं कर सक्ता और निश्चय करता है क्योंकि ईश्वरीय भेद है वैसाही इस भेद को भी समझा चाहिये निदान ईश्वरत्व में तीन हैं

---

(१) जब परमेश्वर नें मनुष्य के शरीर के लिये साग पात अरु और जीवजंतु को ठहराया है तो मनुष्य की आत्मा के लिये परमेश्वर के अवतार का बलिदान होना कुछ आश्चर्य है

जो अद्वैत परमेश्वर है और उसका स्पष्ट बर्णन अथाह और अपार है

३ ईसाई मत के न फैलने के बिषय में

जो लोग कहते हैं कि यदि ईसाई मत सत मत है तो क्यों अबलों सारे जगत में फैल नहीं गया उसके उत्तर में हम कहते हैं कि कोई मत आज तक समस्त जगत में नह फैला इस लिये यदि यह लक्षण सत मत के लक्षण हैं कि सारे जगत में फैलजावे तो कोई सत मत नहीं है परंतु ऊपर के प्रमाणों से निश्चय हो चुका कि ईसाई मत सत मत है फिर ऐसे बिवाद का ईसाई मत से क्या प्रयोजन प्रभु ने अपने शिष्यों से कहा कि इंजील सारे जगत में सुनाओ सो यदि उन्हों ने इस आज्ञा के पूरा करने में आलस और ढील किया तो परमेश्वर से नहीं परंतु उन की ओर से है और यदि वैसा भी किया और लोग बिश्वास न लाये तो भी परमेश्वर की ओर से नहीं परंतु मनुष्यों की ओर से है इस पर एक दृष्टांत है जैसे कि हिंदूस्थान में कोई बड़ी मरी पड़ी हो और चीन के राजा के पास एक ऐसा औषध होवे कि जो कोई खावे तुरंत चंगा हो जाय फिर वुह हिंदुस्थान की दुर्दशा की सुधि पाके एक नाव औषध लादके हिंदुस्थान को भेजे और अपने सेवकों को अच्छी रीति से चिता देय कि यह औषध हिंदुस्थान के सब रोगियों को देना कि वे चंगे होवें

से। यदि वे सेवक मार्ग में कुछ बिलम्ब करें अथवा हिंदु-स्थान में पक्कंच कर भी औषध के देने में सिथलता करें तिस पर भी कितने मनुष्य औषध खावें और चंगे होवें और कितने न खावें और रोगी बने रहैं बरन उस रोग में नाश भी हो जावें तो इस में किस का दोष है कि सब चंगे न ऊए इस पर कोई न कहेगा कि यह चौन के राजा का दोष है परंतु सब यही कहेंगे कि सेवकों का दोष अथवा रोगियों की अाज्ञनता है फिर इस मत पर सब लोगों का अभी बिश्वास न लाना कुछ उसके झुठ-लाने का प्रमाण नहीं जिस रीति नास्तिक परमेश्वर का होना नहीं समझते और उसे कुछ बस्तु ही नहीं जानते तो उनकी ऐसी समझ से परमेश्वर नास्तिक नहीं होसक्ता फिर यदि कोई कहे कि जो परमेश्वर का होना सत्य होता तो सब के मन में उसका निश्चय होता यह क्या बात है इसी रीति से यदि कितने लोग ईसाई मत को सत मत न समझें तो इस मत में कुछ हानि होने की नहीं निदान जो कोई इसे ग्रहण करेगा अपने लिये अच्छा करेगा और जो उस मार्ग पर न चलेगा अपनी बाट में कांठा बोवेगा और सच तुच जो इतने लोगों ने ईसाई मत को ग्रहण किया तो यही आश्चर्य की बात है क्योंकि इंजील में कोई ऐसी बात नहीं जो शरीर के मन मान होय अथवा मनुष्य उस्से कुछ इंद्री का स्वाद पावे बरन इस के बिरुद्ध उस में सब आज्ञा ऐसी हैं कि जिन से बिषयभावना और

बुरी इच्छा तजी जाती है और घमंड और अहंकार दब जाता है और मनुष्य पवित्र बनता है फिर ऐसा कड़-वा औषध अज्ञान रोगी कब प्रसन्नता से खावेगा और अभी से जो इंजील सारे जगत में सुनाई जाती है यह भी ईसाई मत का एक बड़ा प्रमाण है क्योंकि इस्से वुह आगम की बात पूरी होती है जो प्रभु ईसा मसीह ने अठारह सौ बरस के पहिले कही थी और परमेश्वर करता है तो वुह समय भी समीप आता है और बिवाद करने हारों के मुख पर मौनता का ताला लगजाता है कि भविष्यद्वक्ता की सब बातें पूरी होती हैं और जिस भांति जल से समुद्र भराहुआ है वैसाही पृथिवी परमेश्वर के ज्ञान से भरपूर होजायगी (१)

दूसरा अध्याय

ईसाई मत की उतमता के बर्णन में

ईसाई मत में केवल यही उत्तमता नहीं कि वुह सत मत है इस कारण जो उस पर दोषलगावे आपही दो-षी ठहरे बरन इस मत में ऐसी उत्तमता है कि उन पर ध्यान करने से आप से आप उसकी सचाई प्रगट और निश्चय होती है और आदि से अंत तक वुह सब मनुष्यों की अवस्था और आवश्यकता के योग्य है उस के हर

---

(१) आसीया ११ पर्ब्ब ९ पद

एक बचन से परमेश्वर के गुण महिमा पाते हैं अब इन बातें के अनुसंधान के लिये हम पहिले बर्णन करते हैं कि किस प्रकार ईसाई मत सब जगत के मनुष्यों की अवस्था और आवश्यकता के योग्य है

पहिले बिचार किया चाहिये कि जिस रीति संसार की सब बातें जो सृष्टि कर्त्ता ने उत्पन्न किया मनुष्य की प्रगट दशा और आवश्यकता के योग्य है जैसे ज्योति नेत्र के लिये बनी है जिस्से मनुष्य जगत की बस्तु देख सक्ता और भूमि की सपन्नता मनुष्य के जीवन स्थिती का कारण और उस के रोगों के लिये औषध है इसी रीति ईसाई मत मनुष्य को आत्मिक आवश्यकता के योग्य है क्योंकि ईसाई मत मनुष्यों पर उस के हर एक बात को प्रगट करता उस के मन की दशा उसे देखाता उसके दुख बिपति का कारण उस पर खोलता है इस्से निश्चय हुआ कि जगत का कर्त्ता ईसाई मत का कर्त्ता है और जैसे जगत मनुष्य के प्रगट दशा के योग्य तैसे ईसाई मत उस की अंतर गति के योग्य है * पर और किसी मत में ऐसी बातें नहीं और कोई दूसरा मत मनुष्य का ऐसा स्पष्ट बर्णन नहीं कर सक्ता कुछ अटकल और अनुमान से कहते हैं पर अच्छी रीति से बर्णन नहीं कर सक्ते * कुछ २ मनुष्य की दुर्बलता और दुख और उसके पाप स्वभाव का बर्णन करता है परंतु यथार्थ समाचार प्रगट नहीं करता वे इन बातों की जड़ मूल को नहीं

जानते और मनुष्य की आदि और भलाई और उसका पापी होना और उसकी उत्पत्ति का कारण और जो हर्ष कि मनुष्य को परमेश्वर की पहिचान से होता है अच्छी रीति से नहीं बतला सक्ते ईसाईयों के मत में यह सब बातें ठीक २ प्रगट हैं उसमें मनुष्य की पहिली दशा और उसके महातम का जैसा कि चाहिये वैसाही वर्णन है अर्थात मनुष्य इसलिये उत्पन्न ङआ कि अपने सृजनहार को पहिचाने और उसकी आज्ञा को माने और उसे तन मन से प्यार करे और आनंद रहे फिर उसमें वर्णन है कि वुह किस भांति पापी होके उस मंगल दशा से रहित हो गया फिर उसमें लिखा है कि पाप की बुराई और फल क्या है और यहभी कि आत्मा और इंद्री परस्पर बिरुद्ध हैं * यह सभों पर प्रगट है कि मनुष्य को बुद्धि और बाणी मिली और विद्या की अभिलाषा में डूब के वुह यह चाहता है कि अपने को उद्धार के तट पर पङंचावे और वुह सिद्ध होने की योग्यता रखता है इस्से जाना जाता है कि पहिले जब वुह निषपापी था आनंद था और इस कारण से वुह परीश्रम करता कि फिर उस पद को पङंचे परंतु हाय हाय उसके हृदय के नेत्र बंद हो गये इस लिये जब लों कि इंजील की शिक्षा ग्रहण नहीं करता तब लों उसकी सारी दौड़ धूप व्यर्थ है वुह एक ऐसा राजा है जो राज सिंहासन से गिरा यद्यपि वुह भव सागर में इधर उधर हाथ फेंकता

है परंतु बिश्राम के तौर पर नहीं पहुंचता तो भी परी-श्रम से हाथ नहीं खींच सक्ता यद्यपि उसकी योग्यता और प्रवीणता ऐसी है तिस पर वुह कीड़े मकोड़े की भांति मिट्टी से जीता है यद्यपि उसकी बुद्धि और बिचार स्वर्ग पर चढ़ते हैं परंतु उसकी इच्छा पाप के कीचड़ की ओर लेजाती है और संसार जो उसके अप्रसन्न है इस लिये वुह उस्से अलग हुआ चाहता परंतु उस का स्वभाव संसार की ओर फिर खींच २ लाता है यद्यपि वुह चिंता में चिंतायमान होता और उसका बिचार अपरंपार की बातों के बिषय अत्यंत ऊंचे तक पहुंचता है परंतु वुह अपनी इच्छा और लालसा डुब कर और अपनी इंद्री के बश होकर दीन मलीन और अज्ञान बन जाता है यद्यपि वुह धर्म की बात को छोड़ने नहीं चाहता तो भी अधर्मी बना रहता और पशु का स्वभाव देखलाता है वुह चाहता है कि सचाई का पिछा करे परंतु उस्से झूठ नहीं छूट सक्ता निदान ऐसी २ बातें ईसाई मत बतलाता है कि मनुष्य इन आपदों में पड़ा है और उसको ऐसाही समझ कर शिक्षा देता है वुह कुछ दूतों और निष्पापियों के लिये नहीं परंतु निज करके पापी मनुष्यों के लिये हैं और जिस भांति बैद रोगी की अवस्था और उसकी सब बात जिस प्रकार कि रोगी पर बीतती बर्णन करके अपनी प्रविणता प्रगट करता है बरन कितने चिकित्सक पहिले ही वुह औषध

जो रोग को दूर करे बर्णन करके अपना तर्क अच्छी रीति से प्रगट करता है इसी प्रकार ईसाई मत मनुष्य की अवस्था खोलता है अर्थात उसके अंतर गति की बात स्पष्ट बतलाता है और उनके मन की बिपरीतता और इच्छा प्रगट करता बरन जिसे मनुष्य आप नहीं जानता वुह समाचार उस पर खोलता इन्हीं बातों से ईसाई मत प्रतिति के योग्य है * इसके परे बैबल न केवल मनुष्य के रोग की जड़ मूल और मन की बुराई और उसकी विषय भावना और बुद्धि के बिपरीत और बांछों और दुखों की बातों के बर्णन करती परंतु वुह औषध भी बतलाती जिस्से मनुष्य चंगा होवे ईसाई मत प्रगट करता है कि परमेश्वर ने अपने प्रेम का भंडार खोला और मसीह के द्वारा मनके चंगा और आत्मा के शुद्व करने का उपाय किया जिसतें मनुष्य को अनंत जीवन मिले और उसके प्रेम सागर में नहाके निर्मल हो जावे और पवित्रात्मा के द्वारा से पवित्र हो कर स्वर्ग के आनंद में प्रवेश करने के योग्य होवे और पवित्रात्मा स्वर्ग का आनंद और नरक का दुख उस पर प्रगट करता और उसे नरक की आग से बचने को सिखाता और बिनती करता कि स्वर्ग में प्रवेश करने के निमित्त परीश्रम करो और ऐसा मार्ग बतलाता जो मनुष्य के चलने के योग्य है और उस पर खोलता कि तू इस जीवन काल में बटाऊ होकर परीक्षा में है परंतु परमेश्वर ने

तेरे लिये सर्बदा का आनंद स्थान लैस कर रखा है और उसको दृढ़ आशा है कि यदि वुह आप को मसीह के द्वारा से परमेश्वर को सैांपे तो अवश्य उद्धार पावेगा और जिस रीति उसने आज्ञा पाई कि वुह परीश्रम करके अपना रोटी खावे इसी भांति उसको आज्ञा है कि परीश्रम करके प्रार्थना करे जीवन की रोटी जो स्वर्ग से आती है प्राप्त करे कि यदि उसे खावेगा कभी न मरेगा और बहुधा ऐसा संयोग हुआ है कि वुह लोग जो सदा क्रूरता और दुष्टता से बड़े बड़े पाप करते थे बरन कुकर्म और अधर्म को छोड़ और कुछ उनका काम न था फिर जब कि वे इधर बिश्वास लाये तो बड़े धर्मी और सुकर्मी होगये यह भी एक सत्य विशेषण और गुण इस मत का है इस के उपरांत इसाई मत इस योग्य है कि सारे जगत में फैले जितने मनुष्य कि पृथिवी पर हैं क्या पूर्ब क्या पश्चिम क्या उत्तर क्या दक्षिण सब की दशा के योग्य है जैसे ऊपर बर्णन हो चुका उसमें कोई आज्ञा ऐसी नहीं जो सर्बत्र के मनुष्य न मान सकें और कोई ऐसी शिक्षा नहीं कि जो सब नहीं जान सकें कोई काम नहीं जो सब के करने के योग्य न हो इसी कारण से वुह हर समय के लोगों और देशों के लिये और उनकी सब अवस्था और आवश्यकता के समान है वुह मूर्ख और कंगालों के लिये है मसीह आप कंगालों में प्रगट हुआ और उनसे अच्छी रीति से बार्ता किई और

इंजील सुनाई परंतु न इस भांति कि उन्हें अहंकार उप-जे अथवा अपने स्वामी और बड़ों से बिमुख होवें फिर वुह सर्ब प्रकार के प्रवीणों और ज्ञान मानों के योग्य भी है कि यदि अपनी सारी बुद्धि उसके निरूपण में उठा-वें तो भी उसके सब भेदों को न पावेंगे निपढ़ा और कंगाल जिस भांति कि उनकी मुक्ति के लिये आवश्यक है उसे बिचार सक्ते हैं और सब से बड़ा प्रवीण बिस्मित होता है बालक इस रीति प्राप्त कर सक्ता कि उसकी बुद्धि के समान है और वृद्ध जो बहुत संसार की परीक्षा कर चुका है वही पाता जो उसे चैन और बिश्वास देता यह मत संसारिक बिद्या की सहायक है और उसी देश का सुभाग और घर घर का सुख चैन होता है और ल-ड़ाई झगड़ा घट जाता है * यद्यपि वुह संसारिक बिद्या की सहायक तो भी बिद्या के घेरे से बाहर है मनुष्य जिस प्रकार बिद्या उपार्जन करे उसी भांति बैबल की सचाई को समझे और यद्यपि वुह सारे जगत और सम-स्त समय के लोगों के लिये है और उनकी सारी अवस्था और आवश्यकता के योग्य और परस्पर रीति प्रीती उप-जाती है तौभी वुह हरएक मनुष्य के लिये दर्पण है जिस में वुह अपना स्वरूप अच्छी रीति से देखे और अपनी सारी बातों को बिचारे इस मत के वाक्य सब खुले और सहज हैं यद्यपि उस की बोली निज कर के भविष्यद्वक्तों के पुस्तकों में अत्यंत मधुरस्वर है तो भी छंदप्रबंध और

रचावट से कुछ प्रयोजन नहीं रखती * वुह अज्ञानों को मार्ग बतलाती है और बिद्यामानों को उन की बिद्या समेत चकित करती है वुह मनुष्यों की अवस्था और वृतांत को दिखा दिखा के उसके मन में गड़ाती और अगिले मनुष्यों अर्थात आदम और कीन और हाबील और खनूक और नूह और इबराहीम इत्यादि का वृतांत प्रगट कर के लोगों के दुहरे लाभ दिलाती निदान जैसे सूर्य की ज्योति नेत्रों के लिये है वैसाही बैबल का प्रकाश हृदय के नेत्रों अर्थात आत्मा और जीवों के लिये है उस में कुछ ऐसा बर्णन नहीं कि जिस्से धनमान अथवा बिद्यवान अथवा प्रतिष्ठित मनुष्य समझें कि वे अपनी संपत्ति और बिद्या के और बड़ाई के कारण परमेश्वर के समीपी होवें क्योंकि धनमान और कंगाल छोटे और बड़े मुक्ति के बिषय में वहां बराबर हैं और उसी रीति से मद और अहंकार धनमान से और कंगालों से कुडं कुड़ाना और हियहार मान्ना दूर किया जाता है जैसे मसीह के बचन से प्रगट है कि एक दिन आप भंडार के साम्ने बैठे थे कि देखें लोग किस रीति भंडार में रुप ये देते हैं धन मानों ने बज्जत कुछ दिया और एक बपुरी बिधवाने एक अधेला ईसा ने कहा इस बिधवाने सब से अधिक दिया क्योंकि धनमानों ने तो अपने धन की बज्जतायत से दिया और उसने अपनी सारी पूंजी दे डाली

दूसरा ईसाई मत में पाप से पश्चाताप करने का ठीक उपाया है कि उसमें परमेश्वर आप नर रूप धारण करके पाप ही के मिटाने के लिये इस जगत में प्रगट ज्ञआ और पाप ही के मिटाने के लिये बड़ा २ दुख क्लेश अपने ऊपर उठाया और अपने प्राण का बलिदान किया जिसतें उन सबको जो उसकी शरण में आवें पाप से पश्चाताप करने की सामर्थ देवे उन्हें अपनी पवित्रता और अपनी व्यवस्था की पवित्रता देखा के मनुष्यों का पाप से उदास और खेद करावे और उन्हें काम क्रोध लोभ मोह इत्यादि से छुड़ा के अपने समान धर्मी और पवित्र बनावे सो जो इन बातों का समझता और मानता है क्या वुह पाप से घिन न करेगा अवश्य करके घिन करेगा क्योंकि यह समझेगा कि पाप की ऐसी बुराई और उसके लिये ऐसा दंड ठहरा है कि बिना स्वर्ग पृथिवी के स्वामी आप दुख सहने और बलिदान होने से उसका निबारण न्याय की रीति से अनहोनी थी इस भांति वुह अपने मन में सोचेगा कि जो वस्तु परमेश्वर की समझ में ऐसी बुरी है तो क्या मेरे समीप अच्छी हो सक्ती है हाय २ धृग २ पाप पर कि जिसने मुझे और मेरे घर को और मेरे कुटुंब को बरन सारे जगत को लोक परलोक से नष्ट कर डाला और जो मेरे प्रभु परमेश्वर के दुख उठाने और मारे जाने का कारण ज्ञआ सो क्या मैं ऐसे पापों को फिर करोंगा कभी नहीं क्योंकि मेरा प्रभु फेर मरने

का नहीं सो प्रभु परमेश्वर मेरी सहाय करे कि फिर पाप मुझ से होने न पावे चाहि चाहि मैं मर जाऊं तो भी पाप न करूं

हे प्रिय हिंदुओ तुम इस के बिषय सोचो कि तुम्हारे मत में पाप के पश्चाताप के करने का ऐसा बिधान है कहीं वेद शास्त्र में परमेश्वर की पवित्रता अथवा उस की आज्ञा की पवित्रता का कुछ लेश है अथवा कहीं उन में लिखा है कि परमेश्वर पश्चाताप करने की सामर्थ मनुष्य को देता है जब हिंदू अपने पाप को देख के कुछ चिंताय मान और भयमान होता है तो वुह क्या करे वुह तो काम क्रोध लोभ मोह में बह गया और कहीं सहायक दृष्टि नहीं आता बरन उसका शास्त्र उस्से यह कहता कि जैसा तूने किया वैसा तू पावेगा सो वुह निराश होके और अधिक पाप में डूबेगा अथवा अपना मन कठोर करके यह सोचेगा कि मैं पाप से काहेको भयमान होऊं मैं बुरा तो हों परंतु देवताओं से बुरा तो नहीं हों बरन उनसे कहीं भला हों शिव के समान जाति से अनादर और अप्रतिष्ठित नहीं हुआ और ब्रह्मा की नाईं कामातुर होके अपनी कन्या से कु कर्म नहीं किया और विष्णु के समान पराई स्त्री को नहीं ठगा और उनके अवतारों की रीति प्रतिज्ञा भंजक और निर्दोषियों का घातक और नास्तिक मत और अधर्म का उपजायक नहीं हुआ और इंद्र के समान अपने गुरु की पत्नी को भ्रष्ट नहीं किया*

कुछ कुछ पाप जो मुझ से ङआ हो सो शास्त्र पुराण की रीति से कुछ बड़ी बात नहीं है यदि कहीं झूठ बोला हों तो गौ ब्राह्मणों को उस में कुछ लाभ ङआ होगा * अथवा मेरी कुछ भलाई और जो विष्णु का नाम लिया तो फिर कहां मेरा पाप रहा * यदि लेने देने में कुछ अनुचित कर्म किया है तो उस में से कुछ देवताओं को अर्पण किया है यदि पर स्त्री गमन किया तो कृष्ण के समान ङआ वुह तो सामर्थी थे इस लिये उन्हीं ने सोलह सहस्र गोपियों को रखा और जो मैं ने केवल चार पांच स्त्री रखा तो इस में मेरा क्या दोष निदान जो कुछ पाप मुझ से ङआ हो सो गंगा स्नान से सब छूट जायगा और कुछ पुण्य दान करके स्वर्ग लोक में अपना कुछ ठिकाना कर लूंगा और कदाचित अपने पाप ही में बना रहों तो क्या डर है क्योंकि थले विष्णु जले विष्णु विष्णु सर्ब मयं बोलता वही है फिर वुह मुझ को लेके क्या करेगा क्या वुह अपने को नरक में डालेगा सो मैं काहेको पछताओं और किस कारण पाप से डरों और काहेको अपने को शोकित करों पाप पुन्य का तो शरीर ही बना है और जो कुछ होता सो प्रारब्ध से होता जिसके आधिन ब्रह्मा इत्यादि हैं मैं हों जो हों बदलने का नहीं * सो देखो हिंदू पाप स्वभाव रख के और बिना सहाय होके और ऐसे जालों में फंस के कब पश्चाताप कर सक्ता है

इस प्रकार मुसलमान का मत भी है कि उसे पश्चाताप

अनहोना है उसमें कुछ परमेश्वर की सत्यता और पवित्र
ता और उसकी आज्ञा की पवित्रता और मनुष्य की पाप
दशा और उसके पाप के दंड का यथार्थ समाचार नहीं
है उस में तो ये बातें हैं कि ख़ुदा और उसके रसूल को
मानो कलिमः और पांचों वक़्त की नमाज़ पढ़ो रोज़ा
रखो ख़ैरात करो सूअर न खाओ शराब न पोओ चार
जोरू से ज़ियादः न रखो पर लौंडी को कि जितने की
परवरिश होसके रखो इन बातों के सिवा अगर हज
को जा सके तो बेहतर है फिर उनके यहां तक़दीर है
और यह कि ख़ुदा ने आदमी को कम ज़ोर जी का
कच्चा और जल्दबाज़ पैदा किया है बलकि ख़ुदाने गुनाह
को भी पैदा किया फिर ऐसी बातों के साम्ने तौबः की
जगह कहां रही और इस मज़हब के रूसे शहवत ज़रूर
है नहीं तो बिहिश्त में किसतरह हूरों से सोहबत रखेंगे
और नजात जो है सो आमाल से है चुनांचे हज़ारों
जगह क़ुरान में लिखा है कि उन्हें उनकी मज़दूरी मिले
गी इस में शेख़ी और ख़ुदपरस्ती ख़ामोख़ाह पैदा होती
फिर जहां शहवत और शेख़ी है वहां तौबः की जगह
कहां और याद रखा चाहिये कि बग़ैर तौबः के कोई
आदमी गुनाह न छोड़ेगा और पाक न हो जायगा और
जबतक पाक नहीं ऊआ ख़ुदा के हज़ूर किसतरह जायगा
सो देखो हे प्रिय ईसाई मत की उत्तमता को कि उस में

पश्चाताप करने की ऐसी उपाय है जैसा बर्णन हो चुका पर और किस में बिचार करो

तीसरे ईसाई मत पाप करने से अत्यंत बर्जता है केवल काया के पाप से नहीं परंतु मनसा और बाचा के पाप से भी और आज्ञा करती है कि जितनी बातें अच्छी हैं उनका पीछा करो और उसी पर लौ लगाओ ठीक सूझता और समझ में आता है कि हिंदू और मुसलमान का मत कई प्रकार से पाप करना पाप नहीं समझते बरन पुन्य जानते हैं जैसे कि प्रयोजन के समय असत्य कहना अथवा चोरी और हत्या करना और व्यभिचार और आतमघात करना इत्यादि और कई एक दशा में भलाई का करना उनके मत में माने पाप कर्ना है पर ईसाई मत में ऐसी बातों का लेश कहीं नहीं वुह पाप करना किसी भांति उचित नहीं रखता और कभी मनुष्यों के मन की बुराई और उन की बुरी इच्छों को गंव नहीं देता उनसे कभी लल्लो पत्तो नहीं करता वुह मनुष्यों की इच्छा और बिचार और चाल चलन के बिपरीत है तो भी वुह सर्बथा मनुष्य की भलाई का कारण होता और उसका यही अभिप्राय है कि मनुष्य की आत्मा का रोग उस्से दूर होवे और मन की बुराई जाती रहे और उसके स्वर्ग राज में जाने के लिये सिद्ध करे

और ईसाई मत न केवल पाप करने को निशेध करता

है परंतु भलाई करने को आज्ञा देता है और पहिले आत्मा को सुद्ध करता है और सुख अभिलाषें के घोड़े की बाग लिये रहता है कुल्हाड़ा वृक्ष की जड़ पर लगाता और पाप को जड़ से उखाड़ता है वुह न केवल यही आज्ञा देता है कि मन सा बाचा से पाप न करो परंतु मनुष्यों को उभाड़ता है कि उन्हीं से भलाई करो और इस मत से जो लोग कि केवल अपनेही भलाई की चिंता में जंगलों में जा रहते और आप कुछ सत्पथ की बात समझ के भटके ऊओं से न्यारे होते हैं और दूसरों की भलाई करने की कुछ चिंता नहीं रखते सच पूछो तो बड़ी भूल में हैं और उन की समझ के बिरुद्ध उनका पाप और अधिक होता है फेर जिस दशा में कि वे अपने लड़के बाले को भूख प्यास और निराश में छोड़ के जंगलों में जा रहे होयें तो उनके पापों की गिनती कब लेखा में आवेगी अज्ञा है कि अपना दीपक ढपने के नीचे मत रखो परंतु दीवट पर

यह मत राजाओं और अध्यक्षों को उपदेश करता कि तुम न्यायी और दयाल होओ पवित्रता और धर्म शीलता को न छोड़ो पापियों को दंड और धर्म्मियों को प्रति फल दो और हर भांति से अपने प्रजा को अपने लड़के के बराबर समझो उनकी भलाई की चिंता में रहो फिर प्रजा को वुह सिखलाता है कि तुम आज्ञा के अधीन रहो अपने बड़ों का आदर करो और उनके लिये प्रार्थना करो

ओर यदि तुम पर अंधेर होय तो सहो ओर प्रभु के आने की बाट जोहो कि वुह इन भेदों को जो अंधियारे में हैं प्रगट ओर मन के बिचारों को प्रत्यक्ष करेगा ओर उसी समय हर एक मनुष्य क्या अध्यक्ष क्या प्रजा सब को उन के कार्यों के समान प्रति फल देगा इस मत में नर मेध नहीं है छोटे २ लड़के नहीं मारे जाते व्यभिचार को छोड़ स्त्री को त्यागना भी बर्जित है एक पत्नी के रहते दूसरी पत्नी का करना आज्ञा नहीं स्त्रियों की अवज्ञा बर्जित है ओर बिचार की बात है कि आदम की रीति एकही स्त्री के करने से शरीर ओर आत्मा की पबित्रता ओर आरोग्यता होती है ओर घर में लड़ाई झगड़ा चार पांच स्त्रियों के रखने की नाईं नहीं होती स्त्रियों को बिद्या ओर आदर देने से बहुत सा लाभ है जैसे कि बालक को सिखाना सुधारना इत्यादि कंगालों ओर मजुरों को शिक्षा देना ओर बृद्धों को प्रतिष्ठा करना भी लाभ का कारण होता है सप्ताह में एक दिन बिश्राम ओर बिशेष आराधना करने के लिये ठहराया गया है जिसतें मनुष्य कंगाल से धनमान लों न केवल शरीर परंतु आत्मा की भलाई प्राप्त करें पर इस मत में शुभ ओर अशुभ दिन का कुछ बिचार नहीं है ओर न शकुन का मान्ना है ईसाई मत में देखा चाहिये कि किस रीति अपने मित्रों ओर हितों से निर्बाह करने को कहता है ओर उन की मित्रता में कपट

नहीं और ईसाई को आज्ञा है कि एक दूसरे को प्यार करे जैसा मसीह ने उनको प्यार किया अर्थात यदि काम पड़े तो अपना प्राण भी एक दूसरे के लिये न दुरावें शत्रुता जड़ से उखाड़ी जाय क्योंकि मसीह ने आज्ञा दिई कि मनुष्य अपने पड़ोसी को अपने बराबर प्यार करे और मसीह की प्रीति उसके लोगों को खींचती है क्योंकि वे समझते कि जब एक सब के लिये मुआ तो सब मृतक ठहरे और वुह सब के लिये मुआ जिसतें जो जीते हैं सो न अपने लिये परंतु उसके लिये जो उन के लिये मुआ और फिर उठा आगे चलके जीवें (१) फिर सत मत की यह भलाई है कि जितने ईसाई सच्चे हैं उन सब के स्वभाव प्रकृति और चाल चलन समान हैं मानों एकही सांचे के ढले हैं और यह बात और मतों से कब हो सक्ती बैर लेना बर्जित है और ईसाइयों को उपदेश है कि मनुष्य की उजागरता और संपति और बड़ी मर्यादा का कभी पक्ष पात न करें और इस मत में सूर बीर की प्रशंसा इतनी नहीं जितनी दीन हीन और संतोषी स्वभाव की है मसीह कुछ संग्राम का उत्पादक नहीं बरन मेल मिलाप का राज कुमार है (२) इसी लिये मत के विषय उसने लड़ने की आज्ञा कहीं नहीं दिई परंतु उस्से बर्जा है पतियों को आज्ञा है कि अपनी

(१) करंती ५ पर्ब्ब (२) अशिया ९ पर्ब्ब १६ पद

पत्नियों से प्रेम रखें और पत्नियों को कि अपने पति की आज्ञा के अधीन रहें और आदर करें और ऐसी बातें लड़-कों को कि अपने माता पिता की आज्ञा में रहें और उनकी प्रतिष्ठा करें और माता पिता को कि अपने लड़कों को प्रभु की बताई शिक्षा और उपदेश करके प्रतिपाल करें निदान हर एक घराना और नगर और जाति को आज्ञा है कि परस्पर मेल रखें और सब पर स्नेह प्रधान रहे ईसाइयों को उचित है कि अपने बैरियों का अपराध क्षमा करें और उनसे प्रीति रखें और उनके लिये जो उन पर श्राप देते हैं आशीष चाहें और जो उनसे बैर रखते भलाई करें और अपने दुखदायकों के लिये प्रार्थना करें एक दूसरे को सच्चे मन से प्यार करें और दयाल और कृपाल रहें क्षमा करें जैसे परमेश्वर ने भी उन्हें मसीह के लिये क्ष-मा किया है और यदि किसी को किसीसे दुख पहुंचे तो दूसरा सह लेय और क्षमा करे जैसे मसीह ने उसे क्षमा किया वैसाही उसे भी क्षमा करे (१) यही ईसाइयों की भलाई का भेद है और हर एक बात में उनका एक ऐसा गुरु है अर्थात मसीह जो हर भांति से सिद्ध और आज्ञा है कि उसके तुल्य बनें और जस और भलाई और दया जो उसने मनुष्यों पर प्रगट किये और उसकी अधीनता और कोमलता और उसका संसार की वस्तुन का तुच्छ

---

(१) ऽ अफसियों का ४ पर्व्व ३२ पद

जान्ना और नधिमहोना और मन की दृढ़ता स्थिरता और प्रवीणता और बुद्धि बिवेक सब भलाइयां जो उसमें हैं और जिन से मनुष्य सिद्ध होता है उन सब पर ध्यान करके उनके समान चलें क्योंकि ईसाई यह शिक्षा पाते कि मसीह उनके लिये एक प्रतिरूप छोड़ गया कि जिस के समान चलना अति उचित है फिर यह बिवाद कि सब ईसाई उसके समान कब चलते हैं केवल व्यर्थ है क्योंकि यहां ईसाइयों का कुछ प्रसंग नहीं और न कुछ उनकी प्रशंसा बरन ईसाइयों के मत की चर्चा और उस की परीक्षा है जैसे हम ने इस पुस्तक के आरंभ में हिंदू के मत का बर्णन किया कुछ हिंदू का बर्णन नहीं किया कि वुह अपने पुस्तक के समान नहीं चलते परंतु उनके मत को बर्णन किया और इस सारे पुस्तक में जो हम ने परीश्रम और श्रम सचे मन से किया कुछ इस लिये नहीं कि पर-मेश्वर के लोगों को पावें परंतु परमेश्वर के पुस्तक का निरू-पण करें हमें तो परमेश्वर और उसके पुस्तक से काम है न मनुष्यों से और इस समय तो परमेश्वर की पुस्तक पाके यदि उसके आज्ञाओं के समान काम न करें तो अपना प्राण खटके में डालें दूसरे मनुष्य चाहे करें चाहे न करें और यह हम मान लेते हैं कि ईसाई अपने मत के पुस्तकों के समान कुछ नहीं करते इस बात से तो एक और प्रमाण हाथ लगा कि उनका मत उनसे नहीं बनाया गया परंतु परमेश्वर की ओर से भेजा गया क्योंकि यदि वुह मत उन

की ओर से होता तो कभी ऐसी आज्ञा नहीं देते कि जो उनके गर्व और दंभ के बिरुद्ध होता और उन्हें पापी बनाता और वे उसे अच्छी रीति से नहीं मान सक्ते और जो वुह मत हर भांति से पूरा और पवित्र है इस लिये चाहता है कि मनुष्य भी ऐसा सिद्ध और शुद्ध होवे कि वैसा कोई आज लों न ऊआ हो और यह ठीक जान पड़ता है कि वुह अद्वैत परमेश्वर जिसका कोई साक्षी नहीं इस मत का कर्ता है नहीं तो ऐसी बातें मनुष्य के मन में कब आतीं फिर बिचार किया चाहिये कि यद्यपि ईसाई अच्छी रीति से इंजील की आज्ञा नहीं मानते तो भी वे और सब लोगों से परमेश्वर और मनुष्यों को अधिक प्यार करते हैं और उनके परे दूसरी जाति जगत में नहीं दृष्टि आती जो पराये की भलाई के लिये इतना परीश्रम और चिंता करती है वुह जाति कहां है जहां सचाई और नेम धर्म का ऐसा धूम धाम है जैसा कि ईसाईयों में प्रभु उसे अधिक करे उन में से बऊतों के मन में न्याय और पवित्रता और धर्म शीलता की ऐसी जय है कि दीन हीनों और दरिद्रों की इस रीति रक्षा करते हैं कि धर्मशाला कंगालों के लिये बनाते और आप दुख क्लेश सह के जगत में चऊंदिशा फिर के मनुष्यों की दशा और मतों का बिचार करते ऐसी उत्तमता बिन ईश्वर की कृपा कब किसी में हो सक्ती कि लाखों रुपये प्रति बरस उठान

करके परमेश्वर का बचन जगत में फैलाते और यही प्रतिफल चाहते कि मनुष्य परमेश्वर को सब से अधिक और एक दूसरे को अपने समान प्यार करे और सारा जगत पवित्रता से भर पूर होय * अब जो ईसाइयों के मत का प्रमाण और उसकी पवित्रता और उसका अच्छा गुण समुझ चुके और अच्छी रीति से जाना गया कि वुह सब मनुष्यों की अवस्था और आवश्यकता और परमेश्वर के बिभव के योग्य है और उसके कारण से परमेश्वर के पास और सदा के आनंद और महिमा को पऊंचना प्रत्यच्छ देख पड़ता है इसी सब को उचित है कि परमेश्वर का धन्यबाद करके इस मत को ग्रहण कर लेवें और उस पर चलें और दूतों के संग कहें कि अत्यंत ऊंचे पर परमेश्वर को धन्य और पृथिवी पर कुशल और मनुष्य में मिलाप होवे

यह भी भूला न चाहिये कि परमेश्वर ने मनुष्य को जहां लों सत्य के निरूपण करने की सामर्थ दिई है वहां लों उसे सत्य का पहिचान्ना और उसको प्रतिपालन करना अवश्य है क्योंकि उसको परमेश्वर के न्याय स्थान में लेखा देना होगा इस लिये यह निपट भय की बात है और अवश्य करके चाहिये कि हर एक मनुष्य सत मत की ओर फिरे और अपनी मुक्ति की चिंता में रहे और सत पथ पाके उसके ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में मनुष्य के डर अथवा जगत के किसी प्रकार को सोच

चिंता न करे बरन तुरंत अपने सृजनहार और स्वामी और मुक्तिदायक की आज्ञा को मान लेय और अपनी मुक्ति की बात से लिपटा रहे यद्यपि तन धन सब जावे पर ईश्वर को न बिसरावे और परलोक को न भूले॥

सर बस जाय बने पर लोका
नाहिं न है कुछ मन भय शोका
जे हिते ईश्वर हर्षित होई
सोई जतन करहु सब कोई

जो मनुष्य परमेश्वर की इच्छा पर चलने चाहेगा समझ लेगा कि यह शिक्षा परमेश्वर की है अथवा मैं आप से करता हूं [यूहन्ना ७ पर्ब्ब १७ पद]

निदान सत्य मत में ये तीन बातें अवश्य चाहिये

पहिली कि उस्से मनुष्य की शरीर की भलाई होवे
दूसरी कि उस्से मनुष्य की आत्मा की भलाई होवे
तीसरी कि वुह मनुष्य की अवस्था के योग्य होवे

ये तीनों बातें ईसाई मत में साक्षात हैं पर बताओ तो और किस मत में हैं ?

जिस मत में महीनों ब्रत करना अथवा उर्द्धबांह होना और तपस्या इत्यादि करना लिखा है तो क्या उस्से शरीर की भलाई हो सक्ती है

फिर जिस मत में लड़ाई करनी बैर लेनी कितनी स्त्रियां रखनी करनी से पुन्य प्राप्त करके मुक्ति पानी और जाति पर गर्ब करना फूलना है तो क्या ऐसे मतों से आत्मा की भलाई हो सक्ती है फिर जिस मत में प्रारब्ध और अटल कर्म का मान्ना और पाप पुन्य दोनों को ईश्वर की ओर से जान्ना और अपने को ब्रह्म समझ के ईश्वर बन बैठना है क्या ऐसी ऐसी बातों से मनुष्य शांति पा सक्ता है वुह तो अनाथ असमर्थ पापी है सर्व प्रकार के दुख और क्लेश में पड़े और परमेश्वर की आज्ञा भंग

करने से संतापी और रोगी हैं आपदों के गृह में रहता और आंसुओं की सरीता उसकी आखों से बहती मृत्यु के भय और परलोक की डर से कांपता थर थराता है सो इस दशा में पड़ के ऐसी बातों से कब उसके मन का बोध होगा * ऐसी दशा में पड़ के वुह जन * राखे गो कैसे निज थिर मन * ईसाई मत में इंद्रियों का वश करना है और नेम धर्म से रहना परंतु शरीर को नष्ट करना नहीं इस मत में आत्मा की भलाई है क्योंकि प्रारब्ध की कोई बात इस में नहीं बरन यह है कि मनुष्य अपनी क्रिया पर सामर्थी है और उसे अपनी हर एक बात का उत्तर अपने सृजनहार को देना होगा उसके पाप की क्षमा और उसके मन के रोग की औषध और उसकी आत्मा के लिये सर्वदा का अनंत जीवन इस मत से है और यह सब कुछ परमेश्वर के सारे गुणों के प्रकाश संयुक्त है यहां तक कि ईश्वर पापियों को मुक्ति देने में मुक्ति पानेहारों के लिये आप एक प्रतिरूप ठहरता है कि जिस में बिश्वासी जन परमेश्वर की दया देख के आप दयाल हो जाता और परमेश्वर की प्रीति को समझ के उस्से और सब से प्रेम रखता है और उसकी पवित्रता निरूपण करके आप पवित्र बनता और उसके न्याय और सत्य पर ध्यान करके न्यायी और सच्चा हो जाता है योंही परमेश्वर के सारे गुणों से जो इस मत में केवल कहने से नहीं परंतु करने और मुक्ति

देने से प्रगट है क्योंकि मसीह के अवतार लेनें में माना परमेश्वर के सारे गुणों का अवतार लेना है सो उनसे उपदेश पाके और उन्हें अपने लिये प्रतिरूप ठहरा के परमेश्वर की कृपा से सिद्व और स्वर्ग पर जाने के लिये लैस हो जाता है सो इस मत में ये तीनों बातें अर्थात शरीर और आत्मा की भलाई और मनुष्य की अवस्था की योग्यता साक्षात है मनुष्य का अवस्था और बैबल का बचन दायें बायें हाथ की भांति एक दूसरे का उत्तर ठहरता है सो हे इस पुस्तक के पढ़नेहारो मैं ने यहां संक्षेप में बर्णन किया है पर तुम तनिक सोच लिजिओ इस मत की शीक्षा और परमेश्वर के स्वभाव और गुणों में बज्जत समानता है * फिर इस मत की शीक्षा और उस स्वभाव और बोल चाल में जो इस मत के ग्रहण करने से प्राप्त होता है अत्यंत हो समानता है जैसे आज्ञा है कि मनुष्य दंभी नहीं परंतु आधीन बने और अपनी करणी पर मुक्ति का भरोसा न रखे नहीं तो अवश्य मन में अहंकार समा जावेगा फिर लिखा है कि सब से प्रेम रखे इस बात को मनुष्य के मन में गड़ाने के लिये लिखा कि मसीह सब के लिये मुआ * और यह भी आज्ञा है कि व्यभिचार और लालच से सर्बथा अलग रहे और मनुष्य के मन में इस आज्ञा के विशेषण करने के लिये यह भी लिखा है कि मसीह सर्बथा पवित्र होके ऐसी बातों से हम सब के बचाने के लिये आप प्रायश्चित्त ज्ञआ यों-

ही सब आज्ञाओं में है निदान निश्चय ऊआ कि ईसाई मत ईसाई स्वभाव उत्पन्न करता है फिर भला कहो तो और किसी मत में भी ऐसी बात है हिंदुओं के मत में दीनता नाम तो है पर उसके संग जाति का घमंड भी है तो कहां दीनता और कहां जाति का घमंड योंहीं मुसलमानों में शरीर के नेम आचार तो हैं पर अनेक स्त्रियां करनी और स्वर्ग में सत्तर अप्सरा भी मिलनी हैं फिर कहां शरीर का नेम आचार और कहां सत्तर अप्सरा के संग काम केलि इसी रीति सब बातों में समझ लिया चाहिये

और सब मत मनुष्य के पाप स्वभाव से अत्यन्त ही समानता रखते हैं * आदम के समस्त बंश चाहे इस देश के लोग अथवा फरंगी अथवा फरांसीस अथवा चीन अथवा और देश के रहने हारे सब के सब जन्म से और करणी से मूर्त्ति पूजक कामातुर अहंकारी हो चुके हैं जो किसी ने मूर्त्ति की पूजा न किई हो तो भीं उसके मन में एक बड़ी मूर्त्ति लोभ इत्यादि की बनी है जिस पर परमेश्वर से अधिक प्रेम रखता है *

यदि मूरत पूजत तुम नाहीं ।
बिषय मूर्त्ति राखत मन माहीं ॥

पर जो सच्चे ईसाई हैं उनके मनों में से यह मूर्त्ति तोड़

डाली गई और सच्चे परमेश्वर की प्रीति और पहिचान उसके मन में स्थिति ज़ई है

ईश्वर प्रीति बसी उर वाके
भजि गोस्न मज तहते वसु धाके

इस मत में पाप रोग का खोल खोल के बर्णन किया है और उसका एक बड़ा औषध और एक ऐसा चिकित्सक भी कि वुह यद्यपि पापिष्ठी देह के स्वरूप में प्रगट ज़ुआ तो भी पाप रोग से न्यारे रहा इस लिये पापी दुखी की अवस्था अच्छी रीति से समझते और उसका औषध भली भांति से करके अपने सा भला चंगा बना सक्ता है पर हाय हाय मनुष्य किसी देश का कैसाही हो अपने पाप स्वभाव से नहीं चाहता कि ईसाई मत सच्चा ठहरे परंतु जब लों उसका मन परमेश्वर की सहायता के प्रकाश से प्रकाशित और उसके दया जल से निर्मल न हो जाय तब लों अपने सारे जी से उसको झुटलाने चाहता है क्योंकि वुह अपने मन में निश्चय जानता है कि यदि यह मत सच्चा ठहरा और मैं ने अपने पाप से हाथ न उठाया तो मुझे अवश्य नरक में जाना ज़ुआ और यह बात उसके लिये मत के निरूपण और अनुसंधान में बाधक भी होनी है जैसे कोई न्याय कर्त्ता एक ओर का कनौडा होकर दूसरी ओर की न्याय कभी न कर सके योंही मनुष्य पाप और शयतान का दास

हो कर परमेश्वर के सत मत के बिचार करने में अतिही असमर्थ है और बड़ी कठिनता से परमेश्वर के कठिन पंथ उसे मिल सक्ता परमेश्वर शीघ्र कृपा करके सब के अपने बचन से समझावे कि सब का मुख बंद हो जावे और सब आप के परमेश्वर के आगे पापी समझें और मसीह की शरण गहके परमेश्वर के समीप धर्मी ठहरें

इस मत में न्याय और दया की तुला के दोनों पल्ले बराबर और ये दोनों डंडी के तले बराबर भारी हैं और यह मत किसी भांति के पाप को लग नहीं लगने देता और मनुष्य की बुद्धि और समझ और उसकी आत्मा के सारे गुणों को सिद्धता पर पहुंचाने को सामर्थी है * मनुष्य जब अपनी पाप दशा को सोचता और अपनी निर्बलता और आपदा और दुख को बिचारता तो इस मत की भलाई अच्छी रीति से समझ सक्ता है * जो कोई अच्छी रीति से इस मत का बिचार किया चाहे उसे अवश्य है कि मन बच काया कर्मना से सर्ब रीति के पाप को त्यागे और उद्धार का खोजी बन के अपने मन में यह ठान रखे कि मैं परमेश्वर के अनुग्रह से उसको पहिचान लों और उसकी नाईं पवित्र हो जाऊं उस घड़ी वुह इस मत का भेद जान सकेगा पर उसे चाहिये कि बैबल की बात अपने मन की अवस्था से मिलावे तब वुह उसका साक्षी अपने मन ही में साक्षात पावेगा वुह तो उसके लिये एक दर्पण ठहर जायगा जिस में वुह आप

वो पापी देख लेगा श्रीर उसे मसीह ईसा का जो बचाने हारा है स्वरूप देख पड़ेगा श्रीर नित प्रार्थना करने से वुह उसके समान पवित्र हो जायगा श्रीर परमेश्वर के अनुग्रह से सिद्ध होकर अंत को स्वर्ग में पङ्गंच जायगा * भाइयो मनुष्य का मन परमेश्वर का मंदीर है श्रीर उस का कूड़ा करकट माया मोह मद अहंकार लालच टृषना काम क्रोध इस के परे समस्त श्रीगुण हैं फिर तुम्हें अपने घर के फर्श रखने की तो इतनी चिंता रहती है पर परमेश्वर के घरके फर्श रखने को कुछ भी सोच नहीं यह धर्म मत से अत्यन्त दूर है

मन है मंदिर ईश्वर भाई
ताबिच राखऊ अति फरशाई
तब देखऊ तुम ज्योति प्रकाशा
होय जाय भव भ्रम तम नाशा

मनुष्य को चाहिये कि अपने को पापी जान के नष्ट श्रीर नास्ति समझे श्रीर संसार को अज्ञान रूपी निद्रा से जाग उठे

चेत रहत कछु चेतऊ भाई
सांस ते राखऊ अति चवकसाई
क्षण क्षण बाजत कूच दमंमा
होऊ सजुग जनि करऊ बिलंमा

इस जगत मे बड़े २ मंडलेश्वर श्रीर चक्रबर्त्ति राजा

थे अब जो देखिये तो मिट्टी के एक ढेर को छोड़ उन की कुछ चिन्ह नहीं राज काज धन संपदा नौकर चाकर घर गृह लड़के बाले सब छोड़ छाड़ कर सूने जंगल में अकेले जा पड़े हैं *

तब तो ऊंचि अटारिन सोये
अब माटी बिचपड़े मुंह गोये
लाखन लोगहते तब साथा
अब एक भुनगा पूछे न बाता

जाना नहीं जाता कि उन पर क्या बीती और परमेश्वर से कैसी बनी *

बहु खोकोउ न जो गौ बहि देशा
जा सन पूछौं कुशल संदेशा

पर धन्य है परमेश्वर को कि एक जन ऐसा भी है जो उस देश में गया और फिर आकर उसका सारा वृतांत कह सुनाया और समस्त पता बतला दिया सो प्रभु ईसा मसीह परमेश्वर का प्रिय पुत्र है वुह तो मर गया परंतु मृत्यु पर जय पाके फिर जी उठा और अपने बचन में दोनों लोक के वृतान्त को अच्छी रीति से प्रचार किया और जीता जागता स्वर्ग पर जाके उसका द्वार अपने बिश्वासियों के लिये खोल दिया इस लिये जो कोई उस के सरणागत होता है वुह इस भवसागर से पार उतर जाता है और निस्तार प्राप्त करता है

